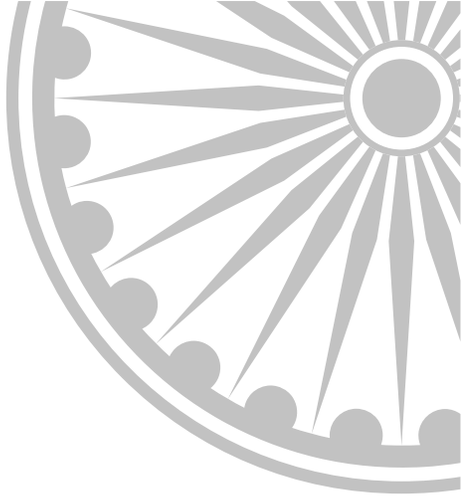

समाज और सभ्यता

शिक्षक दिग्दर्शिका

1–8

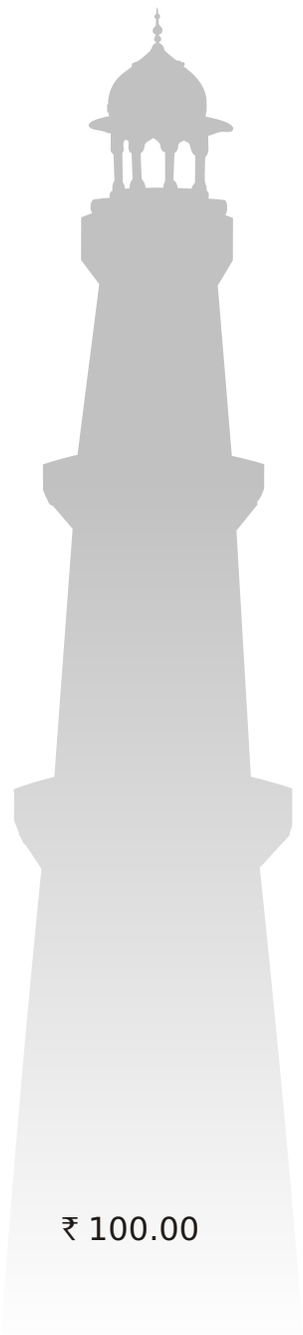

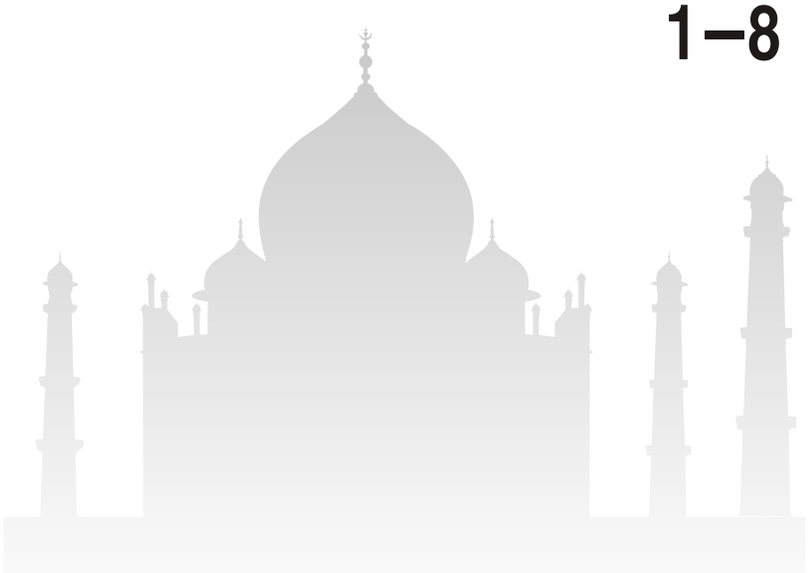

₹ 100.00

1. हमारा परिवार

(क) 1. (स), 2. (स), 3. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. सम्मान, 2. स्पर्श, 3. संयुक्त परिवार, 4. परिवार

(घ) 1. परिवार माता-पिता व उनके बच्चों से बनता है।

2. जिस परिवार में दादा-दादी, चाचा-चाची, चचेरे भाई-बहन एक साथ एक घर में रहते हैं। उसे 'संयुक्त परिवार' कहते हैं।

3. बच्चों के प्रत्येक कार्य का उत्तरदायित्व माता-पिता पर होता है।

4. हमें प्रतिदिन उठकर माता-पिता, दादा-दादी तथा अपने बड़ों के चरण स्पर्श कर उनका आशीर्वाद लेना चाहिए।

2. घर के सदस्यों के कार्य

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓)

(ग) 1. सम्मान, 2. कल्याण, 3. सहायता

(घ) 1. घर के सदस्यों में मुख्य स्थान माता-पिता का होता है।

2. घर तथा बाहर के कार्यों की व्यवस्था माता-पिता करते हैं।

3. परिवार में होने वाले व्यय के लिए धन पिता कमाते हैं।

3. परिवार में बच्चों के कार्य

(क) 1. (अ), 2. (स), 3. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. अंग, 2. प्यार, 3. सहायता, 4. लड़कियाँ

(घ) 1. बच्चे परिवार के महत्वपूर्ण अंग होते हैं।

2. बच्चे घर के कार्य करने में माता-पिता की सहायता करते हैं।

3. बच्चों के चार कार्य - 1. अपना कमरा साफ करना 2. दूध लाना 3. पौधों में पानी देना। 4. बाजार से सामान लाना।

4. मिल-जुलकर कार्य करने से प्यार बढ़ता है।

4. हमारे पड़ोसी

(क) 1. (ब), 2. (ब), 3. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. पड़ोसी, 2. सहायता, 3. स्वच्छता, 4. पार्क

(घ) 1. हमारे आस-पास रहने वाले लोग पड़ोसी होते हैं।

2. पार्कों को सार्वजनिक स्थान कहते हैं।

3. पड़ोसियों के साथ हमें अच्छा व्यवहार करना चाहिए।

4. हमारे पड़ोस में विभिन्न प्रकार का व्यवसाय करने वाले लोग रहते हैं।

5. मनोरंजन तथा खेल

(क) 1. (अ), 2. (स), 3. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✘), 4. (✓)

(ग) 1. मस्तिष्क, 2. कैरमबोर्ड, 3. पिकनिक, 4. मित्रों

(घ) 1. मस्तिष्क को स्वस्थ रखने के लिए खेलकूद व मनोरंजन आवश्यक है।

2. तीन आउटडोर खेलों के नाम- क्रिकेट, फुटबॉल तथा हॉकी।

3. इनडोर खेल कैरमबोर्ड, लूडो, वीडियोगेम हैं।

4. अवकाश के दिनों में हम अपने माता पिता के साथ पिकनिक, सर्कस तथा चिड़ियाघर जैसे स्थानों पर जाते है।

6. हमारे घर

(क) 1. (अ), 2. (स), 3. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. वस्तुएँ, 2. एस्किमो, 3. मिट्टी; बाँस, 4. अस्तबल

(घ) 1. घर हमें गर्मी, वर्षा, सर्दी, चोरों तथा जंगली जानवरों आदि से बचाता है।

2. घर कई प्रकार के होते हैं- 1. कच्चे घर 2. पक्के घर 3. बहुमंजिले घर 4. अस्थायी घर

3. शेर गुफा में रहता है।

4. हमें अपना घर तथा आस-पास का स्थान सदैव साफ-सुथरा रखना चाहिए।

7. वस्त्र

(क) 1. (ब), 2. (ब), 3. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✓), 3. (✘), 4. (✘)

(ग) 1. हल्के; सूती, 2. बीजों, 3. मोटे, 4. रसायन

(घ) 1. हमें वस्त्रों की आवश्यकता सर्दी, गर्मी, वर्षा तथा धूल आदि से बचने के लिए होती है।

2. वस्त्र तीन प्रकार से बनाए जाते हैं- 1. सूती वस्त्र 2. रेशमी वस्त्र 3. ऊनी वस्त्र

3. सूती वस्त्र हल्के तथा नमी सोखने वाले होते हैं।

4. टेरीकोट, टेरीलीन, पॉलिएस्टर आदि वस्त्र त्वचा को हानि पहुँचाने वाले वस्त्र होते हैं।

8. हमारा भोजन

(क) 1. (ब), 2. (स), 3. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓)

(ग) 1. विकास, 2. पशुओं, 3. चबाकर

(घ) 1. हमें प्रतिदिन लगभग 4 लीटर पानी पीना चाहिए।

2. भोजन से हमें ऊर्जा प्राप्त होती है।

3. अनाज- 1. गेहूँ 2. चावल दाल- 1. मूँग दाल 2. चना दाल

9. हमारे पूजा स्थल

(क) 1. (स), 2. (ब), 3. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. मूर्तियों, 2. बाईबिल, 3. अल्लाह, 4. नामों

(घ) 1. रामायण तथा गीता हिन्दुओं के धार्मिक ग्रंथ हैं।

2. गुरुग्रंथ साहिब सिक्ख धर्म का धार्मिक ग्रन्थ है।

3. मुसलमानों का धार्मिक स्थल मस्जिद है।

4. ईसाइयों का प्रतीक-चिह्न 'क्रास' है।

10. हमारे त्योहार

(क) 1. (स), 2. (अ), 3. (स)

(ख) 1. (✘), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✓)

(ग) 1. लक्ष्मी जी, 2. गुरू ग्रन्थ साहिब, 3. 25 दिसंबर, 4. दुर्गापूजा

(घ) 1. दीपावली, दशहरा, होली, रक्षाबन्धन आदि हिन्दुओं के प्रमुख त्योहार हैं।

2. ईद-उल-फितर रमजान महीने की समाप्ति पर मनाया जाता है।

3. प्रभु ईसा मसीह का जन्मदिन ईसाई लोग दिसंबर में क्रिसमस के रुप में मनाते हैं।

4. गुरुपर्व, बैसाखी तथा लोहड़ी सिक्खों के प्रमुख त्योहार हैं।

11. विद्यालय परिवार के सदस्य

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (स)

(ख) 1. (✘), 2. (✓), 3. (✘), 4. (✓)

(ग) 1. प्रधानाचार्य, 2. अध्यापकों, 3. क्लर्क, 4. माली

(घ) 1. विद्यालय का प्रमुख प्रधानाचार्य जी होते हैं।

2. प्रधानाचार्य, अध्यापक, लिपिक, विद्यार्थी आदि विद्यालय के सदस्य होते हैं।

3. विद्यालय के पुस्तकालय से पुस्तक हम 'पुस्तकालयाध्यक्ष' की आज्ञा से लेते हैं।

4. अध्यापक हमें अच्छी आदते और शिष्टाचार सिखाते हैं।

12. अस्पताल

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (स)

(ख) 1. (✘), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. सफाई, 2. सुविधाएँ, 3. विशेष कमरों, 4. नया जीवन

(घ) 1. अस्पताल में हमें डॉक्टर, साफ पलंग, बिस्तर, दवाईयों, नर्सो आदि की सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं।

2. रोगी को स्वस्थ करने के लिए अस्पताल ले जाया जाता है।

3. रोगी की जाँच डॉक्टर द्वारा की जाती है।

4. गंभीर बीमारी होने पर रोगी को विशेष कमरे में रखा जाता है।

13. डाकघर

(क) 1. (ब), 2. (ब), 3. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✓)

(ग) 1. थैलों, 2. मनी ऑर्डर, 3. डाकखाने; स्थानों, 4. डाकिया

(घ) 1. हम अपने रिश्तेदारों के सुख-दु:ख की जानकारी पत्र-व्यवहार द्वारा प्राप्त करते हैं।

2. डाकघर में आए पत्र रेल, बस या हवाई जहाज द्वारा दूसरे शहरों को भेजे जाते हैं।

3. हम पत्र 'पत्र पेटिका' में डालते हैं।

4. किसी वस्तु को हम पार्सल द्वारा अपने संबंधी को भेजते है।

14. हमारे सहायक

(क) 1. (स), 2. (ब), 3. (स)

(ख) 1. (✘), 2. (✓), 3. (✘), 4. (✓)

(ग) 1. दूध, 2. मोची, 3. अनाज, 4. साइकिल मिस्त्री

(घ) 1. गलियों और घरों की सफाई, सफाई कर्मचारी करता है।

2. सिपाही हमारे जीवन तथा धन की रक्षा करता है।

3. किसान हमारे लिये अनाज उगाता है।

4. बढ़ई हमारे लिए मेज, कुर्सी, दरवाजे और खिड़कियाँ बनाने का कार्य करता है।

15. अच्छी आदतें एवं शिष्टाचार

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. शिष्टाचार, 2. भगवान, 3. विनम्रता, 4. स्वागत

(घ) 1. हमारे जिस व्यवहार से दूसरे लोग प्रसन्न होते हैं और उसे अच्छा समझते हैं उसे शिष्टाचार कहते हैं।

2. हमें सदैव विनम्रता का व्यवहार करना चाहिए।

3. प्रात:काल उठकर सर्वप्रथम हमें भगवान का स्मरण करना चाहिए।

4. अपने से बड़ों का स्वागत हमें खड़े होकर करना चाहिए।

16. स्वास्थ्य के नियम

(क) 1. (स), 2. (अ), 3. (अ)

(ख) 1. (✘), 2. (✓), 3. (✘), 4. (✘)

(ग) 1. तौलिए, 2. हरी सब्जियाँ, 3. व्यायाम, 4. वस्तुएँ

(घ) 1. अच्छे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक होता है कि– (i) हमें साफ-सुथरा रहना चाहिए। (ii) हमें ठीक प्रकार से भोजन करना चाहिए। (iii) हमें प्रतिदिन व्यायाम करना चाहिए।

2. हमें सदैव साफ और ताजा भोजन करना चाहिए।

3. हमें प्रतिदिन दो बार दाँत साफ करने चाहिए।

4. स्वस्थ रहने के लिए हमें स्वास्थ्य के नियमों का पालन करना चाहिए।

17. सड़क पर सुरक्षा

(क) 1. (अ), 2. (अ), 3. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. पंक्ति, 2. बाईं, 3. नियमों, 4. जेब्रा क्रॉसिंग

(घ) 1. सड़क पार करने के निम्नलिखित नियम हैं– • पहले बाईं ओर देखिए • फिर दाईं ओर देखिए • पुन: बाई ओर देखिए • अब यदि कोई वाहन न आ रहा हो तो सड़क पार करे।

2. अपनी सुरक्षा के लिए सड़क के नियमों का ज्ञान होना आवश्यक है।

3. हमें खेलने के लिए पार्क में जाना चाहिए।

4. सड़क पर पैदल चलने के लिए सदैव फुटपाथ का प्रयोग करना चाहिए।

18. आदिमानव

(क) 1. (अ), 2. (स), 3. (स)

(ख) 1. (✘), 2. (✓), 3. (✘), 4. (✓)

(ग) 1. आदिमानव, 2. जंगल, 3. झोंपड़ी, 4. पत्थर

(घ) 1. अति प्राचीन मानव आदिमानव को कहते हैं।

2. आदिमानव जंगल की गुफाओं में रहता था।

3. आग का निर्माण आदिमानव ने पत्थर से पत्थर रगड़ कर किया।

4. जानवरों का प्रयोग आदिमानव सामान ढोने, खेती करने तथा खाने के रुप में करता था।

19. वीर भरत

(क) 1. (स), 2. (स), 3. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✘), 4. (✓)

(ग) 1. शकुन्तला, 2. न्यायप्रिय, 3. वीर; निडर, 4. प्रसन्न

(घ) 1. राजा दुष्यन्त का विवाह शकुन्तला के साथ हुआ था।

2. भरत वीर और निडर लड़का था, वह अपनी माँ के साथ वन में रहता था।

3. शकुन्तला ऋषि की पुत्री थी।

4. हमारे देश का नाम भरत के नाम पर रखा गया।

20. झाँसी की रानी : लक्ष्मीबाई

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✘), 4. (✓)

(ग) 1. मनु, 2. झाँसी, 3. स्वतन्त्रता, 4. अंग्रेज

(घ) 1. रानी लक्ष्मीबाई के बचपन का नाम 'मनु' था।

2. मनु बहुत बहादुर और निडर लड़की थी, वह घुड़सवारी व तलवार चलाने में निपुण थी।

3. रानी लक्ष्मीबाई झाँसी की शसिका अपने पति की मृत्यु के बाद बनी।

4. रानी लक्ष्मीबाई ने मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए लड़ते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये।

21. भगवान महावीर

(क) 1. (स), 2. (स), 3. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. महापुरुष, 2. दु:खी, 3. वर्घमान, 4. तपस्या

(घ) 1. महावीर स्वामी के बचपन का नाम वर्धमान था।

2. महावीर जी की माता का नाम त्रिशला और पिता का नाम सिद्धार्थ था।

3. महावीर स्वामी जी ने जैन धर्म चलाया।

4. जैन धर्म में 'क्षमा पर्व' मनाया जाता है।

सामाजिक कक्षा— 2

1. हमारा परिवार

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (स), 4. (स), 5. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✘), 4. (✓)

(ग) 1. माता-पिता, 2. पाँच, 3. कार्य, 4. पालन

(घ) 1. जिस घर में हम अपने दादा-दादी, माता-पिता तथा भाई-बहन के साथ रहते हैं, उसे परिवार कहते हैं।

2. परिवार दो प्रकार के होते हैं- 1. छोटा परिवार 2. संयुक्त परिवार

3. अच्छे बच्चे अपने माता-पिता की सेवा और उनकी आज्ञा का पालन करते हैं।

4. छोटे परिवार में बच्चों की पढ़ाई-लिखाई तथा अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति अच्छे ढंग से हो जाती है। इसी कारण छोटे परिवार को सुखी परिवार कहते हैं।

2. हमारा शरीर एवं स्वास्थ्य

(क) 1. (ब), 2. (स), 3. (ब), 4. (अ), 5. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✓), 3. (✘), 4. (✓)

(ग) 1. स्वच्छ जल, 2. व्यायाम, 3. त्वचा, 4. सुचारू

(घ) 1. हमारे शरीर में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ होती हैं। उनके नाम व कार्य- 1. आँख - आँखों से हम दुनिया की सभी वस्तुओं को देखते है। 2. नाक - नाक सभी प्रकार की गन्ध-सुगन्ध का अनुभव कराती है। 3. कान - कानों से हमें विभिन्न प्रकार की ध्वनियों को सुनने में सहायता मिलती है। जैसे- बातों की ध्वनि आदि। 4. जीभ - जीभ से हमें अनेक प्रकार के स्वादों का पता चलता है जैसे- कोई वस्तु या चीज खट्टी, मीठी, कड़वी चटपटी आदि। 5. त्वचा - त्वचा हमारे शरीर को एक चादर की तरह ढके रहती है।

2. त्वचा हमारे शरीर को एक चादर की तरह ढके रहती है। यह एक ज्ञानेन्द्री है। जो हमारे शरीर को सर्दी, गर्मी तथा नमी आदि का अनुभव कराती है।

3. जो अंग हमारे शरीर के अन्दर होते हैं, वे आंतरिक अंग कहलाते हैं। जैसे- मस्तिष्क, फेफड़े, हृदय, तथा यकृत आदि।

4. रोजाना व्यायाम करने से हमारा शरीर स्वस्थ्य, मजबूत व बलशाली बनता है। इसलिये हमारे जीवन में व्यायाम का बहुत महत्व है।

5. स्वस्थ्य रहने के कोई दो नियम- 1. शरीर को स्वच्छ रखना। 2. रोजाना नियमित व्यायाम करना आदि स्वस्थ रहने के नियम है।

(ङ) 1. हमारे शरीर के अंगों को दो भागों में बाँटा गया है— 1. बाह्य अंग 2. आंतरिक अंग।

2. हमारे शरीर में कितनी ज्ञानेन्द्रियाँ होती हैं? उनमें नाम लिखिए।

उ. हमारे शरीर में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ होती हैं। 1. नाक 2. कान 3. आँख 4. जीभ 5. त्वचा

3. हमारा शरीर कई प्रकार की गतियाँ करता है; जैसे- खेलना, खाना, कूदना, दौड़ना, चलना आदि।

4. जीभ हमें कड़वे, मीठे, खट्टे तथा चटपटे स्वादों का ज्ञान कराती है। तथा जीभ भोजन को मुँह में इधर-उधर करने में सहायता करती है।

3. हमारा भोजन

(क) 1. (स), 2. (स), 3. (अ), 4. (ब), 5. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✓)

(ग) 1. धोकर, 2. सन्तुलित, 3. दूध, अंडे, 4. ऊर्जा

(घ) 1. अनाज, दाले, फल व सब्जियाँ पौधों से प्राप्त होने वाले भोज्य पदार्थ कहलाते हैं।

2. दूध, माँस, अंडे आदि जन्तुओं से प्राप्त होने वाले भोज्य पदार्थ हैं।

3. पनीर, दूध, घी व मक्खन आदि वसायुक्त भोज्य पदार्थ होते हैं।

4. खीरा, टमाटर, मूली, गाजर व ककड़ी आदि कच्चे सलाद के रुप में खाए जाते हैं।

5. माँस, मछली, अंडा, दूध, दही शरीर का विकास करने में बहुत सहायक होते हैं।

6. दूध अपने-आप में संपूर्ण भोजन है।

(ङ) 1. हमें भोजन की आवश्यकता अपने शरीर के विकास तथा ऊर्जा के लिए होती है।

2. भोजन हमें दो स्रोतों में प्राप्त होता है- (i) पेड़-पौधे (ii) जन्तु।

3. एक ऐसा भोजन जिसमें शरीर के लिए सभी आवश्यक पोषक पदार्थ हों, संतुलित भोजन कहलाता है।

4. भोजन संबंधी अच्छी आदतें निम्नलिखित हैं— (i) हमें समय से भोजन करना चाहिए। (ii) भोजन से पहले व बाद में हाथ मुँह धो लेने चाहिए। (iii) भोजन को ढक्कर साफ बर्तन में रखना चाहिए। (iv) सदैव शुद्ध व ताजा भोजन करना चाहिए।

4. हमारा घर

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (ब), 4. (अ), 5. (अ)

(ख) 1. (✘), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✘), 5. (✓)

(ग) 1. (ब), 2. (द), 3. (य), 4. (स), 5. (अ)

(घ) 1. घर हमें गरमी, सरदी, वर्षा, जंगली जानवरों और चोरों आदि से बचाता है।

2. घर के अन्दर हम अपने दैनिक कार्य करते हैं; जैसे- नहाना, खाना, सोना, पढ़ना, खेलना आदि।

3. कच्चा घर मिट्टी, घास, भूसा, लकड़ी, चूने आदि से बना होता है।

4. पक्का घर ईंट, सीमेन्ट, रेत और पत्थर से बनता है। इसीलिये यह बहुत मजबूत और अधिक टिकाऊ होता है।

5. अच्छे घर में कई कमरे होने चाहिए; जैसे- रसोईघर, स्नानघर, मेहमान कक्ष, स्टोररुम आदि।

5. जल

(क) 1. (ब), 2. (स), 3. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✓)

(ग) 1. ढक्कर, 2. कीटाणु, 3. प्राणियों, 4. वर्षा

(घ) 1. हम जल का प्रयोग दैनिक कार्यों में करते है; जैसे- नहाने में, कपड़े धोने में, पीने में, खाने में आदि।

2. जल का मुख्य स्रोत वर्षा है।

3. अशुद्ध जल को शुद्ध करने के लिये जल में कीटनाशक दवाईयों का प्रयोग किया जाता है। जैसे- 1. लाल दवाई - कुएँ के जल में लाल दवाई डालने से जल के कीटाणु मर जाते हैं। अगर फिर भी जल गन्दा लगे तो जल को उबाला जाता है। 2. क्लोरीन - शहरों की टंकियों में क्लोरीन की गोलियाँ डाली जाती हैं। इससे जल के कीटाणु मर जाते हैं।

4. जल के भूमिगत स्रोत हाथ का नल, नलकूप तथा कुएँ हैं।

6. हमारे धार्मिक स्थल

(क) 1. (ब), 2. (ब), 3. (अ), 4. (ब)

(ख) 1. (✘), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✓)

(ग) 1. हिन्दू धर्म, 2. हजरत मोहम्मद, 3. गिरजाघर, 4. गुरू ग्रन्थ साहिब

(घ) 1. सभी धर्मों के लोगों के ईश्वर की प्रार्थना करने के अलग-अलग स्थान होते है। ये स्थान धार्मिक स्थल कहलाते हैं।

2. हिन्दु धर्म के लोग शिव, दुर्गा, हनुमान, विष्णु, राम, कृष्ण, गणेश आदि देवी-देवताओं की पूजा करते हैं।

3. ईसाई धर्म की स्थापना ईसा मसीह ने की थी। ईसाई लोग ईश्वर को गॉड कहकर पुकारते हैं।

4. बौद्ध धर्म लोग भगवान बौद्ध और पारसी धर्म के लोग अग्नि की पूजा करते है।

7. फसली त्योहार

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. बैसाखी, 2. उत्तर भारत, 3. सूर्य पोंगल, 4. धीरू ओणम

(घ) 1. होली का त्योहार मार्च के महीने में फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है।

2. बैसाखी का त्यौहार पंजाब का फसली त्योहार है। इस त्योहार पर लोग रंग बिरंगे कपड़े पहनकर ढोल, तालियों के साथ भाँगड़ा और गिद्धा करते हैं।

3. ओणम त्योहार के पहले दिन लोग राजा महाबली का स्वागत करते हैं और खुशी से नाचते-गाते हैं।

4. पोंगल दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य का फसली त्योहार है। यह त्योहार तीन दिन तक मनाया जाता है।

8. राष्ट्रीय त्योहार

(क) 1. (अ), 2. (स), 3. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✓)

(ग) 1. गीत-कविता, 2. राष्ट्रपति; राष्ट्रध्वज, 3. राष्ट्रीयता; एकता, 4. संस्कृति

(घ) 1. हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरु थे।

2. 26 जनवरी 1950 ई० को भारत का नया संविधान लागू किया गया था।

3. गाँधी जयंती 2 अक्टूबर को मनाई जाती है।

4. जो पर्व समस्त राष्ट्र के लोग एक समान रुप से बिना किसी भेदभाव के मनाते हैं वो राष्ट्रीय पर्व कहलाते हैं।

9. यातायात के साधन

(क) 1. (स), 2. (ब), 3. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. वायुमार्ग; जलमार्ग, 2. यातायात, 3. सावधानी, 4. रेगिस्तानी

(घ) 1. कार, बस, ट्रक, रेल, रिक्शा, ताँगा, साईकिल, बैलगाड़ी आदि स्थल मार्ग के साधन हैं।

2. गाँवों और विशेषकर पर्वतीय क्षेत्रों के छोटे-छोटे कच्चे मार्गों को 'पगडंडी' कहते हैं।

3. मालगाड़ी और ट्रक दोनो साधनों द्वारा अधिक दूर स्थानों से भारी माल लाया या ले जाया जा सकता है। इन दोनों में से ट्रक की अपेक्षा मालगाड़ी में अधिक भारी माल लाया जा सकता है।

4. ऊँट रेगिस्तानी क्षेत्रों में इसलिये उपयोगी है

क्योंकि वह अपने गद्देदार पैरों से रेत में आसानी से चल सकता है और कई दिनों तक भूख प्यासा भी रह सकता है।

10. हमारी पृथ्वी

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (ब)

(ख) 1. (✘), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. वायु, 2. सुहावना, 3. अनेक, 4. नहरों

(घ) 1. मैदानों से ऊँची तथा सपाट भूमि को 'पठार' कहते हैं।

2. पृथ्वी के तीन-चौथाई भाग पर जल तथा एक-चौथाई भाग पर भूमि है।

3. दो या दो से अधिक पहाड़ों के बीच स्थित समतल भूमि को 'घाटी' कहते हैं।

4. पृथ्वी के धरातल के चारों ओर वायु का एक घना आवरण विद्यमान हैं, जिसें वायुमंडल कहते है।

11. सूरज, चाँद और सितारे

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✓)

(ग) 1. प्रकाश; गर्मी, 2. चन्द्रमा, 3. बुध, 4. चमकीले

(घ) 1. सूर्य हमें प्रात:काल एक आग का गोला सा दिखाई देता है। इससे हमें प्रकाश तथा गर्मी प्राप्त होती है।

2. ब्रह्मांड में आठ ग्रह हैं।

3. चन्द्रमा सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होता है।

4. बृहस्पति सबसे बड़ा ग्रह है।

12. दिशाएँ और समय

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (ब)

(ख) 1. (✘), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. मध्याह्न, 2. उत्तर, 3. ध्रुव, 4. दिशाएँ

(घ) 1. दिशाओं की स्थिति जानने के लिए दिशासूचक यन्त्र का प्रयोग किया जाता है।

2. सूर्योदय से पहले के समय को ऊषाकाल तथा सूर्य निकलने के समय को प्रात:काल कहते हैं।

3. मानचित्र में ऊपर की ओर उत्तर दिशा तथा उसके विपरीत नीचे की ओर दक्षिण दिशा होती है, दाएँ हाथ की ओर पूर्व दिशा और बाएँ हाथ की ओर पश्चिम दिशा होती है।

4. उत्तर-पर्वू, दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम दिशाएँ।

13. जलवायु, मौसम और ऋतुएँ

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (स)

(ख) 1. (✘), 2. (✓), 3. (✘), 4. (✓)

(ग) खरीफ, गर्मी, वर्षा, ऊनी

(घ) 1. (स), 2. (द), 3. (य), 4. (र), 5. (अ), 6. (ब)

(ङ) 1. गरमियों में दिन में चलने वाली गरम हवाएँ 'लू' कहलाती हैं।

2. कई महीनों तक एक-सा रहना वाला मौसम ऋतु कहलाता है।

3. वर्षा ऋतु में बोयी जाने वाली फसल खरीफ की फसल होती है।

4. ऋतुओं का राजा बंसत ऋतु को कहा जाता है।

5. सरदियों में चलने वाली ठंडी हवाएँ 'शीतलहर' कहलाती हैं।

(च) 1. कई महीनों तक एक-सा मौसम रहने को ऋतु कहते हैं।

2. जलवायु के अन्तर्गत वर्षा, वायु और तापमान का अध्ययन किया जाता है।

3. सरदियों में चलने वाले तेज ठंडी हवाओं को 'शीतलहर' कहते हैं।

4. जब ऋतुओं के अनुसार मानसूनी हवाएँ बदलती है, तो उस स्थिति को मानसून कहते हैं।

14. पहिए का आविष्कार

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (स), 4. (ब), 5. (स), 6. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✘), 4. (✓)

(ग) 1. लकड़ियों, 2. चाक, 3. परिवर्तन, 4. प्रयोग

(घ) 1. आदिमानव के रहने का प्राकृतिक आवास जंगल की गुफाओं में था।

2. आदिमानव द्वारा बनायी गई बिना पहियों पहली गाड़ी स्लेज कहलाती है।

3. आदिमानव द्वारा दो पहियों के बीच लगाया गया उपकरण धुरा होता है।

4. पहिए की सहायता से बनाया गया उपकरण चाक होता है।

5. आदिमानव ने पहिए का उपयोग गाड़ी तथा चाक बनाने में किया।

(ङ) 1. प्रारंभ में आदिमानव पूरे-पूरे लट्ठों का प्रयोग भारी वस्तुओं को लुढ़काने के लिए करता था। बाद में एक लट्ठे से गोल टुकड़ा काटकर उसने पहला पहिया बनाया।

2. आदिमानव प्राकृतिक गुफाओं में रहता था तथा वह कंद-मूल, फल तथा कच्चा माँस खाता था।

3. चाक के निर्माण से आदिमानव मिट्टी के बर्तन बनाने लगा।

4. पहिए हमारे लिए इसलिए महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि साइकिल, स्कूटर, मोटरसाइकिल, कार, बस, ट्रक, रेलगाड़ी आदि पहिए की सहायता से ही चलते हैं।

15. महाराणा प्रताप

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. राणा सांगा, 2. अरावली, 3. मेवाड़ 4. सपूत

(घ) 1. महाराणा प्रताप मेवाड़ के राजा थे।

2. महाराणा प्रताप के घोड़े का नाम चेतक था।

3. महाराणा प्रताप का मुगलों के साथ युद्ध 'हल्दी घाटी' नामक स्थान पर हुआ था।

4. महाराणा प्रताप के पिता का नाम 'उदय सिंह' था।

सामाजिक कक्षा— 3

1. पृथ्वी : हमारा घर

(क) 1. (ब), 2. (ब), 3. (स), 4. (अ), 5. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. नील आर्मस्ट्रांग, 2. क्षितिज, 3. साहसी; मैगेलन, 4. आकार; प्रकार

(घ) 1. हमारी पृथ्वी के चारों ओर वायु का एक आवरण है, जिसे 'वायुमंडल' कहते हैं।

2. पृथ्वी के सही आकार के विषय में साहसी नाविक 'मैगेलन' ने ज्ञात किया, उसने लगातार तीन वर्ष तक एक ही दिशा में समुद्री यात्रा की, यात्रा के दौरान उसने पाया कि वह जिस स्थान से यात्रा के लिए चला उसी स्थान पर वापस पहुँच गया। इसी कारण पता चला कि 'पृथ्वी गोल' है।

3. नील आर्मस्ट्राँग ने चंद्रमा की यात्रा जुलाई 1969 में की थी।

4. सौर परिवार के सदस्यों के नाम-सूर्य, बुध, मंगल, शुक्र, पृथ्वी, बृहस्पति, शनि, अरुण, वरुण हैं।

2. पृथ्वी की भौतिक संरचना

(क) 1. (अ), 2. (अ), 3. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. पृथ्वी, 2. आर्कटिक महासागर, 3. A, 4. एशिया महाद्वीप

(घ) 1. (स), 2. (द), 3. (य), 4. (ब), 5. (अ)

(ङ) 1. ग्लोब — ग्लोब को पृथ्वी के बारे में जानने के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

2. पृथ्वी का जलीय भाग — हमारी पृथ्वी का 70 प्रतिशत भाग जलीय है।

3. विश्व के महाद्वीप — हमारे विश्व में महाद्वीप कुल सात हैं।

4. विश्व के महासागर — विश्व में महासागरों के संख्या पाँच हैं।

5. पृथ्वी की वार्षिक गति — पृथ्वी को सूर्य का एक चक्कर लगाने में 365 दिन लगते है। जिसे पृथ्वी की वार्षिक गति कहते हैं।

(च) 1. हमारी पृथ्वी पर सात महाद्वीप तथा पाँच महासागर हैं।

2. जब पृथ्वी अपनी धुरी से एक चक्कर 24 घंटे में पूरा करती है। तो उसे पृथ्वी की 'दैनिक गति' कहते हैं।

3. अंटार्कटिक महासागर 'दक्षिणी ध्रुव' पर स्थित है, तथा इसका क्षेत्रफल 1 करोड़ 42 लाख वर्ग किमी है।

4. नीचे धंसे हुए बड़े जलयुक्त भाग को 'महासागर' कहते हैं।

3. भारत की भूमि और जलवायु

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (ब), 4. (स), 5. (अ), 6. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✘), 4. (✓)

(ग) 1. मैदान, 2. समूह, 3. जलवायु, 4. K-2

(घ) 1. माउंट एवरेस्ट - हिमालय संसार का सबसे ऊँचा पर्वत है। इस पर्वत की सबसे ऊँची चोटी को माउंट एवरेस्ट कहते हैं।

2. गंगा की सहायक नदियाँ - गोमती, घाघरा, गंडकी, कोसी और यमुना आदि हैं।

3. पठारी भागों से प्राप्त होने वाले खनिज - पठारी भागों से अनेक प्रकार के खनिज प्राप्त होते हैं; जैसे- लोहा, कोयला, सोना, ताँबा आदि।

4. थार का मरुस्थल - जहाँ वर्षा कम होती है और रेत ही रेत होता है। वह स्थान मरुस्थल कहलाता है। 'थार का मरुस्थल' राजस्थान में स्थित है।

5. जलवायु - किसी स्थान के मौसम की लगभग एक समान रहने वाली दशा को जलवायु कहते हैं।

(ङ) 1. जो मैदान समुद्र तट के साथ-साथ फैले हुए रहते हैं, उन्हें 'तटीय मैदान' कहते हैं।

2. भारत के उत्तर में बहुत ही ऊँचे-ऊँचे पर्वत हैं, जिन्हें हिमालय पर्वत माला कहते हैं।

3. दक्षिण के तटीय मैदानों का निर्माण महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी तथा ताप्ती आदि नदियों द्वारा हुआ है।

4. पठारी भागों से लोहा, कोयला, सोना, ताँबा आदि खनिज प्राप्त किये जाते है।

4. भारत के राज्य

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (अ), 4. (स), 5. (स), 6. (ब)

(ख) 1. (✘), 2. (✓), 3. (✘), 4. (✓)

(ग) 1. नई दिल्ली, 2. 100 करोड़, 3. राज्य, 4. 28 राज्य; 9

(घ) 1. (स), 2. (द), 3. (र), 4. (ब), 5. (अ), 6. (य)

(ङ) 1. केंन्द्र सरकार देश में विभिन्न स्थानों पर रहने वाले नागरिकों की सभी समस्याओं को समझकर उनका समाधान करने का कार्य करती है।

2. भारत का क्षेत्रफल - रुस, कनाडा, चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया तथा ब्राजील से कम है।

3. भारत की राजधानी का नाम नई दिल्ली है।

4. देश की समस्या के समाधानों के लिए देश को छोटे-छोटे राज्यों में बाँटा गया है। जिनमें 28 राज्य और 9 केंद्रशासित प्रदेश हैं।

5. भारतीय भोजन

(क) 1. (ब), 2. (ब), 3. (स), 4. (अ), 5. (स), 6. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✓)

(ग) 1. समुद्र; कश्मीर, 2. तिलहन, 3. विशाल, 4. यातायात

(ग) 1. नई दिल्ली, 2. 100 करोड़, 3. राज्य, 4. 28 राज्य; 9

(घ) 1. जिन पौधों के बीजों से खाने के लिये तेल निकाला जाता है, उन्हें तिलहन कहते है।

2. किसान विभिन्न प्रकार की फसलें उगाने में सक्षम है जैसे- धान, गेहूँ, मक्का, ज्वार तथा बाजरा, ये हमारे प्रमुख खाद्यान हैं।

3. जलवायू, भू-भाग तथा वर्षा की भिन्नता के कारण ही किसान अलग-अलग स्थानों में विविध प्रकार की फसले उगाने में सक्षम है।

4. शकााहारी लोग केवल दाल, सब्जी, अनाज तथा फल खाते हैं।

6. भारतीय वेशभूषाएँ

(क) 1. (स), 2. (अ), 3. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. ऊनी, 2. धारण, 3. स्वच्छ, 4. पैंट

(घ) 1. वस्त्र हमें, सर्दी, धूप, वर्षा, धूल और कीटों से बचाते है। इसलिये हमें वस्त्रों की आवश्यकता होती है।

2. मैदानी भागों में लोग भिन्न प्रकार के अनाजों की खेती करते है। जिसमें जल की अधिक मात्रा में आवश्यकता होती है।

3. हमारे देश की अधिकांश महिलाएँ लहँगा, साड़ी, ब्लाऊज, सलवार-कुर्ता, घाघरा-चोली और सिर पर ओढ़नी पहनती हैं।

4. भारत के पुरुष अधिकतर पैंट-कमीज, कुर्ता-पजामा, धोती-कुर्ता या कुर्ता-लुँगी और सिर पर पगड़ी या टोपी पहनते हैं।

7. हमारे व्यवसाय

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (स), 4. (ब), 5. (स), 6. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. आवश्यकताएँ, 2. संसाधित; निर्यात, 3. लेटेक्स, 4. चीनी; गुड़

(घ) 1. कृषि - भारत में विभिन्न उद्योग कृषि पर ही निर्भर करते हैं।

2. मछली पकड़ना - मछुआरे मछली पकड़ने के लिए जाल, नौकाओं तथा बड़े जहाजों का प्रयोग करते हैं।

3. खनन - भारत में अनेक प्रकार के खनन पाए जाते है।

4. पशुपालन - पशुपालन भी खेती-बाड़ी का एक अंग है।

5. वनों से संबंधित रोजगार - लकड़ी, गोंद, रबड़, दवाई आदि वनों से संबंधित रोजगार हैं।

(ङ) 1. जो कार्य धन कमाने के लिए किया जाता है, उसे व्यवसाय कहते हैं।

2. खेती, पशुपालन, मुर्गी पालन, चाय का बागान, इमारती लकड़ी आदि कृषि पर आधारित व्यवसाय हैं।

3. खेती-बाड़ी करना भारत के लोगों का प्रमुख व्यवसाय है।

4. वनों से हमें लकड़ी, गोंद, रबड़, दवाई तथा जड़ी-बूटियाँ आदि प्राप्त होती हैं।

8. यातायात के साधन

(क) 1. (ब), 2. (स), 3. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✘), 4. (✓)

(ग) 1. वायुमार्ग, 2. आर्थिक विकास, 3. छोटी सड़कें, 4. रेलगाड़ी

(घ) 1. यातायात के साधनों का भारत के आर्थिक विकास में बहुत योगदान है। इन साधनों से कृषि विकास, उद्योग तथा व्यापार को बढ़ाने में बहुत सहायता मिली, इस कारण देश की प्रगति में यातायात के साधनों का बहुत महत्व है।

2. यातायात के साधन तीन प्रकार के होते हैं- स्थल यातायात, वायु यातायात व जल यातायात।

3. अपने ही शहर में आने-जाने के लिए हम कार, साईकिल, रिक्शा, ताँगा, बस या स्कूटर आदि साधनों को उपयोग में लाते हैं।

4. यात्रा करने तथा सामान को एक स्थान से दूसरे स्थानों पर लाने-ले जाने के लिए जिन साधनों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें यातायात के साधन कहते हैं।

9. संचार व्यवस्था

(क) 1. (ब), 2. (स), 3. (अ)

(ख) 1. (✘), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✓)

(ग) 1. टेलीविजन; समाचार पत्रों, 2. टेलीग्राम, 3. उपग्रह, 4. मोबाइल

(घ) 1. सन्देश भेजना तथा प्राप्त करना ही 'संचार' कहलाता है।

2. आवश्यक सन्देश को अतिशीघ्र भेजने के लिए 'टेलीग्राम' भेजा जाता है और यह टेलीग्राम टेलीग्राफ़ ऑफिस से भेजा जाता है।

3. समाचार-पत्र, रेडियो व टेलीविजन से देश-भर के लाखों लोगों को एक साथ संदेश दिया जा सकता है।

4. मोबाइल फोन आधुनिक युग का तीव्रतम संचार साधन है, जिसके द्वारा हम अपने मित्रो तथा रिश्तेदारों से दुनिया के किसी भी कोने से सीधे बात कर सकते है। इसे अपने साथ कही भी ला सकते है।

10. हमारे सहायक

(क) 1. (स), 2. (ब), 3. (अ), 4. (अ), 5. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✘), 4. (✓)

(ग) 1. रक्षा, 2. आधुनिक युग, 3. उत्सुकता, 4. स्वयं

(घ) 1. बुखार आने पर - बुखार आने पर पर हम डॉक्टर के पास जायेंगे।

2. यदि आप के घर में चोर घुस जाएँ - यदि हमारे घर में चोर घुस जाएँ तो सबसे पहले पुलिस को फोन करेंगे।

3. शिक्षा ग्रहण करने - शिक्षा को ग्रहण करने के लिए हमे विद्यालय जायेंगे।

4. अपने पत्र आदि के बारे में पूछने - अपने पत्र आदि के बारे में पूछने के लिये डाकिया से बात करनी चाहिये।

5. किसी प्रश्न का उत्तर पूछने - किसी प्रश्न का उत्तर पूछने के लिये शिक्षक के पास जाना चाहिए।

6. किसी रोग की दवाई पूछने – किसी रोग की दवाई पूछने के लिये डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिये।

(ङ) 1. स्वस्थ रहने के लिए डॉक्टर की सहायता की आवश्यकता होती है। अस्वस्थ होने पर वे हमारी देखभाल करते हैं और हमें दवाई, इंजेक्शन आदि देते है, जिससे हम स्वस्थ रहते हैं।

2. समाज में कुछ असामाजिक तत्व तथा अपराधी होते हैं, ऐसे अपराधिक तत्वों से सिपाही हमारी रक्षा करता है।

3. प्रत्येक शहर और गाँव में एक सरकारी अस्पताल और एक प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र होता है। इन स्वास्थ्य केन्द्रों में टीका, दवाई तथा जाँचों की निशुल्क व्यवस्था होती है।

4. हमें शिक्षक से अच्छी आदते, शिष्टाचार और अपने उज्जवल भविष्य के लिये शिक्षा प्राप्त होती है।

11. ग्राम पंचायत तथा नगर पालिका

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✘), 4. (✓)

(ग) 1. पार्षद, 2. विकास, 3. गठन, 4. मेयर

(घ) 1. नगर पालिका किसी शहर या कस्बे में जन-सुविधाएँ प्रदान करती है।

2. गाँव का प्रत्येक स्त्री-पुरुष जिस की आयु 18 वर्ष हो, ग्राम पंचायत का सदस्य होता है। गाँव के लोग मतदान करके पंचायत के लोगों का चुनाव करते हैं। इन्हें पंच कहते हैं। इनमें एक सरपंच चुना जाता है।

3. एक नगर में महापालिका के 15 से 60 सदस्य हो सकते हैं। पार्षद अपने मुखिया को चुनते हैं, जिसे 'सभापति' कहते हैं।

4. नगर महापालिका संघ के अन्तर्गत- दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई आदि बड़े शहर आते है। इस संघ के मुखिया को 'मेयर' कहते हैं।

12. दिल्ली

(क) 1. (ब), 2. (स), 3. (अ), 4. (अ), 5. (ब), 6. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. विषम, 2. संस्कृति; धर्म, 3. 1911, 4. 1947

(घ) 1. दिल्ली के धर्मिक स्थान – जामा मस्जिद, बिरला मंदिर, बंगला साहिब गुरुद्वारा, सीस गंज गुरुद्वारा आदि।

2. दिल्ली के ऐतिहासिक स्मारक – लाल किला, कुतुबमीनार, इंडिया गेट, जंतर मंतर आदि।

3. दिल्ली की जलवायु – दिल्ली की जलवायु विषम है।

4. दिल्ली के बाजार – चाँदनी चौक, करोलबाग, पालिका बाजार आदि।

5. दिल्ली के दो प्रसिद्ध गुरुद्वारे – बंगला साहिब गुरुद्वारा और सीसगंज गुरुद्वारा।

(ङ) 1. जिस स्थान या नगर में अधिक संख्या में लोग बस जाते हैं, वे नगर 'महानगर' कहलाते हैं।

2. दिल्ली उत्तर प्रदेश और हरियाणा राज्यों के बीच स्थित है।

3. दिल्ली के दर्शनीय स्थल अक्षरधाम मंदिर, जामा मस्जिद, बंगला साहिब गुरुद्वारा, सीसगंज गुरुद्वारा, बिरला मंदिर आदि हैं।

4. भारत के चार प्रमुख महानगर हैं– दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और चेन्नई।

13. कोलकाता

(क) 1. (अ), 2. (स), 3. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✓)

(ग) 1. पश्चिम बंगाल, 2. समुद्र तट, 3. बंगाली, 4. हुगली नदी

(घ) 1. कोलकाता में देखने योग्य आकर्षक स्थल— हावडा ब्रिज, विक्टोरिया मैमोरियल, राष्ट्रीय संग्राहलय, चिड़ियाघर, ईडेन गार्डन आदि हैं।

2. कोलकाता के लोगों का प्रिय भोजन मछली चावल है।

3. कोलकाता शहर पश्चिम बंगाल में हुगली नदी के तट पर स्थित है।

4. कोलकाता में मुख्यत: सूती, ऊनी, पटसन, कागज और चमड़े आदि के उद्योग हैं।

14. मुंबई

(क) 1. (ब), 2. (ब), 3. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✘), 4. (✘)

(ग) 1. तमाशा, 2. गेटवे ऑफ इंडिया, 3. ट्रांबे, 4. अलफांसो

(घ) 1. मुंबई पश्चिमी घाट के समुद्र तट पर स्थित है।

2. सांताक्रुज और सहारा मुंबई के प्रमुख हवाई अड्डे हैं तथा सहारा को भारत का व्यस्ततम् हवाई अड्डा कहा जाता है।

3. गेटवे ऑफ इंडिया, एलीफेंटा, हाजी अली का मकबरा, जुहू बीच, चौपटी बीच आदि मुंबई के दर्शनीय स्थल हैं।

4. मुंबई के निकट ट्रांबे में भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र है।

15. चेन्नई

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. गिंडी, 2. भरतनाट्यम, 3. चौथा, 4. आर्द्र

(घ) 1. चेन्नई महानगर में अनेक छोटे-बड़े उद्योग हैं। इनमें अधिकतर- सूती वस्त्र, रेशमी वस्त्र, ऑटोमोबाइल, साइकिल, रेल के डिब्बे, मशीनरी, दैनिक उपयोगी वस्तुएँ आदि बनाई जाती हैं।

2. चेन्नई में अनेक दर्शनीय स्थल हैं। जैसे- सेंटथॉमस चर्च, पार्थसारथि मन्दिर, कपिलेश्वर मन्दिर, गाँधीमंडपम, स्नेक पार्क तथा संग्राहलय आदि।

3. आरंभ में अंग्रेजों ने यहाँ सेंट जॉर्ज नामक एक छोटा-सा किला बनाया था। इसी छोटे किले से ही चेन्नई शहर का जन्म हुआ।

4. चेन्नई का प्रमुख त्योहार 'पोगंल' है, यह त्योहार तीन दिन तक मनाया जाता है।

16. पर्यावरण एवं प्रदूषण

(क) 1. (स), 2. (अ), 3. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✘), 4. (✓)

(ग) 1. ऑक्सीजन, 2. तीन, 3. स्वास्थ्य, 4. पेड़

(घ) 1. पर्यावरण का अर्थ उन सभी प्राकृतिक वस्तुओं से है, जो हमारे चारों ओर विद्यमान हैं; जैसे- पृथ्वी, जल, अग्नि, वनस्पति, जीव-जंतु आदि।

2. प्रदूषण तीन प्रकार का होता है- 1. वायु प्रदूषण 2. जल प्रदूषण 3. ध्वनि प्रदूषण

3. हम मनुष्य नदियों में मिलों का कचरा, मलमूत्र आदि बहाते रहते हैं, जिसके कारण जल प्रदूषण होता है।

4. प्रदूषण को नियंत्रित करने के दो प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं— • हमेशा अपने घर तथा आस-पास सफाई रखनी चाहिए। • अधिक से अधिक मात्रा में पेड़ लगाने चाहिए।

17. जलवायु तथा ऋतुएँ

(क) 1. (स), 2. (ब), 3. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✓)

(ग) 1. आग; धूप, 2. मानसूनी, 3. शीत ऋतु, 4. भू-भाग

(घ) 1. भारत की जलवायु में दो समानताएँ देखने को मिलती हैं— 1. उच्च तापमान 2. मानसूनी पवनें।

2. अत्यधिक तेज व ठंडी हवाओं को 'शीत लहर' कहते है।

3. वायु के रिक्त हुए स्थान को भरने के लिए सागर की ओर से जो ठंडी तथा नमी युक्त हवाएँ चलती हैं, उन्हें मानसूनी हवाएँ कहते हैं।

4. वर्षा ऋतु किसानों के लिए खुशी का पैगाम लाती है। इस ऋतु में फसले हरी-भरी होती हैं। साथ ही धान की रोपाई भी इसी ऋतु में होती है। सितम्बर में वर्षा समाप्त हो जाती है। इसी ऋतु चक्र पर भारत की उपजें आधारित हैं।

सामाजिक कक्षा— 4

1. भारत-हमारा सुंदर देश

(क) 1. (स), 2. (अ), 3. (अ), 4. (ब), 5. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. विविधता, 2. कन्याकुमारी, 3. नदियाँ, 4. महाद्वीप, 5. राजस्थान

(घ) 1. (स), 2. (द), 3. (य), 4. (अ), 5. (ब)

(ङ) 1. हमारे देश का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 किलोमीटर है।

2. जो भूमि आस-पास की भूमि से ऊँची, चपटी तथा पथरीली हो वह 'पठार' कहलाती है।

3. भारत के दक्षिणी तट पर बंगाल की खाड़ी, अरब सागर और हिंद महासागर हैं।

4. पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, भूटान, चीन, बांग्लादेश, म्यांमार और श्रीलंका भारत के पड़ोसी देश हैं।

5. भारत की मुख्य भौतिक विशेषताएँ यहाँ की विषम भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं। इसी के कारण हमारे देश में कृषि उपजों, उद्योगों, कारखानों, व्यवसाय तथा रहन-सहन के स्तरों में विभिन्नता पाई जाती है।

2. उत्तर के पहाड़

(क) 1. (ब), 2. (ब), 3. (ब), 4. (अ), 5. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✓), 3. (✘), 4. (✓)

(ग) 1. घाटियाँ, 2. दर्रा, 3. बरफ़ीली, 4. तलहटी; उपजाऊ

(घ) 1. (स), 2. (द), 3. (य), 4. (अ), 5. (ब)

(ङ) 1. हिमालय की दो ऊँची चोटियाँ — 1. माउंट एवरेस्ट 2. K-2

2. माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली दो भारतीय महिलाएँ — 1. बछेन्द्री पाल 2. संतोष यादव

3. उत्तराखंड के दो पहाड़ी क्षेत्र — 1. नैनीताल 2. मसूरी

4. पहाड़ों पर खेले जाने वाले दो खेल — 1. ट्रैकिंग 2. स्कीइंग

(च) 1. उत्तरी भारत की पर्वत श्रृंखलाओं में हिमालय पर्वत श्रृंखला विश्व की सबसे ऊँची पर्वत श्रृंखला है। यह पर्वत-श्रृंखला उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में जम्मू-कश्मीर से उत्तर-पूर्व में अरुणाचल प्रदेश तक चौड़ी पट्टी की भाँति 2500 किमी तक फैली हुई है। इसकी चौड़ाई 240-320 किमी तक है। पूर्व-उत्तर में यह भारत-म्यांमार की सीमा से सटा है। इन्हें पूर्वांचल कहते हैं।

2. हिमालय पर्वतमाला में चार समानांतर पर्वत मालाएँ निम्नलिखित हैं— (i) महाहिमालय (हिमाद्रि) (ii) मध्य हिमालय (हिमाचल) (iii) लघु हिमालय (शिवालिक) (iv) पूर्वाचल

3. माउंट एवरेस्ट पर पहुँचने वाली भारतीय महिलाएँ बछेन्द्री पाल और संतोष यादव हैं।

4. माउंट एवरेस्ट, K-2, कंचनजंगा महाहिमालय की चोटियाँ हैं।

3. उत्तर का विशाल मैदान

(क) 1. (ब), 2. (ब), 3. (अ), 4. (ब), 5. (ब)

(ख) 1. (✘), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✓)

(ग) 1. ब्रह्मपुत्र, 2. मिट्टी, 3. पाकिस्तान, 4. हिमालय

(घ) 1. (द), 2. (अ), 3. (ब), 4. (य), 5. (स)

(ङ) 1. भारत की सबसे लंबी नदी— गंगा

2. विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा— सुन्दरवन डेल्टा

3. हरियाणा की मुख्य फसल— गेहूँ और गन्ना

4. पंजाब का धार्मिक त्यौहार— गुरुपर्व, लौहड़ी और बैसाखी

(च) 1. किसी नदी और सहायक नदियों द्वारा सींचा गया क्षेत्र बेसिन कहलाता है।

2. उत्तरी मैदान का निर्माण हिमालय से निकलने वाली नदियों द्वारा लाई गई मिट्टी से हुआ है, यह मैदान दक्षिण में पंजाब से लेकर पूर्व में असम तक विस्तृत है।

3. सतलुज बेसिन की मुख्य फसलें गेहूँ, चावल, गन्ना और दालें आदि हैं। इस बेसिसन के मुख्य नगर अमृतसर, लुधियाना और जालंधर हैं।

4. हिमालय से निकलने वाली नदियाँ सदा जल से भरी रहती हैं, पिघलते हुए बरफ से उन्हें जल मिलता रहता है। इन नदियों द्वारा पूरे वर्ष सिंचाई की जाती है जबकि पठारी की नदियों में गर्मी की ऋतु में अधिक जल नहीं रहता है।

4. भारत का मरुस्थल

(क) 1. (स), 2. (ब), 3. (अ), 4. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. वनस्पति; काटेदार झाड़ियाँ, 2. गुजरात; राजस्थान, 3. ऊँट, 4. सूखा

(घ) 1. (स), 2. (य), 3. (द), 4. (अ), 5. (ब)

(ङ) 1. सूखी, रेतीली, बंजर भूमि को 'मरुस्थल' कहते हैं।

2. मरुस्थल के कुछ भागों में भूमिगत जल झरनों के द्वारा धरातल पर आ जाता है। ऐसे स्थानों को 'मरुदयान' कहते हैं।

3. मरुभूमि का जहाज ऊँट को कहा जाता है क्योंकि उसके पैर गद्देदार होते हैं और वह गरम बालू पर आसानी से दौड़ सकता है।

4. मरुस्थलीय क्षेत्र की जलवायु बड़ी विचित्र है। यहाँ गर्मियों में अधिक गर्मी और सर्दियों में अधिक सर्दी पड़ती है।

5. दक्षिण का पठार

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (ब), 4. (ब), 5. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. ज्वार-बाजरा, 2. नीलगिरि, 3. मध्यवर्ती; कृष्णा और नर्मदा, 4. कर्नाटक

(घ) 1. (य), 2. (स), 3. (द), 4. (अ), 5. (ब)

(ङ) स्वयं कीजिए।

(च) 1. पठारी भाग में कृष्णा, नर्मदा, गोदावरी तथा ताप्ती आदि मुख्य महानदियाँ बहती हैं।

2. दक्षिण के पठार के प्रमुख पर्वत— अरावली, विंध्याचल, सतपुड़ा और राजमहल हैं।

3. दक्षिण के पठारी भाग उद्योगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की खेती की जाती है; जैसे-कपास, गन्ना, ज्वार-बाजरा, तम्बाकू, मूँगफली तथा साथ ही रबड़, सिनकोना और तिलहन आदि की फसलें भी यहाँ उगाई जाती हैं।

4. काली मिट्टी का निर्माण ज्वालामुखी चट्टानों के द्वारा हुआ है। ये चट्टाने मौसम के प्रभाव में आकार धीरे-धीरे टूटकर मिट्टी में परिवर्तित हो जाती हैं। जिसे काली मिट्टी कहा जाता है। कपास की खेती के लिये यह मिट्टी बहुत उपयोगी मानी जाती है।

6. तटवर्ती मैदान तथा द्वीप समूह

(क) 1. (स), 2. (अ), 3. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. कन्याकुमारी; डेल्टा, 2. मुंबई, 3. में 36 द्वीपों, 4. समुन्द्र-तटीय

(घ) 1. समुद्र-तटीय मैदान उन्हें कहा जाता है। जो सागर के तट और दक्षिण के पठार के बीच सकरा क्षेत्र होता है। इन्हें दो भागों में विभाजित किया जा सकता है— • पश्चिमी समुद्र-तटीय मैदान • पूर्वी समुद्र-तटीय मैदान

2. सागर से घिरे हुए भूमि के टुकड़े को 'द्वीप' कहते हैं।

3. पूर्वी समुद्र तट पर महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियाँ अपने मुहाने पर डेल्टा बनाती हैं।

4. अंडमान निकोबर द्वीप समूह 'बंगाल की खाड़ी' में स्थित हैं। इसमें 293 द्वीप हैं।

7. मिट्टी

(क) 1. (स), 2. (ब), 3. (अ), 4. (ब), 5. (स)

(ख) 1. (✘), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. मिट्टी, 2. संसाधन, 3. वृक्षारोपण, 4. लाल मिट्टी

(घ) 1. (स), 2. (द), 3. (य), 4. (ब), 5. (अ)

(ङ) 1. मिट्टी, नदियाँ, झील, पर्वत, समुद्र, वन तथा खनिज पदार्थ आदि सभी प्राकृतिक संसाधन हैं।

2. भारत में विभिन्न प्रकार की मिट्टी पाई जाती है। जिनमें दोमट मिट्टी, काली मिट्टी, लाल मिट्टी, रेतीली मिट्टी, लेटराइट मिट्टी और वनीय मिट्टी प्रमुख है।

3. मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बनाए रखने के लिए इसका संरक्षण करना आवश्यक है। यदि मिट्टी की यह उपजाऊ परत नष्ट हो जाए तो फिर धरती पर कोई भी फसल पैदा नहीं की जा सकेगी।

4. मिट्टी में पेड़-पौधे की सड़ी-गली पत्तियाँ, जड़े, घास तथा जीवों के अवशेष मिले होते हैं, इन्हें ह्यूमस कहते हैं।

5. भूमि और मिट्टी में अन्तर

भूमि	1. भूमि एक निचली सतह है। 2. भूमि खाद्य तथा पानी को निचली सतह में संचित करती है।
मिट्टी	1. मिट्टी भूमि को ऊपरी सतह है। 2. मिट्टी भूमि से संचित किया हुआ खाद्य-पानी फसलों के लिये लेती है।

8. जल संसाधन

(क) 1. (स), 2. (स), 3. (ब), 4. (अ), 5. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. दक्षिण भारत, 2. बिजली, 3. चट्टानी, 4. ऊँची; मजबूत

(घ) 1. (स), 2. (द), 3. (य), 4. (ब), 5. (अ)

(ङ) 1. भारत और नेपाल के बीच कोसी परियोजना के अन्तर्गत समझौता हुआ था।

2. सिंचाई के लिए अनेक स्त्रोतों का प्रयोग किया जाता है; जैसे-नदी, नहरे, कुएँ, नलकूप, तालाब और बाँध।

3. किसी नदी की सम्पूर्ण घाटी के विकास का उद्देश्य सामने रखकर जो योजनाएँ बनाई जाती हैं, उन्हें नदी-घाटी परियोजना कहते हैं।

4. भारत की तीन बहुउद्देशीय परियोजनाएँ निम्नलिखित हैं— • भाखड़ा नांगल परियोजना • दामोदर घाटी परियोजना • कोसी परियोजना

5. सिंचाई के अनेक साधन हैं। जिनमें से एक साधन नदी है।

6. नदियों के जल का उचित प्रयोग करने के लिए नदियों पर बाँध बनाए जाते हैं जिनकी दीवारे ऊँची और मजबूत होती है। इसके अन्तर्गत आवश्यकतानुसार कार्यों के लिये जल दिया जाता है। ये बाँध बहुउद्देशीय परियोजनाएँ कहलाते हैं।

9. वन एवं वन्य-जीवन

(क) 1. (स), 2. (ब), 3. (स), 4. (ब), 5. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. 100 सेमी; 200 सेमी, 2. ऊँचे और शंक्वाकार, 3. कच्चामाल, 4. सुंन्दरवन

(घ) 1. (द), 2. (य), 3. (र), 4. (स), 5. (अ), 6. (ब)

(ङ) 1. वन प्रकृति द्वारा प्रदत्त महत्वपूर्ण उपहार है। वनों से हमें बहुत उपयोगी वस्तुएँ प्राप्त होती हैं; जैसे— शुद्ध हवा, इमारती लकड़ी, फल-फूल, जड़ी-बूटियाँ, औषधि आदि।

2. हमारे देश में अनेक प्रकार के वन पाए जाते हैं जो इस प्रकार हैं— • सदाबहार वन • पतझड़ वाले वन • मरुस्थली या शुष्क वन • ज्वार-भाटीय अथवा सुन्दरवन • पर्वतीय वन

3. सदाबहार वनों में बाँस, ताड़, रबड़, बेंत और नारियल आदि के वृक्ष पाए जाते हैं।

4. ये वन समुद्र के निकट डेल्टाई क्षेत्रों अथवा ज्वार-भाटीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं। इन वनों को सुन्दरी वृक्षों की अधिकता के कारण सुन्दरवन कहा जाता है।

10. भारत के खनिज संसाधन

(क) 1. (ब), 2. (ब), 3. (अ), 4. (अ), 5. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. कर्नाटक, 2. नमक, 3. ऐलुमिनियम, 4. बहुमूल्य

(घ) स्वयं कीजिए।

(ङ) 1. पृथ्वी से खोदकर निकाली गई महत्वपूर्ण वस्तुएँ अथवा पदार्थ ही खनिज कहलाते हैं; जैसे— कोयला, लोहा, सोना, चाँदी, खनिज तेल आदि।

2. भारत में कोयला झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश आदि राज्यों में पाया जाता है।

3. हम जिस रुप में लोहे का प्रयोग करते हैं वह भूमि के भीतर उस रुप में प्राप्त नहीं होता है। जिस अशुद्ध रुप में यह खानों में हमे उपलब्ध होता है उसे लौह अयस्क कहते हैं।

4. मैंगनीज अत्यधिक मात्रा में ओडिशा, झारखंड, कर्नाटक, गुजरात और महाराष्ट्र में पाया जाता है, इसका प्रयोग लोहे से इस्पात बनाने, दवाइयाँ तथा रंग बनाने में किया जाता है।

5. भारत में गुवाहटी, मुम्बई, चेन्नई, कोचीन और बड़ौदा में तेलशोधक कारखाने हैं।

11. कृषि

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (ब), 4. (ब), 5. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✘), 4. (✓)

(ग) 1. पौष्टिक तत्व, 2. कपास; पटसन, 3. सर्वाधिक, 4. अधिक वर्षा

(घ) 1. स्वतंत्रता के बाद संपूर्ण देश में कृषि विकास के अनेक कार्यक्रम चलाए गए, जिसको हरित-क्रांति का नाम दिया गया।

2. हमारे देश में अनेक प्रकार की फसलें उगाई जाती है जैसे-गेहूँ, चावल, गन्ना, दलहनी फसलें आदि मुख्य कृषि उपजें है।

3. रबड़ का उत्पादन गर्म जलवायु तथा अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में होता है, भारत में मात्र केरल राज्य में ही इसकी खेती होती है।

4. दाल वाली फसलों को दलहनी फसलें कहते है। चना, मटर, मसूर, अरहर, मूँग, उड़द आदि मुख्य दहलनी फसलें हैं।

5. भारत में असम, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, केरल तथा तमिलनाडु में चाय और कॉफी की फसलें उगायी जाती हैं।

12. उद्योग-धन्धे

(क) 1. (ब), 2. (स), 3. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. कुटीर उद्योग, 2. 270, 3. शोधित, 4. बेरोजगारी

(घ) 1. जिन उद्योगों में कम श्रमिक तथा कम धन की अवश्यकता होती है तो उन उद्योगें को हम छोटे उद्योग कहते हैं तथा जिन उद्योगों में अधिक श्रमिक और अधिक धन की आवश्यकता होती है वे बड़े उद्योग कहलाते हैं।

2. भारत का अति प्राचीन उद्योग कपड़ा उद्योग है।

3. लोहा-इस्पात, जलयान व वायुयान, तेलशोधक कारखाने, तथा सीमेन्ट उद्योग आदि खनिजों पर आधारित उद्योग हैं।

4. जूट उद्योग हमारे देश के उद्योगों में है जिससे अनेक प्रकार की वस्तुएँ बनाई जाती हैं जैसे- टाट, बोरे, चटाइयाँ, टोकरी आदि।

13. यातायात के साधन

(क) 1. (स), 2. (ब), 3. (अ), 4. (ब), 5. (अ), 6. (स)

(ख) 1. (✘), 2. (✓), 3. (✘), 4. (✘)

(ग) 1. 1950, 2. 2000, 3. समुद्र तट, 4. 17 लाख

(घ) 1. इंदिरा गाँधी; सहारा, 2. दिल्ली; कोलकाता, 3. चेन्नई; कांदला, 4. कार; बस

(ङ) 1. यातायात के साधनों को तीन भागों में विभाजित किया गया है— 1. स्थल यातायात 2. वायु मार्ग 3. जल मार्ग

2. सड़के तीन प्रकार की होती है, राष्ट्रीय राजमार्ग की कुल लम्बाई लगभग 28,820 किमी० है।

3. ग्रांड ट्रंक रोड़ भारत की सबसे लंबी सड़क है। इसकी लंबाई लगभग 2,000 किमी है।

4. भारत की जल यातायात में अनेक प्रकार की नदियाँ व सागर यातायात को सुविधा प्रदान करती हैं; जैसे- ताप्ती नदी, ब्राह्मणी नदी, गंगा नदी, यमुना नदी और साथ में हिन्द महासागर, प्रशान्त महासागर, अटलांटिक महासागर आदि।

14. संचार के माध्यम

(क) 1. (स), 2. (स), 3. (अ), 4. (स), 5. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✓)

(ग) 1. लोकप्रिय, 2. चलचित्र, 3. संक्षिप्त, 4. पार्सल

(घ) 1. संचार हमेशा से ही मानव का अभिन्न अंग रहा है। संचार एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम किसी भी स्थान पर सन्देश भेज या प्राप्त कर सकते हैं; जैसे-टेलीविजन, मोबाइल, समाचार पत्र, रेडियों आदि।

2. प्राचीन समय में धुएँ का प्रयोग एक पहाड़ से अन्य पहाड़ पर संचार के रूप में किया जाता था।

3. डाक द्वारा संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने के लिए टिकट, अंतर्देशीय पत्र तथा लिफाफे आदि चीजों की आवश्यकता पड़ती है।

4. चलचित्र भी जनसंचार का एक साधन है। ये संचार ध्वनिपूर्वक होते हैं। टेलीविजन पर समाचारों द्वारा या सिनेमा की फिल्म की घटनाओं को एक के बाद एक दिखाने की गति को चलचित्र कहते हैं।

5. संचार के साधनों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। इन संचार साधनों द्वारा हम अपने संदेशों का आदान-प्रदान तथा एक समय में लाखों लोगों तक अपना संदेश भेज सकते हैं।

15. उत्तर के पर्वतीय क्षेत्रों का जनजीवन

(क) 1. (अ), 2. (अ), 3. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. चाय, 2. चावल; मक्का, 3. इम्फाल, 4. अरूणाचल

(घ) 1. पर्वतीय क्षेत्रों की मृदा कई प्रकार के फलदार वृक्ष उगाने में सहायक होती है यहाँ लोग विभिन्न फलों के बाग लगा लेते है जिन्हें फलोद्यान कहते हैं।

2. उत्तर के पर्वतीय क्षेत्र में जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड आदि राज्य सम्मिलित हैं।

3. उत्तराखंड में गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ, हरिद्वार आदि तीर्थस्थल हैं।

4. जम्मू-कश्मीर में मुख्यत: कश्मीरी, लद्दाखी, डोगरी तथा उर्दू भाषाएँ बोली जाती हैं। यहाँ के प्रमुख त्योहार शिवरात्रि, ईद-उल फितर, ईद-उल-जुहा आदि हैं।

16. उत्तरी मैदानों में जन-जीवन

(क) 1. (ब), 2. (ब), 3. (अ), 4. (ब), 5. (स), 6. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. लोहड़ी; बैसाखी, 2. सतलुज; यमुना, 3. उत्तर प्रदेश, 4. नालन्दा

(घ) 1. उत्तर प्रदेश

2. सुन्दरवन डेल्टा

3. पंजाब के धर्मिक त्योहार गुरुपर्व, लोहड़ी बैसाखी आदि है। यहाँ के प्रसिद्ध लोकनृत्य भाँगड़ा और गिद्दा हैं।

4. गेहूँ, गन्ना

5. जामा मस्जिद, बिरला मन्दिर, अक्षरधाम मन्दिर।

(ङ) 1. हरियाणा के प्रसिद्ध औद्यौगिक नगर फरीदाबाद, सोनीपत, पानीपत, पिंजौर, जगाधरी, एवं भिवानी हैं।

2. उत्तर प्रदेश की मुख्य फसलें गेहूँ, चावल, गन्ना, ज्वार-बाजरा आदि हैं।

3. नालन्दा विश्वविद्यालय बिहार में स्थित है।

4. गंगा, हुगली तथा दामोदर पश्चिम बंगाल की प्रमुख नदियाँ हैं तथा यहाँ चावल व पटसन की फसल मुख्य रूप से उगायी जाती है।

17. भारतीय मरूस्थल में जनजीवन

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✓)

(ग) 1. छत्तीसगढ़; नागपुर, 2. मनुष्यों; पशुओं, 3. चौड़ा; गद्देदार, 4. चारा-पानी

(घ) 1. मरुस्थल में किसी-किसी स्थान पर जल के स्त्रोत जैसे-कुँआ, या चश्मा होते है। लोग इनके निकट के क्षेत्रों में खेती करते है। ऐसे स्थान को मरुद्यान कहते हैं। यहाँ गेहूँ, बाजरा, ज्वार तथा खजूर की फसले उगाई जाती हैं।

2. मध्य पठारी क्षेत्र में बॉक्साइट, कोयला, लोहा तथा हीरा आदि खनिज पाए जाते हैं।

3. मरुस्थलीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का जीवन कठिन इसलिये होता है क्योंकि वहाँ दिन में रेत आदि शीघ्र गर्म हो जाता है और वहाँ पैदल यात्रा करना कष्टदायक होता है।

4. मरुभूमि में पानी की कमी को दूर करने के लिए सरकार ने विश्व की सबसे लम्बी इन्दिरा गांधी नहर का निर्माण कराया है।

18. हमारी शासन व्यवस्था

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. राष्ट्रपति, 2. भारतसंघ, 3. मुख्य न्यायधीश, 4. जनपद न्यायालय

(घ) 1. भारत में शासन व्यवस्था दो स्तरों पर क्रियान्वित है तथा देश की सुरक्षा का महत्वपूर्ण कार्य केन्द्र सरकार करती है।

2. भारत को गणतन्त्रात्मक राष्ट्र इसलिए कहा जाता है क्योंकि यहाँ की शासन व्यवस्था लोकतन्त्र पर आधारित है।

3. जिस दल को सरकार बनाने का अवसर दिया जाता है वह दल अपना नेता चुनता है, और राष्ट्रपति द्वारा उसको प्रधानमंत्री नियुक्त किया जाता है।

4. अनेक राजनैतिक व निर्दलीय दलों के प्रत्याशियों के मध्य चुनाव होता है और मतदाता मतदान में भाग लेता है। सर्वाधिक मत प्राप्त व्यक्ति को निर्वाचित घोषित किया जाता है।

सामाजिक कक्षा— 5

1. ग्लोब : पृथ्वी का मॉडल

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (स), 4. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘), 5. (✓)

(ग) 1. उत्तरी गोलार्द्ध, 2. 0°; 90°, 3. अर्द्ध वृत्ताकार, 4. मध्याहन रेखा, 5. संख्या

(घ) 1. ग्लोब पृथ्वी की सही आकृति दर्शाता है अत: इसे पृथ्वी का नमूना या प्रतिरुप कहा जाता है। हम ग्लोब पर महासागर और महाद्वीपों आदि का सही आकार व आकृति देख सकते हैं।

2. उत्तर का आधा भाग उत्तरी गोलार्द्ध तथा दक्षिण का आधा भाग दक्षिणी गोलार्द्ध कहलाता है।

3. पूर्व से पश्चिम की ओर जाने वाली तथा एक-दूसरे के सामानांतर पूर्ण वृत्ताकार रेखाएँ समानांतर रेखाएँ कहलाती हैं और देशांतर रेखाएँ प्रथम मध्याह्न रेखा के पूर्व और पश्चिम में होती है।

4. ग्लोब की सहायता से किसी स्थान की अवस्थिति को ज्ञात करने के लिये पृथ्वी का केवल आधा भाग ही एक समय में देखते हैं और दूसरा आधा भाग देखने के लिये ग्लोब को घुमाया जाता है।

2. सौरमंडल

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (स), 4. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘), 5. (✓)

(ग) 1. बुध, 2. बृहस्पति; बुध, 3. हल्का; पारदर्शक, 4. शनि, 5. 100°

(घ) 1. सूर्य के चारों ओर आठ ग्रह हैं- 1. बुध 2. शुक्र 3. पृथ्वी 4. मंगल 5. बृहस्पति 6. शनि 7. अरुण 8.वरुण

2. ब्रहमांड में फैले ग्रह, उपग्रह, असंख्य तारें, उल्का पिंड और पुच्छल तारें सभी मिलकर सौरमंडल का निर्माण करते हैं।

3. सौर मंडल का सबसे बड़ा ग्रह बृहस्पति है, यह 11.86 वर्ष में सूर्य का एक चक्कर पूरा करता है।

4. सूर्य के केन्द्र का तापमान 2 करोड़ डिग्री सेल्सियस के लगभग और धरातल का तापमान 6000° सेल्सियस होता है।

5. शुक्र सबसे अधिक चमकीला ग्रह है। यह ग्रह पीले रंग का होता है।

3. मानचित्र और दिशाएँ

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (स), 4. (ब)

(ख) 1. (✘), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✘), 5. (✓)

(ग) 1. एटलस; मानचित्रावली, 2. रेखाचित्र, 3. ज्ञान, 4. पैमाना; अनुपात, 5. उत्तर दिशा

(घ) 1. धरातल पर किन्हीं दो स्थानों के बीच की वास्तविक दूरी तथा मानचित्र पर दूरी के बीच एक अनुपात होता है। यह अनुपात ही मानचित्र का पैमाना कहलाता है। यदि धरातल पर किन्हीं दो स्थानों के बीच की वास्तविक दूरी पाँच किलोमीटर है और मानचित्र पर इन्हीं दो स्थानों की दूरी एक सेंटीमीटर दिखाई जाती है, तो कहा जाएगा की धरातल का पाँच किलोमीटर मानचित्र पर एक सेंटीमीटर से दर्शाया गया है। अर्थात 1 सेमी० = 5 किमी०

2. ग्लोब की अपेक्षा मानचित्र पर अधिक से अधिक जानकारी व समस्याओं का हल प्राप्त हो जाता है। मानचित्र पर गाँव, नगर, जिले तथा राज्य जैसे- स्थानों को भी दर्शाया जा सकता है। इसको प्रयोग करना व साथ में ले जाना भी बहुत सरल होता है।

3. मुख्य दिशाएँ चार होती हैं— उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम। इन्हीं चार मुख्य दिशाओं से उपदिशाएँ सरलतापूर्वक ज्ञात की जा सकती हैं; जैसे— उत्तर-पूर्व, दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पश्चिम, और दक्षिण-पश्चिम।

4. जब किसी मानचित्र पर विविध संकेत-चिह्नों, रेखाओं, बिन्दुओं एवं रंगों का प्रयोग किया जाता है, तो वह मानचित्रीय भाषा कहलाती है।

5. मानचित्र पर ऊपर की ओर उत्तर दिशा तथा उसके विपरीत नीचे की ओर दक्षिण दिशा होती है। अपने सामने लगे मानचित्र को देखने पर दाएँ हाथ की ओर पूर्व और बाएँ हाथ की ओर पश्चिम दिशा होगी।

4. मौसम तथा जलवायु

(क) 1. (ब), 2. (स), 3. (अ), 4. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘), 5. (✓)

(ग) 1. मौसम, 2. थर्मामीटर, 3. चार, 4. विषुवत-रेख; गरम, 5. समुद्र; मानसूनी

(घ) 1. किसी क्षेत्र विशेष में कुछ समय के लिए वातावरण की एक समान स्थिति का बने रहना मौसम कहलाता है। तापमान, आर्द्रता, हवा, सूर्यताप, बादल और घटक मौसम का निर्माण करते हैं।

2. विषुवत् रेखा, समुद्र तल से ऊँचाई, समुद्र से दूरी, पवन की दिशा, आर्द्रता, वर्षा आदि जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक है।

3. समुद्र के किनारे बसे नगर मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता आदि हैं। इनकी जलवायु समशीतोष्ण होती है।

4. वायु में उपस्थित जलवाष्प की मात्रा को आर्द्रता कहते हैं। आर्द्रता समुद्र की निकटता तथा पवन की दिशा पर निर्भर करती है।

5. समुद्र से आनी वाली मानसूनी पवनें वर्षा लाती हैं। जब ये पवने पर्वत से टकराती हैं, तो उन्हें ऊपर उठना पड़ता है ऐसा होने पर वे पवनें ठंडी होकर बरस जाती हैं।

5. कांगो-घने वनों की भूमि

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (स), 4. (स)

(ख) 1. (✘), 2. (✓), 3. (✘), 4. (✓), 5. (✓)

(ग) 1. आर्द्र-गर्म, 2. किंशासा, 3. कटांगा, 4. नौका-परिवहन, 5. मातादी

(घ) 1. कांगों देश भूमध्य रेखा के 5° उत्तर तथा 5° दक्षिण अक्षांश के मध्य नीची भूमि में बसा है। यह अफ्रीका के पश्चिम तट पर स्थित है तथा विषुवत रेखा (भूमध्य रेखा) इसके बीच से होकर गुजरती है।

2. कांगो में सदा हरे-भरे छोटी पत्ती वाले पेड़ मिलते हैं। उन्हें यहाँ के लोग सेल्वाज कहते हैं। यह ऊपर से छतरी नुमा होते हैं।

3. कांगों के लोग पिछड़े तथा विकास से कोसो दूर

हैं। इन लोगों का कद लगभग 4 फुट, रंग काला, घुँघराले बाल और शरीर की त्वचा खुरदरी होती है। यह पिग्मी जाति घने जंगलों में निवास करती है। अभावग्रस्त जीवन व्यतीत करते हुए ये लोग शिकार पर निर्भर रहते हैं। ये भोजन में माँस, मछली व कन्दमूल-फल आदि खाते हैं।

4. मक्का, मूँगफली, केले, कपास, रबड़, कॉफी आदि कांगों में होने वाली फसले हैं।

5. कांगों को विश्व का प्राकृतिक चिड़ियाघर इसलिए कहा जाता है क्योंकि यहाँ वन और नदियाँ, जहरीले जीव-जंतु; जैसे—कीड़े-मकोड़े, बिच्छू, साँप, कानखजूरे, छिपकलियाँ आदि पाई जाती हैं। इन वनों में खतरनाक पशु; जैसे— चीता, शेर, जगुवार, रीछ, लकड़बग्घे आदि पाए जाते हैं।

6. ग्रीनलैंड: बर्फ़ीला प्रदेश

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (स), 4. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✘), 4. (✘), 5. (✓)

(ग) 1. न्यूक, 2. वालरस; ह्वेलों, 3. शीतकाल, 4. एस्किमो, 5. कनाडा

(घ) 1. ग्रीनलैंड कनाडा से उत्तर-पूर्व में स्थित है। इसकी राजधानी न्यूक है।

2. मछली पकड़ना तथा शिकार करना ग्रीनलैंड के लोगों का प्रमुख व्यवसाय है।

3. कुछ क्षेत्रों में एस्किमों बर्फ़ की ईटों एवं बर्फ की चादरों से घर बनाते है। जिन्हें इग्लू कहते हैं।

4. यात्रा के लिए एस्किमों बिना पहियों की गाड़ी का प्रयोग करते हैं। जो कुत्तों या रेडियर द्वारा खीची जाती है। उसे स्लेज कहते हैं।

5. ग्रीनलैंड के मूल निवासियों को एस्किमों कहते है; जिसका अर्थ है— कच्चा मांस खाने वाला।

7. घास के मैदानों का प्रदेश (प्रेयरी प्रदेश)

(क) 1. (स), 2. (ब), 3. (ब), 4. (ब)

(ख) 1. (✘), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✘)

(ग) 1. प्रेयरी प्रदेश, 2. शिकागो, 3. स्टेपिस, 4. फ्राँसीसी, 5. यूरोपीय

(घ) 1. प्रेयरी प्रदेश उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप के मध्य भाग में स्थित है। शीतोष्ण प्रदेश में स्थित होने के कारण प्रेयरी प्रदेश की जलवायु विषम प्रकार की है।

2. प्रेयरी प्रदेश की मिट्टी काली तथा उपजाऊ है। यहाँ लोग बड़े क्षेत्र में कृषि करते हैं, यहाँ लोगों की संख्या कम होती है इसलिए खेत की जुताई, बीज बोना, फसलों की कटाई, अनाज-भूसा अलग-अलग करना आदि मशीनों से किया जाता है।

3. प्रेयरी प्रदेश की मुख्य फसल गेहूँ है। यहाँ गेहूँ बड़ी मात्रा में उगाया जाता है। इसी कारण प्रेयरी प्रदेश को विश्व की गेहूँ की टोकरी कहा जाता है।

4. घास के खुले मैदान रेंच कहलाते हैं। ये पर्वतीय क्षेत्र में होते हैं।

5. विश्व के विभिन्न महाद्वीप क्षेत्रों में स्थिति शीतोष्ण घास के मैदान अलग-अलग नामों से जाने जाते हैं; जैसे- उत्तरी अमेरिका में प्रेयरी तथा दक्षिणी अमेरिकी में इन्हें पम्पास कहा जाता है। ये क्षेत्र दक्षिण अफ्रीका में वेलड, आस्ट्रेलिया में डाउनस और रुस में स्टेपिस कहलाते हैं।

8. मानसूनी प्रदेश

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (ब), 4. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✘), 4. (✘), 5. (✘)

(ग) 1. मेघालय, 2. भारत, 3. 27°; 32°, 4. सभ्यता; प्राचीन, 5. चीन; जनसंख्या

(घ) 1. मानसूनी प्रदेश दोनों गोलार्द्धों में 5° उत्तरी तथा 5° दक्षिणी अक्षांश से 30° उत्तरी 30° दक्षिणी अक्षांशों के बीच फैले हैं। यहाँ मौसमी हवाओं से वर्षा होती है। इसलिए इन्हें मौसमी हवाओं के प्रदेश के नाम से भी जाना जाता है।

2. मानसूनी हवाऐं ऋतु के अनुसार दिशाओं को बदलती हैं। जाड़े में स्थल से सागर की ओर सूखी हवाएँ चलती है। वह जाड़े का मानसून तथा इसी के विपरीत, गर्मी में सागर की ओर से स्थल की ओर गर्म हवाएँ चलती है। उन्हें गर्म मानसून कहते है।

3. भारत, पाकिस्तान, म्यांमार, बांग्लादेश, सुमात्रा, जावा, थाईलैंड, वियतनाम, ताइवान, लाओस, दक्षिणी चीन, जापान तथा फिलीपीन्स के द्वीप समूह।

4. विश्व के चार ऐसे क्षेत्रों के नाम जहाँ मानसूनी जलवायु पाई जाती है। 1. एशिया 2. अफ्रीका 3. उत्तरी अमेरिका 4. आस्ट्रेलिया

5. मानसूनी प्रदेशों की मानव सभ्यता बहुत प्राचीन है। मानसूनी प्रदेशों में बड़ी जनसंख्या निवास करती है। क्योंकि यहाँ कृषि योग्य भूमि अधिक है। मानसूनी प्रदेशों की 18% जनसंख्या खेती के काम में लगी हुई है। यहाँ अनेक प्रकार की खेती होती है जो मानसून पर ही निर्भर करती है। जैसे- दाल, गेहूँ, मक्का, ज्वार, बाजार, जूट, नारियल, धान, गन्ना, कपास, चाय आदि। कुछ लोग यहाँ खेती के साथ-साथ पशुपालन का व्यवसाय भी करते हैं।

9. पर्यावरण एवं प्रदूषण

(क) 1. (अ), 2. (अ), 3. (स), 4. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘), 5. (✓)

(ग) 1. ध्वनि, 2. मानव जीवन, 3. वाहनों, 4. अस्वाभिक, 5. कीटनाशक

(घ) 1. पर्यावरण में होने वाला ऐसा परिवर्तन जो मानव, सजीवों व निर्जीवों को हानि पहुँचाता है। 'प्रदूषण' कहलाता है।

2. प्रदूषण पाँच प्रकार के होते हैं– 1. ध्वनि प्रदूषण 2. जल प्रदूषण 3. वायु प्रदूषण 4. मृदा प्रदूषण 5. रेडियो धर्मी प्रदूषण।

3. वातावरण में रेडियोधर्मी पदार्थों की अधिकता होने को रेडियोधर्मी प्रदूषण कहते हैं।

4. प्रदूषण होने के निम्नलिखित कारण हैं– 1. भौतिक विकास को अत्यधिक महत्व देना। 2. मल व कारखानों के अपमार्जक पदार्थों को नदियों में बहाना। 3. कीटनाशक दवाओं व रसायनिक खादों का प्रयोग करना। 4. शव या राख को नदियों में बहाना। 5. वनों के कटान से ऑक्सीजन की मात्रा कम होना व कार्बन डाई-ऑक्साइड की मात्रा का बढ़ना।

5. 1. कूड़े-करकट को नदी में न बहाएँ। 2. अधिक से अधिक वृक्ष लगाएँ। 3. हॉर्न तथा लाउडस्पीकर को धीमी आवाज से बजाएँ। 4. कीटनाशक का फसल में कम-से-कम प्रयोग करें। 5. परमाणु ऊर्जा की होड़ समाप्त की जाए।

10. यातायात के साधन

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (स), 4. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✓)

(ग) 1. बंदरगाह, 2. प्रशांत; अटलांटिक, 3. प्रदूषण, 4. ग्रांड ट्रंक रोड, 5. राइट बंधुओं

(घ) 1. यातायात के विभिन्न साधनों की आवश्यकता अनेक प्रकार के सामानों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने के लिये होती है। यातायात के साधन तीन प्रकार के होते हैं। 1. वायु यातायात 2. स्थल यातायात 3. जल यातायात

2. यातायात की गति को निरन्तर बनाए रखने के

लिए विशेष पुल तथा भूमि के ऊपर से होकर जाने वाली सड़के बनाई जाती हैं। ये सड़के महामार्ग कहलाती हैं।

3. रेलगाड़ियाँ सार्वजनिक यातायात का प्रमुख साधन है जिसके द्वारा हम भारी सामान को भी सुदूर क्षेत्रों तक ले जा सकते हैं।

4. वायुमार्ग यातायात का एक तीव्रतम साधन है। यह 400 से अधिक यात्री तथा कई टन माल एकसाथ ढो सकता है। वायुमार्ग से किसी भी वस्तु या सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर कम समय में पहुँचा सकते है।

5. स्वेज नहर लाल सागर तथा भूमध्य सागर को जोड़ती है। इस नहर ने भारत और इंग्लैंड के बीच यात्रा की दूरी को बहुत कम कर दिया है। पनामा नहर प्रशांत महासागर और अटलांटिक महासागर को जोड़ती है। इन नहरों ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में भी वृद्धि की है।

11. संचार के साधन

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (अ), 4. (स)

(ख) 1. (✘), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘), 5. (✓)

(ग) 1. संचार-व्यवस्था, 2. तीव्रतम, 3. कृत्रिम उपग्रहों, 4. टेलीविजन, 5. इंटरनेट कनैक्शन

(घ) 1. यातायात तथा संचार के आधुनिक साधन आपातकाल में बहुत उपयोगी ढंग से प्रयोग किए जा सकते हैं। इन माध्यमों द्वारा बाढ़, अकाल, महामारी तथा युद्ध के समय उचित समय पर चेतावनी दी जा सकती है। इस प्रकार प्रभावित लोगों को समय से सहायता पहुँच सकती है।

2. संसार में संचार के निम्नलिखित साधन उपलब्ध हैं— 1. डाक एवं तार 2. टेलीफोन 3. मोबाइल 4. रेडियो 5. सिनेमा 6. टेलीविजन।

3. जनसंचार के साधन— 1. पुस्तक 2. पत्रिका 3. समाचार-पत्र 4. विज्ञापन 5. रेडियो आदि हैं।

4. सिनेमा केवल मनोरंजन का ही साधन नहीं है, यह जनसंचार का उपयोगी माध्यम है। जिसके द्वारा सूचनाओं व संदेशों का प्रसार कर सकते है; जैसे- सिनेमा की लघु फिल्में आदि।

5.

टेलीग्राम	1. टेलीग्राम अतिशीघ्र संदेश भेजने का साधन है। 2. टेलीग्राम में संदेश प्राप्त करने में समय लगता है।
टेलीफोन	1. टेलीफोन तीव्रतम संदेश भेजने का साधन है। 2. टेलीफोन में संदेश प्राप्त एक ही समय में हो जाता है।

अत: इस तुलना द्वारा यह पता चलता है कि टेलीग्राम के तुलना में टेलीफोन अधिक विकसित संचार का साधन है।

12. शिक्षा का प्रसार

(क) 1. (ब), 2. (स), 3. (ब), 4. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✘)

(ग) 1. साक्षरता; शिक्षा, 2. लकड़ी के गूदे, 3. गुटेनबर्ग, 4. देवनागरी, 5. ध्वनि

(घ) 1. अपने ज्ञान को सुरक्षित रखने के लिए मानव ने सांकेतिक तथा कलात्मक लिपि का आविष्कार किया।

2. कागज का निर्माण सबसे पहले मिस्र में हुआ। कागज को अंग्रेजी में पेपर कहते हैं। पेपर शब्द पेपिरस से बना है जो नील नदी की घाटी में उगने वाली मोटी घास थी। उसके बारीक छिलके उतारकर आपस में जोड़कर एक जाली-सी बनाई जाती थी जिसके ऊपर भारी दबाव डाला जाता था। इसके बाद चीन में कागज चिथड़ो, पटसन, भूसे तथा बाँस के गूदे से बनने लगा। अब कागज मुलायम लकड़ी के गूदे से बनता है।

3. नेत्रहीनों की लिपि को ब्रेल लिपि कहते हैं। इसका आविष्कारक एक नेत्रहीन फ्रांसीसी लुई ब्रेल था।

4. ब्राह्मी लिपि एक प्राचीन लिपि है जिससे कई एशियाई लिपियों का विकास हुआ है। प्राचीन ब्राह्मी लिपि के उत्कृष्ट उदाहरण सम्राट अशोक के द्वारा बनवाए गए शिलालेख हैं।

5. प्राचीन काल में पेड़ की छाल, ताड़ की पत्तियाँ कागज के रुप मे प्रयोग होती थीं। इन्हें भोजपत्र कहते थे। ताम्र पर भी लिखाई की जाती थी। इसका निर्माण मिस्त्र में नील घाटी की घास द्वारा हुआ था। जिसका बारीक छिक्कल उतारकर जोड़कर बाद में उस पर दबाव डाला जाता था। चीन में चिथडों, पटसन, बाँस आदि के कागज बनने लगे। लेकिन आज के आधुनिक युग में कागज लकड़ी के मुलायम गुदे से बनता है।

13. मशीनी युग

(क) 1. (ब), 2. (स), 3. (स), 4. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✘), 5. (✓)

(ग) 1. लोहा, 2. जलशक्ति; जल विघुत, 3. गोबर गैस, 4. रूडोल्फ डीजल, 5. काला सोना

(घ) 1. मानव द्वारा लोहे की खोज एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह बहुत मजबूत धातु थी। इसके विशाल भंडार उपलब्ध थे। लोहे से औजार जैसे- हल, कुल्हाडी, दरांती, छेनी आदि बनाए गए। मनुष्य ने इन औजारों से जंगल साफ किए, भूमि को खेती योग्य बनाया और जंगली पशुओं का शिकार किया। लोहे से मनुष्य को व्यवसाय भी मिला, जैसे- कुशल बढ़ई, किसान, कुम्हार तथा लुहार आदि।

2. भाप के इंजन का आविष्कार सन् 1776 में जेम्सवॉट ने किया। भाप के इंजन के आविष्कार ने उद्योग जगत में क्रांति ला दी। उद्योगों में विभिन्न मशीने चलाने के लिए भाप के इंजन का प्रयोग किया जाने लगा। इससे उत्पादन की मात्रा तथा विकास की गति और तेज हो गई।

3. पहले समय में लोग छोटी-छोटी कार्यशालाओं में काम करते थे। जिसमें समय अधिक लगता था। इन कार्यशालाओं में वस्तु की गुणवता अच्छी नही होती थी तथा ये महँगी होती थी। इन्हें कोई भी आराम से खरीद नहीं पाता था। कार्यशालाओं की अपेक्षा कारखाने अधिक उपयोगी सिद्ध हुए। क्योंकि कारखानों में कम समय में अच्छी गुणवत्ता वाली वस्तु सस्ते दामों में मिल जाती है। कारखानों में उत्पादन बड़े पैमाने पर होता था। जिससे व्यक्तियों को रोजगार भी प्राप्त हो जाता था।

4. हमे कोयले तथा खनिज तेल की बचत इसलिये करनी चाहिए क्योंकि कोयले तथा खनिज तेल के भंडार सीमित हैं। ये एक निश्चित समय तक ही चल पाएँगे। अधिक मात्रा में प्रयोग करने से कोयला व खनिज तेल अपनी-अपनी सतह से बहुत नीचे गहरे जा चुके हैं।

5. बहते हुए पानी से प्राप्त होने वाली बिजली जल विद्युत कहलाती है। पानी से बिजली प्राप्त करने के लिए नदियों पर बड़े-बड़े बाँध बनाए जाते हैं। ऊँचे बाँध से पानी को नीचे गिराने पर जल विद्युत उत्पन्न होती है।

14. स्वास्थ्य तथा चिकित्सा का ज्ञान

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (स), 4. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘), 5. (✓)

(ग) 1. मानव, 2. माइक्रोस्कोप; गैलीलियों, 3. एक्सरे, 4. कुनैन, 5. व्यायाम

(घ) 1. स्टेथोस्कोप यंत्र चिकित्सा में बहुत महत्वपूर्ण यंत्र है। डॉक्टर इस यंत्र का उपयोग रोगी की हृदय की धड़कन और फेफड़ों की ध्वनियों को सुनने के लिए करते हैं।

2. शरीर के क्षतिग्रस्त व निष्क्रिय अंगों को काट देने या बदल देने की क्रिया को शल्य-चिकित्सा कहते हैं।

3. सूक्ष्मदर्शी यंत्र को माइक्रोस्कोप भी कहते हैं। इस यंत्र द्वारा बहुत छोटी वस्तु बहुत बड़ी और स्पष्ट देखी जा सकती है। सूक्ष्मदर्शी यंत्र उन वस्तुओं को दिखाता या दर्शाता है। जिन्हें हम अपनी नग्न आँखों से नहीं देख सकते।

4. थर्मामीटर एक पतली काँच की नली होती है। जिसके एक सिरे पर छोटे से बल्ब में पारा भरा होता है। इस पर डिग्री फॉरनेहाहइट में 90° से 110° तक चिह्न अंकित होते है। जब थर्मामीटर का बल्ब किसी व्यक्ति के मुँह या बगल में रखा जाता है तो शरीर की गरमी से पारा फैलता है। पारे का सिरा चिह्न रोगी का तापमान बताता है।

5. स्वास्थ्य की देखभाल के पाँच नियम निम्नलिखित हैं— • नियमित व्यायाम करना • स्वच्छता रखना • पौष्टिक भोजन करना • समय-समय पर शरीर की जाँच कराना • टीके लगवाना।

15. महान व्यक्ति

(क) 1. (ब), 2. (ब), 3. (ब), 4. (स), 5. (ब)

(ख) 1. (✘), 2. (✓), 3. (✘), 4. (✘), 5. (✓)

(ग) 1. जहर, 2. दास प्रथा, 3. जर्मनी के धनी, 4. भारत, 5. शान्ति

(घ) 1. सुकरात की प्रमुख शिक्षाएँ निम्नलिखित हैं— 1. निडर बनो 2. ईमानदार बनो 3. सत्य में विश्वास रखों 4. तर्कपूर्ण बातें करो 5. किसी बात को अंधे होकर स्वीकार मत करो। 6. अंधविश्वासी मत बनो।

2. अब्राहम लिंकन का जन्म सन् 1809 में संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ था। अब्राहम लिंकन संयुक्त राज्य अमेरिका के सबसे प्रभावशाली, स्मरणीय और महानतम राष्ट्रपति थे। वे दास प्रथा के विरोधी थे।

3. कार्ल मार्क्स ने देखा कि कारखानों के मालिक कामगारों का शोषण कर रहे हैं। कारखानों के मालिक धनी और कामगार गरीब होते जा रहे हैं। कार्लमार्क्स और उनके सहयोगी यह देखकर बेचेन हो गये। उनका यह मत था कि कारखानों और उत्पाद पर कामगारों का अधिकार होना चाहिये। उन्होंने और उनके सहयोगियों ने मजदूरों को संगठित होने और पूँजीपतियों से संघर्ष करने के लिये कहा, जिससे पूँजीपतियों को आसानी से हराया जा सके और मजदूरों को न्याय मिल सके।

4. ब्रिटिश शासन का विरोध करने के लिए महात्मा गाँधी ने सत्य और अहिंसा को हथियार बनाया।

5. मार्टिन लूथर किंग जूनियर अमेरीका के निवासी थे। उन्होंने अमेरिका के नीग्रो लोगों को समानता का अधिकार दिलाने के लिए एक आंदोलन चलाया और उसमें सफल हुए।

16. भारत में अंग्रेज़ों का आगमन

(क) 1. (स), 2. (अ), 3. (स), 4. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. स्थापना, 2. सूरत, 3. प्लासी, 4. ब्रिटिश सरकार

(घ) 1. सन् 1498 में यूरोपीय देश पुर्तगाल के नाविक वास्को-डी-गामा ने केप ऑफ गुड होप (आशा अंतरीप) की खोज की। इस खोज ने भारत में पुर्तगालियों के प्रवेश द्वार खोल दिये। वास्को-डी-गामा तथा उनके साथी केरल के पश्चिमी तट पर कालीकट नामक बंदरगाह पर उतरे। केरल मसालों के लिए प्रसिद्ध था, अत: पुर्तगालियों ने यहाँ मसालों का व्यापार आरम्भ किया।

2. सन् 1857 तक अंग्रेजों ने लगभग सारे भारत पर अपना नियंत्रण कर लिया था। ऐसी परिस्थितियों ने विद्रोह का रुप ले लिया। भारतीय सैनिकों ने सर्वप्रथम 10 मई सन् 1857 को उत्तर प्रदेश में मेरठ नामक स्थान पर

विद्रोह किया। इसका कारण गाय और सुअर की चर्बी का कारतूस में प्रयोग करना था।

3. सन् 1857 के विद्रोह के बाद अंग्रेजी शासन व्यवस्था ने भारत की शासन व्यवस्था को अपने हाथों में ले लिया। अंग्रेजी सरकार किसानो का शोषण करने लगी। अंग्रेजी सरकार सूती रेशमी बुनकरों को कम दाम पर माल बेचने के लिए कहने लगी और भारतीय सैनिकों की अपेक्षा अंग्रेजी सैनिकों को अधिक वेतन देती थी।

4. उस समय देश में विभिन्न राज्यों के बीच आपसी शत्रुता थी। अंग्रेजों ने फूट डालों और राज करो की नीति अपनाई। उन्होंने एक राज्य के विरुद्ध दूसरे राज्य की सहायता की। इस नीति पर चलकर अंग्रेजो ने राज्यों की आपसी फूट का लाभ उठाया।

17. स्वतंत्रता संग्राम का आरम्भ

(क) 1. (अ), 2. (अ), 3. (ब), 4. (अ)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✘)

(ग) 1. इंडियन नेशनल कांग्रेस, 2. मुम्बई, 3. स्वदेशी, 4. उदारवादी

(घ) 1. सन् 1914 में प्रथम विश्व युद्ध आरंभ हुआ। इस युद्ध में भारतीय सैनिक ब्रिटेन की ओर से लड़े। उन्हें आशा थी कि अंग्रेज युद्ध के बाद सहयोग के बदले में भारत से चले जायेंगे। इस कारण भारतीयों ने युद्ध ने अंग्रेजों की सहायता की थी।

2. बंगाल विभाजन के विरोध में नेताओं के आह्वान पर लोग बड़ी संख्या में सड़कों पर निकले। सड़कों तथा गलियों में वन्देमातरम की गूँज सुनाई देने लगी। स्त्री, पुरुष व बच्चों ने विदेशी सामान, वस्तुओं और पोशाकों का बहिष्कार किया। यह आंदोलन स्वदेशी आंदोलन कहलाया। अंग्रेजी लोग इन आंदोलन से डर गए। परिणामस्वरुप अंग्रेजों ने सन् 1911 में बंगाल विभाजन का निर्णय वापस ले लिया।

3. आरंभ में कांग्रेस ने अपनी माँगों तथा कार्यक्रमों में उदारवादी दृष्टिकोण अपनाया।

4. अंग्रेजों ने 'फूट डालों और राज करो' की नीति अपनाई। उन्होंने एक राज्य के विरुदध दूसरे राज्य की सहायता की। इस नीति पर चलकर अंग्रेजों में राज्यों की आपसी फूट का लाभ उठाया।

18. भारत की स्वतंत्रता-प्राप्ति

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (अ), 4. (स)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✓)

(ग) 1. शांतिपूर्ण, 2. जलियाँवाला बाग, 3. सत्याग्रह, 4. 1929; कांग्रेस, 5. 1939

(घ) 1. गाँधी जी ने संपूर्ण देश का दौरा किया और आस-पास की प्रत्येक गतिविधियों का निरीक्षण भी किया। उन्होंने देखा कि भारतीय समाज जाति, धर्म, लिंग तथा रंग के आधार पर बँटा हुआ है। गाँधी जी को इस पर बहुत दु:ख हुआ। अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर अत्याचार को देखते हुए गाँधी जी ने यह निष्कर्ष निकाला कि अंग्रेजों से संघर्ष के लिए भारतीयों में एकता की भावना होनी चाहिए।

2. जलियाँवाला बाग हत्याकांड के बाद लोगो के मन में अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध नफरत और बढ़ गई। लोगों के मन में स्वतंत्रता प्राप्ति की अलख जाग उठी। अब लोग आंदोलनों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने लगे।

3. तुर्की के साथ व्यापार तथा जालियाँवाला बाग हत्याकांड का विरोध करने के लिए गांधीजी ने सन् 1920 में असहयोग आंदोलन शुरू किया।

4. सन् 1942 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने गाँधी जी के नेतृत्व में भारत छोड़ो आंदोलन शुरु कर दिया। गाँधी जी ने करो या मरो का नारा दिया। अंग्रेजों ने गाँधी जी तथा अन्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया और यह आंदोलन सारे देश में फैल गया।

5. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष रहे सुभाषचंद्र बोस अंग्रेजों को चकमा देकर जेल से बच निकले। सन् 1941 में वे भारत से अफगानिस्तान होते हुए जर्मनी पहुँचे। सन् 1943 में उन्होंने सिंगापुर में भारतीय राष्ट्रीय सेना की स्थापना की। उन्होंने घोषणा की– 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा'। 'जय हिन्द' और 'दिल्ली चलो' भी उनके प्रसिद्ध नारे थे।

19. संयुक्त राष्ट्र संघ का उदय

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (अ), 4. (ब)

(ख) 1. (✓), 2. (✘), 3. (✘), 4. (✘), 5. (✓)

(ग) 1. 191, 2. नागासाकी; हिरोशिमा, 3. 1914; 1918, 4. न्यूयार्क, 5. विफल

(घ) 1. विश्व में शांति और विकास बनाए रखने के उद्देश्य की पूर्ति के लिए 24 अक्टूबर, 1945 को संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की गई।

2. संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं– 1. विश्व में शांति और सुरक्षा बनाए रखना। 2. मानवाधिकारों की रक्षा करना। 3. आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में सहयोग देना। 4. जाति, धर्म, भाषा व लिंग के आधार पर भेदभाव को समाप्त करना।

3. संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणा-पत्र में निम्नलिखित मानव अधिकार दिए गए हैं– • प्रत्येक नागरिक को स्वतंत्रता का अधिकार होना। • कानून की दृष्टि में सभी लोगों का समान होना। • सभी लोगों को शिक्षा पाने का अधिकार • हर व्यक्ति को काम पाने का अधिकार • लिंग, जाति, भाषा व धर्म के आधार पर भेदभाव न होना

4. प्रथम विश्व-युद्ध सन् 1914 में हुआ तथा यह 4 वर्षों तक लड़ा गया।

5. द्वितीय विश्व-युद्ध में एक ओर जर्मनी, जापान और इटली थे और दूसरी ओर फ्रांस, इंग्लैड, रुस व अमेरिका थे।

20. संयुक्त राष्ट्र संघ की कार्यप्रणाली

(क) 1. (ब), 2. (स), 3. (अ), 4. (ब)

(ख) 1. (✘), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✘), 5. (✓)

(ग) 1. न्यूयॉर्क, 2. टाइग्वे लाई, 3. 15, 4. महासभा, 5. समस्याओं

(घ) 1. संयुक्त राष्ट्र विवादों के हल में विभिन्न प्रकार की समस्याओं के हलों का सुझाव तथा विश्व में शांति तथा सुरक्षा प्रदान करने के कार्यों में सहयोग देता है।

2. महासभा एक विश्व संसद की तरह कार्य करती है। इसमें सभी सदस्य देशों के प्रतिनिधि होते हैं। प्रत्येक सदस्य देश वोट देने का अधिकार रखता है। महासभा में प्रतिवर्ष महासभा का एक अधिवेशन होता है। आवश्यकतानुसार अधिवेशन आयोजित किया जाता है। विभिन्न समस्याओं के हल के लिए सदस्य देश अपने सुझाव देते है। महासभा में शांति तथा सुरक्षा से संबधित प्रयासों पर भी विचार -विमर्श किया जाता है।

3. विश्व स्वास्थ्य संगठन का प्रमुख नारा है– सबके लिए स्वास्थ्य। यह संस्था स्वास्थ्य सेवाओं के सुधार में सहायता करती है। साथ ही, अनेक बीमारियों को महामारी का रुप लेने से रोकती है। जैसे-चेचक, मलेरिया तथा तपेदिक रोग आदि। इस संस्था में कई भारतीय डॉक्टर भी काम करते हैं।

4. यूनेस्को संस्था का प्रमुख उद्देश्य शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति को बढ़ावा देना है। यूनेस्को प्रौढ़-शिक्षा कार्यक्रम चलाने में सहायता देती है। साथ ही पुराने स्मारकों को स्वच्छ व मजबूत बनाए रखने के लिये धन भी देती है। यह अन्य संस्थाओं की तरह विश्व को बेहतर स्थान बनाने की कोशिश कर रही है।

5. संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रमुख उपलब्धि सभी देशों को करीब लाना और विश्व में शांति की स्थापना करना रही है।

अध्याय 1 : सौरमंडल में हमारी पृथ्वी

(क) **1.** (स) **2.** (स) **3.** (स) **4.** (अ)

(ख) **1.** सबसे कम 88 **2.** 15 करोड़ **3.** बुध **4.** ग्रह **5.** 89,666 निपटोन सौरल दिन **6.** 3,85,000 किमी.

(ग) **1.** (×) **2.** (×) **3.** (×) **4.** (×) **5.** (×)

(घ) **1.** सबसे बड़ा क्षुद्र ग्रह सेरेस है। **2.** सौरमंडल का नीला ग्रह पृथ्वी को कहा जाता है। **3.** सौरमंडल में आठ ग्रह हैं– 1. बुध 2. बृहस्पति 3. शुक्र 4. मंगल 5. पृथ्वी 6. शनि 7. अरुण 8. वरुण **4.** सूर्य का सबसे निकटमत ग्रह बुध है। **5.** सूर्य पृथ्वी से 15 करोड़ किमी. की दूरी पर है।

(ङ) **1. पूर्णिमा**–मास की 15वीं और शुक्लपक्ष की अंतिम तिथि है। जिस दिन चंद्रमा आकाश में पूरा होता है। **अमावस्या**–यह भी माह की 15वीं और कृष्ण पक्ष में आने वाली तिथि है। जिस दिन आकाश में अंधेरी रात मानी जाती है।

2. तारा–वह खगोलिए पिंड है जिसका अपना प्रकाश व ऊष्मा होती है। तथा इसके विपरीत **ग्रह**–हमारी सौर प्रणाली होती है। जिसका शाब्दिक अर्थ है–घूमने वाला।

3. आकाश गंगा–हमारा सूर्य और समस्त तारे एक मंदाकिनी से संबंधित हं। ब्रह्मांड में लाखों मंदाकिनीयाँ हैं। हमारा सौर मंडल आकाश गंगा मंदाकिनी का सदस्य है। मंदाकिनी सामान्य रूप से **आकाश गंगा** कहालाती है। आकाश गंगा में लगभग 10,000 करोड़ तारे हैं।

4. पृथ्वी न तो बहुत अधिक गर्म है और न ही बहुत अधिक ठंडी। सूर्य के सबस समीप का ग्रह बुध और दूर का ग्रह वरुण है। इनमें बुध गर्म और वरुण ठंडा ग्रह है। अन्य ग्रह भी बहुत गर्म और ठंडे हैं। इसलिए इन पर जीवन संभव नहीं है। पृथ्वी पर जीवन के लिए पर्याप्त वायु व जल उपलब्ध है। यही कारण है कि पृथ्वी को अनोखा ग्रह कहते हैं।

5. उल्का पिंड–ये सूर्य के ओर चक्कर लगाने वाले छोटे-छोटे पत्थर होते हैं। कभी-कभी ये उल्का पिंड पृथ्वी के बहुत समीप आ जाते हैं तथ वायु के साथ घर्षण होन के कारण ये गर्म होकर जल जाते हैं। ऐसी दशा में एक चमकदार प्रकाश होता है। कभी-कभी जब कोई उल्का पिंड पूरी तर जले बिना पृथ्वी पर गिरता है तो उससे पृथ्वी पर गड्ढे पड़ जाते हैं।

6. ब्रह्माड–ब्रह्मांड एक विशाल इकाई है। इसमें अनेक प्रकार के आकशीय पिंड गतिमान हैं। इन आकाशीय पिंड में मंदाकिनियाँ या आकाश गंगाएँ, तारें, ग्रह, उपग्रह, क्षुद्र ग्रह, धूमकेतू, उल्का पिंड प्रमुख हैं। ब्रहमांड का व्यास 250 करोड़ प्रकाश वर्ष है।

(च) **1. ब्रह्मांड**–आंतरिक्ष एवं ब्रह्मांड की उत्पत्ति, विकास और विस्तार आज भी वैज्ञानिकों के लिए रहस्यपूर्ण बना हुआ है। नवीन खोजों से अनुमान लगया गया है कि हमारे ब्रहमांड के अतिरिक्त भी अनेक ब्रह्मांड हैं। ब्रह्मांड एक विशाल इकाई है। इसमें अनेक प्रकार के आकाशीय पिंड गतिमान हैं। इन आकाशीय पिंडों में मंदाकिनियाँ या आकशगंगाएँ, तारे, ग्रह, उपग्रह, क्षुद्र ग्रह, धूमकेतु, उल्कापिंड प्रमुख हैं। ब्रह्मांड का व्या 250 करोड़ प्रकाश वर्ष है। ब्रह्मांड के आकाशीय पिंडों का अध्ययन करने वाले विद्वान खगोल वैज्ञानिक और इसके अध्ययन को खगोल विज्ञान कहते हैं। सूर्य अपने तारों की तुलना में हमें बड़ा दिखाई देता है क्योंकि वह अन्य तारों की अपेक्षा पृथ्वी के समीप है।

2. पृथ्वी न तो बहुत अधिक गर्म है और न ही बहुत अधिक ठंडी। सूर्य के बसे पास का ग्रह बुध बहुत गर्म तथा सूर्य से सबसे दूर को ग्रह वरुण बहुत ठंडा है। अन्य ग्रह भी बहुत गर्म या बहुत ठंडे हैं, इसलिए उन पर जीवन की संभावना नहीं है। पृथ्वी पर जीवन के लिए पर्याप्त वायु एवं जल उपलब्ध है। यही कारण है कि पृथ्वी को एक अनोखा ग्रह कहते हैं।

3. सौरमंडल में आठ ग्रह हैं। सूर्य से दूरी के क्रम में उनके नाम– 1. बुध 2. शुग्र 3. पृथ्वी 4. मंगल 5. बृहस्पति 6. शनि 7. अरुण 8. वरुण हैं।

अध्याय 2 : पृथ्वी की गतियाँ

(क) **1.** (अ) **2.** (स) **3.** (अ) **4.** (अ)

(ख) **1.** बड़ा **2.** पृथ्वी के अपने अक्ष पर घूमने **3.** 21 **4.** ग्रीष्म **5.** परिभ्रमण तथा परिक्रमण **6.** 366

(ग) **1.** (द) **2.** (य) **3.** (अ) **4.** (ब) **5.** (स)

(घ) **1.** पृथ्वी के सूर्य के चारों ओर घूमने वाली गति को ही परिक्रमण कहते हैं। **2.** पृथ्वी का अपनी कक्षा पर परिक्रमण और अक्ष पर झुकी होने के दो महत्वपूर्ण प्रभाव होते हैं– 1. दिन और रात की अवधि में अंतर 2. ऋतु परिवर्तन **3.** अधिवर्ष चार वर्ष पश्चात् आता है। जैसे 2016 से 2020। **4.** पृथ्वी की दो गतियाँ होती हैं– 1. परिभ्रमण या घूर्णन और 2. परिक्रमण। **5.** परिभ्रमण की गति के कारण ही दिन और रात होते हैं।

(ङ) **1.** अधिवर्ष–जब फरवरी के महीने में 29 दिन होते हैं तब उस वर्ष को अधिवर्ष या लीपवर्ष कहते हैं। जैसे– 2008, 2012, 2016, 2020 सभी अधिवर्ष हैं।

2. पृथ्वी पर सभी दिन एकसमान नहीं होते हैं। कभी अधिक गर्मी और कभी अधिक सर्दी पड़ती है। दिन छोटे-बड़े होते रहते हैं। इसका कारण पृथ्वी की धुरी पर सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते समय एक तरफ परिक्रमण और अक्ष पर झुकी होने के दो कारण महत्त्वपूर्ण हैं– 1. दिन-रात की अवधि में अंतर 2. ऋतु परिवर्तन

3. जब पृथ्वी अपनी धुरी पर लगातार घूमती है। यह अपना एक चक्कर लगभग 24 घंटे में पूरा करती है। पृथ्वी की इस गति को परिभ्रमण या घूर्णन कहते हैं। तो इस परिभ्रमण के कारण ही तो पृथ्वी पर दिन और रात होते हैं।

(च) **1.** पृथ्वी की गतियाँ दो होती हैं– 1. परिभ्रमण या घूर्णन 2. परिक्रमण।

1. परिभ्रमण या घूर्णन– पृथ्वी अपनी धुरी पर लट्टू की तरह लगातार पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है। यह अपना एक अच्चकर लगभग 24 घंटे में पूरा करती है। पृथ्वी की इस गति को परिभ्रमण या घूर्णन कहते हैं।

इसी कारण दिन और रात होते हैं। पृथ्वी के गोलाकार होने का कारण सूर्य का प्रकाश संपूर्ण पृथ्वी पर न पड़कर आधे में पड़ता है है। जो आधा भाग सूर्य के सामने होता है। वहाँ पर प्रकाश के कारण दिन और शेष भाग जो सूर्य के पीछे रहता है। वहाँ अंधकर के कारण रात होती है।

परिक्रमण–पृथ्वी केवल अपने अक्ष पर ही नहीं घूमती वरन् अपने अक्ष पर घूमते हुए सूर्य के चारों ओर चक्कर भी लगाती है। पृथ्वी के सूर्य के चारों ओर घूमने की गति को ही परिक्रमण कहते हैं।

पृथ्वी को सूर्य की परिक्रमा पूरी करने में लगभग 365 दिन और 6 घंटे का समय लगता है। लेकिन गणना की सुविधा के लिए हम 6 घंटे उस समय तीन वर्ष के लिए छोड़ देते हैं। चौथे वर्ष इस समय को जोड़ देते हैं। तो एक दिन बढ़ जाता है और यह वर्ष 366 दिन को हो जाता है। इस वर्ष फरवरी के महीने में 29 दिन होते हैं। इस वर्ष को अधिवर्ष या लीपवर्ष कहते हैं। जैसे 2008, 2012, 2016, 2020 सभी आदि सभी अधिवर्ष हैं। इसी कारण से परिक्रमण तथा अक्ष झुकाव का प्रभाव तथा दिन-रात की अवधि में अंतर हुआ।

2. पृथ्वी जब सूर्य की परिक्रमा करती है, तो उस समय पृथ्वी का अक्ष सदैव एक ओर झुका रहता है। इसलिए सूर्य जब कर्क रेखा पर लंबवत् होता है, तो उत्तरी गोलार्द्ध का अधिकतर भाग सूर्य के प्रकाश में रहता है, उस समय यहाँ पर रात छोटी व दिन लंबे होते हैं। इसके विपरीत इस समय दक्षिणी गोलार्द्ध का अधिकतर भाग अंधकार में रहता है और वहाँ रातें लंबी व दिन छोटे होते हैं।

सूर्य को कर्क रेखा पर लंबवत् चमकने की स्थिति में उत्तरी ध्रुव पर 24 घंटे का दिन होता है। सूर्य के दक्षिणी गोलार्द्ध में मकर वृत्त पर लंबवत् होने की स्थिति में दक्षिणी ध्रुव में 6 महीने तक प्रकाश रहता है और उसके विपरीत उस यम उत्तरी ध्रुव पर 6 महीने तक अंधकर रहता है।

3. परिक्रमण– पृथ्वी केवल अपने अक्ष पर ही नहीं घूमती है। वरन् अपने अक्ष पर घूमते हुए सूर्य के चारों ओर चक्कर भी लगाती है। पृथ्वी के सूर्य के चारों ओर घूमने की गति को परिक्रमण कहते हैं। पृथ्वी को सूर्य की परिक्रमा पूरी करने में लगभग 365 दिन 6 घंटे का समय लगता है। दो परिणाम इस प्रकार से हैं–

परिक्रमण तथा अक्ष झुकाव का प्रभाव– पृथ्वी पर सभी दिन एकसमान नहीं होते हैं। कभी अधिक गर्मी तो कभी अधिक सर्दी पड़ती है। कभी दिन बड़े तो कभी छोटे होते हैं। इस कारण पृथ्वी की धुरी पर सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते समय एक तरफ को झुका होना है। पृथ्वी का अपनी कक्षा पर परिक्रमण और अक्षर पर झुकी होने के दो महत्तवपूर्ण प्रभाव होते हैं–

1. दिन और रात की अवधि में अंतर– पृथ्वी जब सूर्य की परिक्रमा करती है, तो उस समय पृथ्वी का अक्ष सदैव एक ओर झुका रहता है। इसलिए सूर्य जब कर्क रेखा पर लंबतव् होता है। तो उत्तरी गोलार्द्ध का अधिकतर भाग सूर्य के प्रकाश में रहता है। उस समय यहाँ पर राते छोटी व दिन लंबे, इसके विपरीत इस समय दक्षिणी गोलार्द्ध का अधिकतर भाग अंधकार में रहता है और वहाँ राते लंबी व दिन छोटे होते हैं। **2. ऋतु परिवर्तन–** पृथ्वी के अपने अक्ष पर घूमने के कारण ऋतु परिवर्तन होता है। पृथ्वी की कक्षा के समतल से खड़ी रेखा पृथ्वी की कीली के साथ 23½° का कोण बनाती है। जिसके कारण पृथ्वी घूमती है। इसी के साथ पृथ्वी की कक्षा के समतल खड़ी रेखा के साथ पृथ्वी की धुरी अपनी कक्षा के तल के साथ 66½° का कोण बनाती है। जिसके कारण प्रत्येक 3 महीनों में ऋतु परिवर्तन होता है। इस प्रकार एक वर्ष में हमें चार मौसम दिखाई देते हैं। तो प्रत्येक 3 महीने बाद बदलते हैं और हम एक वर्ष में चार ऋतुओं का आनंद लेते हैं।

4. ऋतु परिवर्तन– पृथ्वी के अपने अक्ष पर घूमने के कारण पृथ्वी पर ऋतु परिवर्तन होता है। पृथ्वी की कक्षा समतल से खड़ी रेखा पृथ्वी की कीली के साथ 23½° का कोण बनाती है। जिसके कारण पृथ्वी घूमती है। इसी के साथ पृथ्वी की कक्षा के समतल खड़ी रेखा के साथ पृथ्वी की दूरी अपनी कक्षा के तल के साथ 66½° का कोण बनाती है जिसके कारण 3 महीने में ऋतुओं में परिवर्तन होता रहता है। पृथ्वी जब पश्चिम से पूरब की ओर परिक्रमा करती है तो उत्तरी क्षेत्र में ग्रीष्म ऋतु और दक्षिण क्षेत्र में शीत ऋतु, 3 महीने बाद उत्तरी क्षेत्र में शरद ऋतु और दक्षिणी क्षेत्र में बसंत ऋतु होती है। यह क्रिया प्रत्येक 3 महीने बाद बदलती रहती है। जिसके कारण एक वर्ष में चार मौसम दिखाई देते हैं। और हम इन चार ऋतुओं का आनंद ले पाते हैं।

अध्याय 3 : भारत की जलवायु

(क) **1.** (अ) **2.** (स) **3.** (ब) **4.** (अ) **5.** (अ)

(ख) **1.** पश्चिम भाग **2.** नवंबर-दिसंबर **3.** मानसूनी **4.** मौसिम

(ग) **1.** (स) **2.** (द) **3.** (अ) **4.** (ब)

(घ) **1.** (✓) **2.** (✗) **3.** (✗) **4.** (✓)

(ङ) **1.** वर्षा मापी यंत्र को रेनगेज कहते हैं। **2.** भारत की जलवायु को मानसूनी जलवायु कहा जाता है। **3.** भारत में चार प्रकार की ऋतुएँ होती हैं– ग्रीष्म ऋतु, शीत ऋतु, वर्षा ऋतु और शरद ऋतु **4.** उत्तरी भारत में विशेषकर दिन में गर्म व शुष्क पवन चलती है, जिन्हें 'लू' कहते हैं।

(च) **1.** शीतकाल में उत्तरी मैदानों में तापमान काफी कम हो जाता है, तो स्थल पर उच्चवायु दाब का क्षेत्र बन जाता है, और समुद्रों व ऊपर वायुदाब अपेक्षाकृत निम्न रहता है और स्थल से समुद्र की ओर हवाएँ चलने लगती हैं। इन हवाओं में आर्द्रता की मात्रा अत्यधिक कम होने की वजह से पवन वर्षा रहित होती है। जिसके कारण अधिकांश क्षेत्रों में वर्षा नहीं होती।

2. भारतीय जलवायु–भूमि और जलवायु लोगों के जीवन पर गहरा प्रभाव डालने वाले दो प्रमुख कारक हैं। यह कारक एक स्थान से

दूसरे स्थान, एक से दूसरे देश और एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप में भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। भारत की विविध जलवायु भू-भाग और प्राकृतिक वनस्पति वाली भूमि है। भारत की जलवायु को मानसूनी जलवायु कहा जाता है। क्योंकि यहाँ जलवायु मानसूनी हवाओं से अधिक प्रभावित होती है। मानसूनी हवाएँ ऋतुओं के अनुसार अपनी दिशाएँ बदल लेती है।

3. शीतऋतु–इस ऋतु में उत्तर भारत में कड़ाके की ठंड पड़ती है। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात होता है। दिसंबर और जनवरी के महीने सबसे ठंडे होते हैं। दिन छोटे और रातें लंबी होती हैं। उत्तर भारत में इस समय शीत लहर चलती है।

4. शीत ऋतु–इस ऋतु में बहुत कड़ाके की ठंड होती है। दिसंबर और जनवरी के महीने में सबसे अधिक ठंड होती है दिन और रात लंबी होते हैं। **ग्रीष्म ऋतु**–यह ऋतु मार्च से मई तक रहती है। इसमें सूर्य के ताप के कारण तापमान ऊँचा हो जाता है। उत्तरी भारत में विशेषकर दिन में गर्म एवं शुष्क पवन चलती हैं। जिन्हें 'लू' कहते हैं। **वर्षा ऋतु**–वर्षा ऋतु जून से सितंबर तक रहती है। ग्रीष्म ऋतु में भारत का तापमान अधिक रहता है। इसलिए यह दक्षिण पश्चिम से नमीयुक्त पवनों को आकर्षित करता है। कहीं-कहीं वर्षा की अवधि और मात्रा घट जाती है। मानसूनी हवाएँ सामान्यता अनियमित घट जाता है। मानसूनी हवाएँ सामान्यता अनियमित होती है। कहीं-कहीं भारी वर्षा और कही बाढ़ का कारण भी बनती है। **शरद ऋतु**–यह ऋतु अक्टूबर-नवंबर माह में रहती है। इस समय दक्षिण-पश्चिम पवन लौटने लगती हैं। अतः इस ऋतु को मानसून के लौटने की ऋतु भी कहते हैं। तमिलनाडु की वर्षा को जाड़े की वर्षा कहा जाता है। क्योंकि इस समय सूर्य के दक्षिणायन होने से भारत में तापमान काफी कम होता है।

(छ) **1.** भारत में निम्नलिखित रूप से चार प्रकार की ऋतुएँ होती हैं, जोकि इस प्रकार हैं। **शीत ऋतु**–इस ऋतु में उत्तर भारत में कड़ाके की ठंड पड़ती है। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात होता है। दिसंबर और जनवरी के महीने सबसे ठंडे होते हैं। दिन छोटे रातें लंबी होती हैं। **ग्रीष्म ऋतु**–यह ऋतु मार्च से मई जून तक रहती है। 21 मार्च के बाद सूर्य उत्तरायण होन`लगता है। अत3 उत्तरी गोलार्द्ध में सूर्य की किरणें सीधी पड़ने लगती हैं। सूर्य का ताप अधिक मिलने पर तापमान ऊँचा हो जाता है। उत्तरी भारत में विशेषकर दिन में गर्म व शुष्क पवन चलती हैं, जिन्हें 'लू' कहते हैं। **वर्षा ऋतु**–वर्षा ऋतु जून से सितंबर तक रहती है। इस ऋतु में भारत का तापमान अधिक रहता है। इसलिए यह दक्षिण-पश्चिम से नमीयुक्त पवनों को आकर्षित करता है। कहीं-कहीं वर्षा की अवधि और मात्रा घटती है और कहीं-कहीं बहुत भारी वर्षा हाती है। जो बाढ़ का कारण बनती है। **शरद ऋतु**–यह ऋतु अक्टूबर-नवंबर मा में रहती है। इस समय दक्षिण-पश्चिम पवन लौटने लगती हैं। अतः इस ऋतु को मानसून के लौटने की ऋतु भी कहते हैं। इसलिए तमिलनाडु की वर्षा जाड़े की वर्षा कहलाती है। क्योंकि इस समय सूर्य के दक्षिणायन होने से भारत में तापमान काफी कम होता है।

2. भारत की जलवायु–भूमि और जलवायु लोगों के जीवन पर गहरा प्रभाव डालने वाले दो प्रमुख कारक हैं। यह कारक एक स्थान से दूसरे स्थान, एक देश से दूसरे देश और एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप में भिन्न-भिन्न होते हैं। भारत विविध जलवायु भू-भाग और प्राकृतिक वनस्पति वाली भूमि है। हिमालय क्षेत्र की शीत जलवायु से लेकर रेगिस्तान के मरुस्थल की प्रचंड गर्मी और समुद्र जलवायु तक विस्तृत जलवायु भिन्नता तथा इसके साथ ही वर्षा भी भिन्न परिणाम में होती है। जलवायु की इतनी अधिक भिन्नता रहने पर भी भारत का मानसून जलवायु की एकता बनाए रखने में सहयोग देता है। भारत की जलवायु को **मानसूनी जलवायु** कहा जाता है। क्योंकि यहाँ की जलवायु मानसूनी हवाओं से अधिक प्रभावित हाती है और ये ऋतु हवाओं के अनुसार अपनी दिशाएँ बदल लेती हैं।

3. वर्षा का वितरण–भारत में वर्षा का वितरण बहतु ही असमान है। वर्षा की मात्रा की दष्टि से देश को चार भागों में बाँटा गया है– **भारी वर्षा के क्षेत्र** : पूर्वी हिमालय के क्षेत्र, असम, मेघालय, सिक्किम, पश्चिम बंगला, पश्चिम भाग के तट पर भारी वर्षा होती है। विश्व की सबसे अधिक वर्षा मेघालय के मासिनराम में होती है। यहाँ 200 सेमी. से भी अधिक वर्षा होती है। **मध्य वर्षा के क्षेत्र** : ये क्षेत्र बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश, ओडिशा, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु के पूर्वी तट तथा हिमालय के दक्षिणी ढाल हैं। यहाँ 100-200 सेमी. तक वार्षिक वर्षा होती है। **कम वर्षा के क्षेत्र** : दकन का पठार, गुजरात, पूर्वी राजस्थान, पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश कम वर्षा के क्षेत्र हैं। यहाँ 50-100 सेमी. तक वार्षिक वर्षा होती है। **विरल वर्षा के क्षेत्र** : गुजरात का कच्छ प्रायद्वीप, पश्चिमी राजस्थान, दक्षिणी पश्चिम बंगाल, लद्दाख (कश्मीर तथा हिमालच प्रदेश के उत्तरी भाग विरल वर्षा के क्षेत्र हैं। यहाँ औसत 50 सेमी. से भी कम वार्षिक वर्षा होती है।

चित्र के लिए अपनी पुस्तक का पेज नं. 14 देखें

अध्याय 4 : पृथ्वी के प्रमुख परिमंडल

(क) **1.** (अ) **2.** (ब) **3.** (अ) **4.** (स)

(ख) **1.** एशिया क्षेत्रफल की दृष्टि **2.** उत्तरी अमेरिका **3.** पाँच **4.** माउंट ऐवरेस्ट

(ग) **1.** (×) **2.** (✓) **3.** (✓) **4.** (×)

(घ) **1.** ऑक्सीजन एक जीवन दायिनी गैस है, जिसके द्वारा हम सभी जीव-जंतु, प्राणी साँस लेते हैं और जीवित रहते हैं। इसलिए यह हमारे लिए बहुत आवश्यक है।

2. पृथ्वी तल का वह भाग जहाँ जल पाया जाता है। जलमंडल कहलाता है।

3. पृथ्वी के जिस भाग पर हम रहते हैं। इस पर पेड़-पौधे, जीव-जंतु, पर्वत, पठार तथा मैदान आदि पाए जाते हें। जिसके द्वारा अनेक प्रकार की वस्तुओं को प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए स्थलमंडल हमारे लिए उपयोगी है।

4. विश्व के सबसे विशाल महासागर का नाम प्रशांत महासागर है।

5. भूमि, जल और वायु जीवन विकास के बुनियादी तत्व हैं।

(ङ) **1.** पृथ्वी के जिस भाग पर हम रहते हैं। उस ठोस भाग को भूमंडल या स्थलमंडल कहते हैं। अधिकतर पेड़-पौधे एवं जीव-जंतु भी इसी भाग पर पाए जाते हैं। पर्वत, पठार तथा मैदान जैसी भू-आकृतियाँ इसी भूमंडल या स्थलमंडल पर ही स्थित हैं।

2. वायुमंडल का संगठन–वायुमंडल मुख्यतः नाइट्रोजन तथा ऑक्सीजन गैसों से बना है। जो वायुमंडल की 99% गैसें हैं। इसमें नाट्रोजन 78%, ऑक्सीजन 21% तथा अन्य गैसें; जैसे–कार्बन-डाई ऑक्साइड, आर्गन और अन्य 1% हैं। ऑक्सीजन जीवन दायिनी गैस है। जबकि नाइट्रोजन जैव पदार्थों में वृद्धि में सहायक है। कार्बन-डाई ऑक्साइड की मात्रा कम, फिर वह सूर्य के प्रकाश को सोखती है और हमारी धरती को गर्म रखती है तथा पेड़ पौधों की वृद्धि में भी सहायक है। पर्वतारोहियों को ऊँचे क्षेत्रों में जाने कि लए भी ऑक्सीजन सिलेंडर ले जाने पड़ते हैं। जिससे हवा के सघनता होने पर वहाँ हवा विरल न हो जाए।

3. यह विश्व का सबसे छोटा महाद्वीप है। इसकी मुख्य भूमि पर एक ही देश ऑस्ट्रेलिया होने के कारण इसे देशी महाद्वीप भी कहते हैं। इसके पूर्व में प्रशांत महासागर, पश्चिम में हिन्द महासागर उत्तर में दक्षिण पूर्व एशियाई द्वीप समूह तथा दक्षिण ध्रुव महासागर स्थित हैं।

4. कुछ वर्षों से मनुष्य की जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ी है, जिससे जैवमंडल का संतुलन होने लगा है। इसी बढ़ती जनसंख्या को पोषण करने के लिए प्राकृतिक स्रोतों का अत्यधिक शोषण किया जा रहा है। कृषि हेतु जंगलों को साफ किया जा रहा है और खनिजों के लिए खदानें खोदी जा रही हैं। इससे असंतुलन की स्थिति पैदा हो रही है। वाहन, मिल, वायुमंडल, नदियों, मिट्टी समुद्रों में पानी के स्तर की बढ़त, बाढ़, सूखा तथा सभी प्राकृतिक स्रोतों को प्रदूषित कर रहे हैं। विश्व को विध्वंस से बचाने के लिए हमें पौधों के रोपण, प्राकृतिक स्रोत के प्रयोग को रोकने, प्रदूषण को रोकने जैसे हर संभव प्रयास करने चाहिए।

5. पृथ्वी पर जीवन उस संकीर्ण क्षेत्र के अंदर अस्तित्व में आता है। जहाँ भूमि, पानी और वायु संपर्क में आते हैं। यह संकीर्ण क्षेत्र जैवमंडल कहलाता है। यह क्षेत्र लगभग 10,00,000 प्रकार के प्राणियों और 3,00,000 प्रकार के पौधों को पोषण देता है।

(च) **1. जैवमंडल**–पृथ्वी पर जीवन उस संकीर्ण क्षेत्र के अंदर अस्तित्व में आता है। जहाँ भूमि, जल और वायु संपर्क में आते हैं। यह संकीर्ण क्षेत्र जैवमंडल कहलाता है। यह क्षेत्र लगभग 10,00,000 प्रकार के प्राणियों और 3,00,000 प्रकार के पौधों को पोषण देता है। जैवमंडल हमारी पृथ्वी को सौरमंडल में महत्त्वपूर्ण और अनोखा बनाता है। अब तक किसी अन्य ग्रह पर जीवन नहीं प्राप्त हुआ है। इस प्रकार यह हमारी पृथ्वी को अनूठा बनाता है। जीवन केवल अपने आदर्श रूप में ही जीवन को सहायता देता है। पेड़-पौधे प्राणियों जैसे जीवधारी एक दूसरे के साथ पूर्ण रूप से संतुलित होकर रहते हैं। जैवमंडल के सभ घटकों को दो वृहद वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है– जंतु जगत और पादप जगत।

जंतु जगत को चार वर्गों में बाँटा गया है– **शाकाहारी** : वे जीव जो पेड़-पौधों के सहारे जीवन निर्वाह करते हैं। जैसे– भेड़, बकरी, गाय, भैंस, बैल आदि। **मांसाहारी** : वे जीव जो अन्य जीवों को अपना आहार बनाते हैं। जैसे–शेर, भेड़िया आदि। **सर्वाहारी** : वे जीव जो वनस्पतियों और जीवों दोनों से अपना आहार ग्रहण करते है। जैसे–मनुष्य, बिल्ली, कुत्ता आदि। **मृतोपजीवी** : वे जीव जो मृत जीवों, सड़ी हुई वनस्पतियों आदि से अपना आहार ग्रहण करते हैं; जैसे चील, बाज आदि। अतः इससे यह ज्ञात होता है कि जैवमंडल भी हमारी पृथ्वी के लिए विशेष महत्व रखता है।

2. पृथ्वी के जिस भाग पर हम रहते हैं, उस ठोस भाग को भूमंडल या स्थलमंडल कहते हैं। अधिकतर पेड़-पौधे, जीव-जंतु भी इसी भाग पर पाए जाते हैं। पर्वत, पठार तथा मैदान जैसी भू-आकृतियाँ इसी स्थलमंडल पर स्थित हैं। पृथ्वी के केन्द्र से ऊपरी परत को मैंटल कहते हैं। यह मैंटल भी स्थलमंडल में होती है। इसी कठोर ऊपरी सतह पर ही महाद्वीप और महासागर हैं। स्थलमंडल पर सात महाद्वीप हैं। ये सात महाद्वीप इस प्रकार हैं– उत्तरी अमेरिका, अफ्रीका, दक्षिणी अमेरिका, एशिया, यूरोप, ऑस्ट्रलिया और अंटार्कटिका।

सागर के ऊभरे ठोस भाग को महाद्वीप कहते हैं।

एशिया : यह क्षेत्र की दृष्टि से विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है। यह पृथ्वी के एक तिहाई भाग पर फैला है। **अफ्रीका** : आकर की दृष्टि से अफ्रीका दूसरा सबसे बड़ा महाद्वीप है। स्वेज नहर इसको एशिया से अलग करती है। सहारा जो संसार का सबसे बड़ा मरुस्थल या रेगिस्तान है, वह अफ्रीका में ही है। **उत्तरी अमेरिका** : अमेरिगो देसपुक्की के नाम पर ही इस महाद्वीप का नाम अमेरिका पड़ा। यह विश्व का तीसरा बड़ा महाद्वीप है। **दक्षिणी अमेरिका** : दक्षिणी अमेरिका को पक्षीयों का महाद्वीप कहा जाता है। इसका कुछ भाग उत्तरी गोलार्द्ध और शेष भाग दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित है। संसार की सबसे चौड़ी अमेजन नदी भी यहाँ पर ही है। **अंटार्कटिका** : यह दक्षिण ध्रुव के समीप पूर्णत दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित है। यह महाद्वीप सदैव मोटी बर्फ से ढका रहता है। **यूरोप** : आकार के आधार पर यह छठा सबसे बड़ा महाद्वीप है। यह एशिया महाद्वीप से जुड़ा है। यूरोप तथा एशिया मिलकर यूरेशिया कहलाते हैं। **ऑस्ट्रेलिया** : यह विश्व का सबसे छोटा महाद्वीप है। इसके मुख्य भूमि पर एक ही देश ऑस्ट्रेलिया होने के कारण इसे देशीय महाद्वीप भी कहते हैं।

3. वायुमंडल–हमारी पृथ्वी वायु के आवरण से घिरी है। जिसे वायुमंडल कहते हैं। यह गैसों का मिश्रण है। हमें साँस लेने के लिए हवा यही प्रदान करता है। तथा सूर्य के हानिकारक प्रभाव को कम करता है। यह पृथ्वी के न्यूनतम 1,600 किमी. ऊँचाई तक विस्तार वाला है। इस विस्तार में अनेक गैसें होती हैं–ऑक्सीजन, कार्बन-डाई ऑक्साइड, नाइट्रोजन आदि। पृथ्वी की सतह के नजदीक वायु सघन और ऊपर की ओर चढ़ते जाने पर विरल हो जाती है। वायुमंडल को उसकी रचना के तथा तापमान के आधार पर पाँच

भिन्न-भिन्न पर्तों में बाँटा है–क्षोभमंडल, समताप मंडल, मध्य मंडल, तापमंडल और बाह्यमंडल। अतः सभी अवस्थाओं में जीवित रहने के लिए वायु मंडल अति आवश्यक है।

अध्याय 5 : इतिहास जानने के स्त्रोत

(क) **1.** (अ) **2.** (अ) **3.** (ब) **4.** (अ)

(ख) **1.** हड़प्पा **2.** स्वर्ग युग **3.** पुरालेखशास्त्र **4.** पत्थरों **5.** 1947

(ग) **1.** (✓) **2.** (✓) **3.** (✓) **4.** (✓)

(घ) **1.** (द) **2.** (य) **3.** (अ) **4.** (ब) **5.** (स)

(ङ) **1.** जब से मानव का धरती पर अवतरण हुआ है तब से असके द्वारा किए गए क्रिया कलापों को क्रमानुसार लिपिबद्ध करना ही इतिहास कहलाता है।

2. सिक्के अन्य प्रकार की धातुओं के बने होते थे; जैसे–चाँदी, सोना, ताँबा, लोहा आदि।

3. पृथ्वी पर मनुष्य लाखों वर्षों से रह रहा है।

4. प्राचीनकाल के इन दबे हुए अवशेषों का अध्ययन पुरातत्व या पुरातत्व विज्ञान कहते हैं।

(च) **1. इतिहास**–इतिहास हमें अतीत एवं अतीत में मानव के द्वारा क्रिया-कलापों या कार्यों के विषय में बताता है। जब से मानव का इस धरती पर अवतरण हुआ है। तब से उसके द्वारा किए गए क्रिया-कलापों को क्रमानुसार लिपिबद्ध करना ही इतिहास कहलाता है।

2. प्रागैतिहासिक काल–इस काल में जब मानव तो अस्तित्व में थे लेकिन जब लिखाई का अविष्कार न होने से उस काल का कोई लिखित वर्णन नहीं है। इस काल में मानव इतिहास की कई घटनाएँ हैं; जैसे–हिमयुग, मानवों का अफ्रीका से निकलकर अन्य स्थानों का विस्तार, आग का, कृषि का आविष्कार, कुत्तों व अन्य जानवरों का पालतू बनाना इत्यादि। पत्थरों के औज़ार, पाड़वा, अवशेष व गुफाओं की कला तथा साथ ही पहिए का आविष्कार भी इस काल में हुआ था।

3. शिलालेख–शिलालेख का अध्ययन पुरालेख शास्त्र कहलाता है। शिलालेख या अभिलेख ताँबे की पट्टियों, मिट्टी, लकड़ी के तख्तो, बड़ी चट्टानों, खंभो तथा मंदिर की दीवारों पर उत्कीर्ण लेख हैं। पत्थरों पर लिखने की पद्धि प्राचीन भारत में अत्यधिक प्रचलित थी। जिनमें हड़प्पा की मोहरें भी पाई गईं हैं। राजाओं और भारत के प्राचीन धार्मिक व सामाजिक जीवन पर बहुत-सी जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। उदाहरणार्थ–अशोक के शिलालेख उसके धर्म उपलब्धियों और उद्घोषणाओं पर प्रकाश डालते हैं। ताँबे की प्लेटों पर सरकारी भूमि-दान के अभिलेख हैं।

(छ) **1.** इतिहास हमें अतीत व अतीत में हमें मानव के द्वारा किए गए कार्यों के विषय में बताता है। इतिहास जानने क स्त्रोत निम्नलिखित हैं– **पुरातात्विक स्त्रोत** : प्राचीनकाल में दबे हुए अवशेषों का अध्ययन पुरातत्व विज्ञान कहलाता है। ऐसे अवशेष जैसे–घर, बर्तन के टुकड़े, औज़ार, हथियार, आभूषण आदि होती हैं। इन अवशेषों का अध्ययन करने वाले व्यक्ति पुरातत्वबेत्ता कहलाता है। इन स्त्रोतों में अभिलेख, सिक्के व स्मारक भी सम्मिलित हैं। **साहित्यिक स्त्रोत** : सहित्यिक इतिहास के लिखित दस्तावेज हैं। ये दस्तावेज ताड़पत्रों, भोजपत्रों, ताम्रपत्रों, चमड़े एवं लकड़ी के पट्टो पर लिखित रूप में साहित्यिक ग्रंथों में भी प्राप्त हैं। इस सभ्यता के समाज, रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, धर्म, कार्य, कृषि, पशुपालन, घर-परिवार, शिक्षा आदि धार्मिक व संस्कृतिक के चित्रण भी हैं। **सिक्के** : एक महत्त्वपूर्ण स्त्रोत सिक्के व मुहरे भी हैं। खुदाई में भिन्न-भिन्न शासनकाल के सिक्के, मुद्रा कला व आर्थिक स्थिति के विषय में पता चलता है। इस हड़प्पा सभ्यता में कुछ सिक्के आकार में वर्गाकार व गोल मिले हैं। **शिलालेख या अभिलेख** : शिलालेख का अध्ययन पुरालेख शास्त्र कहलाता है। यह शिलालेख ताँबे की पट्टियों, मिट्टी, लकड़ी के तख्तों, चट्टानों, स्तंभों तथा मंदिरों की दीवारों पर उत्कीर्ण लेख है। **कला और वास्तुकला** : इस सभ्यता में शिलाओं को काटकर अनेक मठ, मंदिर, गुफा, स्तूप तथा बड़े-बड़े स्मारक आदि का निर्माण कराया गया था तथा कुछ स्तूपों को ऐसे बनवाये जहाँ बौद्ध भिक्षुक रहते थे। **पांडुलिपियाँ एवं लेख** : इनमें अनेक भारतीय व विदेशी यात्रियों के लिखित दस्तावेज़ों को सम्मिलित करते हैं। मैगस्थनीज, फाह्यान, ह्वेनसांग, इब्नेबतूता, अलबरूनी, अलमंसूदी आदि विद्वान हस्तियाँ हैं। जिन्होंने भारत की तत्कालीन आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं भौतिक स्थितियों का विश्लेषण किया है।

2. पांडुलिपियाँ एवं लेख–भारत में पांडुलिपियों एवं लेख का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके अंतर्गत हम विभिन्न भारतीय एवं विदेशी यात्रियों के लिखित दस्तावेजों को सम्मिलित करते हैं। मैगस्थनीज, फाह्यान, ह्वेनसांग, इब्नेबतूता, अलबरूनी, अलमंसूदी आदि विद्वान हस्तियाँ हैं। जिन्होंने भारत की तत्कालीन आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं भौतिक स्थितियों का विश्लेषण किया है।

3. साहित्यिक स्त्रोत : सहित्यिक इतिहास के लिखित दस्तावेज हैं। ये दस्तावेज ताड़पत्रों, भोजपत्रों, ताम्रपत्रों, चमड़े एवं लकड़ी के पट्टो पर लिखित रूप में साहित्यिक ग्रंथों में भी प्राप्त हैं। इस सभ्यता के समाज में रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, धर्म, कार्य, आदि की जानकारी होती है। इन दस्तावेजों में उस समय की आर्थिक स्थिति या क्रियाओं; जैसे– कृषि, पशुपालन, शिल्प, शिक्षा, घर-परिवार, जाति, व्यवहार तथा धार्मिक व संस्कृतियों का पता चलता है।

4. इतिहास शब्द लैटिन भाषा के हिस्टोयिा तथा ग्रीक भाषा के हिस्टोरिको शब्द से लिया गया है। प्राचीन इतिहास हमें प्राचीन व वर्तमान तक के मानव विवरण के बारे में बताता है। तब से उसके द्वारा किए गए क्रिया-कलापों को क्रमानुसार लिपिबद्ध करना ही इतिहास कहलाया। इन्ही क्रिया-कलापों द्वारा ही में पता चलता है कि उनका रहन-सहन, खान-पान, वस्त्र लिपि या शिलालेख औज़ारों तथा साथ ही उनकी उत्पत्ति कैसे हुई। जिसे वर्तमान में मानव जीवन

में अनेक प्रकार से लाभ हो सकता है।

5. पुरातात्विक स्त्रोत : विगत काल की सामाग्री के कुछ अवशेष पृथ्वी के नीचे दबे हुए हैं। उन्हें खोदना पड़ता था। प्राचीन काल के इन दबे हुए अवशेष का अध्ययन पुरातत्व विज्ञान कहालता है। ऐसी सामाग्रियों के अवशेषों में घर, बर्तन के टुकड़े, औज़ार, हथियार, आभूषण और कलाकृतियाँ होती हैं। इन सामाग्रियों को पुरातत्व विज्ञान के स्त्रोात कहते हैं। इन अवशेषों का अध्ययन करने वाले व्यक्ति पुरातत्वबेत्ता कहलाता है। पुरातत्व विज्ञान की सहायता से ही हमने सिंधु घाटी की सभ्यता को खोजा था। पुरातत्व स्त्रोत सामाग्रियों की श्रेणियाँ, अभिलेख, सिक्के, स्मारक और अवशेष कला, वास्तुकला, साहित्यिक स्त्रोत, पांडुलिपियों आदि के बारे में जानकायिँ प्राप्त होती हैं।

अध्याय 6 : सिंधु घाटी की सभ्यता

(क) **1.** (अ) **2.** (ब) **3.** (अ) **4.** (अ)

(ख) **1.** आंतरिक और विदेशी **2.** सोने-चाँदी **3.** पंजाब **4.** पक्की **5.** चिकनी मिट्टी

(ग) **1.** (✓) **2.** (✓) **3.** (✓) **4.** (✗)

(घ) **1.** (स) **2.** (द) **3.** (अ) **4.** (य) **5.** (ब)

(ङ) **1.** प्रत्येक नगर के दो भाग थे– पश्चिमी एवं पूर्वी भाग। इनमें जो पूर्वी भाग नीचे बना होता था उसे निचला नगर कहते थे।

2. प्रत्येक नगर के दो भाग थे– पश्चिमी एवं पूर्वी भाग इनमें जो पश्चिमी भाग ऊँचाई पर होता था। उसे 'नगर दुर्ग' कहा जाता था।

3. अमीश त्रिपाठी जो कि उपन्यासकार थे। उन्होंने मोहनजोदड़ों क्षेत्र के निवासियों को मेलूहा कहा है।

4. सिंधु घाटी सभ्यता के दो नगर–हड़प्पा और मोहनजोदड़ो थे।

5. सिंधु घाटी की सभ्यता के लोग मातृदेवी, पशुपति शिव पीपल, सर्प, मगरमच्छ और चीते की भी संभवतः पूजा करते थे।

6. आज से लगभग 80 वर्षों पूर्व यह पुरातत्व स्थल उप-महाद्वीप के सबसे पुराने शहर में से एक है। चूँकि इस सभ्यता की खोज पहले हुई इसलिए इस सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता कहते हैं।

(च) **1.** सिंधु घाटी के लोग आंतरिक और दिवदेशी व्यापार बढ़ाने में लगे हुए थे। सिंधु घाटी में मेसोपोटामिया की मोहरों तथा नगरों से इस बात की पुष्टि हो जाती है कि वह विदेशी व्यापार करते थे। गुजरात के लोयल नामक स्थान में गोदी के अवशेष प्राप्त हुए हैं। इस खोज से यह पुष्टि होती है कि सिंधु घाटी के लोग जलयानों तथा व्यार और वाणिज्य में उनका उपयोग करने में परिचित थे।

2. सिंधु घाटी सभ्यता के पुरुष और महिलाएँ दोनों आभूषणों को धारण करते थे। इन आभूषणों में मुख्यतः गुलबंध, बाजूबंद, अँगूठियाँ, चूड़ियाँ आदि पहनी जाती थी। ये आभूषण कोड़ियों, पशुओं की हड्डियों और ताँबे के बने होते थे। धनी वर्ग की महिलाएूं सोने, चाँदी, हाथी दाँत या बहुमूल्य पत्थरों के आभूषण पहनती थी।

3. आज के लगभग 150 साल पहले जब पंजाब में पहल बार रेलवे लाइन बिछाई जा रही थी, तो इस कार्य में जुटे इंजीनियरों को अचानक हड़प्पा पुरास्थल मिला। यह स्थान पाकिस्तान में है। किंतु उस समय इसकी खोज नहीं की गई। फिर आज से लगभग 80 वर्ष पूर्व पुरातत्वविदों ने इस स्थल को खोजा। जब पता चला कि यह पुरातत्व स्थल उप-महाद्वीपों के सबसे पुराने शहरों में से एक था। चँकि सबसे पहले इस सभ्यता को यहीं खोजा गया था। इसलिए इस सिंधु घाटी सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता भी कहते हैं।

4. सिंधु सभ्यता की खुदाई में जो मोहरें प्राप्त हुईं हैं, उन पर मनुष्य की विविध आकृतियाँ, विभिन्न जानवर की वर्तनी की आकृतियाँ बनी हुईं हैं, जो संभवतः विभिन्न वर्णों या शब्द के संकेत हैं। लेकिन आज तक उन्हें पढ़ा नहीं जा सका है। अतः हड़प्पा सभ्यता से संबंधित विवरण खुदाई में अवशेषों के विश्लेषण पर ही आधारित हैं।

(छ) **1. नगर निर्माण कला :** हड़प्पा और मोहनजोदड़ों इस सभ्यता के प्रमुख नगर थे। इनकी खुदाई से इस सभ्यता की नगर निर्माण खैली का पता चलता है। नगर के चारों ओर रक्षार्थ दीवारें बनी होती थीं। यहाँ की सड़कें सीधी और चौड़ी होती थीं। मकान दो मंजिला और पक्की ईंटों के बने होते थे। प्रत्येक नगर में दो भाग थे पश्चिमी और पूर्वी भाग। पश्चिमी भाग ऊँचाई पर होता था जिसे **नगर दुर्ग** और पूर्वी भाग नीचे बने होते थे जिन्हें **निचला नगर** कहते थे।

शिल्पकला : इस सभ्यता की खुदाई में ताँबे और काँसे की बनी हुई कुलहड़ी, दर्पण, आरी, कंघी, उस्तरा तथा सोने चाँदी के आभूषणों आदि मिले थे। इससे पता चलता है कि ये लोग धातुओं से परिचित थे और तरह-तरह की वस्तुएँ बना लेते थे। ये लोग मिट्टी के बर्तन बनाकर उनके ऊपर काले रंग के डिजाइन बनाते थे।

2. आज के लगभग 150 साल पहले जब पंजाब में पहल बार रेलवे लाइन बिछाई जा रही थी, तो इस कार्य में जुटे इंजीनियरों को अचानक हड़प्पा पुरास्थल मिला। यह स्थान पाकिस्तान में है। किंतु उस समय इसकी खोज नहीं की गई। फिर आज से लगभग 80 वर्ष पूर्व पुरातत्वविदों ने इस स्थल को खोजा। जब पता चला कि यह पुरातत्व स्थल उप-महाद्वीपों के सबसे पुराने शहरों में से एक था। चँकि सबसे पहले इस सभ्यता को यहीं खोजा गया था। इसलिए इस सिंधु घाटी सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता भी कहते हैं।

अध्याय 7 : नए धर्मों का उदय

(क) **1.** (स) **2.** (ब) **3.** (स)

(ख) **1.** दिगांबर व श्वेतांबर **2.** महावीर स्वामी **3.** पार्श्वनाथ **4.** शुद्धोधन **5.** सिद्धार्थ

(ग) **1.** (✗) **2.** (✗) **3.** (✓) **4.** (✗)

(घ) **1.** (ब) **2.** (य) **3.** (द) **4.** (स) **5.** (अ)

(ङ) **1.** बुद्ध की जाति प्रथा पर कोई आस्था नहीं थी और उन्होंने सभी मनुष्यों के साथ समान व्यवहार किया उन्होंने निम्न जाति के सबसे

अधिक निस्सहाय लोगों को भी अपने गले लगाया।

2. महावीर के अनुसार मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार फल प्राप्त करता है अतः उसे निर्वाण या मोक्ष प्राप्त होता है।

3. बौद्ध धर्म के चार परम सत्य : 1. यह संसार दुःख और शोक से परिपूर्ण है। 2. इस दुःख व शोक का मुख्य कारण इच्छा है। 3. इच्छा त्याग करने से दुःख और शोक को समाप्त किया जा सकता है। 4. इच्छा का दमन अष्टांग पथ पर चलने से ही संभव है।

4. महावीर स्वामी का जन्म 599 ई. पू. में बिहार में वैशाली के निकट कुंडा ग्राम में हुआ था।

(च) **1.** भगवान बुद्ध के उपदेश : बुद्ध के अनुसार चार महासत्य निम्नलिखित हैं– 1. यह संसार दुःख और शोक से परिपूर्ण है। 2. इस दुःख व शोक का मुख्य कारण इच्छा है। 3. इच्छा त्याग करने से दुःख और शोक को समाप्त किया जा सकता है। 4. तृष्णा या इच्छा का दमन अष्टांग पथ पर चलने से ही संभव है।

2. जैन धर्म की प्रमुख पाँच शिक्षाएँ हैं : 1. सत्य बोलो 2. अनुचित धन मत जुटाओ 3. किसी जीव पर हिंसा मत करो 4. चोरी मत करो 5. इंद्रियों को वंश में रखो।

3. भगवान बुद्ध या सिद्धार्थ बौद्ध धर्म के संस्थापक थे। उन्होंने 29 वर्षों की आयु में सत्य की खोज के लिए घर छोड़ दिया। गया के निकट उर्वेला वन में उन्होंने लगातार छः वर्ष तक घोर तपस्या की। उनका शरीर सूखकर कंकाल मात्र रह गया और यदि एक बालिका उन्हें एक गिलास दूध नहीं पिलाती तो उनके प्राण उड़ चुके होते। यह सोचकर कि कष्ट-भोग और आत्मत्याग करने से वे सत्य की खोजन नहीं कर सकते हैं। तो उन्होंने यह कठोर मार्ग त्याग दिया। अंत में जब वे एक रात्रि में बरगर के वृक्ष के नीचे बैठे थे तब उनके व्यक्तित्व में सत्य का प्रकाश हो गया या प्रकाशमान बन गए। उस समय बुद्ध जी 35 वर्ष के थे। बुद्ध ने जिस स्थान पर ज्ञान प्राप्त किया उस स्थान पर महाबोधि मंदिर तथा बौद्ध धर्म विलंबियों का केंद्र है।

4. महान त्याग : गौतम बुद्ध या सिद्धार्थ बौद्ध धर्म के संस्थापक थे। उन्होंने 29 वर्ष की आयु में अपनी पत्नी यशोधरा, पुत्र राहुल तथा राजपाठ को छोड़कर घर से चले गए। गया के निकट उर्वेला वन में उन्होंने लगातार छः वर्षों तक तपस्या की अंत में जब वे एक बरगद के वृक्ष के नीचे बैठे तो उनके व्यक्तित्व में प्रकाश अर्थात् प्रकाशमान बन गए। 528 ई. में वह 35 वर्ष के थे, जब यह घटना घटित हुई। जहाँ बौद्ध जी ने ज्ञान प्राप्त किया था अब वहाँ महाबोधि मंदिर व बौद्ध धर्मावलंबियों के केन्द्र बने हैं।

(छ) **1. जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म का उदय :** जब समय व्यतीत होने के साथ-साथ हिन्दू धर्म में अनेक कुरीतियाँ आ गईं, जिनके फलस्वरूप 6 वीं शताब्दी ईसा पूर्व दो धर्मों बौद्ध व जैन धर्म का उदय हुआ। इन धर्मों के उदय के निम्नलिखित कारण हैं– 1. वैदि ग्रंथों की भाषा (संस्कृत) साधारण लोगों के लिए अब ग्राहय नहीं रह गई। 2. सरलवर्ण व्यवस्था ने कठोर जाति-व्यवस्था का रूप धारण कर लिया और संपूर्ण समाज ऊँची व नीची जातियों में विभक्त हो गया था। 3. वैदिक धर्म की सरलता, शुद्धता तथा धर्म से मोह भंरा होने लगा और लोग जादू-टोना में विश्वास करने लगे। 4. उच्च जाति द्वारा निम्न जातियों के लोगों से घृणा, अछूत, कुओं से पानी व मंदिरों में प्रवेश आदि से प्रताड़ित किए जाते थे। 5. बलि प्रथाएँ तथा यज्ञ विस्तृत रूप से संपन्न होने लगी। 6. ब्राह्मण अपने स्वार्थ के लिए जनता का शोषण करने लगे। 7. वैश्य व्यापारिक जाति ने पर्याप्त धन एकत्रित कर लिया था। 8. वैदिक धर्म की सरल विविधाएँ जटिल तथा खर्चीली हो गई। इस प्रकार धार्मिक भ्रष्टचार तथा सामाजिकि उत्पीड़न ने दो नए धर्मों जैन व बौद्ध धर्मों के उदय को प्रेरित किया, जो प्रेम, दया व धर्मनिरपेक्षता पर आधारित थे।

2. गौतम बुद्ध का वास्वविक नाम सिद्धार्थ था। उनका जन्म नेपाल की तराई में स्थित लुम्बिनी नामक स्थान में 563 ई. पू. हुआ था। बुद्ध जी बौद्र्ध धर्म के संस्थापक थे।

जब बुद्ध 29 वर्ष की आयु के थे, तब उन्होंने अपनी पत्नी यशोधरा पुत्र राहुल, राज-पाठ, तथा घर छोड़ सत्य की खोज में निकल पड़े। उन्होंने गया के निकट उर्वेला वन में छः वर्षों तक घोर तपस्या की, जब वह कष्ट भोग और आत्म त्याग रकने से वे सत्य की खोज न कर पाए तो उन्होंने यह त्याग कर दिया। अंत में जब वे रात्रि में बरगर के नीचे बैठे थे, तो उनके व्यक्तित्व में सत्य का प्रकाश समा गया और प्रकाशमान बन गए। यह घटना 528 ई. पू. में हुई जब बुद्ध 35 वर्ष के थे। जहाँ इन्होंने ज्ञान प्राप्त किया अब वहाँ पर महाबोधि मंदिर वह विश्वभर के बौद्ध धर्मावलंबियों के आकर्षण का केन्द्र है।

3. जैन धर्म की स्थापना महावीर स्वामी ने 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व की थी। महावीर स्वामी का जन्म उत्तरी भारत के वज्जि गणराज्य संघ वैशाली के निकट कुण्डाग्राम में 599 ई. पू. हुआ था। उनके बचपन का नाम वर्धमान था। इनके पिता का नाम सिद्धार्थ तथा माता का नाम त्रिशला देवी था। युवावस्था में उनका विवाह एक राजकुमारी यशोदा से हुआ। जिनसे उन्हें एक कन्या प्रियदर्शनी प्रापत हुई। 30 वर्ष की आयु में उनके माता-पितका का स्वर्गवास हो गया और यह अपने बड़े भाई से आज्ञा प्राप्त कर सन्यास लेकर कठोर तपस्या करने लगे। 12 वर्षों की तपस्या के बाद उन्हें पर ज्ञान कैवल्य प्राप्त हुआ। इसके बाद उन्होंने, ज्ञान, संयम, बुद्धि, मन आदि पर विजय प्रापत कर लिया। इन्हे जिन, निग्रंथ आदि नामों से संबोधित किया गया। 30 वर्ष तक ज्ञान फैलाने के बाद उनके अनेक शिष्य बने तथा 72 वर्ष की आयु में मल्लों की दूसरी राजधानी पावपुरी में महावीर ने अपने प्राणों को त्याग दिया।

अध्याय 8 : मौर्य साम्राज्य

(क) **1.** (ब) **2.** (अ) **3.** (स)

(ख) **1.** सेनापति **2.** चंद्रगुप्त **3.** बौद्ध धर्म **4.** चंद्रगुप्त **5.** विश्व विद्यालय

(ग) **1.** (स) **2.** (य) **3.** (द) **4.** (ब) **5.** (अ)

(घ) **1.** चंद्रगुप्त मौर्य ने सुदर्शन झील का निर्माण कराया था।

2. चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र विषय का अध्यापक था।

3. मौर्य वंश क प्रथम शासक चंद्रगुप्त मौर्य था।

(ङ) **1.** अशोक मौर्य वंश का सबसे प्रसिद्ध राजा हुआ। 273 ई. में वह बिंदुसार के बाद सिंहासन पर बैठा। अशोक का कहना था कि लोग माता-पिता, शिक्षकों, अपने बड़ों, ऋषि-मुनियों तथा ब्राह्मणों का आदर करें तथा उनमें विश्व को शांति, अहिंसा का संदेश देने एवं उसकी जनकल्याण की भावना थी। जिसके कारण अशोक को महान समझा जाता था।

2. मौर्यकाल की सामाजिक और आर्थिक स्थिति : प्रशासन कड़ा था। इसलिए लोग कानून एवं नियमों का पालन करते थे। लोगों का जीवन शांतिपूर्ण एवं समृद्ध था। अच्छी खेती बाड़ी के लिए बाँध एवं नहरों का निर्माण किया गया। चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा निर्मित सुदर्शन झील सबसे अच्छा उदाहरण है। कृषि तथा व्यापार के लिए राज्य लोगों की आर्थिक सहायता भी करता था। वन तथा वन्य प्राणी, प्राकृतिक संपदा एवं अन्य प्राकृतिक संसाधन सार्वजनिक संपत्ति समझे जाते थे और उनके संरक्षण के लिए नियम व कानून भी थे। तक्षशिला, काशी, पाटलिपुत्र आदि शिक्षा के केन्द्र भी थे। वह ब्राह्मणों व जैन धर्मावलंबियों का पूरा सम्मान करता था। उसका कहन था कि सभी धर्म व संप्रदाय एक दूसरे का आदर करे, आलोचना नहीं। ताकि समाज में सौहार्द व सद्भाव बना रहे। अशोक का कहना यह भी था कि दूसरे लोगों का दृष्टिकोण समण्ना व सम्मान तथा विभिन्न समुदायों के सम्मानित व्यक्ति मतभेदों का निपटारा आपसी बातचीत से करे।

3. चंद्रगुप्त मौर्य ने नंदावंश के राजनिरकुश व्यवहार से तथा उसके शासन से जनता को उसकी मृत्यु करके आजदी दिलाई थी। चंद्रगुप्त बहुत ही दयालु भाव का था। उसने चाणक्य की सहायता से नंद वंश का नाश कर दिया और मौर्य वंश की स्थापना की थी।

(च) **1. चंद्रगुप्त :** चंद्रगुप्त मौर्य 321 ईसा पूर्व में मगध का सिंहासन प्राप्त करने में सफल रहा। चंद्रगुप्त मौर्य ने मौर्य वंश की स्थापना की थी। वह किसी साधारण कुल का था। वह 'मुरा' जो शुद्र महिला थी के गर्भ से नंद राजाओं के दरबार में जन्म था। जैसा कि धारण बनाई जाती है। चंद्रगुप्त इस वंश का सदस्य था। उसने नंद राजाओं की कमजोरियों और अलोकप्रियता उनके शासन के अंतिम चरण में लाभ उठाया। उसने चाणक्य की सहायता से नंद वंश का नाश कर मौर्य वंश की स्थापना की। उसका विवाह सेल्यूकस की बेटी हेलेन के साथ हुआ। **चाणक्य :** चाणक्य तक्षशिल विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र विषय का अध्यापक था। यूनानी सम्राट सिकंदर के समक्ष भारतीय शासकों द्वारा घुटने टेक देने से चाणक्य बहुत दुःखी था। उसने अपने छात्रों की एक सेना चंद्रगुप्त मौर्य के नेतृत्व में तैयार कर स्वयं प्रधानमंत्री के रूप में कार्य करके मौर्य साम्राज्य की स्थाना का मार्ग प्रशस्त किया। चाणक्य मगध की राजधानी पाटलिपुत्र गया था। वह धनानंद की दानशाला का अध्यक्ष था। बाद में धनानंद ने उसे कुरूपता के कारण निकाल दिया था। इसका बदला चाणक्य ने चंद्रगुप्त द्वारा उसे पराजित करवाकर लिया था।

2. अशोक मौर्य वंश का सबसे प्रसिद्ध राजा हुआ। 273 ई. पू. में वह बिंदुसार के बाद सिंहासन पर बैठा। उसका साम्राज्य बंगाल के हिंदूकुश पूरे अफगानिस्तान, उत्तर में हिमालय, दक्षिण में पेरियार नदी तक फैला है। अशोक विश्व को शांति भावना के कारण महान कहा जाता है। कंलिग युद्ध के बाद अशोक ने बौद्ध धर्म अपनाया। उसने अपना शेष जीवन व कार्य मानव कल्याण को समर्पित कर दिया। उसने कुएँ खुदवाएस, धर्मशालाएँ बनवाईं, चिकित्सालय सड़कों के किनारे छायादार वृक्ष लगवाए आदि कार्य किए। अशोक का कहना था कि लोग, माता-पिता, शिक्षाकों, अपने से बड़ों एवं ऋषि-मुनियों तथा ब्राह्मणों का आदर व सेवा करें। उसने यह सभी कार्यों को शिलालेख द्वारा स्तंभों पर अंकित किया। अशोक ने धर्म प्रचार के लिए कई दूतों और अपने पुत्र महेंद्र, पुत्री संघमिता को भी दूत के रूप में श्रीलंका भेजा।

3. मौर्य साम्राज्य एक विशाल साम्राज्य था। वह चारों दिशाओं में फला हुआ था। उसने साम्राज्य को अनेक भागों में बाँटा हुआ था। राजा ही प्रशान का मुखिया होता था। उसने बहुत से विभाग बनाए। प्रत्येक विभाग की देख-रेख के लिए समितियों का चन किया जाता था। राजा युद्ध के सम सेनापति और मुख्य न्यायधीश होता था। अन्य कार्यों के लिए मंत्रिपरिषण तथा विभागाध्यक्ष की नियुक्ति की थी। अधीन मंत्रिपरिषद में मंत्री, पुरोहित, कारागारों के अध्यक्ष, पुलिस विभाग, गुप्तचर विभाग आदि मुख्य होते थे। चंद्रगुप्त मौर्य ने साम्राज्य को प्रांतों में विभक्त कर कुछ प्रांत स्वयं की देखरेख तथा कुछ कुमारों की नियुक्ति की थी। जो केवल राजा ओं को कर दिया करते थे। उसने कुछ प्रांतों को जिलों और ग्रामों में बाँटा। ग्राम सबसे छोटी इकाई हाती थी। जो गाँव के लिए फैसला लेती थी। सड़कों, कुओं आदि का निर्माण कराना आदि। इसमें बड़ी इकाई नगर होती थी। नगर समिति में 30 सदस्य तथा 6 समितियाँ होती थी। नगर-शासन के प्रधान को नागरिक कहा जाता था। जिनका कार्य समितियों की सहयता तथा रक्षा करने वाली पुलिस की रक्षिन करना था। साम्राज्य में बहुत कम अपराध थे। अतः दंड भी उसी प्रकार दिया जाता था। मौर्य साम्राज्य का सैन्य बल बहुत अधिक था। सेना में पैदल, घुड़सवार, रक्षा सेना, हस्ति सेना यातायात व नौसेना विभाग थे। इन कर्मचारियों का वेतन भी दिया जाता था।

अध्याय 9 : नगर प्रशासन

(क) **1.** (अ) **2.** (अ) **3.** (ब)

(ख) **1.** राज्य **2.** 14 **3.** वार्डो **4.** लोकतांत्रिक

(ग) **1.** (×) **2.** (×) **3.** (✓) **4.** (×)

(घ) **1.** नगर निगम के कार्यों पर राज्य सरकार का नियंत्रण होता है।

2. अधिक जनसंख्या वाले नगरों में महानगर पालिकाएँ होती हैं। इसके सदस्यों को पार्षद कहते हैं।

3. नगर के स्वशासन के लिए बनाए गए निकायों को नगरपालिका (नगर निगम) या महानगर पालिका (महानगर निगम) कहते हैं।

4. नगर पालिका के अनिवार्य कार्य– 1. सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएँ

प्रदान करना। 2. सार्वजनिक सुविधाएँ प्रदान करना।

5. नगर निगम में सबसे ऊँचा पद मेयर या अध्यक्ष का होता है। जिस महापौर कहते हैं।

(ङ) **1.** नगर निगम के कुछ कार्य ऐसे हैं जो नगर निगम की इच्छा या अर्थिक सिीति पर निर्भर होते हैं। जैसे– अनाथालय, चिड़ियाघर, संग्राहलय खोलना तथा पिकनिक के स्थानों का विकास, रात्रि बसेरे, विश्राम गृह आदि बहुत-से ऐसे कार्य जो नागरिकों की भलाई के लिए किए जाते हैं।

2. नगर निगम की आय के स्त्रोत– 1. गृहकर, संपत्तिकार एवं भूमिकर 2. जलकर, सीवरकरल 3. होटलों एवं दुकानां से प्राप्त कर 4. मनोरंजन कर 5. सड़कों व पुलों के प्रयोग के लिए लिया जाने वाला शुल्क 6. विद्युत कर 7. नगर निगम में आने वाली वस्तुओं पर लगने वाली चुंगी से आय आदि।

3. नगर निगम के प्रमुख कार्य– 1. सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करना; जैसे– अस्पताल खोलना, विभिन्न रोगों का टीकाकरण, शहरों व नालों की सफाई कराना, कूड़ा-करकट का निस्तारण करना तथा शुद्ध पेय जल की आपूर्ति करना। 2. सार्वजनिक सुविधाएँ प्रदान कराना; जैसे– नगरों में अच्छी सड़कों का निर्माण, देखभाल, मरम्मत; सार्वजनिक शौचालयों एवं मूत्रालयों पार्कों की तथा शिक्षा की व्यवस्था करना आदि कार्य करना है।

(च) **1. नगर निगम का गठन–** नगर निगम में भी सदस्यों की नियुक्ति निर्वाचन द्वारा ही होती है। चुनाव लड़ने की आयु 18 वर्ष होती है। वोट देने की अनुमति उन्हीं लोगों को होती है जिनकी आयु 18 वर्ष या अधिक हो तथा मतदाता सूची में जिसका नाम हो। नगर निगम में अलग-अलग वार्ड के अलग-अलग कार्य होते हैं। प्रत्येक वार्ड के लिए वोटों द्वारा एक-एक प्रतिनिधि चुना जाता है। कुछ सीटें महिलाओं, अनुसूचित जाति व अनुसूचित जन-जाति के लिए होती हैं। इनके सदस्यों का कार्यकाल 5 वर्ष तक होता है।

नगर निगम में सबसे ऊँचा पद मेयर या अध्यक्ष या माहपौर का होता है। कुछ सदस्य राज्य सरकार द्वारा चुने जाते हैं। कुछ अधिकारियों की नियुक्ति सरकार द्वारा की जाती है। जैसे– मुख्य अभियंता (बिजली विभाग), स्वास्थ्य अधिकारी आदि।

अतः नगर निगम के सभी सदस्य एक साथ काम करके बड़े-बड़े नगरों में आने वाली परेशानियों का समाधान करते हैं। राज्य सरकार द्वारा 5 से 10 सदस्य नियुक्त किए जाते हैं।

2. नगर निगम पर राज्य सरकार का नियंत्रण होता है, क्योकि उसे नए कर लगाने से पहले राज्य सरकार की अनुमति लेनी पड़ती है। तथा उसके द्वारा दिए गए अनुदान का दुरूपयोग तो नहीं हुआ इसकी जाँच भी राज्य सरकार के अधिकारी करते हैं।

नगर निगम का अस्तित्व पूर्णतः राज्य सरकार की योजना पर निर्भर करता है। यह सरकार देखती है कि कोई नगर निगम अगर सही तरीके से कार्य नहीं कर रही तो उसे भंग भी कर सकती है। जिला परिषद् पंचायत विभिन्न पंचायती समितियों को देख-रेख व ग्रमीण लोगों क लिए रोजगार कार्यक्रमों को उपलब्ध कराने में सहायता करती है।

3. नगर निगम के प्रमुख कार्य– इन कार्यों का विभाजन अनिवार्य और स्वैच्छिक कार्यों में किया जा सकता है।

अनिवार्य कार्य–

1. सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करना : इन सेवाओं में अस्पतरल खोलना, विभिन्न रोगों के टीके, शहर व गंदे नालों की सफाई, कूड़े-करकट का निस्तारण तथा शुद्ध पेय जल की आपूर्ति करने का प्रबन्ध करना है। **2. सार्वजनिक सुविधाएँ प्रदान करना :** नगरों की सड़कों का निर्माण, मरम्मत करवाना, सार्वजनिक शौचालय व मूत्रालयों का निर्माण, पार्कों की देख-भाल तथा बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवसाि आदि सुविधाएँ प्रदान करना नगर निगम के कार्य हैं।

स्वैच्छिक कार्य– नगर निगम की इच्छा या आर्थिक स्थिति पर निर्भर होते हैं; जैसे– अनाथालय, चिड़ियाघर, संग्राहलय तथा पिकनिक स्थानों का विकास करना, रात्रि बसेरे, विश्राम गृह और अन्य बहुत-से ऐसे कार्य जो नागरिकों की भलाई के लिए किए जाते हैं।

4. नगरों की अनेक समस्याएँ होती हैं जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं– 1. शहरों में नगरों व गंदे नालों की सफाई की समस्या। 2. सड़कों की मरम्मत न होने की समस्या 3. शुद्ध पेय जल की आपूर्ति की समस्या 4. कूड़े-करकट की समस्या 5. सार्वजनिक शौचालय व मूत्रालयों की समस्या 6. नालियों के निकासों की समस्या 7. पार्कों के निर्माण की समस्या 8. उचित शिक्षा की समस्या 9. स्वास्थ्य संबंधी समस्या आदि।

अध्याय 10 : ग्रामीण एवं शहरी लोगों की आजीविकाएँ

(क) **1.** (स) **2.** (अ)

(ख) **1.** गेहूँ **2.** समुद्रीय तट **3.** धान

(ग) **1.** (✓) **2.** (×) **3.** (✓)

(घ) **1.** महानगर 10 लाख जनसंख्या पर या अधिक जनसंख्या पर बनाए जाते हैं। **2.** जो 14 वर्ष की आयु के बच्चे होते हैं और वह बच्चे कारखानों आदि में कार्य करते हैं। वह बच्चे बाल मजदूर कहलाते हैं। **3.** जो लोग अपनी अजीविका के लिए ठेलों पर अनेक वस्तुएँ; जैसे–फल, सब्जियाँ, दरी, खिलौने व अन्य वस्तुएँ बेचते हैं। यह लोगों का स्वरोजगार कहलाता है।

(ङ) **1.** शहरी इलाके बहुत भीड़-भाड़ वाले होते हैं। कहा जाता है कि शहर की जिंदगी कभी रुकती नहीं। यहाँ पर अनेक प्रकार के छोट-बड़े उद्योग होते हैं। कुछ लोग अपनी आजीविका के लिए ठेलों पर सामान लगाकर बेचते हैं। कुछ अपने बड़े व्यवसाय; जैसे–बड़े-बड़े होटल, दुकाने आदि पर कार्य करते हैं। शहरों में रहने वाले व्यक्ति या तो व्यावसायी या कार्यालयों में काम करने वाले होते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ व्यवसाय मरम्मत करने के भी होते हैं; जैसे–बस, टैक्सी, रिक्शा तथा वैल्डिंग करना आदि। हमारे देश में लगभग एक करोड़ लोग फुटपाथ और ठेलों पर सामान बेचते हैं। शहरों के

बाज़ारों में विभिन्न छोटी-बड़ी दुकाने होती हैं। शहर में मिठाई, खिलौने, कपड़े, जूते, बर्तन, बिजली का सामान इत्यादि दुकाने कतारों में होती हैं। यहाँ डाक्टरों के क्लिनिक भी होते हैं। बड़े-बड़े कारखानों में दैनिक कार्य, मासिक कार्य वाले, कुछ सरकारी कर्मचारी भी कार्य करते हैं। मासिक वेतन वालों को रिटायर होने पर फंड भी मिलता है। ऐसे लोग आर्थिक दृष्टि से सुरक्षित होते हैं। शहरों में कुछ बड़े उद्योगपति या व्यवसायी बहुत धनी होते हैं। इनमें फिल्म कलाकार भी इसी श्रेणी में आते हैं।

2. शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों की आजीविका में अन्तर इस प्रकार हैं– 1. शहरी क्षेत्र भीड़-भाड़ व शोर वाला क्षेत्र है। जबकि ग्रामीण क्षेत्र कम भीड़-भाड़ व बिना शोर वाला क्षेत्र है। 2. शहरी क्षेत्रों में अनेक प्रकार के व्यवसाय होते हैं जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में कम व्यवसाय होते हैं। 3. शहरी क्षेत्रों के लोग अनेक प्रकार के व्यवसाय कर सकते है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों का मुख्य व्यवसाय खेती व पशुपालन है। 4. शहरों में बड़े-बड़े अस्पताल व बड़े-बड़े डॉक्टरों की उपलब्धि अधिक है। जबकि ग्रामों में यह सुविधाएँ तथा बड़े-बड़े डॉक्टरों की उपलब्धि नहीं हैं। 5. शहरों में बड़े-बड़े कारखाने होते हैं। जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह कारखाने नहीं होते हैं।

3. हमारे देश में ग्रामीण परिवारों में लगभग 40% खेतिहर मजदूर हैं। कई बार जब पूरे वर्ष उन्हें रोजगार नहीं मिल पाता तो दूर-दराज के क्षेत्रों में रोजगार के लिए जाते हैं। इस तरह का पलायन कुछ विशेष मौसम में ही होता है। कभी-कभी किसान खाद, बीज इत्यादि के लिए साहूकारों से ऋण लेते हैं। अगर किसी कारण वश वह यह ऋण नहीं चुका पाते तो वह ऋण के बोझ में दब जाते हैं। और आत्महत्या तक कर लेते हैं। कुछ किसानों के पास छोटे-बड़े जमीन के टुकड़े होते हैं। और उस पर खेती करके वह अपना व्यापार तथा लालन-पालन करते हैं।

(च) **1.** ग्रामीण क्षेत्रों में लोग अपनी अजीविका के लिए विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं। कुछ लोग खेती, जंगलों से लकड़ी का उत्पादन, कुछ लोग भेड़-बकरियाँ, भैंस, गाय आदि का पालन करके व्यवसाय करते हैं। समुद्र तट से मछली पकड़कर, खेती में कई तरह के काम शामिल करके जैसे– बीज बोना, जुताई, रोपाई, बुवाई, निराई और कटाई आदि। तथा असक साथ ही अलग-अलग तरह की फसलें भी पैदा करते हैं। पर्वतीय क्षेत्रों के लोग सीढ़ीनुमा खेती करते हैं। यहाँ के लोग अन्य कार्य भी करते हैं; जैसे–बर्तन, टोकरी, घड़े, ईंटें, बैलगाड़ियाँ आदि बनाना। पहाड़ियों के गाँवों में लोग छोटी-छोटी झोंपड़ियाँ बनाकर वहाँ धान, नारियल, गन्ना, कॉफी, कपास, केला भी उगाते हैं। हमारे देश में लगभग 40% खेतिहर मजदूर हैं। जिन्हें पूरे वर्ष भर काम न मिलने पर दूर-दराज के क्षेत्रों में जाना पड़ता है।

2. शहरी क्षेत्रों की आजीविका– शहरी क्षेत्रों में बहुत भीड़-भाड़ होती है। कहा जाता है कि शहर में जिंदगी कभी रुकती नहीं है। भारत में हजारों छोटे-बड़े शहार हैं। शहरों में व्यवसायी और कार्यालयों में काम करने वाले व्यक्ति अधिक मिलेंगे। शहरी क्षेत्रों में छोटे-बड़े उद्योग धंधे होते हैं। कुछ लोग अपनी अजीविका के लिए ठेला तथा फुटपाथ पर सामान बेचते हैं; जैसे–फल, सब्जी, दरी, खिलौने आदि और कुछ लोगों की दुकानों, पाँच सितारा होटलों, डॉक्टरों के बड़े-बड़े क्लीनिक भी होते हैं। शहरों में बड़े-बड़े कारखाने भी होते हैं। जिनमें दैनिक व मासिक वेतन वाले लोग कार्य करते हैं। इनमें कुछ कर्मचारी सरकारी भी होते हैं। जिन्हें रिटायर होने पर फंड की सुविधा भी दी जाती है।

अध्याय 11 : सरकार एवं उसके कार्य

(क) **1.** (स) **2.** (स)

(ख) **1.** 28, 9 **2.** राष्ट्रपति **3.** तहसीलदार **4.** न्यायालयों **5.** लोगों के विद्मान

(ग) **1.** (×) **2.** (×) **3.** (✓) **4.** (×) **5.** (✓)

(घ) **1.** सरकार में तीन स्तर होते हैं– 1. स्थानीय 2. राज्य 3. राष्ट्रीय

2. कानून के विरुद्ध कार्य करने वाले को दंड देना न्यायालय का कार्य है।

3. भारत में 28 राज्य और 9 केंद्रशासित प्रदेश हैं।

4. सरकार राज्य का एक प्रशासन तंत्र है। यह एक ऐसी व्यवस्था है, जिसके द्वारा राज्यों में प्रशासन के लिए शासन पद्धति का निर्माण किया जाता है।

(ङ) **1.** सरकार की आय के प्रमुख स्त्रोत इस प्रकार हैं– 1. गृहकर व संपत्तिकर 2. भूमिकर 3. जलकर-सीवरकर 4. विद्युत एवं बिजली से प्राप्त आय 5. पंजीकरण शुल्क 6. होटलों व दुकानों से प्राप्त कर 7. सड़कों व पुलों के प्रयोग के लिए लिया जाने वाला शुल्क आदि सभी सरकार के आय स्त्रोत हैं।

2. लोकतंत्र में प्रभुसत्ता लोगों में विद्यमान रहती है तथा जो वास्तविक रूप से प्रशासन करते हैं ये लोगों के प्रति उत्तरदायी होते हैं। लोकतंत्र कहालाते हैं। जिनमें सरकार चलाने की शक्ति होती है। वह वहाँ के राजा व रानी में होती है। वह निशकुश सत्ता का स्वामी होता है। उसे अपने निर्णय व कार्य कराने के लिए जवाबदेही की आवश्यकता नहीं होती है। ऐसा राजतंत्र में होता है।

3. तानाशाही सरकार लोकतंत्रात्मक सरकार के विपरीत होती है। जिसे सरकार में एक ही व्यक्ति के पास असीमित शक्तियाँ होती हैं। तथा वह लोगों पर शासन करता है। सरकार में शासन कानून के ऊपर होता है। उसकी बात ही कानून होती है और वह जनमत की परवाह नहीं करता, वह अपनी शक्ति व सत्ता के आधार पर लोगों को कानून मानने के लिए विविश कर सकता है।

4. यह सरकार वह सरकार है जिसमें वहाँ के लोग प्रशासन में सक्रिय भाग लेते हैं। यह लोगों के कल्याण व लोगों के चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा चलाई जाती है। इस व्यवस्था में प्रभुसत्ता लोगों में विद्यमान रहती है। तथा जो वास्तविक प्रशासन करते हैं। वे लोगों के उत्तरदायी होते हैं। भारत में लोकतंत्रात्मक सरकार है।

(च) **1. सरकार–**सरकार राज्यों का एक प्रशासन तंत्र है। यह एक ऐसी व्यवस्था है, जिसके द्वारा राज्यों के प्रशासन के लिए शासन

पद्धति का निर्माण किया जाता है। **सरकार के कार्य–**सरकार के कुछ प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं– 1. देश से बेरोज़गारी, गरीबी, भेदभाव एवं असमानता को दूर करना। 2. कानून बनाना एवं उसका देश में पालन कराना 3. देश को बाहरी तकतों व हमलों से बचाना व सुरक्षा देना। 4. जनसाधारण की जान व माल की रक्षा करना। आदि अनेक सरकार के कार्य हैं जो देश के हित में किये जाते हैं।

2. लोक तांत्रिक शासन प्रणाली में प्रत्येक व्यस्क नागरिक को वोट देने का अधिकार होता है। लेकिन हमेशा ऐसा नहीं था। एक समय था जब लोकतांत्रिक सरकार में औरतों और गरीबों को चुनाव में भाग नहीं लेने देती थी। अपने आरंभिक काल में सरकार केवल पुरुषों को वोट देने देती थी; जो पढ़े लिखे तथा जिनके पास संपत्ति होती थी। ऐसी स्थिति में देश उन्हीं नियमों पर चलता था, जो ये लोग बनाते थे। अतः स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व भारत में बहुत कम लोगों को वोट देने का अधिकार था।

3. सरकार की आवश्यकता व स्तर–सरकार तीन स्तरों पर कार्य करती है। 1. स्थानीय 2. राज्य और 3. राष्ट्रीय

सरकार कानून बनाती है। जिनके अनुसार देश का प्रशासन चलाया जाता है। कानून का पालन ठीक प्रकार से करने के लिए पुलिस व्यवस्था की जाती है। जो लोग कानून के विरुद्ध कार्य करते हैं, उन्हें दंड देने के लिए न्यायालयों की स्थापना की जाती है। सरकार डाक, रेल, वायु, सिंचाई, बिजली, शुद्ध पेयजल आदि सेवाओं से कर वसूल करके उस धन को सड़क, विद्यालय, अस्पताल तथा जनता की अन्य भलाई में लगा देती है। सरकार देश की रक्षा करने वाले सैन्य संचालन पर भी धन व्यय करती है। सरकार जनता के लिए मूलभूत अकिधकारों की व्यवस्था करती है। अगर उन अधिकारों का सरकार के कर्मचारी या जनता द्वारा उल्लंघन होता है। तो वह अधिकारों की रक्षा के लिए न्यायालय जा सकता है।

अध्याय 12 : अक्षांश और देशांतर रेखाएँ

(क) **1.** (अ) **2.** (अ) **3.** (ब)

(ख) **1.** बिंदुओं की कोणीय दूरी **2.** कर्क रेखा और मकर रेखा **3.** देशांतर की याक्योत्तर रेखाएँ **4.** भारत में 5:30

(ग) **1.** उष्ण कटिबंध क्षेत्र वह स्थान है जहाँ कँटीले वन व गर्म जलवायु होती है। जबकि शीत कटिबंधीय क्षेत्र में घने वन पाए जाते हैं। क्योंकि वहाँ इनके कारण धरती पर सूर्य की किरणें कम जाती हैं।

2. कर्क रेखा– 23½° उत्तरी अक्षांश रेखा है। यह पृथ्वी के अक्ष के झुके होने के कारण वर्ष में एक बार 23½° अक्षांश पर सूर्य के सामने पड़ती है। **मकर रेखा–** 23½° दक्षिणी अक्षांश रेखा है। यह सूर्य के सम्मुख वर्ष में एक बार आती है।

(घ) **1.** पृथ्वी एक काल्पनिक धुरी के चारों ओर घूमती है। धुरी के दो सिरे 'ध्रुव' कहलाते हैं।

2. ग्लोब पृथ्वी का मानव-निर्मित नमूना है।

3. ध्रुवों को मिलाने के लिए उत्तर-दक्षिण दिशा में खींची गई रेखाएँ देशांतर रेखाएँ कहलाती हैं।

4. ध्रुवों के बीच खींची गई पृथ्वी को दो बराबर भागों में बाँटने वाली एक काल्पनिक रेखा है जिसे भूमध्य रेखा के नाम से जाना जाता है।

(ङ) **1.** भारत की मानक मध्याह्न रेखा 82° 30° देशांतर मानी जाती है। इस रेखा के स्थानीय समय को ही संपूर्ण देश का मानक समय माना जाता है। भारत तथा ग्रीनविच के मानक समय में 5 घंटे 30 मिनट का अंतर है। अर्थात् जिस समय लंदन में दिन के 12 बजे होते हैं उस समय भारत में शाम के 5 बजकर 30 मिनट का समय होता है।

2. जब दो ध्रुवों के बीच एक काल्पनिक रेखा खींची जाती है तथा उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ने पर यह ध्रुव को जोड़ने वाली ग्लोब की रेखाएँ देशांतर की याम्योत्तर रेखाएँ कहलाती हैं।

3. ग्लोब पर पूर्व-पश्चिम की ओर सीधे आगे बढ़ने वाली क्षैतिज रेखाएँ भूमध्य रेखा, अक्षांश की समानांतर रेखाएँ हैं।

4. पूर्व-पश्चिम दिशा के सीानों की स्थिति बताने के लिए सर्वोच्च याम्योत्तर रेखा को संदर्भ रेखा माना जाता है। यह सर्वोच्च याम्योत्तर रेखा दो ध्रुवों को जोड़ती है, और यह रेखा लंदन के पास ग्रीवविच नामक स्थान से होकर आगे बढ़ती है। इस याम्योत्तर रेखा को ग्रीनविच याम्योत्तर कहते हैं। जिसका बहुत महत्त्व है।

(च) **1. अक्षांश एवं देशांतर रेखाओं का उल्लेख–**पृथ्वी पर किसी स्थान की सही स्थिति ज्ञात करने के लिए ग्लोब या मानचित्र का आप क्षैतिज या लंबवत् रेखाओं का जाल देखते हैं। इन रेखाओं का एक सेट जो दो ध्रुवों में मध्य पूर्वी-पश्चिमी दिशा में वृत्ताकार रूप में खींचा गया है। अक्षांश रेखाएँ कहलाता है। रेखाओं का दूसरा सैट जो उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुवों को मिलाते हुए, अद्धर्वृत्त के रूप में खींचा गया है। देशांतर रेखाओं के रूप में जाना जाता है। इन सैटों की रेखाओं के जाल को ग्रिड कहते हैं। अक्षांश और देशांतर रेखाओं का प्रतिच्छेद पृथ्वी पर किसी स्थान की स्थिति का प्रतिच्छेद पृथ्वी पर किसी स्थान की स्थिति को बताता है। रेखाओं के इन सेटों की सहायता से हम पृथ्वी पर किसी भी स्थान की स्थिति का आंकलन कर सकते हैं।

2. ग्लोब–पृथ्वी की आकृति पूरी तरह गोला नहीं है। यह उत्तर और दक्षिण ध्रुवों पर कुछ चपटी है। और बीच में कुछ उभरी हुई है। पृथ्वी की इस विशेष आकृति को भूआम कहते हैं। पृथ्वी की वास्तविक आकृति को प्रदर्शित करने वाले मंडल को ग्लोब कहते हैं। ग्लोब द्वारा आकृतियाँ ही नहीं बल्कि विभिन्न महासागरों, महाद्वीपों की आकृतियाँ, दूरियाँ तथा दिशाएँ भी प्रदर्शित की जा सकती हैं। अतः ग्लोब में एक बड़ी विशेषता है। जिस प्रकार पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है, उसी प्रकार ग्लोब को भी घुमाया जा सकता है।

3. विभिन्न देशांतरों पर स्थित स्थानों के स्थानीय समय में अंतर होता है। प्रत्येक देशांतर पर स्थानीय समय में 4 मिनट का अंतर होता है लेकिन घड़ी में प्रत्येक स्थान पर 4 मिनट का अंतर करना कठिन होता है। इसलिए अनेक देश एक विशेष देशांतर को मानक

मध्याह्न रेखा मान लेते हैं। इसी रेखा के स्थानीय समय का प्रयोग संपूर्ण देश में मानक समय के आधार पर किया जाता है। उदाहरण–भारत की मानक मध्याह्न रेखा 82°–30° देशांतर मानी जाती है। इस रेखा के स्थानीय समय को ही संपूर्ण देश का मानक समय माना जाता है। अर्थात् लंदन में जिस समय दिन के 12 बजे होते हैं। उस समय भारत में शाम के 5:30 बजे होते हैं।

अध्याय 13 : भारत का भौतिक एवं राजनैतिक स्वरूप

(क) **1.** (अ) **2.** (ब) **3.** (ब) **4.** (ब)

(ख) **1.** प्रायद्वीप **2.** थार **3.** मातृभूमि **4.** 7वाँ **5.** भारत

(ग) **1.** (द) **2.** (य) **3.** (अ) **4.** (स) **5.** (ब)

(घ) **1.** भारत के सात पड़ोसी देश हैं– 1. चीन 2. नेपाल 3. भूटान 4. पाकिस्तन 5. अफगानिस्तान 6. बांग्लादेश 7. बर्मा

2. भारत के भौगोलिक विभागों को पाँच भागों में बाँटा जा सकता है– 1. उत्तर का पर्वतीय क्षेत्र 2. उत्तर का विशाल मैदान 3. उत्तर-पश्चिम का मरुस्थलीय क्षेत्र 4. दक्षिण का पठार 5. समुद्रतटीय क्षेत्र और द्वीप समूह

3. भारत का कुल क्षेत्रफल 2.4 प्रतिशत है।

4. भारत पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित एशिया का दक्षिणी-मध्य भाग है।

(ङ) **1.** पश्चिमी तटीय एवं पूर्वी तटीय मैदानों में अंतर के लिए पुस्तक के पेज नं. 67 पर बनी तालिका देखें।

2. दक्षिण भारत में सबसे प्रमुख व प्राचीनतम पर्वत श्रेणियाँ हैं। जिनमें विध्यांचल पर्वत है। इसके साथ ही इस पठार पर बहुत-सी नदियाँ बहती हैं। नर्मदा और ताप्ती नदियाँ पश्चिम की ओर बहती हुई अरब सागर में तथा मदानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियाँ पूर्व की ओर बहती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं।

3. समुद्र तट से काफी दूर स्थित अरब सागर में लक्षद्वीप और बंगाल की खाड़ी में अंडमान निकोबार द्वीप समूह स्थित हैं। लक्षद्वीप केरल तट से 300 किमी की दूरी पर स्थित द्वीप है। ये मूंगे से निर्मित क्षेत्र है। इसके विपरीत बंगाल की खाड़ी में अंडमान और निकाबार द्वीप भारत के मुख्य स्थल से दूर हैं। इनका निर्माण ज्वालामुखी के विस्फोटन से हुआ है।

4. भारत अपनी भूमि सीमा अन्य सात देशों से बाँटता है। इसकी एक सार्वजनिक सीमा है। चीन, नेपाल, तथा भूटान उत्तर में, पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान उत्तर-पश्चिमी सीमा के साथ स्थित हैं। पूर्व में इसकी समीा बांग्लादेश व बर्मा से जुड़ी हुई है।

(च) **1.** भारत को उपमहाद्वीप भी कहते हैं, क्योंकि बांग्लादेश, पाकिस्तान, नेपाल, भूटान और म्याँमार सभी एक साथ मिलकर इसको विभिन्न प्रकार की भौगोलिक स्थिति प्रदान करते हैं। भौतिक संस्थान के अनुसार भारत को निम्नलिखित भौतिक विभागों में बाँटा गया है। **1. उत्तर का पर्वतीय क्षेत्र :** भारत के उत्तर में हिमालय की पर्वत श्रृंखला पश्चिम से पूर्व तक फैली है। यह भारत में अनेक पर्वत श्रेणियाँ है। जिनमें सबसे ऊँची चोटी K-2 है। विश्व की सबसे ऊँची चोटी ऐवरेस्ट है। **2. उत्तर का विशाल मैदान :** हिमालय के दक्षिण में भारत का उत्तरी मैदान है। यह मैदान लगभग समतल, सपाट तथा अधिक जनसंख्या वाले हैं। यहाँ की कुछ सहायक नदियाँ हैं–सतलुज, व्यास, रावी, झेलम आदि। **3. उत्तर-पश्चिम का मरुस्थलीय क्षेत्र :** भारत के उत्तरी मैदान के पश्चिमी भाग में थार मरुस्थल पाकिस्तान तक फैला हुआ है। यहाँ की भूमि रेतीली कंकरीली है। वर्षा कम होने के कारण पेड़-पौधे कम उगते हैं। **4. दक्षिण का पठार :** दक्षिण भारत में विध्यांचल पर्वत श्रेणी दक्षिण के दक्कन पठार तक है। यहाँ अनेक नदियाँ बहती हुई खाड़ियों तथा महासागरों में गिरती हैं; जैसे–नर्मदा, ताप्ती, महानदी, कृष्णा आदि। **5. समुद्र तटीय मैदान और द्वीप समूह :** पश्चिम एवं पूर्व में समुद्रीय तट मैदासन हैं। ये मैदान पश्चिम में अरब सागर के किनारे गुजरात से केरल तथा पूर्व में बंगाल की खाड़ी के किनारे पश्चिम बंगाल से तमिलनाडु तक फैले हैं। यह मुख्य पहाड़ियाँ हैं–सहयाद्रि, नीलगिरि, अन्नामलाई आदि।

2. दक्षिण पठार–दक्षिण भारत में विध्यांचल पर्वत से लेकर दक्षिण तक दक्कन का पठार फैला हुआ है। पठारी तथा दुर्गम भागों के कारण यहाँ मराठे जैसी लड़ाकू जाति फली-फूली और द्रविड़ संस्कृति ने इस प्रदेश को आलोकित किया। देश में संस्कृतिक विभिन्नता में भी एकता का विकास किया। यह पठार आग्नेय एवं कायांतरित चट्टानों से बना है। यहाँ नर्मदा, ताप्ती जैसी नदियाँ बहती हुई अरब सागर में तथा महानदी, कावेरी, कृष्णा आदि नदियाँ बहती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं।

3. उत्तरी भारत के और दक्षिणी भारत के पर्वत श्रृंखलाओं की तुलना के लिए पुस्तक के पेज नं. 66 पर बनी तालिका देखें।

अध्याय 14 : प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीवन

(क) **1.** (स) **2.** (स) **3.** (अ)

(ख) **1.** आश्रय **2.** वर्षा **3.** प्राकृतिक वनस्पतीय **4.** भिन्न भिन्न

(ग) **1. नेशनल पार्क** प्राकृतिक वनस्पति के संरक्षण का एक आरक्षित क्षेत्र हैं । **अभ्यारण्य** विलुप्ति की कगार पर खड़े वन्य जीवों को संरक्षण देने का आरक्षित क्षेत्र है।

2. उष्ण कटिबंधीय वन वर्षा वाले वन वनस्पति का विस्तृत वर्गीकरण है। जबकि **उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन**, कँटीले वन, ज्वरीय वन में किया गया है।

(घ) **1. अभ्यारण्य**–अभ्यारण्य विलुप्ति की कगर पर खड़े वन्य जीवों को संरक्षण देने का आरिक्षत क्षेत्र है।

2. प्राकृतिक वनस्पति–जो पेड़-पौधे बिना मानव प्रयास के स्वतः उगते हैं, वे बढ़ते हैं, उन्हें प्राकृतिक वनस्पति कहते हैं।

3. वन्य-जीव–वे जीव-जंतु जो वनों में रहते हैं। उन्हें वन्य जीव कहते हैं।

(ङ) **1.** भारत में वैसे तो विभिन्न प्रकार के वन होते हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं– 1. उष्ण कटिबंधीय वर्षा वन 2. उष्ण कटिबंधीय पतझड़ वन 3. मरुस्थलीय वन 4. पर्वतीय वन

2. जो पेड़-पौधे बिना मानव प्रयास के स्वतः उगते व बढ़ते हैं, उन्हें प्राकृतिक वनस्पति कहते हैं।

3. जिन वनों में वनस्पति का विस्तृत वर्गीकरण होता है; उन्हें उष्ण कटिबंधीय वर्षा वन कहते हैं।

4. ये वन अपेक्षाकृत कम घने होते हैं तथा वर्ष में एक बार अपनी सारी पत्तियाँ गिरा देते ळैं। अतएव ये पर्णपाती वन कहे जाते हैं; जैसे–शीशम, चंदन आदि।

(च) **1.** हाल के कुछ वर्षों में लोगों ने वनों के न केवल आर्थिक महत्व को समझा है बल्कि इसके महत्वपूर्ण पर्यावरण संघटक को भी समझना शुरू कर दिया है। वे वाणिज्य प्रयोजन के लिए वृक्षों के अविवेकपूर्ण काटे जाने का विरोध भी करने लगे। इस संरक्षण के लिए केन्द्र सरकार व राज्य सरकार भी प्रयास कर रहीं हैं। वनों के संरक्षण के लिए प्रतिवर्ष वृक्षों को लगाना चाहिए। हिमालय के लोगों ने वन-कटान के विरोध में चिपको आंदोलन चलाया।

2. नेशलन पार्क प्राकृतिक वनस्पति के संरक्षण का एक आरक्षित क्षेत्र हैं। इसमें वन्य-जीव और प्राकृतिक सुंदरता की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इस समय देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र के 4.5 प्रतिशत भाग में 83 राष्ट्रीय उद्यान और 447 अभ्यारण हैं।

3. पशु भी मानव जीवन के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होते हैं, क्योंकि पशु चाहे जंगल हो या पालतू वह मारे देश के सौन्दर्य को बढ़ाते हैं। पारिस्थितिक तंत्र की संरचना करने में भी सहायक होते हैं। पशु हमारे लिए अनेक रूप में काम आते हैं; जैसे–पशुओं द्वारा दूध, घी, मक्खन, पनीर आदि प्राप्त होना, सूखी घासों का सफाया करना, बोझ ढोने के लिए, कुछ पशु तो खेतों में हल जोतने के लिए, कुछ मरे हुए अवशेषों को खाकर उनका सफाया करते हैं।

4. वन्य जीवों के संरक्षण के दो उपाय– 1. प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में वृक्षों को लगाने का प्रयास करना चाहिए जिससे उनके आवास का स्थान सुरक्षित रहे। 2. केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा वन्य जीवों के संरक्षण के लिए अनेक राष्ट्रीय उद्यानों और अभ्यारण्य का आरक्षित क्षेत्र स्थित किया जाए।

(छ) **1.** प्राचीन काल में भारत में चारों ओर घने वन थे। लेकिन जैसे-जैसे जनसंख्या की वृद्धि होती जा रही है। वनों को काटा जा रहा है। कृषि भूमि का विस्तार और मानव आवास के लिए वनों को काटा जाता है। वन हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं। वनों से हमें निम्नलिखित लाभ हैं– 1. वनों के काटने से भूमि का अपरदन तथा बाढ़ों की आवृत्ति बढ़ जाती है। उसे रोका जा सकता है। 2. वन हमें ऑक्सीजन देते हैं, तथा वायु प्रदूषण को कम करते हैं। 3. वनों के कटने से वर्षा की मात्रा में कमी होती है उसे रोका जा सकता है। 4. वनों से हमें बहुमूल्य पदार्थ मिलते हैं; जैसे–ईंधन, इमारती लकड़ी, कच्चामाल, लाख, गोंद, औषधियाँ आदि। 5. वन जंगली जीवों को आश्रय प्रदान करते हैं।

2. प्राकृतिक वनस्पति–जो पेड़-पौधे बिना मानव प्रया सके स्वतः ही उगते हैं और बढ़ते हैं, उन्हें प्राकृतिक वनस्पति कहते हैं। विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक वनस्पतियाँ– **उष्ण कटिबंधीय वर्षा वन :** ये वन अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं। ये वन पश्चिमी घाट की संकरी पट्टी में उत्तर-पूर्वी राज्यों के कुछ भागों में तथा अंडमान निकोबार द्वीप समूह में पाए जाते हैं। यहाँ सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँच पाता है। यह सदैव हरे-भरे दिखाई देते हैं। **उष्ण कटिबंधीय पतझड़ वन :** ये वन मानसूनी प्रदेशों की मुख्य विशेषता हैं। अतः इन्हें मानसूनी वन कहा जाता है। यह हिमालय की शिवालिक श्रेणी से पश्चिमी घाट के पूर्वी ढलानों तक फैले हैं। यह सामान्यतः मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, ओड़िसा में पाए जाते हैं। ये वन अपेक्षाकृत कम घने होते हैं। इसलिए इन्हें पर्णपाती वन भी कहा जाता है; जैसे–साल, शीशम, पीपल, नीम आदि। **मरुस्थली वन :** जहाँ वर्षा कम होती है। वहाँ मरुस्थलीय वन पाए जाते हैं। यह वनस्पति मुख्यतः राजस्थान, गुजरात, पंजाब आदि में होते हैं। पानी की क्षति को रोकने के लिए इन वृक्षों की पत्तियाँ नुकीली तथा तने काँटेदार होते हैं। इन वृक्षों की ऊँचाई कम होती है; जैसे–खैर, बबूल, कीकर, खजूर आदि। **पर्वतीय वन :** पर्वतों में ऊँचाई के अनुसार वनस्पतियाँ विभिन्न प्रकार की और तापमान में कमी के कारण यहाँ उष्ण कटिबंधीय पतझड़ वलो वन पाए जाते हैं। इन वनों के मुख्य या महत्वपूर्ण वन–चीड़, पाइन व देवदार हैं।

3. केंद्र सरकार व राज्य सरकारें, वन विभाग आदि देश के वन-क्षेत्र का विस्तार करने और उचित संरक्षण देने हेतु प्रयासशील हैं। वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून वृक्षों को अधिकाधिक उत्पादक बनाने के लिए अनुसंधान कार्यक्रम संचालित करता है। भारत सरकार की नीति जनता के सहयोग से वृक्षारोपण करने और वन-क्षेत्र का विस्तार करने की ओर विशेष बल देती है। कुछ वर्षों में लोगों ने न केवल आर्थिक महत्व बल्कि पर्यावरण संघटक को भी समझा है। हिमालय के लोगों ने वन-कटान के विरोध में चिपको आंदोलन चलाया और वाणिज्यिक प्रयोग करने पर लोगों की कुल्हाड़ी से वनों की रक्षा की।

अध्याय 15 : वैदिक काल

(क) **1.** (अ) **2.** (अ) **3.** (ब) **4.** (अ)

(ख) **1.** चार **2.** संबंध **3.** विश **4.** ऋगवेद **5.** सनातन हिन्दू धर्म **6.** ऋषियों की वाणी

(ग) **1.** (✓) **2.** (✗) **3.** (✗) **4.** (✗)

(घ) **1.** चार वैदिक जातियाँ–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र हैं।

2. आर्य समाज में महिलाओं को अपना पति स्वयं चुनने की स्वतंत्रता थी। महिला को मालकिन और धार्मिक संस्कारों में गृहिणी की सहभागिता आवश्यक थी।

3. प्राचीन काल को वैदिक काल इसलिए कहा जाता है क्योंकि इस काल में वेदों, पुराणों, उपनिषेदों और महाकाव्यों का लेखन पूर्णतया प्रारंभ हो गया था।

(ङ) **1.** आर्य जाति के लोग सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के बाद भारत में अनेक स्थानों पर घूमकर बड़ी संख्या में अपने साथ पशुओं को लेकर आए। ये लोग गाँव में रहकर कृषि करते थे। कृषि उनके

आर्थिक जीवन का महत्वपूर्ण स्त्रोत था। भ्रमणकारी होने के कारण उन्होंने अपने कार्यों को मान्यताओं लिपिबद्ध आरंभ किया। आर्य जाति के लोगों की संस्कृति का भारतीय संस्कृति से गहरा सम्बंध है। इसी काल में वेदों, पुराणों महाकाव्यों आदि का प्रारंभ हुआ।

2. वैदिक काल के चार ग्रंथों के नाम हैं– ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद।

3. ऋग्वैदिक काल में समाज मुख्यतः चार वर्गों में विभाजि था–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। यह वर्गीकरण लोगों के कार्यों पर आधारित था। शिक्षकों को ब्राह्मण, शासकों एवं प्रशासकों को क्षत्रिय, किसानों, व्यापारियों और साहूकारों को वैश्य तथा दस्तकारों और मजदूरों को शुद्र कहा जाता था।

(च) **1.** आर्यों ने मानव-जीवन की प्रत्याशित आयु 100 वर्ष मानकर उसे चार आश्रमों में विभाजि किया था। **1. ब्रह्मचर्य :** 25 वर्ष के पहले चरण को ब्रहमचर्य कहा जाता था। इसमें गुरूकुल में विद्वान पंडितों से जीवन तथा धर्म की विविध कलाओं का ज्ञान प्राप्त करना होता था। **2. गृहस्थाश्रम :** यह चरण दूसरा था। इस अवसीा में व्यक्ति को विवाह करने और परिवार बनाने से आरंभ होती थी और व्यक्ति को कठोर परिश्रम कर धनार्जन करके अपने परिवार व अन्य आश्रियों का भरण-पोषण करना होता था। **3. वानप्रस्थ अवस्था या आश्रम :** सेवानिवृत्ति की अवस्था को वानप्रस्थ आश्रम कहा जाता था। **4. संयास आश्रम :** यह अवस्था या आश्रम 50 वर्ष से आरंभ होती थी। इसके बाद की अवस्था संयास या जनसेवा और उपदेश देने की पूर्ण त्याग की आश्रम थी।

2. ऋग्वैदिक काल में समय मुख्यतः चार वर्गों में विभाजित था– 1. ब्राह्मण : इनमें शिक्षकों को 2. क्षत्रिय : शासकों एवं प्रशासकों को 3. वैश्य : दस्तकारों और मजदूरो को।

समाज की आधारभूत इकाई परिवार था। युवक-युवतियों को अपनी पसंद से विवाह करने की स्वतंत्रता थी। महिला को मालकिन माना जाता था। धार्मिक संस्कारों में गृहिणी की सहभागिता आवश्यक थी।

अध्याय 16 : गुप्त साम्राज्य

(क) **1.** (स) **2.** (ब) **3.** (अ) **4.** (ब)

(ख) **1.** शिव, गणेश, दुगा **2.** मुक्ति; ग्रालिक **3.** स **4.** चंद्रगुप्त द्वितीय **5.** संस्कृत

(ग) **1.** (×) **2.** (×) **3.** (✓) **4.** (×)

(घ) **1.** चंद्रगुप्त द्वितीय के शासन काल में एक चीनी यात्री फाह्यान भारत आया था।

2. गुप्तकाल में मूर्तिकला एवं चित्रकला का पर्याप्त विकास हुआ।

3. हरिषेण ने इलाहाबाद की प्रयाग प्रशस्ति में समुद्रगुप्त के विजय अभियानों का विस्तृत उल्लेख किया।

(ङ) **1.** भारत के इतिहास में गुप्तवंश का उद्भव विशेष चर्चित है। इस वंश का भारत पर लगभग दो सौ वर्ष तक शासन रहा। इनके शासनकाल में अवस्था और अराजकता की स्थिति समाप्त हुई और एकीकरण की प्रवृत्ति उत्पन्न हुई। गुप्त शासकों के संरक्षण में कला, साहित्य, विज्ञान और उद्योगों का विकास हुआ और यह अवधि भारत का स्वर्ण युग कहलाती है।

2. फाह्यान पर ईसा की पाँचवी शताब्दी के आरंभ में भारत आने वाला एक चीनी यात्री था। वह भारत के तीर्थ-स्थानों की यात्रा करने व गौतम बुद्ध के जीवन से जुड़े पवित्र स्थलों को देखने के उद्देश्य से भारत आया था। वह भारत कें 3 वर्ष तक रहा, उसने अनेक स्थानों की यात्रा की जैसे–मथुरा, सारथन, बोधगया आदि। उसने एक पुस्तक लिखी जिसमें उसने पाटलिपुत्र का वर्णन किया और यहाँ की शासन व्यवस्था, नैतिक जीवन, शिक्षा व उपदेशों आदि का भी वर्णन किया।

3. मगध पर लिच्छवियों का शासन था। शक शत्रप रुद्रदगन का पश्चिम मं मालवा और काठियावाड़ के प्रांतों पर शासन था ऐसी परिस्थिति में ईसा की चौथी शताब्दी के आरंभिक वर्ष में भारत में एक नए राजवंश की स्थापना हुई, जिसने एक शक्तिशाली साम्राज्य स्थापित किया। यह राजवंश गुप्तवंश कहलाया।

(च) **1. साहित्य–**गुप्त शासकों के अधीन साहित्य के क्षेत्र में भारत ने महान प्रगति की। यह उच्च सांस्कारिक और संरक्षण प्राप्त युग था। यहाँ के शासकों ने संस्कृत को अपनी राजभाषा बनाकर शिला लेखों और सिक्कों में इसी भाषा को उत्कीर्ण कराया। इस युग को संस्कृत साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है। **कला–**गुप्तकाल में मूर्तिकला एवं चित्रकला का विकास हुआ। इस काल में बनाई गई मूर्तियाँ हिंदू, वैष्णव, शैव, बौद्ध, जैन आदि धर्मों की थी। अजंता-एलोरा की प्रसिद्ध गुफाएँ इसी काल में बनी। **विज्ञान–**इस काल में विज्ञान का विशेष विकास हुआ। आर्यभट्ट एवं वराहनिहिर महान वैज्ञानिक थे। आर्यभट्ट ने बताया कि पृथ्वी गोल है और सूर्य की परिक्रमा करती है। दिल्ली का महरौली स्थित लौहस्तंभ आत तक जंग रहित है यह विज्ञान के विकास का प्रमाण है।

2. चंद्रगुप्त द्वितीय–समुद्रगुप्त के बाद उसका पुत्र चंद्रगुप्त द्वितीय सिंहासन पर बैठा। उसने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की। चंद्रगुप्त की उपलब्धियों की जानकारी महरौली, मथुरा, साँची आदि अभिलेखों से प्राप्त होती है। चंद्रगुप्त विग्रमादित्य ने कुबेर नागा नाम की राजकुमारी से विवाह किया। वाकाटकों की सहायता से चंद्रगुप्त ने समृद्ध एवं शक्तिशाली शकों को हराया। इस कारण उसे शकारि की उपाधि भी दी गई। उसने अनेक विद्वानों तथा कलाकारों का संरक्षण प्रदान किया। कवि कालिदास उसके नवरत्नों में से एक थे। चीनी यात्री फाह्यान इसके शासनकाल में भारत आया था जो बौद्ध विद्वान था। चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के साम्राज्य का उसने विस्तारपूर्वक वर्णन किया।

3. चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में एक चीनी यात्री फाह्यान भारत आया। उसके द्वारा लिखे गए लेखों में चंद्रगुप्त की शासन प्रणाली का उल्लेख किया गया है– 1. चंद्रगुप्त की शासन-प्रणाली उदार और सुचारू रूप से संचालित थी। लोगों को अपनी घरेलू संपत्ति का विवरण नहीं रखना पड़ता था। वे इच्छानुसार उनके पास

जात थे। 2. भूमि का लगान सरकार की आय का मुख्य स्त्रोत था, यह भूमि की उपज का छठा भाग था। 3. करों की दरे आसान थीं और आयकर मुख्य सुविधा से भुगतान करने में सक्षम थे। 4. सरकारी सेवकों को निश्चित वेतन दिया जाता था तथा घूसखोरी के विषय में कर्मचारियों को जानकारी तक नहीं थी।

अध्याय 17 : गुप्तकाल के पश्चात् का भारत

(क) **1.** (स) **2.** (अ) **3.** (अ) **4.** (ब) **5.** (अ) **6.** (स)

(ख) **1.** वापामी या वातापी **2.** कन्नौज **3.** कुशल व न्यायप्रिय **4.** पाँच **5.** ब्राह्मणवाद **6.** शक्तिशाली

(ग) **1.** (ख) **2.** (द) **3.** (य) **4.** (अ) **5.** (ब)

(घ) **1.** (✓) **2.** (✓) **3.** (×) **4.** (×)

(ङ) **1.** नरसिंह हवर्मन प्रथम ने चेन्नई के निकट मायल्लपुरम महाबलिपुरम में शिलाओं तथा चट्टानों को काटकर भव्य मंदिरों का निर्माण करवाया, जिन्हें ''रथमंदिर'' कहते हैं।

2. स्वयं हर्षवर्धन ने संस्कृत में तीन नाटकों–नागानंद, प्रियदर्शिका तथा रत्नावली की रचना हैं।

3. हषवर्धन के समय में लोग ईमानदार व सरल थे।

4. हषवर्धन एक उदार, न्यायप्रिय तथा प्रजापालक राजा था।

(च) **1.** पुल्केशिन द्वितीय एक प्रसिद्ध चालुक्य राजा थे। उनके दरबारी कवि रवि कीर्ति के अनुसार उनहें ये राज्य अपने चाचा से मिला था। उन्होंने पूरब-पश्चिम समुद्र तटीय क्षेत्रों में अपने अभियान चलाए। उसने पल्लव राजा पर भी आक्रमण किया, जिसे कांचीपुरम की दीवर के पीछे शरण लेनी पड़ी थी। लड़ाई में दोनों वंश दुर्बल हो गए। अंततः पल्लवों और चालुक्यों को राष्ट्रकूट तथ चोलवंशों ने समाप्त कर दिया।

2. पल्लव शासक कला एवं मूर्तिकला के संरक्षक थे। नरसिंह हवर्मन प्रथम ने मामल्लपुरम महाबलिपुरम में शिलाओं तथा चट्टानों को काटकर भव्यमंदिरों का निर्माण करवाया जिन्हें काटकर भव्य मंदिरों का निर्माण करवाया जिन्हें रथमंदिर कहते हैं। ये मंदिर रथ की आकृति के थे। इनमें कुछ गुफा मंदिर भी थे। काँची में भी अनेक मंदिरों में कैलाशनाथ मंदिर अपनी सुंदर मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है।

3. नालंदा का प्रसिद्ध विश्वविद्यालय हर्षवर्धन के शासनकाल में था। यहाँ सभी विषयों विज्ञान, गणित, भूगोल, दर्शन, शास्त्र के साथ धार्मिक शिक्षा ग्रहण करने आए। उनके आवरन और भोजन की निःशुल्क व्यवस्था थी। यहाँ 10,000 विद्यार्थी एवं अध्यापक थे। हर्षवर्धन स्वयं विद्वान था। उसने स्वयं संस्कृत में तीन नाटकों–नागानंद, प्रियदर्शिका तथा रत्नावली की रचना की।

4. ह्वेनसांग ने हर्षवर्धन की शासन-प्रणाली के विषय में एक लेख लिखा था। उसमें उसने हर्षवर्धन के सामाजिक, आर्थिक, संस्कृति, साहित्य व शिक्षा के विषय में पूर्ण रूप से परिचय दिया है।

5. ह्वेनसांग एक चीनी यात्री था। जो 641 ई. में आया था। वह चालुक्यों के प्रशासन से बहुत प्रभावित हुआ था। चालुक्यों के समय अरब ईरान एवं दक्षिण-पूर्ण एशिया के देशों से विदेशी व्यापार बहुत उन्नति पर था।

6. हषवर्धन के समय में लोग ईमानदार तथा सरल थे। जाति बंधन बहुत कठोर थे और उस समय जाति-उपजाति समाने आई। समाज में ब्राह्मणों का स्थान ऊँचा, अछूत व तुच्छ का स्थान निम्न था। यह लोग गाँव से बाहर रहते थे। राजस्व के रूप में उपज का 1/6 भाग लिया जाता था। शिल्पकारों व व्यवसाय पर कर लगाकर इन करों को कल्याणकारी कार्य, धार्मिक आदि कार्यों में लगाया जाता था। जनता की सुविधा के लिए धर्मशालाएँ, विश्रामगृह एवं अस्पताल आदि का निर्माण करवाया जाता था।

(छ) **1.** चालुक्य वंश का संस्थापक पुल्केशिन था।

2. पल्लव शासकों ने ब्राह्मणवाद को आश्रय दिया, तथापि कुछ संतों ने भक्ति पर भी बल दिया था। अलवार संतो ने वैष्णवाद तथा नयनार संतों ने शैववाद पर बल दिया। वे स्थानीय तमिल भाषा में प्रचार करते थे। ब्राह्मण पुरोहित संस्कृत में मंत्रोच्चारण करते थे, जो जनसाधारण की समण से परे होता था। यही कारण था कि दक्षिण में भक्तिवाद खूब लोकप्रिय हुआ।

3. ये सबसे प्रसिद्ध चालुक्य राजा थे। उनके बारे में हमें उनके दरवारी कवि रवि कीर्ति द्वारा रचित प्रशस्ति से पता चलता है। पुलकेशिन विष्णु व शिव के उपासक थे। वह अन्य धर्मों की प्रति उदार तथा सहिष्णु था। वह जैन धर्मावलियों का भी दन देता था। रवि कीर्ति के अनुसार उन्हें यह राज्य अपने चाचा से जीता था। उन्होंने पूरब व पश्चिम समुद्र तटीय क्षेशें में अपने अभियान चलाछ उसने पल्लव राजा पर आक्रमण करके कांची पुरम की दीवार के पीछे शरण लेनी पड़ी। लेकिन लड़ाई में दोनों वंश दुर्बल हो गए। अंतः पल्लवों और चालुक्यों को राष्ट्रकूट तथा चोलवंशों ने समाप्त कर दिया।

4. वर्धनकाल में लोग ईमनादार व सरल थे। लेकिन उस समय जाति बंधन बहुत कठोर थे। उस समय बहुत-सी जाति-उपजाति सामने आई। समाज में ब्राह्मणों को ऊँचा स्थान था। अछूतों व तुच्छ का स्थान निम्न था। अछूत लोग गाँव से बाहर रहते थे। राजस्व के रूप में उपज क कुल 1/6 भाग लिया जाता था। शिल्पकारों व व्यवसायो पर भी कर लगाए गए। इन करों को प्रशासन, कल्याणकारी कार्य, धार्मिक अनुदान आदि पर व्यय किया जाता था। जनता की सुविधा के लिए धर्मशालाएँ, विश्राम गृह एवं अस्पताल आदि का निर्माण करवाया जाता था।

5. वर्धन वंश का संस्थापक प्रभाकर वर्धन था। वह थानेश्वर का शासक था। थानेश्वर वर्तमान हरियाणा में कुरूक्षेत्र के निकट स्थित है। उसके दो पुत्र राज्यवर्धन तथा हर्षवर्धन तथा एक पुत्री राजयश्री थी। प्रभाकरवर्धन की मृत्यु के बाद राज्यवर्धन 605 ई. में सिंहासन पर बैठा। राज्यश्री का विवाह कन्नौज के शासक गृहवर्मन के साथ हुआ। जिसकी मालवा के शासक देवभूमि ने हत्या कर दी थी। राज्यवर्धन अपनी बहन की सहायता के लिए आगे आया तथा उसने

देवभूमि को हरा दिया, किंतु वह बंगला के शासक शशांक के हाथों मारा गया।

6. हर्षवर्धन की शासन प्रणाली का उल्लेख निम्न प्रकार है– 1. हर्षवर्धन एक उदार, न्यायप्रिय तथा प्रजापालक राजा था। सारी प्रशासनिक सत्ता उसी के हाथें में थी। 2. हर्षवर्धन के समय में उपराध कम होते थे। अपराध करने वाले को कठोर दंड दिया जाता था। 3. हर्षवर्धन के सम में लोग ईमानदार व सरल थे लेकिन जाति बंधन बहुत कठोर था। 4. राजस्व के रूप में उपज का 1/6 भाग लिया जाता था तथा शिल्पकारों व व्यवसाय से कर लेकर प्रशासन के कल्याणकारी कार्यों में लगाया जाता था। 5. जनता की सुविधा के लिए विश्रामगृह, अस्पताल एवं धर्मशालाएँ बनवाई जाती थीं। 6. हर्षवर्धन सूर्य व शि का उपासक था। बाद में हषवर्धन ने बौद्ध धर्म के महायन सम्प्रदाय को अपनाया। 7. हर्षवर्धन के समय प्रसिद्ध विश्वद्यिालय में विज्ञान, गणित, दर्शन, भूगोल के साथ धार्मिक शिक्षा भी दी जाती थी। 8. हर्षवर्धन स्वयं विद्वान था। वह विद्वानों का आश्रयदाता भी था। उसने स्वयं संस्कृत में तीन नाटकों की रचना की थी–नागानंद, प्रियदर्शिका व रत्नावली।

अध्याय 18 : विविधता में एकता

(क) **1.** (स) **2.** (ब) **3.** (ब)

(ख) **1.** महात्मा गाँधी **2.** हिन्दू; मुसलमान **3.** 22 **4.** भारतवर्ष

(ग) **1.** (✓) **2.** (×) **3.** (✓) **4.** (✓) **5.** (×)

(घ) **1.** The Discovery of India

2. भारत के विभिन्न भागों में रहने वाले लोगों की संस्कृति एक ही है; जैसे–बड़ों का आदर करना, अतिथियों का सम्मान करना, परिवार में प्यार व सम्मान आज भी वही है।

3. हमारे संविधान में 22 भाषाओं को मान्यता दी गई हैं– 1. असमी 2. बंगाली 3. गुजराती 4. हिंदी 5. कन्नड़ 6. नेपाली 7. मैथिली 8. डोगरी 9. मराठी 10. उड़िया 11. पंजाबी 12. संस्कृत 13. तमिल 14. तेलुगू 15. उर्दू 16. सिंधी 17. कोंकणी 18. बोडो 19. मणिपुरी 20. कश्मीरी 21. मलयालम 22. संथाली

4. भारत में कई मुख्य धर्म हैं जिनमें हिंदू धर्म को मानने वाले सर्वाधिक हैं। इसके बाद इस्लाम, ईसाई, सिंख, बौद्ध, जैन तथा पारसी हैं।

(ङ) **1.** यह सत्य है कि प्राचीन भारत में बहुत-से अलग-अलग साम्राज्य थे, परंतु ये राजा तथा सम्राट संपूर्ण भारत में अपना शासन करना चाहते थे। अशोक ने तो लगभग पूरे भारत पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया था। पहले मुगलों ने तथा फिर अंग्रेजों ने भारत को राजनैतिक एकता में बाँधा।

2. भारत में मुख्य धर्मों में सबसे अधिक हिंदू, फिर इस्लाम, इसाई, सिख, बौद्ध, जैन तथा पारसी धर्मों का अनुसरण किया जाता है। धर्म व जातिगत विविधता तो हमारे समाज में बहुत प्राचीनतम है। जिसके कारण अनेक प्रकार के भेदभाव, अस्पर्शयता, या अछूता, ऊँच-नीच के होने से समाज को बहुत नुकसान होता है और समाज में भय तथा असुरक्षा का भाव उत्पन्न होता है। यहीं भेदभाव, अछूत आदि के कारण समाज एक हिंसात्मक रूप धारण कर लेते हैं।

3. यद्यपि देश की सरकारी भाषा हिंदी है, तथापि भारत में 1652 भाषाएँ बोली जाती हैं। जिसमें से 33 भाषाओं का प्रयोग एक लाख से अधिक व्यक्ति करते हैं। संविधान द्वारा स्वीकृत भाषाएँ 22 हैं– असमी, बंगाली, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, नेपाली, मैथिला, डोगरी मराठी, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, तमिल, तेलुगू, उर्दू, सिंधी, कोंकणी, बोडो, मणिपुरी, कश्मीरी, मलयालम तथा संथाली।

4. भारत के विभिन्न भागों में रहने वाले लोगों की संस्कृति एक है। विभिन्न धार्मिक मतों को होने के बाद भी हमारी संस्कृतिक मूल्य जैसे–बड़ों का आदर करना, अतिथियों का सम्मान करना, परिवार में प्यार व सम्मान आज भी वही है। ए. वी. स्मिथ के शब्दों में–भारत के भिन्न-भिन्न लोगों ने मिलकर ऐसी संस्कृति का निर्माण किया है जो अन्य भागों से भिन्न है।

(च) **1.** हम अपने आस-पास देखे तो पाएँगे कि दो प्रकार के परिवार हैं– 1. संयुक्त परिवार जिसमें, माता-पिता, दादा-दादी, चाचा-चाची, चचेरे भाई-बहने एक साथ्ज्ञ रहते हैं। 2. एकल परिवार– जबकि इस परिवार में माता-पिता व उनके अविवाहित बच्चे रहते हैं। इन परिवारों में कुछ लाभ व हानि भी होती हैं; जैसे– संयुक्त परिवार में कोई भी सदस्य स्वयं को असुरक्षित महसूस नहीं करता है जबकि एकल परिवार में वह अपने को असुरक्षित महसूस करने पर भी, अपने निर्णय स्वयं ले सकते हैं।

2. भारत में विभिन्न प्रकार के भू-भाग; जैसे–पहाड़, पठार और मैदान हैं। प्रत्येक स्थान की जलवायु के अंतर के कारण विभिन्न क्षेत्रों में प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्य-जीव कई प्रकार के हैं। इन सभी क्षेत्रों के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी विधिता पाई जाती है; जैसे–परिवार की बनावट, आर्थिक क्रियाएँ, भाषाएँ, धर्म जाति इत्यादि। इतनी विविधता होते हुए भी भारत के लोगों में एकता है और संस्कृति एक है। जिसने हमें एक सूत्र में बाँधा हुआ है।

3. भारत की विविधता को भारत की एक शक्ति माना जाति है। क्योंकि इसकी विभिन्न प्रकार की विविधता के बाद भी यह एकता की मिसाल है। जैसे– 1. भारत एक भौगोलिक इकाई है। अपनी प्राकृतिक सीमाओं में उत्तर हिमालय तथा दक्षिण में हिन्द महासागर के लिखे अलग हैं। 2. प्राचीन भारत में अनेक, मुगल सम्राट व अंग्रेज आए और उन्होंने भारत पर अधिकार भी स्थापित किया लेकिन फिर भी भारत को राजनैतिक एकता के सूत्र में बाँधा। 3. संस्कृतिक एकता भी विभिन्न धर्मों व जाति होने के बाद भी एक ही संस्कृति से बँधे हैं; जैसे–बड़ों का आदर करना, अतिथियों का सम्मान, परिवार में प्यार-सम्मान आदि। 4. धार्मिक एकता में भारत ही एकमात्र देश है। जहाँ बहुत-से धर्म बिना किसी भेदभाव के पनप रहे हैं और यहाँ सभी नागरिकों को उनका मौलिक अधिकार भी है।

अध्याय 19 : लोकतंत्रात्मक सरकार के प्रमुख तत्व

(क) **1.** (स) **2.** (ब) **3.** (ब) **4.** (ब)

(ख) **1.** लोकतंत्रात्मक सरकार **2.** दो **3.** अफ्रीकन

(ग) **1.** न्याय की संकल्पना के विभिन्न रूप हैं; जैसे–सामाजिक न्याय, आर्थिक न्याय, नैतिक न्याय, वैधानिक न्याय तथा राजनीतिक न्याय। लोकतांत्रिक सरकार न्याय प्रमुख तत्व हैं।

2. अस्पृश्यता के विरुद्ध डॉ. भीमराव अम्बेडकर तथा उनके जैसे अनेक व्यक्तियों ने कदम उठाया था।

3. भारत में सभी सरकारे 5 वर्ष तक के लिए चुनी जाती हैं।

4. लोकतंत्रात्मक सरकार या अन्य कार्यों के लिए अनेक लोगों की जरूरत होती है। तो अन लोगों को शामिल करना, उन लोगों की सहभागीदारी होती है।

(घ) **1.** लोकतांत्रिक सरकार का मुख्य कार्य इसके द्वारा दिए गए समानता और न्याय को बनाए रखने से है। समानता और न्याय को अलग-अलग नही किया जा सकता। न्याय के बिना समानता नही हो सकती है तथा समानता के बिना न्याय नहीं हो सकता। जैसे–अस्पृश्यता और भेदभाव पर रोक लगाना न्याय और एक जैसा समझना समानता है।

2. लोकतंत्रात्मक सरकार में ही वे सब तत्व विद्यमान है, जो सरकार को सहारा दे सकते है। लोकतंत्रात्मक सरकार में लोगों की समान सहभागिता तथा विवादों को शांतिपूर्वक सुलझाया जा सकता है। लोकतंत्र में ही सार्वजनिक हितों को सर्वोपरि रखा तथा समानता, न्याय व प्रतिष्ठा के उच्च आदर्श सुनिश्चित होते हैं। सरकारी अफसर, जो प्रशासन चलाते है, तथा अपने कार्यों के लिए जवाबदेह होते हैं। ये सत्ता का प्रयोग कर तथा सरकार लोगों के व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप नहीं करती है।

3. जवाबदेही–लोकतंत्रात्मक सरकार एक उत्तरदायी सरकार होती है। चुने गए प्रतिनिधि अपने कार्यों के लिए लोगों के प्रति उत्तरदायी होते हैं। यदि वे लोगों की इच्छाओं के अनुरूप कार्य नहीं करते; तो वे दोबारा नहीं चुने जाते। मंत्रीगण भी विधायिका तथा जनता के प्रति उत्तरदायी होते हैं।

4. लोकतंत्र में लोगों की क्रियात्मक सहभागिता बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनके मत के आधार पर ही सरकार का गठन होता है। यदि सरकार बनाने में वे भागीदारी नहीं लेते तो वे सरकार बनाने का अवसर खो देते हैं। लोग सरकारी गतिविधि कार्यों से स्वयं को असंतुष्ट समझते हैं, तो वे अगले चुनावों में दूसरे दल को बहुमत दिलाकर पहले दल को सरकार से अलग कर सकते हैं। वे आलोचना द्वारा भी सहभागिता कर सकते हैं; जैसे–सार्वजनिक सभा, हड़ताल, रैली, हस्ताक्षर अभियान एवं सरकार की स्थिति समझने के लिए विवश कर सकते हैं।

(ङ) **1.** एक देश में सरकार तब ही सफल हो सकती है जब लोग सरकार की विभिन्न प्रकार की प्रक्रियाओं में भाग लेते हैं– 1. लोकतंत्र में लोगों की क्रियात्मक सहभागिता बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि उनके मत के आधार पर ही सरकार का गठन होता है। 2. यदि लोग सरकार की अन्य गतिविधियों से असंतुष्ट है तो बहुमत द्वारा दूसरे दल को चुन सकता है। 3. लोकतंत्रात्मक सरकार में चुने हुए प्रतिनिधि अपने कार्यों के लिए उत्तरदायी होते हैं। यदि वे लोग उनकी ईच्छा के अनुरूप कार्य नहीं करते, तो वे दोबारा नहीं चुने जा सकते हैं। 4. जब विभिन्न संस्कृतियाँ आपस में तालमेल बिठा पाने में असमर्थ होती है। तो उनके हिंसात्मक स्वभाव से भय तथा असुरक्षा उत्पन्न होता है। तो सरकार की जिम्मदारी है कि वह विवादों आदि को शांतिपूर्वक समाप्त करे। 5. लोकतांत्रिक सरकार का मुख्य कार्य दिए गए समानता और न्याय को बनाए रखना है। न्याय कि बिना समानता नहीं और समानता के बिना न्याय नहीं।

2. समानता और न्याय–लोकतांत्रिक सरकार का मुख्य कार्य इसके द्वारा दिए गए समानता और न्याय को बनाए रखने से है। समानता और न्याय को अलग नहीं किया जा सकता है। न्याय के बिना समानता नहीं और समानता के बिना न्याय नहीं हो सकता। इसी तथ्य से परेशान सामाजिक व आर्थिक प्रावधान सरकार द्वारा बनाया है। उदारहण के लिए–अस्पृश्यता और भेदभाव पर रोक कानूनी लगाना न्याय और सभी को एक जैसा माना जाना समानता है।

3. विवादों को सुलझाना–विवाद तब उभरता है, जब विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों, क्षेत्रों और आर्थिक पृष्ठ-भूमियों के लोग एक-दूसरे के साथ ताल-मेल नहीं बिठा पाते है। ऐसा तब भी होता है। जब लोगों को लगता है कि उनके साथ न्याय या भेदभाव किया जा रहा है। लोभ अपने विवादों को खत्म करने के लिए हिंसात्मक रूप अपनाते हैं। जिससे लोगों में भय व असुरक्षा की भावना फैलती है। तब सरकार की जिम्मेदारी होती है कि वह विवादों को शांतिपूर्ण तरीके से समाधान करे।

4. रंगभेद नीति–रंगभेद नीति संयुक्त राष्ट्र अमेरिका तथा दक्षिण अफ्रीका में कुछ समय तक प्रचलित रही। अफ्रीका के लोगों का भेदभाव से छुटकारा पाने के लिए आधी शताब्दी से अधिक समय लगा। दक्षिण अफ्रीका में गोरे लोगों तथा भारत के व्यापारियों तथा श्रमिकों के रूप में आकार बसने से पहले अश्वेत लोग निवासी थे। रंगभेद नीति के अंतर्गत मूल निवासियों तथा गोरे लोगों के अलग-अलग, रेलगाड़ियाँ, बस तथा बस स्टॉप थे। अश्वेत लोगों को अपने देश में मताधिकार नहीं था। गोरे लोग अफ्रीका तथा अश्वेत लोग जुलू भाषा बोलते थे। नेल्सन मंडेला ने इस नीति का विरोध किया और जिसका परिणाम सभी प्रजापतियों के लोगों को समान समझा गया।

अध्याय 20 : पंचायती राज

(क) **1.** (स) **2.** (अ) **3.** (स)

(ख) **1.** पंचायतों **2.** पंचायत समिति **3.** जिला **4.** 11 लाख

(ग) **1.** (✓) **2.** (×) **3.** (×) **4.** (×)

(घ) **1.** जिसकी आयु 18 वर्ष या अधिक हो, वह पागल न हो और अदालत द्वारा अपराधीन हो वह ग्राम पंचायत का सदस्य बन

सकता है।

2. जिला परिषद पंचायती राज का एक सर्वोच्च निकाय होती है। जो ग्रामीणों को रोजगार दिलाती है।

3. ग्राम स्तर पर तीन तरह की संस्थाएँ कार्य करती हैं–1. ग्राम सभा 2. ग्राम पंचायत 3. न्याय पंचायत

4. प्रत्येक क्षेत्र में जितनी ग्राम पंचायते होती हैं, उनमें कार्यों को देख-रेख के लिए एक समिति की स्थानपा होती है। जिसे पंचायत समिति कहते हैं।

5. ग्राम सभा द्वारा चुने जाने वाले व्यक्तियों को ग्राम पंचायत कहा जाता है।

(ङ) **1.** पंचायती राज व्यवस्था विकेंद्रीकरण अर्थ है। केंद्र सरकार के शासन का फैलाव स्थानीय स्तर की संस्था तक होना। इनके कार्यों की स्थानीय संस्था जब करती है, तो इसे लोकतांत्रिक विकेंद्रीयकरण कहते हैं। स्वाधीनता के बाद जो पंचायती राज स्थापित हुई उसमें कुछ कमियाँ मिली। इन कमियों की वजह से सन् 1993 में पंचायत राज को संवैधानिक दर्जा प्राप्त हुआ।

2. सन् 1993 के अधिनियम के अनुसार पंचायती संस्थाएँ तीन स्तरों पर कायम की गईं– 1. ग्राम स्वर 2. ब्लॉक या खंडस्तर 3. जिला स्तर

3. अठारह वर्ष या इससे अधिक आयु के सभी वयस्कों की साधारण सभा को ग्राम सभा कहते हैं। इसमें सभी पुरुष व महिला सम्मिलित है। जो व्यक्ति पागल या अदालत द्वारा ग्राम सभा की सदस्यता के अयोग्य है। उसे ग्राम सभा का सदस्य नहीं कहा जा सकता।

4. ग्राम पंचायतों की आय के स्त्रोंत निम्न हैं–1. पंचायतों को कर लगाने का अधिकर है। 2. वे घरों पर तथा जमीन माल पशुओं की बिक्री पर कर लगाती है। 3. पंचायतें ऐसे भवनों का निर्माण कर सकती हैं; जैसे–बारातघर आदि जिनसे किराया वसूल किया जा सके। राज्य सरकारों द्वारा भूमि पर वसूल किए गए कर का एक हिस्सा पंचायतों को दे दिया जाता है।

(च) **1. पंचायती राज का महत्व–**स्वतंत्रता के पश्चात् ग्रामीण क्षेत्रों में लोकतंत्र लागू है। जिसे पंचायत राज कहते हैं। क्योंकि पंचायत के सदस्य तथा उनका प्रधान गाँव के लोगों द्वारा निर्वाचित किए जाते हैं। तथा गाँव के प्रत्येक वयस्क को मत देने का अधिकार होता है। पंचायती राज की व्यवस्था गाँव के लोग अपनी अधिकांश समस्याएँ स्वयं हल कर सकते हैं। वास्तव में लोकतंत्र गाँवों से आरंभ हुई थी।

2. ग्राम पंचायतों के बहुत-से महत्वपूर्ण कार्य हैं। कुछ आवश्यक कार्य निम्नलिखित हैं– 1. गाँव की सड़कों का निर्माण व मरम्मत कार्य करवाना। 2. गलियों में उचित प्रकाश की व्यवस्था करना। 3. गलियों की सफाई व स्वच्छता का ध्यान रखना। 4. लगान/करों का संग्रह। 5. जन्म और मृत्यु के अभिलेखों को रखना। 6. सार्वजनिक गलियों में अतिक्रमण को रोकना। 7. कब्रगाहों और शमशान भूमियों का अनुरक्षण 8. पशुओं को चराने की भूमि का अनुरक्षण।

अध्याय 21 : सामाजिक विविधता एवं भेदभाव

(क) **1.** (स) **2.** (स) **3.** (स)

(ख) **1.** हरियाणा **2.** अंग्रेज **3.** पुरुष प्रधान

(ग) **1.** (×) **2.** (✓) **3.** (×)

(घ) **1.** डॉ. भीमराव अंबेडकर हमारे देश के संविधान निर्माता थे। जिन्होंने अनेक जाति, अछूत जैसे भेदभावों को दूर किया।

2. दलित जातियों को अनुसूचित जाति कहा जाता है।

3. दलित का अर्थ, दलन किया हुआ या मसला हुआ। या फिर ये कहा जाए जिन व्यक्तियों का शोषण-उत्पीड़न हुआ हो।

4. भेदभाव का एक आधार रंग भी है। अंग्रेज लोग पहले भारतीय लोगों का रंग काला होने के कारण उनसे नफरत करते थे।

(ङ) **1.** आज के इस युग में भी कुछ लोगों ने यह धारणा पक्की कर रखी है कि ग्रामीण लोग शहरी लोगों के रहन-सहन पर बुरा असर डालते हैं और साथ ही आज भी कुछ शहरी लोगों में भी धर्म व जाति आदि का भेदभाव देखा गया है। जिससे उनकी धारणा यह भी हो गई है कि शहरी लोग, ग्रामीण लोगों से अधिक सक्षम हैं। यही इनके भेदभाव का कारण है।

2. जब अंग्रजों के समय में यह रंगभेद की नीति प्रबल थी। भारतीयों को काला होने के कारण वे उनसे नफरत करते थे। दक्षिण अफ्रीका में गाँधी जी को प्रथम श्रेणी के रेल के डिब्बे में इस बात पर प्रवेश करने नहीं दिया गया था।

3. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 15 में कहा गया है कि राज्य के द्वारा धर्म, मूल, वंश, जाति, लिंग एवम् जन्म स्थान आदि के आधार पर नागरिकों के प्रति जीवन के किसी भी क्षेत्र में भेदभाव नहीं किया जाएगा।

4. जातिगत भेदभाव में कमी आने के कई कारण हैं– 1. ग्रामीण क्षेत्रों के लोग जब शहरों में आकर बसने लगे, तब उनकी जातिगत मनोवृत्ति में बदलाव आने लगा। 2. दलित जातियों को शासन और प्रशासन में आरक्षण प्रदान किया गया। जिससे उनके आर्थिक स्तर में काफी बदलाव आया है। 3. शिक्षा के विकास से लोगों की मानसिकता में बदलाव आ रहा है।

(च) **1.** भारत के संविधान में असामनता को दूर करने के लिए अनेक प्रावधान किए गए हैं; जैसे– 1. समानता का अधिकार होना 2. स्वतंत्रता का अधिकर 3. धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार 4. शोषण के विरुद्ध अधिकार 5. संस्कृति का अधिकार 6. शैक्षिक का अधिकार आदि असामनता दूर करने के प्रमुख प्रावधान हैं।

2. जब म लोगों को किसी विशेष देश, धर्म, लिंग के होने के कारण 'कंजूस' अपराधी या मूर्ख ठहराते हैं, तो उसे रुढ़िबद्ध धारणा कहते हैं। ऐसा वास्तव में उनके बारे में एक पक्की धारणा बना लेने के कारण होता है, परंतु वास्तविकता यह है, कि प्रत्येक देश, धर्म, लिंग आदि में हमें कंजूस, अपराधी एवं मूर्ख मिलेगे। सिर्फ इसलिए कुछ लोग उस समूह को वैसे है। पूरे समूह के बारे में ऐसी धारणा

बनना उचित नही है। हम उस व्यक्ति के गुण और क्षमताएँ नहीं देखत, जो दूसरों से अलग हैं। उदाहरण के लिए– 1. रंग भेदभाव के कारण 2. लड़के-लड़की का भेदभाव 3. जाति के आधार पर भेदभाव आदि।

3. दलितों के अधिकार पर हुए एक राष्ट्रीय अभियान के अनुसार–दलितों ने भारत में बंधुआ व बाल मजदूर के बहुसंख्यक मत का गठन किया। अधिकांश कृषि कार्य दलितों द्वारा किए जाते थे। दलित महिलाओं को बलपूर्वक वेश्यवृत्ति में झोंक दिया जाता था। बहुत-से गाँवों में, मौला ढोना भी उनकी मजबूरी थी। इतने पर भी दलितों को न्यूनतम मजदूरी से कम मजदूरी तथा कहीं पर तो कार्य के स्थान पर वस्तुएँ मिलती थीं।

सामाजिक कक्षा— 7

अध्याय 1 : पृथ्वी की संरचना

(क) **1.** तीनों से **2.** (अ) **3.** (स) **4.** (स)

(ख) **1.** गर्म गैसों व धूल **2.** पी; एस **3.** 35 **4.** लोहा; निकिल **5.** कोर

(ग) **1.** (✓) **2.** (×) **3.** (×) **4.** (✓) **5.** (×)

(घ) **1. पृथ्वी–**पृथ्वी सौर परिवार का ग्रह है। जिसका निर्माण अरबों वर्ष पूर्व गर्म गैसों व धूल के कणों से निर्मित निहारिका से हुई थी।

2. भू-पर्पटी–एक पतली ठोस परत जो पृथ्वी को बाहर से घेरे हुए होती है। इस परत को भू-पर्पटी कहते हैं।

3. कोर–पृथ्वी के आंतरिक मध्य भाग को ''कोर'' कहते हैं।

4. निफे–पृथ्वी का वह मध्य भाग जो कठोर पदार्थों के संयोग से बनता है। निफे कहलाता है।

5. अवसादी शैल–अवसादी शैलों का निर्माण विभिन्न कारकों जैसे–नदी, वायु, हिमनदी एवं समुद्री लेहरों द्वारा अन्य स्थानों से लाए गए अवसादों के जमा होने से होता है।

(ङ) **1.** भूकंपीय तरंगें दो प्रकार की होती हैं–1. पी तरंगे (प्राथमिक तरंगे) 2. एस तरंगें (गौण तरंगें)

2. स्वेस के विचार से पृथ्वी के नीचे तीन परतें पाई जाती हैं– 1. सिएल 2. सिमा 3. निफे

3. पृथ्वी के आंतरिक भागों से जब ज्वालामुखी क्रिया द्वारा पिघला हुआ मैग्मा धरातल पर नीचे चट्टानों में प्रवेश करता है तथा ठंडा होकर ठोस रूप धारण कर लेता है उसे आग्नेय शैल कहते हैं।

4. अवसादी शैलों का निर्माण विभिन्न कारकों; जैसे–नदी, वायु, हिमनदी एवं समुद्री लहरों द्वारा अन्य स्थानों से लाए गए अवसादों के जमा होने से होता है। जिन्हें अवसादी शैल कहते हैं।

(च) **1.** पृथ्वी सौर परिवार का एक ग्रह है। जो आरंभ में दहकता एक आग का गोला होता था। इसकी उत्पत्ति अरबों वर्ष पूर्व गर्म गैसों व अन्य प्रकार के धूल के कणों से निर्मित निहारिका से हुआ था।

2. पृथ्वी के भू-पर्पटी के पदार्थों के शैल या चट्टान कहते हैं। शैल या चट्टान के कई रूप होते हैं। रचना की दृष्टि से इन चट्टानों या शैलों के तीन प्रकार हैं– 1. आग्नेय शैल 2. अवसादी शैल 3. कायांतरित शैल या रूपांतरित शैल।

3. 1. यह दबाव तथा ताप के कारण आग्नेय तथा अवसादी शैल के स्वरूप, गुणों तथा विशेषताओं में अंतर आ जाता है। 2. इस परिवर्तन की प्रक्रिया से निर्मित शैल को रूपांतरित कहते हैं; जैसे– नाइस, संगमरमर का परिवर्तन होना आदि।

4. स्वेस ने भू-पर्पटी के नीचे की तीन परतों का विवरण इस प्रकार दिया है– **1. सिएल–**भू-पर्पटी के नीचे की प्रथम परत को सिएल नात दिया। यह दो तथ्यों सिलिका तथा एल्यूमीनियम से मिलकर बनी है। इसका घनत्व 2.4 से 2.9 के बीच तथा गहराई 50 से 300 किमी तक है। ग्रेनाइट मुख्य चट्टान है। **2. सिमा–**सिएल के नीचे की परत को सिमा कहते हैं। यह सिलिका और मैग्नीशियम तत्व से बना है। इसका घनत्व 2.9 से 4.7 तक तथा गहराई 1000 से 2000 किमी है। बेसाल्ट इसकी मुख्य चट्टान है। **3. निफे–**पृथ्वी का मध्य भाग निफे कहलाता है। यह कठोर पदार्थ निकिल और फेरस के संयोग से बना है। इसका घनत्व 11 तथा परत का व्यास 6000 किमी है। इसकी आंतरिक परत में लोहे की उपस्थिति पृथ्वी की चुंबकीय शाक्ति का आधार है।

5. अवसादी शैलों का निर्माण विभिन्न कारकों जैसे; नदी, वायु, हिमनदी एवं समुद्री लहरों द्वारा अन्य स्थानों से लाए गए अवसादों के जमा होने से होता है। दबाव के कारण यह परत हो जाती है। जैसे–चूना पत्थर, बालू पत्थर आदि।

(छ) **1. पृथ्वी की आंतरिक संरचना–**पृथ्वी की आंतरिक संरचना एवं प्रक्रियाओं के विषय में हमारा अधिकांश ज्ञान अप्रत्यक्ष स्त्रोतों से प्राप्त होता है। इसका सबसे महत्वपूर्ण स्त्रोत भूकंपीय तरंगे हैं। ये तरंगें भूकंप के उद्गम केन्द्र से उत्पन्न होती हैं। ये पृथ्वी के धरातल की ओर विभिन्न दिशाओं में चलती हैं। इनकी गति असमान होती है। जिससे इनकी गति पदार्थों की प्रकृति पर निर्भर करती है। भूकंपीय तंरगें दो प्रकार की होती हैं– 1. पी तरंगें (प्राथमिक तरंगें) तथा 2. एस तरंगें (गौण तरंगें)। इन तरंगों के अध्ययन से ही पृथ्वी की आंतरिक संरचना का ज्ञान होता है।

2. पृथ्वी के आंतरिक भागों से जब ज्वालामुखी क्रिया द्वारा पिघला हुआ मैग्मा धरातल पर नीचे चट्टानों में प्रवेश करता है तथा ठंडा होकर ठोस हो जाता है। तो आग्नेय शैलों का निर्माण होता है। ये शैल भी दो प्रकार के होते हैं– 1. अंतीोदी आग्नेय शैल 2. बर्हिभेदी आग्नेय शैल। इस शैल में निम्न विशेषताएँ भी होती हैं– 1. ये शैल अत्यंत कठोर होती हैं। 2. ये शैल रवेदार तथा दानेदार होती हैं। 3. इन शैलों में परतें नहीं पाई जाती हैं। 4. इन शैलों में जीवाश्म नहीं पाए जाते हैं। आदि।

3. अवसादी शैल–अवसादी शैलों का निर्माण विभिन्न कारकों जैसे–नदी, वायु, हिमनदी एवं समुद्री लहरों द्वारा अन्य स्थानों से लाए गए अवसादों के जमा होने से होता है। इनकी परत दबाव के कारण कठोर हो जाते हैं। जैसे–चूना पत्थर, बालू पत्थर आदि।

रूपांतरित शैल–दबाव तथा ताप के कारण आग्नेय तथा अवसादी शैल के स्वरूप गुणों तथा विशेषताओं में अंतर आ जाता है। परिवर्तन की प्रक्रिया से निर्मित शैल रूपांतरित शैल कहलाते हैं। इनके कुछ उदाहरण– 1. नाइस (ग्रेनाइट से रूपांतरित) 2. संगमरमर (चूने पत्थर से रूपांतरित) आदि। **शैल चक्र**– तीनों प्रकार के शैलों की निर्माण प्रक्रिया लगातार अनवरत रूप से चलती रहती है। जिसे शैल चक्र कहते हैं। आग्नेय एवं कायांतरित शैल पृथ्वी के धरातल पर अनावृत होती है, तो वे उपवरित एवं अपक्षयित होती है। नदी, पवन, लहर, हिमानी आदि द्वारा यह टूटा-फूटा पदार्थ स्थानंतरित कर स्तरित रूप में हो जाते हैं। इस प्रकार शैलों का यह परिवर्तन लगातार होता रहता है।

अध्याय 2 : पृथ्वी का बदलता स्वरूप : प्रक्रियाएँ

(क) **1.** (स) **2.** (अ) **3.** (स)

(ख) **1.** लेटेराइट **2.** मिट्टी **3.** पर्यावरण **4.** जल

(ग) **1.** (स) **2.** (द) **3.** (ब) **4.** (य) **5.** (ज)

(घ) **1.** जब नदी के महाने के निकट जलोढ़ मिट्टी के जमाव हो जाते हैं। तो डेल्टा बन जाते हैं।

2. चट्टानों के टूटने के कारण मिट्टी का निर्माण होता है। मिट्टी के निर्माण में चट्टानों का महत्वपूर्ण योगदान है।

3. भारत में मुख्य रूप से चार प्रकार की मृदा पाई जाती है– 1. काली मृदा 2. जलोढ़ मृदा 3. लाल मृदा 4. लेटेराइट मृदा

(ङ) **1.** पृथ्वी की सतह पर अनेक प्रकार के परिवर्तन होते रहते हैं। जिनमें कुछ बाह्य और कुछ आंतरिक शक्तियों द्वारा होते हैं। बाह्य परिवर्तन धीरे-धीरे और आंतरिक आकस्मिक होते हैं। प्रकृति द्वारा होने वाले परिवर्तनों की प्रक्रियाओं को दो भागों में बाँटा जा सकता है। 1. आंतरिक प्रक्रियाएँ 2. बाह्य प्रक्रियाएँ

2. काली मिट्टी–यह मिट्टी ज्वालामुखी विस्फोट के लावा से बनती है। इसलिए इसे काली मिट्टी कहते हैं। यह बहुत उपजाऊ होती है। काली मिट्टी कपास के लिए उपयुक्त होती है। यह मिट्टी दक्कन के पठारी क्षेत्र के महाराष्ट्र तथा गुजरात में पाई जाती है। **जलोढ़ मिट्टी**–यह मिट्टी मुख्यतः नदियों की घाटियों तथा तटिय मैदानों तक सीमित है। यह मिट्टी बहुत उपजाऊ तथा कृषि के विकास में इसका महत्वपूर्ण योगदान है।

3. अपक्षय कारक–ताप, शीत, वर्षा का जल, पाला, वनस्पति, जीव-जंतु और मानव अपक्षय के मुख्य कारक हैं। **अपरदन क्रिया का कारक**–तेज़ हवा के कण, गति, प्राकृतिक वाहक आदि अपरदन कारक होते हैं।

(च) **1.** अनाच्छादन का सबसे प्रमुख कारक बहता हुआ जल है। बहता हुआ जल तेज गति से शैलों को तोड़ता है तथा बहाकर ले जाता है। नदियों पर्वतीय क्षेत्रों से निकलकर बहती हुई समुद्र में पहुँच जाती है। पर्वतीय क्षेत्रों में तेज ढाल के कारण नदियों की गति तीव्र हो जाती है तथा अनाच्छादन की क्रिया भी अधिक होती है। जब नदियाँ ढाल में पहुँचती हैं तो ढाल कम होकर नदियाँ घाटी के किनारें पर अपरदित पदार्थों को जमा कर देती है। समुद्र के निकट कम ढाल होने क कारण नदी का अपने अपरदित पदार्थों से डेल्टा भी बन जाते हैं। यह बहता जल नदियाँ, नहरों में जाकर कृषि आदि कार्यों में उपयोगी सिद्ध होता है।

2. भारत में विभिन्न प्रकार की मिट्टी पाई जाती हैं। जिसमें चार मिट्टी मुख्या रूप से मिलती हैं– **काली मिट्टी** : यह मिट्टी ज्वालामुखी विस्फोट के लावा से प्राप्त होने के कारण काली होती है। इसलिए इसे काली मिट्टी कहते हैं। यह मिट्टी बहुत चिकनी, मुलायम तथा उपजाऊ होती है। कपास की खेती के लिए ये मिट्टी बहुत उपयोगी होती है। काली मिट्टी दक्कन के पठार में महाराष्ट्र व गुजरात में पाई जाती है। **जलोढ़ मिट्टी** : यह मिट्टी मुख्यतः नदियों की घाटियों तथा तटीय मैदानों तक सीमित है। यह मिट्टी बहुत उपजाऊ तथा कृषि के विकास में बहुत महत्वपूर्ण योगदान देती है। **लाल मिट्टी** : इस मिट्टी में लौह के कण अधिक होते हैं। इसलिए इसका रंग लाल होता है। लाल मिट्टी प्रायद्वीप के पठारी क्षेत्रों में पाई जाती है। यह उपजाऊ नहीं होती है। **लैटेराइट मिट्टी** : यह मिट्टी अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में पाई जाती है। यह मिट्टी अधिक वर्षा के कारणों से चट्टानों के टूटने व कटाव से बनती है। यह खेती के लिए उपयोगी नहीं होती है। अधिकतर यह मिट्टी पश्चिमी घाट तथा उत्तर-पूर्व के पहाड़ी राज्यों में पाई जाती है।

3. अपक्षय–मौसम एवं जलवायु की शक्तियों द्वारा धरातल चट्टानें अपने ही स्थान पर टूटती रहती हैं। उनका मलबा वहीं पर पड़ा रहता है। इस प्रकार की क्रिया को अपक्षय कहते हैं। ताप, शीत, वर्षा का जल, पाला आदि अपक्षय कारक हैं। **अपरदन**–पृथ्वी धरातल का स्वरूप बदलते ही अपक्षय क्रिया प्रारंभ हो जाती है। अपक्षय क्रिया में हवा, गतिशील पदार्थ व प्राकृतिक कारणें से प्रभावित होकर चट्टानों का विघटन प्रारंभ हो जाता है और हवा, गति, प्राकृतिक वह इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाते हैं। यह क्रिया अपरदन कहलाती है। **निक्षेपण**–यह एक ऊष्मागतिक प्रक्रिया है। जिसमें कोई गैस, ठोस होती है और वह उल्टी प्रक्रिया करती है जिसे ऊर्ध्वपातन या निक्षेपण कहते हैं।

4. वास्तव में चट्टानों के टूटने के कारण मृदा का निर्माण होता है। अतः मृदा के निर्माण में चट्टानों का महत्वपूर्ण योगदान है। जीवाश्म भी इसी मृदा में मिल जाते हैं। उसे उपजाऊ बनाते हैं। मृदा की उर्वरता तथा गुण किसी स्थान की जलवायु तथा स्थलाकृति पर निर्भर करती है।

मृदा संरक्षण–मृदा संरक्षण के निम्नलिखित उपाय हैं– 1. वनीकरण और वृक्षारोपण कार्यक्रमों में बड़ी संख्या में वृक्षारोपण करना। 2. वृक्षों की अंधाधुंध कटाई तथा चारागाहों में पशुओं की अधिक चराई पर नियंत्रण करना। 3. पहाड़ी क्षेत्रों में सीढ़ीदार कृषि करना। 4. नदियों पर बाँध बनाकर बाढ़ को रोकना। 5. जल प्रभाव को नियंत्रित व नियमित करने के लिए ढलान वाली भूमि व नदियों पर तटबंध तथा अवरोधक बनाएँ जाएँ।

अध्याय 3 : पर्यावरण के घटक

(क) **1.** (ब) **2.** (ब) **3.** (ब) **4.** (ब)

(ख) **1.** परिवर्तित **2.** जैविक तथा अजैविक वातावरण **3.** पेड़-पौधे **4.** जैवमंडल **5.** आग

(ग) **1.** (ब) **2.** (द) **3.** (अ) **4.** (स)

(घ) **1.** (×) **2.** (✓) **3.** (✓) **4.** (×) **5.** (✓)

(ङ) **1.** पर्यावरण को दो भागों में विभाजित किया गया जा सकता है– 1. प्राकृतिक पर्यावरण (अजैविक) 2. जैविक पर्यावरण

2. पृथ्वी का निर्माण जिन तत्वों से हुआ है। उन्हें शैल कहते हैं।

3. स्थलमंडल, जलमंडल, वायुमंडल एवं जैवमंडल पर्यावरण के चार प्रमुख परिमंडल हैं।

4. आग्नेय आंतरिक भागों से जब ज्वालामुखी क्रिया द्वारा पिघला हुआ मैग्मा धरातल के नीचे चट्टानों में प्रवेश करता है तथा ठंडा होकर ठोस रूप धारण कर लेता है, तो आग्नेय शैलों का निर्माण होता है।

5. गैसों का एक विशाल घेरा जो पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए होता है। वायुमंडल कहलाता है।

(च) **1.** पर्यावरण का दूसरा परिमंडल जलमंडल है। पृथ्वी का जल से घिरा क्षेत्र जलमंडल के नाम से जाना जाता है। इस परिमंडल के निर्माण में नदियों, झीलों; सागरों एवं महासागरों का योग रहता है। धरातल का 70% से भी अधिक भाग जल से ढका है। जल पृथ्वी पर जीवन का आधार है।

2. हमारी पृथ्वी की संरचना में अनेक परतों का योगदान है। पृथ्वी की इन परतों को परिमंडल कहते हैं। जिनका मानव जीवन तथा जीव-जंतुओं के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। जो हम सभी के जीवन आधार है। पृथ्वी और पर्यावरण में निम्नलिखित परिमंडल पाए जाते हैं– 1. स्थलमंडल 2. जलमंडल 3. वायुमंडल 4. जैवमंडल

3. स्थलमंडल–यह शैल-पदार्थों से निर्मित पृथ्वी की परत है। यह हमारे लिए बहुत ही लाभदायक है यह मनुष्य को रहने के लिए भूमि तथा पेड़-पौधों को उगाने के लिए मृदा (मिट्टी) प्रदान करता है। यह हमें अनेक खनिज प्रदान करता है। जो हमारे आर्थिक विकास में सहायक है।

4. उत्पत्ति एवं संरचना के आधार पर शैलों का वर्गीकरण निम्नलिखत प्रकार से किया जा सकता है– **1. आग्नेय शैल :** आग्नेय शैल पृथ्वी के आंतरिक भागों से जब ज्वालामुखी क्रिया द्वारा पिघला हुआ मैग्मा धरातल के नीचे स्थित चट्टानों में प्रवेश करता है तथा ठंडा होकर ठोस रूप धारण करता है तो आग्नेय चट्टानों या शैल का निर्माण होता है। **2. अवसादी य परतदार शैल :** आग्नेय शैलों के टूटे हुए चूर्ण के अवसाद एकत्र होकर कठोर रूप धारण करने से जो शैल बनती है। उसे परतदार या अवसादी शैल कहा जाता है। **3. कायांतरिक या रूपांतरिक शैल :** जब कभी अवसादी या आग्नेय शैलों में ताप व दबाव के कारण रूप परिवर्तन हो जाता है तो वह चट्टानों निर्माण कायांतरिक या रूपांतरिक शैल कहलाते है।

(छ) **धरातलीय परिवर्तन–**परिवर्तन प्रकृति का नियम है। हमारी पृथ्वी का स्वरूप पल-पल बदलता रहता है। इसे ही धरातलीय परिवर्तन कहते है। इसलिए धरातल पर पर्वत, पठार घाटियाँ मैदान और मरुस्थल देखे जा सकते है। धरातल पर बहती हुई नदियाँ झरने आदि इसी परिवर्तन के कारण उत्पन्न होते रहते है। स्थलमंडल में जब भी कोई हलचल होती है, तो धरातलीय स्वरूप में निरंतर परिवर्तन होते रहते है। इन्हीं परिवर्तनों के कारण ही पृथ्वी पर अनेक प्रकार के जीव-जंतु, पर्वत; पठार, मैदान आदि बनते है। लेकिन जब पृथ्वी के भीतरी भागों में आंतरिक बल सक्रिय रहते हैं और इनकी आंतरिक शक्तियों में तेजी से हलचल होती है, तो अनेक प्रकार की घटनाएँ घटित हो जाती है। जैसे–भूचाल या तूफान और ज्वालामुखी का विस्फोट होना। यह घटनाएँ मानव जीवन पर बहुत ही अधिक प्रभाव डालती है। जिसके कारण मानव जीवन व अन्य प्रकार के जीव-जंतु का धरातल पर रहना मुश्किल हो जाएगा।

2. उत्पत्ति एवं संरचना के आधार पर शैलों का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है। **1. आग्नेय शैल :** पृथ्वी के आंतरिक भागों से जब ज्वालामुखी क्रिया द्वारा पिघला हुआ मैग्मा धरातल के नीचे स्थित चट्टानों में प्रवेश करता है तो आग्नेय चट्टानों का निर्माण होता है। ग्रेनाइट, ग्रैबो, बैसाल्ट तथा डोलोमाइट प्रमुख आग्नेय शैल हैं। **2. अवसादी या परतदार शैल :** आग्नेय शैलों के टूटे हुए चूर्ण के अवसाद एकत्र होकर कठोर रूप धारत करने से जो शैल बनती है, उसे परतदार या अवसादी शैल कहते है। चूना-पत्थर, स्लेट कोयला, बलुवा और अभ्रक इसी प्रकार की शैलों के उदाहारण है। **3. कायांतरिक शैल :** जब कभी अवसादी या आग्नेय शैल में ताप व दबाव के कारण रूप परिवर्तन हो जाता है तो कायंतरिक चट्टानों या शैल का निर्माण होता है। इसलिए इन्हें रूपांतरिक शैल भी कहा जाता है। उदाहरण के लिए– कच्ची एवं मुलायम मिट्टी से बनी ईंट, घड़े आदि को जब आग या ताप में पका दिया जाता है तो उसका रंग एवं गुण बदल जाता है। तो यही प्रक्रिया कायांतरिक या रूपांतरिक शैलों को निर्माण करती है।

3. स्थलमंडल–यह शैल पदार्थों से निर्मित पृथ्वी की परत है। यह हमारे लिए बहुत ही लाभदायक है। यह मनुष्य को रहने के लिए भूमि तथा पेड़-पौधों को उगाने के लिए मृदा (मिट्टी) प्रदान करता है। यह हमें अनेक खनिज प्रदान करता है। जो हमारे आर्थिक विकास में सहायक है। इसका कुछ भाग महाद्वीपों, महासागरों व नदियों के नीचे फैला हुआ है। यह एल्यूमीनियम, सिलिका, मैग्नीशियम तथा लोहे आदि खनिज पदार्थों से बनी है। जीवधारियों के लिए स्थलमंडल का विशेष महत्व होता है। स्थलमंडल हमें आवास बनाने के लिए स्थान तथा सामग्री प्रदान करता है। यही वनस्पतियों और फसलों को उगाने के लिए भूमि देता है। इसी के गर्भ से महत्वपूर्ण खनिज तथा शक्ति के साधन जन्म लेते हैं। इसलिए स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि स्थलमंडल का

हमारे पर्यावरण में बहुत अधिक महत्व है।

4. पर्यावरण–पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है, किसी प्राणी, समुदाय और वस्तु के चारों ओर का पर्यावरण। जिसका हमारे जीवन में बहुत अधिक महत्व है। सौरमंडल में हमारी पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है। जिस पर जीवन है। **पर्यावरण के घटक :** पर्यावरण के दो भागों में विभाजित किया जा सकता है– 1. प्राकृतिक या भौतिक पर्यावरण 2. जैविक पर्यावरण। **1. प्राकृतिक पर्यावरण :** इसे निर्जीव पर्यावरण भी कहते हैं। इसमें वे तत्व शामिल होते हैं, जो प्रकृति के द्वारा प्रदान किए जाते हैं। वायु, प्रकाश, जल, मृदा, ताप आदि भौतिक पर्यावरण में शामिल होते हैं। पृथ्वी की सतह हर जगह समान नहीं है। पृथ्वी की सतह हर जगह समान नहीं है। वहीं पर ऊँची भूमि-पर्वत तथा पठार है तथा कहीं पर नीची भूमि जैसे– मैदानी क्षेत्र इत्यादि है। **2. जैविक पर्यावरण :** इस पर्यावरण के अंतर्गत सभी प्रकार के जीव आते हैं। जैसेकि प्राकृतिक पर्यावरण और जैविक पर्यावरण का बहुत गहरा संबंध है। यह दोनों तत्व एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। इसी प्रभाव के कारण ही हमारे वातावरण में धीरे तथा लगातार परिवर्तन होते रहते हैं। मानव द्वारा परिवर्तन के कारण वायु प्रदूषण हो रहा है। जो सभी प्राणियों के लिए हानिकारक है।

अध्याय 4 : वायुमंडल– वायु का परिमंडल

(क) **1.** (अ) **2.** (अ) **3.** (स) **4.** (अ) **5.** (स) **6.** (स)

(ख) **1.** वायुदाब **2.** तीन **3.** आर्द्रता **4.** घर्षण **5.** शीतोष्ण

(ग) **1.** (×) **2.** (×) **3.** (✓) **4.** (✓) **5.** (✓)

(घ) **1.** (य) **2.** (ब) **3.** (अ) **4.** (स) **5.** (द)

(ङ) **1.** वायुमंडल में ऊर्ध्वाधर रूप से स्थित चार प्रमुख परतें हैं– 1. क्षोभमंडल 2. समताप मंडल 3. मध्यमंडल 4. तापमंडल

2. जल, ओला या हिम वर्षा के रूप को घर्षण कहते हैं।

3. क्षैतिज संचार तथा वायु की गति को पवन कहते हैं।

4. जब हिमकण आकार में बड़े हो जाते हैं, तो ये भारी होकर हिम वर्षा के रूप में धरातल पर गिरने लगते हैं।

5. गैसों का आवरण, जो पृथ्वी के चारों ओर फैला होता है। वायुमंडल कहलाता है।

(च) **1.** वायुमंडल के मुख्य मंडल हैं– 1. क्षोभमंडल 2. समतापमंडल 3. मध्यमंडल 4. तापमंडल

2. वायुमंडल का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। जिसके कारण सभी प्राणी जीवित रहते हैं। इसी आधार पर वायुमंडल में चार परतें पाई जाती हैं– 1. क्षोभमंडल 2. समतापमंडल 3. मध्यमंडल 4. तापमंडल

3. वायुप्रदूषण–वायु में जो अनावश्यक व अवांछित कण मिले रहते हैं। उन्हें वायु प्रदूषण कहते हैं; जैसे–कारखानों का धुआँ, जहरीली गैसें, ठोस कण आदि वायु प्रदूषक के तौर पर उपस्थित होते हैं। जिससे साँस लेने में सभी जीवधारियों को घातक बिमारियाँ हो सकती हैं और यह सभी प्राणियों के जीवन पर बहुत बड़ा संकट लेकर आ सकती हैं।

4. जब बादलों में विद्यमान जल-कण तथा हिमकण आपस में एक होकर अपना आकार बढ़ाते हैं, तब बादल उनका भार संभाल नहीं पाते हैं तथा वे पृथ्वी पर गिरने लगते हैं। इस क्रिया को वर्षण कहते हैं। यह वर्षण विभिन्न रूप से पाई जाती है। जैसे– 1. संवाहनिक वर्षा 2. पर्वतीय वर्षा 3. चक्रवाती वर्षा।

5. वायुमंडल में कुछ गैसे हानिकारक रूप में और कुछ लाभदायक रूप में पाई जाती हैं। जिनका सभी प्राणियों पर प्रभाव पड़ता है। ये गैस मुख्य रूप से तीन प्रकार की होती हैं– 1. ऑक्सीजन 2. नाइट्रोजन 3. कार्बन-डाइ ऑक्साइड

(छ) **1.** तापमान का विवरण तीन कारकों पर निर्भर करता है– 1. **अक्षांश :** किसी स्थान की विषुवत् रेखा से दूरी तथा उसकी सूर्यताप-प्राप्ति का गहरा संबंध है। विषुवत् रेखीय क्षेत्रों में सूर्यताप की मात्रा सबसे अधिक होती है। क्योंकि वहाँ वर्ष-भर किरणें सीधी पड़ती हैं। विषुवत रेखा से ध्रुवों की ओर बढ़ते हुए तापमान में कमी होती है और सूर्य की किरणें सदैव तिरछी पड़ती हैं। इस कारण वहाँ तापमान न्यूनतम होता है। 2. **समुद्र-तल से दूरी :** तापमान का प्रभाव समुद्र से दूरी पर भी पड़ता है। समुद्र तट के निकट के स्थानों में हमेशा तापमान समान बना रहता है। समुद्र से दूर जाने पर आंतरिक भागों में तापमान बढ़ जाता है और जलवायु में विषमता पाई जाती है। क्योंकि जल स्थल की अपेक्षा देर में गर्म और ठंडा होता है। 3. **समुद्र-तल की ऊँचाई :** जैसे-जैसे हम समुद्र-तल से ऊपर जाते हैं, तापमान कम होता जाता है। क्योंकि वायु का घनत्व कम होता है। समुद्र-तल से प्रति 165 मीटर की ऊँचाई पर तापमान 1 °C कम होता जाता है। इसी कारण लगभग अंक्षाशों में स्थित मैदानों की तुलना में पर्वतों का तापमान कम होता है।

2. वर्षा मुख्य रूप से तीन प्रकार की होती है जिनका वर्णन इस प्रकार है– 1. **संवाहनिक वर्षा :** इस प्रकार की वर्षा भूमध्य रेखीय क्षेत्रों में सामान्य है। ऐसे क्षेत्रों में वर्षभर तापमान अधिक रहता है जिसके कारण गर्म आर्द्र वायु ऊपरी भाग में जाकर ठंडी होकर संघनन की प्रक्रिया शुरू करती है और बिजली तथा गड़गड़ाहट के साथ भारी वर्षा होती है। इसे संवहनीय वर्षा कहते हैं। 2. **पर्वतीय वर्षा :** यह वर्षा का सबसे सामान्य रूप है। जब कभी उष्ण एवं आर्द्र पवनों के मार्ग में कोई पर्वत अवरोध के रूप में सामने आता, तो ये पवने उससे टकराकर ढाल के सहारे से ऊपर उठकर ठंडी होकर नमी को वर्षा के रूप में गिरा देती है। 3. **चक्रवातीय वर्षा :** यह वर्षा शीतोष्ण कटिबंध में होती है। जब ऊष्ण तथा शीतल वायु एक-दूसरे से मिलता है। तब ऊष्ण वायु हल्की होने के कारण शीतल वायु के ऊपर उठती है, जिससे जलवाष्प का संघनन होता है। इसे वाताग्री वर्षा भी कहते है। पेड़-पौधों तथा जीव-जंतुओं के जीवित रहने के लिए वर्षा बहुत महत्वपूर्ण है। यदि वर्षा कम हो तो सूखे तथा अधिक हो तो बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न होती है।

3. पवन–क्षैतिज संचार तथा वायु की गति को पवन कहते हैं। वायु के चलने की दिशा के अनुसार ही इसका नामकरण होता है;

जैसे–पश्चिम दिशा में चलने वाली वायु 'पछुवा' तथा पूर्व दिशा में चलने वाली वायु 'परवा' होती है। **ग्रहीय पवनें–**जो पवन एक ही दिशा में लगातार चलती है। वह ग्रहीय पवनें कहलाती है। ये पवनें तीन प्रकार की होती हैं– 1. **व्यापारिक पवने :** ये उप उष्ण कटिबंध से भूमध्य रेखाी निम्न दाब पट्टियों तक प्रवाहित होने वाली स्थायी पवने हैं। ये पवने 30° उत्तरी तथा 30° दक्षिण अक्षांश से भूमध्य रेखा की ओर उत्तर-दक्षिण पूर्व से चलती है। 2. **पछुआ पवनें :** ये पवनें उप-उष्ण कटिबंधीय उच्च दाब पट्टियों तक चलती है। ये पवने उत्तरी-दक्षिण गोलार्द्ध पश्चिम और दक्षिणी गोलार्द्ध में उत्तर-पश्चिम से चलती है। 3. **ध्रुवीय पवनें :** ये पवने उत्तरी-दक्षिण ध्रुवों की उच्चदाब पट्टियों से निम्नदाब वाले उप-ध्रुवीय क्षेत्रों की ओर चलती हैं। उत्तरी गोलार्द्ध में ये उत्तर-पूर्व दिशा से प्रभावित होती है ओर दक्षिणी गोलार्द्ध में दक्षिण-पूर्व दिशा से चलती है। ये अधिक ठंडी और शुष्क होती है।

4. वाष्पीकरण–जल के वाष्प में बदलने तथा गैसीय रूप धारण करने की प्रक्रिया वाष्पीकरण कहलाती है। यह प्रक्रिया निरन्तर होती रहती है। लेकिन वायुमंडल में सीमित मात्रा में जलवाष्प ग्रहण कर सकते हैं, इस प्रकार कह सकते हैं कि गर्म वायु में ठंडी वायु की तुलना में जलवाष्प धारण क्षमता अधिक होती है। **संघनन–** जलवाष्प से संयुक्त वायु का तापमान ओसांक के नीचे चला जाता है, तो वायु अपने अंदर नमी को रोक नहीं पाती। तब अतिरिक्त जलवाष्प जल-बिन्दुओं में बदल जाती है। इस प्रक्रिया को संघनन कहते हैं। **वर्षण–**बादलों में विद्यमान जल-कण और हिमकण आपस में एक होकर अपना आकार बढ़ाते हैं। तब बादल उनका भार संभालने में असमर्थ हो जाते हैं और पृथ्वी पर गिरने लगते हैं। इस क्रिया को 'वर्षण' कहते हैं।

अध्याय 5 : मध्यकाल की प्रमुख घटनाएँ

(क) **1.** (ब) **2.** (स) **3.** (स) **4.** (ब)

(ख) **1.** पूर्वमध्यकाल **2.** इराक **3.** मध्यकाल **4.** दो

(ग) **1.** प्राचीनकाल और आधुनिककाल के बीच के काल को मध्यकाल कहते हैं।

2. मध्यकाल को दो भागों में बाँटा गया है– 1. पूर्व मध्यकाल 2. उत्तर मध्यकाल

3. पत्थर के स्तंभों पर खुदे लेख अथवा ताम्रपत्र मध्यकालीन इतिहास को जानने के लिए महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अभिलेख हैं।

(घ) **1. साहित्यिक स्त्रोत–**मध्यकाल के इतिहास को जानने के लिए विभिन्न प्रकार के साहित्यिक स्त्रोत भी हमारी सहायता करते हैं। भारत में साहित्य पहले ताड़ व भोज पत्रों पर लिखा गया। तेरहवीं शताब्दी से कागज पर लिखा जाने लगा। कुछ पुस्तकें हैं जिनमें राजाओं के जीवन व राजवंशों के कुछ कार्यों का वर्णन है। कुछ संस्मरण और आत्मचरित्र के रूप में शासकों के जीवन का वर्णन है। जैसे–बाबर-जहाँगीर के संस्मरण, लघु चित्र धार्मिक साहित्यिक ग्रंथ आदि।

2. उत्तर मध्यकाल–तेरहवीं शताब्दी के बाद के काल को उत्तर मध्यकाल कहते हैं। जिसके अंतर्गत दिल्ली के सुल्तानों, बहमनी और विजयनगर राज्यों तथा मुगल साम्राज्य का इतिहास शामिल है।

3. मध्यकाल में समस्त यूरोप अंधकार के युग में गुजर रहा था। शिक्षा का प्रकाश यहाँ चर्च और मठों तक सीमित था। बिगड़ी हुई कानून व्यवस्था के कारण नागरिकों का जीवन सुरक्षित नहीं था। इस काल में यूरोप में जो नई राजनीतिक व्यवस्था का उदय हुआ उसे सामंतवाद कहा जाता है।

(ङ) **1. यूरोप की राजनीतिक दशा–**मध्यकाल में पूरे यूरोप की स्थिति डांवडोल थी। संपूर्ण राजनीतिक जीवन में एक भूचाल-सा आ गया। इस काल में जहाँ चीन, भारत और अरब सभ्यता के क्षेत्र मेंप्रति कर रहे थे, वहीं यूरोप की सभ्यता पतन के मार्ग में बढ़ रही थी, अनेक आक्रमणकारियों ने इस साम्राज्य का अंत कर दिया था। रोमन साम्राज्य रोम तथा पूर्वी साम्राज्य की राजधानी कोटेनटिनोपल थी। बाद में बेजेंटाइन साम्राज्य के नाम से विख्यात हुआ। यह एक विशाल साम्राज्य था। इससे तुर्की, सीरिया, फिलिस्तीन, इस्माइल तथा अफ्रीका का उत्तरी भाग सम्मिलित था। बेजेंटाइन साम्राज्य के शासक तानाशाह थे।

2. मध्यकाल के इतिहास को जानने के लिए प्रमुख स्त्रोत हैं– 1. **हमारा समाज :** पत्थर के स्तंभों पर खुदे लेख अथवा ताम्रपत्र मध्यकालीन इतिहास को जानने के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अभिलेख हैं। अनेक मन्दिर एवं गाँवों में खुदाई में प्राप्त होने वाले अभिलेख प्रारंभिक मध्यकाल की झाँकी प्रस्तुत करते हैं। अशोक के शिलालेख, स्तूप और बौद्ध बिहार इतिहास को जानने के स्त्रोत हैं। 2. **साहित्यिक स्त्रोत :** भारत में साहित्य आरंभ में ताड़ और भोज पत्रों पर लिखा गया था। तेरहवीं शताब्दी से इसे कागज पर लिखा जाने लगा। अनेक पुस्तक आज भी हैं जिनमें राजाओं के जीवन और राजवंशों के कार्यों का विस्तार वर्णन है। कुछ में संस्मरण व आत्मचरित्र का वर्णन है। जैसे–बाबर और जहाँगीर के संस्मरण आदि। 3. **विदेशी यात्रियों के वृतांत :** इस काल में भारत की यात्रा करने वाले विदेशी यात्रियों की यात्रा का वर्णन भी है। इनमें तुर्की और फारसी यात्री प्रमुख है, जिन्होंने अपने समय के समाज का वर्णन किया है।

3. रेशम मार्ग–इस समय रेशम मार्ग एक महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग था। चीन और पश्चिमी एशिया के मध्य का व्यापार इसी मार्ग से होता था। इसी कारण मध्य एशिया का महत्व भी बढ़ गया। व्यापार करने वाले काफिले इसी मार्ग से जाते थे। इसे रेशम मार्ग इसलिए कहा जाता था, क्योंकि चीन के रेशम व्यापार की महत्वपूर्ण वस्तु थी। फिर चीन के नए आविष्कार की वस्तु पश्चिम एशिया में आईं। बारूद, कागज और कपास बनाने तथा छापने की कला आदि चीन से यूरोप पहुँचे। चीन के जहाज बंदरगाहों जैसे–कैटन, अमाय तथा दक्षिणी चीन के अन्य बंदरगाहों से चलकर भारत और पूर्वी अफ्रीका तक जाते थे। इन व्यापारियों के द्वारा देशों की सभ्यता और संस्कृति का भी आदान-प्रदान हुआ।

अध्याय 6 : दक्षिण भारत के राज्य (800 ई. से 1200 ई. तक)

(क) **1.** (अ) **2.** (अ) **3.** (ब) **4.** (स) **5.** (स)

(ख) **1.** राष्ट्रकूट **2.** 8वीं से 13वीं **3.** राजेंद्र प्रथम **4.** राजा राजा प्रथम **5.** ब्रहादेव उपहार

(ग) **1.** चोल साम्राज्य की स्थापना राजाराजा प्रथम ने की थी।

2. मंदिर के प्रवेश द्वार को गोपुरम कहते हैं।

3. चोल राज्य की आय के दो साधन थे–1. भूमिकर 2. व्यापारकर

4. चोल राजाओं के विरुद्ध राष्ट्रकूटों को संघर्ष करने पड़े।

5. चोल शासन बहुत सुचारू था। राज्य अनेक सूबों में बँटा हुआ था, जिन्हें मड़लम् कहते थे।

(घ) **1.** अधिकांश प्रजा धर्म हिन्दू धर्म के अनुयायी थी, लेकिन बौद्ध धर्म और जैन धर्म भी थे। इस काल में कई धार्मिक आंदोलन शुरू हुए। अलवार के वैष्णव धर्म के भक्ति गीत प्रसिद्ध हुए जबकि नयनार ने शिव की प्रशंसा ने भजन गाये। लिंगायत सबसे प्रसिद्ध धार्मिक मत था। कुछ महान धार्मिक शिक्षक जैसे शंकराचार्य और रामानुज थे। शंकराचार्य ने अद्वैत के दर्शन की शिक्षा दी जिसका अर्थ है–भगवान अद्वितीय है।

2. चोल प्रशासन बहुत सुचारू था। राज्य अनेक सूबों में बँटा हुआ था, जिन्हें मंडलम् कहते थे। प्रत्येक मंडलम् प्रदेशों में बँटा हुआ था जिन्हें वेलेंडस कहते थे। शासन की सबसे छोटी इकाई गाँव थी, वह तीन प्रकार की सभाएँ थी–उर, सभा और नगरम्। उर साधारण गाँव वालों की सभा थी। सभा ज्ञानी ब्राह्मणों की सभा थी और नगरम् व्यापारियों, सौदागरों व शिल्पकारों की सभा थी। इनका प्रमुख कार्य कर एकत्रित करना, झगड़ों का निपटारा करना, मंदिर व सिंचाई की देखभाल, सफाई और स्वास्थ्य थे।

3. दक्षिण प्रायद्वीप के राज्यों में उत्तरी क्षेत्र का राष्ट्रकूट राज्य बहुत महत्वपूर्ण था, जिसने गंगा घाटी पर विजय प्राप्त करने का प्रयास किया। चोल राजाओं के विरुद्ध राष्ट्रकूटों को अनेक युद्ध करने पड़े। चोल राजाओं ने तमिलनाडु के पास शासन शुरू किया। फिर पल्लव वंश के और दूसरे शासकों को हराकर शक्तिशाली बन गए। 12वीं शताब्दी तक कुछ राज्यों का पतन हो गया। चालुक्य वंश ने राष्ट्रकूटों पर अधिकर कर लिया था। इस वंश को उत्तर चालुक्य वंश कहा जाता था। इसके बाद अनेक राज्यों की स्थापना हुई; जैसे– पहले यादव वंश, दूसरे काकतेय वंश और तीसरे आधुनिक मैसूर के समीप होयसल वंश की। चोल शासकों का 13वीं शताब्दी तक प्रभाव रहा।

4. ''उर'' साधारण गाँव वालों की सभा थी ''सभा'' ज्ञानी ब्राह्मणों की सभा थी और ''नगरम्'' व्यापारियों, सौदागरों और शिल्पकारों की सभी थी।

5. ब्राह्मणों को बहुत आदरणीय माना जाता था। ब्राह्मण को राजा से भूमि और गाँव उपहार स्वरूप मिलते थे। जिन्हें ब्रह्मदेव उपहार कहा जाता था।

6. व्यापारी श्रेणी के लोगों का भी समाज में बहुत मान-सम्मान था, वे चीन, दक्षिण-पूर्वी एशिया और पश्चिम एशिया के साथ व्यापार करते थे। कुछ व्यापारी एकत्र होकर एक व्यापार मंडल का निर्माण करते थे। जिसे ''मणिग्राम'' कहते थे।

(ङ) **1. चोल शासन प्रणाली**–चोल शासन बहुत सुचारू था। राज्य अनेक सूबों में बँटा हुआ था, जिन्हें मंडलम् कहते थे। प्रत्येक मंडलम् प्रदेशों में बँटा हुआ था। जिन्हें वेलेंडम कहते थे। शासन की सबसे छोटी इकाई गाँव थी। वहाँ तीन प्रकार की सभाएँ थी। उर, सभा और नगरम्। ''उर'' साधारण गाँव वालों की सभा थी ''सभा'' ज्ञानी ब्राह्मणों की सभा थी और ''नगरम्'' व्यापारियों, सौदागरों और शिल्पकारों की सभी थी। इन सभाओं के प्रमुख कार्य कर एकत्रित करना, झगड़ों का निपटारा करना, मंदिर व सिंचाई की देखभाल, सफाई और स्वास्थ्य थे। चोल राज्य की आय के दो साधन थे–पहला भूमिकर और दूसरा व्यापार कर। इसका एक भाग राजा के पास आता था और शेष भाग सार्वजनिक कार्यों; जैसे– सड़क और तालाब निर्माण, राज कर्मचारियों का वेतन, सेना व मंदिर निर्माण में व्यय करना आदि में लगाया जाता था।

2. चोल वंश को दक्षिण भारत का सबसे महत्वपूर्ण वंश माना गया है। चोल शक्ति 8वीं शताब्दी से दक्षिण भारत में दृष्टिगोचर होनी शुरू हुई थी। विजयालय ने तंजौर के साथ जिसे अपनी राजधानी बनाया तमिलनाडु में शासन स्थापित कर चोल साम्राज्य एक विशाल साम्राज्य बना। उसने कुछ राज्यों को हराकर अपने साम्राज्य का विस्तार किया। फिर मैसूर कुर्ग और श्रीलंका आदि प्रदेशों को राज्यों में मिलाया। राजाराजा प्रथम ने एक शक्तिशाली जल सेना तैयार करके समुद्र के बहुत-से द्वीप जैसे लक्षद्वीप को अपने नियंत्रण में ले लिया। राजाराजा महान निर्माता था, उसने तंजौर का बृहदेश्वर मंदिर बनवाया। इसकी दीवारों पर विजयों को लिखवाया। उसके शासनकाल में व्यापार फला-फूला और केरल, मालदीव और श्रीलंका के तट धनी हो गए। कपड़ा, मसाले आदि कीमती पत्थर पश्चिमी एशिया का निर्यात होते थे।

3. चोल राज्यों के मंदिर विद्या केंद्रों का काम भी करते थे। मंदिर के पुजारी शिक्षक भी होते थे। विद्यार्थी प्रायः ब्राह्मण होते थे। वे संस्कृत तथा तमिल भाषा का प्रभाव पड़ने पर तमिल भाषा में बहुत-से शब्द संस्कृत के बोले जाने लगे। चोल राजाओं के शिलालेख संस्कृत और तमिल भाषाओं में लिखे गए। दक्षिण भारत की प्राचीन भाषा तमिल है, पंरतु इस काल में तमिल के साथ-साथ तेलुगु, कन्नड़ भाषा भी बोली जाती थी। कंबन द्वारा रचित ग्रंथ तेलुगु लेखक नन्नयया, तिककन्ना और यरन्ना आदि प्रसिद्ध हैं।

अध्याय 7 : उत्तर भारत के राज्य (800 ई. से 1200 ई. तक)

(क) **1.** (स) **2.** (ब) **3.** (अ) **4.** (अ) **5.** (ब) **6.** (ब)

(ख) **1.** नासिक; राष्ट्रकूटों **2.** 1019 **3.** राजपूत **4.** पृथ्वी राज चौहान **5.** 17 **6.** मुहम्मद गौरी; साम्राज्य

(ग) **1.** (स) **2.** (र) **3.** (ब) **4.** (अ) **5.** (द) **6.** (य)

(घ) **1.** नागभट्ट प्रथम प्रतिहार वंश के संस्थापक थे। इनका शासन

काल 740 ई. से 750 ई. तक चला था।

2. महान संस्कृत कवि राजशेखर की प्रसिद्ध रचना काव्यमी मांसा थी।

3. महमूद का भारत पर आक्रमण करने का कारण भारत का धन लूटना था।

4. पृथ्वीराज चौहान सबसे प्रसिद्ध चौहान शासक था। उसके जीवन की कुछ घटनाएँ चन्दबरदाई द्वारा लिखित पृथ्वीराजरासो में वर्णित हैं।

5. राजाराजा प्रथाम चोल साम्राज्य के एक वैभवशाली शासक थे। वह एक महान निर्माता था। उसने बृहदेश्वर मंदिर बनवाया। साथ ही उसके शासन काल में व्यापार बहुम फला-फूला था।

(च) **1.** पृथ्वीराज चौहान के सम्मान में यह काव्यग्रंथ लिखा गया था। वह एक प्रसिद्ध चौहान शासक था। जिसकी कुछ घटनाओं क वर्णन इसी पृथ्वीराजरासों में किया गया है।

2. भारत की धन दौलत एवं राजनीतिक कूट ने महमद गजनवी को भारत परआक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित किया। उसने भारत पर धन लूटने के लिए 17 बार आक्रमण किया। जहाँ मंदिर थे वहाँ महमूद ने अधिकंश आक्रमण किया। फिर मथुरा और कन्नौज पर आक्रमण कर लूटा।

3. बंगाल पर शासन करने वाले पाल भी कन्नौज पर अपना अधिकार करना चाहते थे। पालवंश के शासकों ने लगभग चार सौ वर्ष तक शासन किया। संपूर्ण बंगाल व बिहार में उनका राज्य फैला। गोपाल पाल वंश का पहला राजा था। उसके पुत्र धर्मपाल ने राजवंश को शक्तिशाली बनाकर कन्नौज पर आक्रमण किया। पाल वंश का अधिक समय तक अधिकर नहीं रहा।

(छ) **1.** भारत के इतिहास में राजपूत काल अत्यंत महत्वपूर्ण है। हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद तुर्की आक्रमण तक राजपूत काल कहालता है। जब तुर्की का भारत पर आक्रमण हुआ तब राजपूतों ने बचाया था। राजपूत अन्य जातियों से अपने को ऊँचा मानते थे। यह अपने को क्षत्रिय कुल का मानते थे। जिनका कार्य युद्ध करना है। इनमें विभिन्न राजवंश थे–चंदेल, पारमार, सोलंकी व चौहान आदि। राजपूतों की उत्पत्ति के विषय में अनेक मत थे। कुछ के अनुसर इनका जन्म अग्निकुल से हुआ था। कहा जाता था कि म्लेच्छों के अत्याचार बढ़ जाने पर वशिष्ट ने यज्ञ किया था, जिनमें परमार, चौहान आदि का जन्म हुआ और राजपूत इन्हीं की संतान हैं।

2. 10वीं शताब्दी में तुर्की विजेता ने गजनवी को अपने अधिकर में ले लिया। बाद में तुर्की ने फारस, अफगानिस्तान, खोरसान के भागों पर अपना साम्राज्य कर लिया। गजनवी इस वंश का शक्तिशाली महत्वपूर्ण व महत्वाकांक्षी शासक था। भारत की धन-दौलत एवं राजनीतिक फूट ने महमूद को भारत पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित किया। भारत पर गजनवी ने 17 बार आक्रमाण किया। उसने अधिकतर मंदिर वाले स्थानों पर आक्रमण किया। फिर बाद में मथुरा और कन्नौज को लूटकर उसने 1025 ई. में गुजरात के प्रसिद्ध मंदिर सोमनाथ को लूटा। महमूद भारतीय लोगों की संस्कृति को जानने में रुचि रखता था। उसनसे अल-बरूनी नामक एक विद्वान को भारत का विवरण लिखने की जिम्मेदारी दी। उसने अरबी भाषा में अल-हिन्द नामक पुस्तक लिखि, जिसमें भारत की संस्कृति एवं समाज की अमूल्य जानकारियाँ थीं।

3. उत्तर भारत में कन्नौज के लिए कई युद्ध लड़े गए। यह उत्तर भारत का प्रसिद्ध नगर हर्षवर्धन की राजधानी था। जो इस नगर पर अधिकार कर गंगा के मैदान पर अधिकार करना चाहता था। तीन प्रमुख राज्य इस नगर पर अधिकर करने का प्रयास कर रहे थे। उन्होंने बारी-बारी कन्नौज पर अधिकर किया। ये तीन राज्य थे– राष्ट्रकूट, प्रतिहार और पाल। दक्षिण के उत्तर पश्चिमी भाग में नासिक के आस-पास राष्ट्रकूटों का शासन था। मालखेद उनकी राजधानी थी। राष्ट्रकूटों के शासक अमीघवर्ष बहुत महत्वाकांक्षी था। कन्नौज पर अधिकार करके वह उत्तर भारत पर शासन करने का प्रयत्न कर रहा था।

अध्याय 8 : दिल्ली की सल्तनत

(क) **1.** (स) **2.** (ब) **3.** (अ)

(ख) **1.** इब्राहीम लोदी **2.** खिज्र खाँ **3.** जाति; उपजाति **4.** गाजी मलिक

(ग) **1.** (✗) **2.** (✓) **3.** (✓) **4.** (✗)

(घ) **1.** (य) **2.** (स) **3.** (द) **4.** (अ) **5.** (ब)

(ङ) **1.** खिलजी वंश की स्थाना जलालुद्दीन खिलजी ने की थी।

2. फिरोज तुगलक ने फिरोजशाह कोटला बसाया।

3. गुलाम वंश का संस्थापक इल्तुतमिश को माना जाता था।

4. तुगलक वंश 1320 ई. से 1412 ई. तक रहा। जिसकी स्थापना ग्यासुद्दीन तुगलक ने की थी।

(च) **1.** तुर्की मूल के पाँच वंशों ने सन् 1206 से 1526 ई. तक बीच में भारत पर शासन किया। ये वंश थे–गुलाम (दास) वंश, खिलजी, तुगलक, सैयद और लोदी वंश। गुलाम वंश को ममलूक वंश के नाम से भी जाना जाता था। इल्तुतमिश, रजिया सुल्तान, नसिरूद्दीन महमूद एवं ग्यासुद्दीन बलबन आदि वंश के अन्य शासक थे।

2. तुकी मूल के पाँच वंशों ने सन् 1206 से 1526 ई. तक बीच भारत में शासन किया। ये वंश थे– 1. दास (गुलाम) 2. खिलजी 3. तुगलक 4. सैयद 5. लोदी वंश। अतः भारतीय इतिहास में यह काल ''सल्तनत'' काल के नाम से जाना जाता है।

3. अलाउद्दीन की विजयों का वर्णन–अलाउद्दीन खिजी जलालुद्दीन खिलजी का भतीजा था, उसने उसका वध करके दिल्ली का सिंहाससन छीन लिया। 1296 ई. में वह दिल्ली की सल्तनत का शासक बना। उसनसे अपनी शक्तिशाली सेना के बल पर गुजरात तथा मालवा के साथ मेवाल में चित्तौड़ के किले पर अधिकार जमा लिया। अलाउद्दीन के कारण चित्तौड़ की महारानी पद्मनी को जौहर करना पड़ा। राजस्थान के शासक उसके अधीन थे। अलाउद्दीन विश्व विजेता बनना चाहता था। वह अपने को

दूसरा सिकंदर कहता था।

4. कला एवं स्थापत्य–इस काल में जिस कला और वास्तुकला का विकास हुआ, उसे हिन्दू-मुस्लिम वास्तुकला कहा गया। इन कलाओं केा सुल्तानों ने भारतीय शिल्पकों द्वारा बनवाया। जिन्होंने नई-नई इमारतें बनाई जैसे–दिल्ली में कुबुतुल इस्लाम मस्जिद, कुतुबमीनार, मकबरे, बाग आदि खुशखती द्वारा उन्हें अलंकृत किया गया तथा इनकी दीवारों पर कुरान की आयतें उत्कीर्ण की। **भाषा और साहित्य**–सल्तनत काल में सरकारी कार्य पारसी भाषा में होते थे। हिन्दुओं की भाषा संस्कृत थी। अनेक भाषाएँ भी प्रचलन में थी। जिनमें संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद भी किया गया। उर्दू भाषा का विकास हिन्दू और फारसी भाषा का रूप था। कालांतर में यह भाषा जन-सामान्य भाषा बनी।

(छ) **1.** इल्तुतमिश एक गुलाम था। जो कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के बाद दिल्ली शासन का उत्तराधिकारी बना। उसे भारत में मुस्लिम साम्राज्य क वास्तविक निर्माता या संस्थापक माना जाता है। जिसने गुलाम वंश को एक शक्तिशाली साम्राज्य बनाने के लिए भरसक प्रयास किया और वह उसमें सफल भी रहा। इल्तुतमिश ने 1211 ई. तक शासन किया। उसने अपनी कूटनीति से मंगोल आक्रांता चंगेज खाँ के आक्रमणों से अपने साम्राज्य की रक्षा की तथा बाद में अनेक कार्य करके उसने बहुत ही कुशलता से अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

2. रजिया सुल्ताना इल्तुतमिश की पुत्री थी। इल्तुतमिश ने अपने पुत्र के बजाय अपनी पुत्री रजिया सुल्ताना को अपना उत्तराधिकारी बनाने का निर्णय किया। क्योंकि वह एक योग्य शासिका थी। जिसनसे चार वर्षों तक सन् 1236 ई. से 1240 ई. तक कुशलता पूर्वक अपना शासन भार संभाला और शासन किया। रजिया के अनेक विद्रोही थे। जिन्होंने रजिया सुल्ताना को मौत के घाट उतार दिया। उसके बाद रजिया के उत्तराधिकरी अयोग्य तथा कमजोर सिद्ध हुए। इसलिए सन् 1246 ई. में तुर्क सरदारों ने नसीरूद्दीन महमूद को सुल्तान बना दिया। जिसने सन् 1266 ई. तक शासन किया।

3. प्रशासनिक–दिल्ली सल्तनत का शासक सुल्तान कहलाता था। सुल्तान बनने की प्रथा वंशानुगत थी। कभी-कभी सिंहासन हथियाने के लिए हिंसा और तलवार का सहारा भी लिया जाता था। सुल्तान प्रशासन का संचालन करता था। वह इस कार्य में अपने विश्वासपत्रों का सहयोग लेते थे। सुल्तान के बाद सरदार व उलेमा होते थे। जो सुल्तान की निकुशलता पर अंकुश रखते थे। उलेमा सुझाव देते थे। शासन व्यवस्था में चार विभाग महत्वपूर्ण समझे जाते थे। **1. दीवाने विजारत** : इसका अध्यक्ष वजीर होता है जो सामान्य प्रशासन देखता है। **2. दीवाने अर्ज** : यह सेना से संबंधित व्यवसाि देखता है। **3. दीवाने इंशा** : यह राज्य पत्राचार की व्यवस्था देखता है। **4. दीवाने रिसालत** : यह धर्म संबंधी मामलों को देखता है।

सामाजिक–बहुसंख्यक जनता हिन्दू की थी। शासक मुस्लिम थे। ये शिया व सुन्नी में विभाजित थे। यह हिन्दुओं को प्रलोभन देकर मुस्लमान बनाते थे।

सांस्कृतिक दशा–सल्तनत काल में सरकारी कार्य फारसी भाषा में किये जाते थे। हिन्दुओं की भाषा संस्कृत थी। जिसमें अनेक ग्रंथों का अनुवाद भी किया। उर्दू भाषा संस्कृत और फारसी का मिश्रण रूप है। इस काल में कला व वास्तुकला का विकास हुआ, उसे हिन्दू व मुस्लिम वास्तुकला कहा गया। भारतीय शिल्पियों को कलाकृति तथा नई-नई इमारतें बनाने में लगाया। इस्लाम मस्जिद अलाई दरवाजा, कुतुबमीनार, तुगलकाबाद नगर, फिरोजशाह कोटला, मकबरों में बाग आदि बनवाए गए। पत्थरों व ईंटों से निर्मित इमारतों में भव्यता का अभाव था। खुशखती द्वारा उन्हें अलंकृत कर दीवारों पर कुरान की आयातें उत्कीर्ण कराईं।

4. गुलाम वंश–गुलाम वंश को ममलूक वंश के नाम से भी जाना जाता है। इल्तुतमिश, रजिया सुल्ताना, नसिरूद्दीन महमूद एवं ग्यासुद्दीन बलबन इस वंश के शासक थे। **इल्तुतमिश** : इल्तुतमिश भी एक गुलाम था, जो 1210 ई. में कुतुबुद्दीन ऐवक का उत्तराधिकारी बना। उसे भारत में मुस्लिम शासन का वास्तविक संस्थापक या निर्माता माना जाता है। उसने 26 वर्षों तक शासन किया तथा नीति-कुशलता से अपने साम्राज्य का विस्तार किया। **रजिया सुल्ताना** : इल्तुतमिश ने अपने पुत्र के बजाय अपनी पुत्री रजिया को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। रजिया एक योग्य शासिका थी। उसने चार वर्ष की अल्प अवधि तक कुशलतापूर्वक शासन किया। लेकिन उसके विद्रोहियों ने उसे मार डाला। **नसीरूद्दीन** : रजिया के उत्तराधिकारी अयोग्य तथा कमजोर शासक सिद्ध हुए इसलिए 1246 ई. में तुर्क सरदारों ने नसीरूद्दीन को सुल्तान बनाया। नसीरूद्दीन ने 1266 ई. तक शासन किया। **ग्यसुद्दीन बलबन** : नसीरूद्दीन महमूद की मृत्यु के बाद ग्यासुद्दीन बलबन दिल्ली का सुल्तान बना बलबन इल्तुतमिश का एक विश्वास पात्र गुलात था। अपनी योग्यता के कारण वह चालीस सरदारों में सम्मिलित होने में सफल हुआ। अपने 20 वर्ष के शासनस में रक्त एवं लौह नीति का पालन किया। 1286 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

अध्याय 9 : हमारा संविधान

(क) **1.** (स) **2.** (स) **3.** (ब)

(ख) **1.** बड़ा; लिखित **2.** 26 जनवरी, 1950 **3.** डॉ. बी.आर. अम्बेडकर

(ग) **1.** (×) **2.** (✓) **3.** (✓)

(घ) **1.** संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. भीमराव अम्बेडकर थे।

2. भारत में संविधान का निर्माण, संविधान निर्मात्री सभा द्वारा किया गया।

3. हमारे संविधान को बनने में 2 वर्ष 11 माह और 18 दिन का समय लगा।

(ङ) **1. धर्म निरपेक्ष**–धर्म निरपेक्ष शब्द के मुख्य चार लक्ष्य हैं– 1. भारत का कोई सरकारी धर्म नहीं है। 2. धर्म के आधार पर

किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होता है। 3. भारत धर्म-शासित राज्य नहीं है। 4. भारत के लोगों को अपनी पसंद का धर्म-पालन करने का पूर्ण अधिकर प्राप्त है।

2. समाजवाद–समाजवादी राज्य देश की लाभसंपदा पर सबका समान अधिकार होता है, और उसे प्राप्त करने का सभी लोगों को समान अवसर प्राप्त होता है।

3. संविधान–संविधान एक मौलिक संवैधानिक लेख है। जिसके अनुसार कोई भी देश कार्य करता है। संविधान किसी भी देश के कानूनों से सर्वोच्च होता है।

4. लोकतांत्रिक राज्य–लोकतंत्रात्मक गणराज्य का अर्थ होता है, देश के लोगों का प्रशासन से संबंधित विषयों को निर्धारित करने का पूरा अधिकार है। यह ऐसी सरकार है, जो जनता को, जनता के लिए और जनता द्वारा होती है। लोग अपने प्रतिनिधि को निर्वाचन अर्थात् मताधिकार के द्वारा चुनते है। 18 वर्ष या उससे अधिक आयु के प्रत्येक पुरुष या महिला को मतदान का अधिकार होता है। निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा ही लोग देश के प्रशासन के कार्यों में भाग लेते हैं। मतदान प्रक्रिया सर्वभौम वयस्क मताधिकार हमें प्राप्त हैं।

(च) **1. संविधान की प्रस्तावना**–भारतीय संविधान एक कानूनी दस्तावेज है। इसका आरंभ भूमिका अथवा परिचय से किया गया है; जिसे प्रस्तावना कहते हैं। प्रस्तावना शुद्ध का अर्थ है–कानूनी दस्तावेज का परिचय। यह इसका परिचय व कुंजी दोनों है। इस संविधान में इन आदर्श व आधारभूत सिद्धांतों का उल्लेख है। जिन्हें देश की नितियाँ बनाते समय और लागू करते समय ध्यान में रखना चाहिए। 42 वें संशोधन 1976 द्वारा इस प्रस्तावना में कुछ परिवर्तन हुए। यह प्रस्तावना संविधान की आत्मा परिलक्षित करती है कि भारत के लोगों में ही उसकी वास्तविक सत्ता निहित है। स्वतंत्रता के बाद भारत एक स्वतंत्र देश बन गया। इसका अर्थ है कि हम अपने आंतरिक एवं बाह्य मामलों में स्वयं निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र है।

2. संविधान–संविधान एक मौलिक संवैधानिक लेख है, जिसके अनुसर कोई भी देख कार्य करता है। संविधान किसी भी दोश के कानूनों से सर्वोच्च होता है। **हमारे संविधान का निर्माण** : भारत के संविधान का निर्माण, संविधान निर्मात्री सभा द्वारा किया गया है। इस सभा में 308 सदस्य थे। संविधान सभा ने संविधान का निर्माण कार्य 9 दिसंबर 1946 को शुरू कर दिया था। जो 26 नवंबर 1949 को तैयार हुआ। इस संविधान में प्रारूप समिति के 8 सदस्या थे, जिनके डॉ. भीमराव अंबेडकर अध्यक्ष बने। इस प्रकार भारत का संविधान बनाने में 2 वर्ष 11 माह और 18 दिन का समय लगा और इस संविधान को 26 जनवरी 1950 में लागू किया गया। अतः 26 जनवरी भारतीय इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखि हुई है। इसलिए 26 जनवरी को भारत अपना गणतंत्र दिवस मनाता है।

3. धर्म निरपेक्ष राज्य–धर्म-निरपेक्ष राज्य में सरकार किसी धर्म विशेष को राज्य धर्म के रूप में मान्यता प्रदान नहीं कर सकती है। धर्म निरपेक्ष शुद्ध के मुख्या चार लक्ष्य हैं– 1. भारत का कोई सरकारी धर्म नहीं है। 2. धर्म के आधार पर किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं होता है। 3. भारत धर्म-शासित राज्य नहीं है। 4. भारत के लोगों को अपनी पसंद का धर्म-पालन करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है।

अध्याय 10 : नागरिकता

(क) **1.** (ब) **2.** (अ) **3.** (अ) **4.** (ब)

(ख) **1.** विनम्रता **2.** राष्ट्रीयता **3.** राष्ट्रीयकृत **4.** देश की

(ग) **1.** (य) **2.** (अ) **3.** (ब) **4.** (द) **5.** (स)

(घ) **1.** (×) **2.** (✓) **3.** (×) **4.** (✓) **5.** (×)

(ङ) **1.** हमारे देश में इकहरी नागरिकता का प्रावधान है।

2. नागरिकता दो प्रकार की होती है–1. स्थायी नागरिकता 2. अस्थायी नागरिकता

3. मताधिकार के लिए 18 वर्ष की आयु या उम्र सरकार ने रखी है।

4. अधिनियम 1955 के तहत भारत का नागरिक वो होता है, जो 26 जनवरी 1950 को या उसके बाद भारत में पैदा हुआ है।

(च) **1.** भारत में नागरिकता प्राप्त करने की विभिन्न शर्तें हैं, जिनमें से दो शर्तें का उल्लेख इस प्रकार है– **1. जन्म के आधार पर** : जिसका जन्म जनवरी 26 को या उसके बाद भारत में हुआ हो वे भारत के नागरिक हैं। **2. वंश परम्परा के आधार पर** : जिस व्यक्ति के माता-पिता या माता-पिता में से कोई भारत का नागरिक था, चाहे उस व्यक्ति का जन्म किसी अन्य देश में ही क्यों न हुआ हो, उसे भारत का नागरिक माना जाता है।

2. नागरिक व विदेशी में अंतर– 1. नागरिक को अपने देश में सभी प्रकार के राजनीतिक व नागरिक अधिकार प्राप्त होते हैं। जबकि विदेशी को राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं होते। 2. नागरिक अपने देश के प्रति निष्ठा का भाव रखता है। जबकि विदेशी किसी देश को सम्मान तो दे सकता है परंतु निष्ठा नहीं रखता है। 3. नागरिक को अधिकार व कर्तव्यों का भी ध्यान रखना होता है, जबकि विदेशी को रहने के लिए सरकार से इजाजत लेनी होती है। 4. नागरिक अपने देश में स्थाई रूप से रह सकता है। जबकि विदेशी को रहने के लिए सरकार से आज्ञा लेनी होती है।

3. राष्ट्रीयकृत (अर्जित) नागरिकता–कोई व्यक्ति कुछ शर्तों को पूरा करने के बाद दूसरे देश की नागरिकता प्राप्त कर सकता है, परंतु उसे देश की नागरिकता छोड़नी पड़ती है। अलग-अलग देशों में अलग-अलग नियमों के आधार पर राष्ट्रीयकृत नागरिकता प्रदान की जाती है। जैसे–एक विशेष समय सीमा तक वहाँ रहना, नज़दीकी रिश्तेदारों का वहाँ बसा होना या वैवाहिक संबंध आदि।

(छ) **1. नागरिक**–जिसे राष्ट्र की नागरिकता के साथ-साथ राजनीतिक अधिकार भी प्राप्त होते हैं। उसे नागरिक कहते हैं। **आदर्श नागरिक** : एक आदर्श नागरिक में निम्नलिखित गुण होते हैं– 1. कर्तव्य परायण : आदर्श नागरिक वह है जो अपने देश में बने कानूनों का ठीक प्रकार से पालन करे। 2. जागरूकता : आदर्श नागरिक अपने

अधिकार और कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक होता है। वह दूसरे नागरिकों के अधिकारों को भी जागरूक करता है। 3. राष्ट्र की समस्याओं का ज्ञान : आदर्श नागरिक को राष्ट्र में घटने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं का ज्ञान होना चाहिए तथा उसे राष्ट्र की समस्याओं को जानकर उनके निवारण का उपाय भी करना चाहिए। 4. राष्ट्र-भक्ति : आदर्श नागरिक में राष्ट्र प्रेम व भक्ति कूट-कूट कर भरी होनी चाहिए। आदर्श नागरिक अपने स्वार्थ को त्याग कर राष्ट्रहित के लिए कार्य करता है। 5. राष्ट्रीयता की भावना : एक आदर्श नागरिक में राष्ट्रीयता की भावना होती है। वह राष्ट्र-भाषा, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत को पूरा-पूरा सम्मान प्रदान करता है।

2. नागरिकता–जो व्यक्ति अपने देश द्वारा अधिनियमों का पालन विभिन्न शर्तों द्वारा करता है। वह नागरिकता कहलाती है। **भारत की नागरिकता प्राप्त करने की शर्तें–**1. जन्म के आधार पर : जिनका जन्म जनवरी 1950 को या उसके बाद भारत में हुआ हो वे भारत के नागरिक होंगे। 2. वंश परम्परा के आधार पर : जिस व्यक्ति के जन्म के समय उसके माता-पिता या उनमें से कोई एक भारत का नागरिक था चाहे उस व्यक्ति का जन्म किसी अन्य देश में ही क्यों न हुआ हो, उसे भारत का नागरिक माना जाएगा। 3. पंजीकरण के आधार पर : जो भारत का नागरिक नहीं है, वही पंजीकरण द्वारा भारत की नागरिकता प्राप्त कर सकता है। पंजीकरण के द्वारा नागरिकता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को नियुक्त प्राधिकारी के समक्ष आवेदन करना पड़ता है। 4. देशीयकरण के आधार पर : कोई व्यक्ति जो व्यस्क हो चुका है। प्रथम अनुसूची में वर्णित देशों का नागरिक नहीं है, भारत सरकार से निर्धारित प्रपत्र पर देशीयकरण के लिए आवेदन कर सकता है। इसके लिए कुछ शर्तें हैं; जैसे–उसके पास नागरिकता के आवेदन करने से पहले कम-से-कम एक भारतीय भाषा का ज्ञान हो। 5. अर्जित भू-भाग के विलय के आधार पर ष यदि भारत किसी भू-भाग को भारत संघ में शामिल करता है, तो उस क्षेत्र में रहने वाले लोगों को स्वतः ही भारत की नागरिकता प्राप्त हो जाएगी।

अध्याय 11 : मौलिक अधिकार, कर्त्तव्य और नीति निर्देशक सिद्धांत

(क) **1.** (स) **2.** (ब) **3.** (स) **4.** (स)

(ख) **1.** (य) **2.** (स) **3.** (ब) **4.** (य) **5.** (द)

(ग) **1.** (×) **2.** (×) **3.** (✓) **4.** (✓)

(घ) **1.** सरकार जो जनकल्याग हेतु आंतरिक एवं विदेशी नीतियों के लिए दिशा निर्देश शामिल करती है। उन्हें नीति निर्देशक तत्व कहते हैं।

2. भारत के संविधान में निम्नलिखित सिद्धांतों को सम्मिलित किया है। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं– 1. महिलाओं और पुरुषों को समान कार्य के लिए समान वेतन। 2. ग्राम पंचायतों को पर्याप्त शक्ति प्रदान की जाए आदि।

3. मौलिक अधिकार 6 हैं– 1. समानता का अधिकर 2. स्वतंत्रता का अधिकार 3. शोषण के विरुद्ध अधिकर 4. धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार 5. सांस्कृतिक व शैक्षिक अधिकर 6. संवैधानिक उपचारों का अधिकार

4. भारत एक विशाल देश है तथा यहाँ विभिन्न प्रकार की भाषा, संस्कृति, परम्परा, साहितय है। सबको अपनी संस्कृति, भाषा आदि को संरक्षित करना होता है। हमारे संविधान ने उसे ऐसा करने का अधिकर व शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करने तथा उसे चलाने का अधिकार भी है।

(ङ) **1.** संविधान में भारत के सर्वोच्च न्यायालय को संविधान का संरक्षण घोषित किया गया है। किसी भी दशा में मौलिक अधिकारों का उल्लंघन होने की दशा में सर्वोच्च न्यायालय उसकी रक्षा के लिए उपयुक्त आदेश परित कर सकता है। इसके अतिरिक्त राज्यों में स्थित उच्च न्यायालय भी मौलिक अधिकारों की रक्षा करने का कार्य करते है।

2. समानता का अधिकार–हमारे संविधान ने यह व्यवस्था दी है कि भारत में जन्मे सभी नागरिक समान है। तथा उनके साथ एक समान व्यवहार किया जाना चाहिए। इसलिए हमारे संविधान ने सभी नागरिकों को समानता का अधिकर दिया है। कानून के आधार पर सभी नागरिक समान हैं तथा जाति, धर्म, लिंग, जन्मस्थान के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाएगा और न ही विशेष सुविधा दी जाएगी। कानून के समक्ष प्रदान की जाने वाली सुरक्षा के मामले में सभी नागरिकों को समान अधिकार दिए हैं।

3. धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार–इस अधिकार के कारण भारत में लोगों को पूर्ण रूपेण धार्मिक स्वतंत्रता है। राज्य के समक्ष सभी धर्म समान हैं और किसी धर्म को दूसरे से अधिक महत्व नहीं दिया जाता। नागरिक अपने धर्मों को मनाने के लिए स्वतंत्र हैं। इस अधिकर का उद्देश्य है–देश में धर्म निरपेक्षता के सिद्धांत को अपनाना। कोई भी सरकारी शिक्षण संस्थान धार्मिक शिक्षा नहीं दे सकता।

4. भारतीय संविधान में मान्यता प्राप्त 22 भाषाएँ निम्न प्रकार से हैं– 1. असमिया 2. बंगला 3. बोडो 4. डोगरा 5. मणिपुरी 6. नेपाली 7. गुजराती 8. हिन्दी 9. कन्नड़ 10. कश्मीरी 11. संस्कृत 12. संथाली 13. कोंकणी 14. मराठी 15. मैथिली 16. मलयालम 17. तेलुगू 18. उर्दू 19. उड़िया 20. पंजाबी 21. सिंधी 22. तमिल

(च) **1.** भारतीय संविधान द्वारा देश के नागरिकों के 6 मौलिक अधिकर प्रदान किए हैं जो निम्नलिखित हैं– **1. समानता का अधिकर :** हमारे संविधान में भारत में जनमें सभी नागरिक समान हैं। तथा उनके साथ समान व्यवहार करना चाहिए। संविधान में सभी नागरिकों को समानत का अधिकर दिया है। कानून के आधार पर सभी नागरिकों को जाति, धर्म, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर विशेष सुविधा नहीं दी जाएगी। हमारे संविधान में प्रदान की जाने वाली सुरक्षा के मामले में सभी नागरिको को समान आधिकर

दिए गए हैं। लेकिन समाज के कुछ कमजोर वर्गों की सुरक्षा के लिए संविधान में कुछ विशेष प्रावधान हैं। इस व्यवस्था के अंतर्गत निम्न जातियों के लोगों के साथ भेद-भाव किया जाता है। उनको स्पर्श करना समाज में बुरा माना जाता है। उन्हें शिक्षा तथा मंदिर जैसे स्थानों में प्रवेश नहीं करने दिया जाता था। इन्हीं सब कारणों से वे शताब्दियों से पिछड़े रह गए। इस अस्पृश्यता को कानून ने अपराध घोषित किया है। **2. स्वतंत्रता का अधिकार :** इस अधिकार के अंतर्गत निम्नलिखित स्वतंत्रताओं के अधिकार आते हैं– 1. कोई भी व्यक्ति अहिंसात्मक जन सभा कर सकता है। 2. कोई भी व्यक्ति बोलकर-लिखकर अपने विचार व्यक्त कर सकता है। 3. प्रत्येक व्यक्ति को भारत में किसी भी भाग में रहने का अधिकार है। 4. कोई भी व्यक्ति संस्था या संघ बना सकता है। 5. प्रत्येक व्यक्ति कहीं भी नौकरी व व्यवसाय कर सकता है। **3. धार्मिक स्वंतत्रता का अधिकार :** इस अधिकार के कारण भारत में सभी को पूर्ण रूप से धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त है। राज्य के सभी धर्म समान तथा किसी दूसरे धर्म को अधिक महत्व नहीं दिया जाता है। इस अधिकार का उद्देश्य–धर्मनिरपेक्षता और सरकारी शिक्षण संस्थान धार्मिक शिक्षा नहीं देता है। **4. शोषण के विरुद्ध अधिकर :** यह अधिकार महिलाओं बच्चों और गरीबों को शोषण से बचाने का लक्ष्य रखता है। हमारा संविधान दास प्रथा पर रोक लगाता है और कहता है कि 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को फैक्ट्रियों, खदानों तथा अन्य खतरनाक नौकरयों में नहीं लगाना चाहिए। इस बाल श्रम के विरुद्ध कानून भी बनाए गए हैं। क्योंकि बच्चे हमारे समाज की पूँजी हैं और इन्हें शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ अच्छे वातावरण की आवश्यकता है। सरकार ने महिलाओं को शोषण से बचाने के भी विशेष कानून बनाए हैं। **5. संस्कृति और शिक्षा का अधिकार :** भारत एक विशाल देश है तथा यहाँ विभिन्न प्रकार की भाषाएँ, संस्कृति तथा पंरम्पराएँ पाई जाती हैं। प्रत्येक नागरिक को अपनी संस्कृति तथा अन्य परम्पराओं पर गर्व होता है और वह उसे संरक्षित करना चाहता है। शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करने व चलाने का अधिकार हर नागरिक को होता है। संविधान में मान्यता प्राप्त 22 भाषाएँ निम्नलिखित हैं– 1. असमिया 2. बंगला 3. बोडो 4. डोगरा 5. मणिपुरी 6. नेपाली 7. गुजराती 8. हिन्दी 9. कन्नड़ 10. कश्मीरी 11. संस्कृत 12. संथाली 13. कोंकणी 14. मराठी 15. मैथिली 16. मलयालम 17. तेलुगू 18. उर्दू 19. उड़िया 20. पंजाबी 21. सिंधी 22. तमिल। **6. संवैधानिक उपचारों का अधिकार :** मौलिक अधिकारों में यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। यह संविधान द्वारा दिए गए अधिकारों की रक्षा करता है। यदि किसी नागरिक के किसी अधिकार का हनन किया जाता है। तो वह न्यायालय में अपने अधिकार की रक्षा के लिए जा सकता है और उन अधिकारों को पुनः लागू करा सकता है। संविधान द्वारा न्यायालय को ऐसे आदेश देने की व्यवस्था की है। इसलिए न्यायालय को मौलिक अधिकारों का संरक्षक कहा जाता है।

2. राज्य के प्रमुख नीति निर्देशक सिद्धांत निम्नलिखित हैं– 1. महिला व पुरुष को समान कार्य के लिए समान वेतन। 2. 14 वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए निःशुल्क और अनविार्य शिक्षा उपलब्ध कराई जाए। 3. लोगों के स्वास्थ्य में सुधार लाने के प्रयास व नशीले पदार्थ व नशीली दवाओं पर प्रतिबंध लागाना 4. समाज के कमजों वर्गों विशेषतः अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के हितों की रक्षा करना। 5. राज्य को हस्तकलाओं तथा कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना। 6. गाय और अन्य दुधारू पशुओं के वध पर रोक लगाना। 7. जंगलों तथा जंगली जानवरों की रक्षा करना। 8. ग्राम पंचायतों को पर्याप्त शक्ति प्रदान करना। 9. ऐतिहासिक स्मारकों की सुरक्षा कना। 10. धनी और निर्धन के बीच अंतर कम करना। जिससे सभी नागरिकों को जीविकोपार्जन के पर्याप्त साधनों हेतु आवश्यक सुविधाएँ व स्थितियाँ प्राप्त हो सके।

3. जिस प्रकार हमारे संविधान में मौलिक अधिकारों का वर्णन है, उसी प्रकार कुछ कर्त्तवयों का वर्णन भी है। इन कर्त्तव्यों की व्यवस्था संविधान में 42वें संशोधन में की गई है। कर्त्तव्यों का मुख्य उद्देश्य, नागरिकों में राष्ट्र की भावना का विकास करना, राष्ट्र को सशक्त बनाने, एकता, प्रभुत्ता, कल्याण, शांति और आदर्शों को प्राप्त करने के लिए मौलिक कर्त्तव्यों के अनुसार कार्य करना परम आवश्यक है। संविधान में उल्लेखनीय मौलिक कर्त्तव्य निम्नलिखित हैं– 1. भारतीय संविधान, उसके आदेशों, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र प्रती, राष्ट्रगान का सम्मान करे। 2. उन विचारों को व आदर्शों को सदैव हृदय में सजाकर रखे, जो स्वतंत्रता प्राप्ति के समय राष्ट्रीय आंदोलन की प्रेरणा बने। 3. सभी से सम्मान भाव व भ्रातृत्व भाव से व्यवहार करे। नारी के सम्मान को ठेस पहुँचाने वाले व्यवहार व प्रथाओं का परित्याग करे। 4. भारत के संस्कृतिक गौरव धरोहर जैसे–मंदिर आदि सभी सम्मान करे। 5. भारत की प्रभुत्ता, एकता एवं अखंडता को संरक्षण तथा महत्व प्रदान कर उन्हें समझे। 6. देश की सुरक्षा करे एवं अपने द्वारा किए गए कार्यों को राष्ट्र की सेवा के रूप में अर्पित करें। 7. सार्वजनिक व ऐतिहासिक संपत्ति की सुरक्षा करे व हिंसक कार्यों और हिंसा से दूर रहे। 8. प्राकृतिक धरोहर व पर्यावरण की रक्षा कर जीवों के प्रति दया भाव बनाए रखे। 9. व्यक्तिगत व सामूहिक कार्यों में सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ता का प्रयत्न करें जिससे राष्ट्र उपलब्धि की ऊँचाइयों को पार कर सकें। 10. ज्ञान, मानवतावाद एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करे।

अध्याय 12 : जलमंडल

(क) **1.** (स) **2.** (ब) **3.** (स)

(ख) **1.** तरल; ठोस **2.** वाष्पीकरण **3.** जल संरक्षण **4.** स्तर ऊँचा **5.** ज्वार भाटा

(ग) **1.** (स) **2.** (द) **3.** (य) **4.** (अ) **5.** (ब)

(घ) **1.** समुद्र या सागरीय जल में घुली लवण की मात्रा को लवणता कहते हैं।

2. सागर के जल की सतह को मोड़ों के रूप में ऊपर या नीचे होना लहर कहलाता है। लहर का निर्माण हवा द्वारा पानी की सतह पर रगड़ने के बाद उसे दूर उड़ाकर ले जाने के कारण होता है।

3. जब समुद्र का जल स्तर ऊँचा हो जाता है तेा वह ज्वार कहलाता

है।

4. महासागरों, धाराओं तथा लहरों में अंतर–महासागरों का जल सदैव गतिमान रहता है और धाराएँ महासागरों के अन्दर बहने वाली उष्ण या शीतल नदियाँ है। जबकि जब समुद्र के सतह के जल को बारी-बारी से ऊपर चढ़ती या उतरती है। तो उन्हें लहरे कहते हैं।

5. तूफान के समय जब पवन की गति बहुत तेज होती है, तो लहरें बहुत ऊँची उठती हैं। ऐसी लहरें कभी-कभी बड़ी विनाशकारी होती हैं। सुनामी ऐसी ही एक बड़ी लहर को कहते हैं।

6. जब वर्षा का जल नदियों द्वारा फिर समुद्र में वापस चला जाता है। तो जल की इस गति को जल-चक्र कहते हैं।

(ङ) **1.** हमारी पृथ्वी पर एक जल-बजट या भूमंडलीय जल संतुलन है, जिसमें वर्षा आय के समान है, जबकि वाष्पीकरण और वाष्पोत्सर्जन व्यय है। महासागरों, नदियों, झीलों या तालाबों में विद्यमान जल के ऊपर सूर्य की किरणे पड़ने से वाष्पीकरण होता है। पेड़-पौधे अपनी जड़ो द्वारा भूमि से जल ग्रहण करते है और अपनी पत्तियों द्वारा उसे जलवाष्प के रूप में पुनः वायु को दे देते हैं। इस प्रक्रिया से जल वापस देने को वाष्पोत्सर्जन कहते हैं। कुछ क्षेत्रों में वसंत ऋतु में बर्फ पिघलने या वर्षा ऋतु में अधिक वर्षा के कारण अधिक जल एकत्र हो जाता है। इस अतिरिक्त जल के कारण संतुलन बिगड़ जाता है। इसके विपरीत स्थिति भी हो सकती है। गर्मियों में वाष्पीकरण बढ़ जाता है। जिससे मौसम शुष्क हो जाता है तथा जल की आपूर्ति कम हो जाती है। हम पृथ्वी का जल बजट नहीं बदल सकते परंतु जल के प्रयोग को नियंत्रित कर सकते हैं।

2. जल संरक्षण–जल एक अमूल्य संसाधन है। जिसका सावधानीपूर्वक प्रयोग करना ही जल संरक्षण कहलाता है और यह संसाधन हमारे जीवन में बहुत महत्व रखते है। इस अमूल्य संसाधन को सुरक्षित रखने के लिए जल-संरक्षण पर हमे विशेष ध्यान देना चाहिए। जल-चक्र को बदलना संभव नहीं है और अधिक जनसंख्या के कारण जल आपूर्ति को हम आवश्यकतानुसार बढ़ाने में भी असमर्थ हैं। शहरों में उद्योगों के कारण जल व्यर्थ हो जाता है। दूषित जल प्रदूषण कम करके हम इसका संरक्षण कर सकते है। बाढ़ पर नियंत्रण करना भी जल संरक्षण का एक उपाय है। वर्षा के जल को घरों में एकत्रित करके और दूषित जल को स्वच्छ करके पुनः प्रयोग में लाया जा सकता है। अतः इसी प्रकार नगरों का कूड़ा-करकट व औद्योगिक अपशिष्टों को जल स्त्रोतों में नहीं फेंकना चाहिए।

3. तटीय क्षेत्रों की जलवायु को ये धाराएँ बहुत प्रभावित करती हैं, जो पवन इन धाराओं के ऊपर बहती है, वे इन धाराओं के प्रभाव को महाद्वीपों के आंतरिक भागों तक पहुँचा देती है। गर्मधारा तथा ठंडी धारा जलवायु को ठंडा बना देती है। तापमान इन तटवर्ती क्षेत्रों के कारण भिन्न-भिन्न होते हैं। ठंडी धारा के ऊपर बहने वाली पवन तटीय भागों को शुष्क व ठंडा बनाती है। जबकि गर्म धारा के ऊपर बहने वाली पवन, तटीय क्षेत्रों में वर्षा करती है। मत्स्य उत्पादन, व्यापार, नौपरिवहन आदि पर भी इन धाराओं का प्रभाव पड़ता है। गर्म व ठंडी धाराओं के मिलन स्थानों पर सूक्ष्म जीव (प्लेकंटेन) बहुत पाए जाते हैं। जिन्हें मछलियाँ बहुत स्वाद से खाती है। यही कारण है कि उत्तरी अमेरिका के पूर्वी तट के न्युफाउडलैंड द्वीप के पास ठंडी लेबेडोर एवं गर्म स्ट्रोम धाराओं के मिलने से यह क्षेत्र मत्स्य प्राप्ति के रूप में विकसित हो गया है।

अध्याय 13 : जैवमंडल : जीवन का परिमंडल

(क) **1.** (अ) **2.** (अ) **3.** (अ)

(ख) **1.** प्रारूपिक **2.** उत्पादक **3.** ठंडा **4.** मनुष्य **5.** सागर

(ग) **1.** (×) **2.** (✓) **3.** (×) **4.** (✓) **5.** (✓)

(घ) **1.** (स) **2.** (द) **3.** (य) **4.** (ब) **5.** (अ)

(ङ) **1.** मनुष्य दोनों प्रकार शाकाहारी व मांसाहारी भोजन का सेवन करता है। अतः वह सर्वाहारी कहलता है। जीवों के बीच इस आहार संबंध को 'आहार शृंखला' कहते हैं।

2. जिन प्राणियों को या जीव जंतु आदि को पालतू नहीं बनाया जा सकता है, उन्हें वन्य जीव कहते हैं। जैसे–जंगली पक्षी, कीड़े-मकोड़ व जंगली जानवर आदि।

3. जीवन की उत्पत्ति सर्वप्रथम सागरों से हुई।

4. प्राकृतिक वनस्पति में घास प्रदेश, वन एवं मरुस्थलीय वनस्पति शामिल है।

(च) **1.** मरुस्थलों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी अत्यधिक शुष्कता है, तापमान की दृष्टि से मरुस्थल उष्ण तथा शीतल हो सकते है। विश्व के बड़े शुष्क मरुस्थल प्रायः महाद्वीपों के पश्चिमी तटों पर स्थित है। अतः यह कहा जा सकता है कि मरुस्थल की जलवायु में विभिन्न प्रकार की विविधता पाई जाती है। जो बार-बार बदलती रहती है।

2. घास प्रदेश–ये अनेक प्रकार की जलवायु दशाओं में उगने वाली घासों तथा लंबी जड़ वाले पौधे हैं। ये कम वर्षा वाले भागों में उगती है। जहाँ बड़े-बड़े पेड़ उग नहीं पाते। घास के अतिरिक्त भागों में छोटे एवं छितरे वृक्ष भी उगते हैं। ये घास प्रदेश दो प्रकार के होते हैं– 1. शीतोष्ण कटिबंधीय घास क्षेत्र 2. उष्ण कटिबंधीय घास क्षेत्र

शीतोष्ण कटिबंधीय घास क्षेत्र शुष्क एवं ठंडे प्रदेशों में पाए जाते है। ये घास तथा कम सघन वाली होती है तथा उष्ण कटिबंधीय घास क्षेत्र में लंबी घासें ही होती है। वृक्ष प्रायः उगते ही नहीं है।

3. पादप जगत–पृथ्वी के धरातल पर उत्पन्न होने वाली प्राकृतिक वनस्पति पादप जगत के अंतर्गत आती है। वनस्पति उन समस्त पेड़-पौधों को कहते हैं, जो मनुष्यों के प्रयासों बिना प्राकृतिक रूप में स्वयं उगते हैं। प्राकृतिक वनस्पतियों में कँटीली झाड़ियाँ, घास प्रदेश, वृक्षों के समूह आदि सम्मिलित किए जाते हैं। वर्षा और तापमान ऐसे मुख्य कारक है। उदाहरण के लिए–अधिक वर्षा एवं उच्च तापमान वाले भागों में ऊँचे तथा सघन वन पाए जाते है। रेगिस्तान में कम वर्षा क्षेत्र होते है। वहाँ कँटीली झाड़ियाँ उगती हैं।

4. प्राणी जगत–प्राणी अथवा जंतु जगत के अंतर्गत प्राणी, सरीसृप,

कीट-पतंगें, कीड़े-मकोड़े, पक्षी, मछलियाँ आदि आते हैं। पूरे विश्व में करोड़ से अधिक प्राणियों की जातियाँ पाई जाती है। जिन प्राणियों को पालतू नहीं बनाया जा सकता है, जो अलग-अलग प्रकार की जलवायु दशाओं में सव्यं को समायोजित करती है।

(छ) **1. जैवमंडल**–जिस भाग पर जीव निवास करते हैं, वह जैवमंडल कहलाता है। जैवमंडल की मोटाई केवल 28 किलोमीटर है। इसका विस्तार समुद्रतल के नीचे 11 किमी नीचे तक तथा पृथ्वी के ऊपर 17 किमी तक है। सभी प्रकार का जीवन वायुमंडल के निचले भाग में पाया जाता है। चाहे वह सूक्ष्मजीव, प्राणी तथा पेड़-पाधे हों। पृथ्वी सौरमंडल का ग्रह है। जिस पर जीवन पाया गया है। इस ग्रह पर वायु, जल व तापमान की उपयुक्त दशाएँ विद्मान है। जो जीवन के लिए अति आवश्यक है। सबसे पहले जीवन का आरंभ सागरों में हुआ था। 'अमीबा' नामक एककोशिकीय जीव से जीव तथा पौधों की लाखों प्रजातियों का विकास हुआ। इस विविधता को जैव विविधता कहते हैं। जैवमंडल का सबसे महत्वपूर्ण प्राणी मनुष्य है। जिसके अनेक प्रकार की क्रिया-कलापों से जीवों तथा पेड़-पौधों पर प्रभाव पड़ता है। मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति प्राकृतिक संसाधनों से करता है। जिसमें उसने अनेक तकनीकी का विकास करके अंधा-धुंध प्रयोग किया जिससे पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुँचा। जो सभी देशों के लिए चिंता का मुख्य कारण है। जीव-जंतु और पेड़-पौधे भी महत्वपूर्ण जैविक अंग हैं। जीव-जंतु चर तथा पेड़-पौधे अचर श्रेणी में रखे गए हैं। पेड़-पौधों तथा प्राणियों की विभिन्न जातियाँ हैं। जिनका विस्तार से वर्णन किया गया है और इनका भी जैवमंडल में बहुत अत्यधिक महत्वपूर्ण अंग हैं; जैसे–प्राणी जगत, वन्य जगत आदि।

2. परितंत्र अथवा पारिस्थितिक तंत्र–प्राणी एवं पौधे मिलकर एक पसरितंत्र अथवा पारिस्थितिक तंत्र का निर्माण करते हैं। सभी जीव धारी परस्पर इस परितंत्र पर्यावरण क्रिया-प्रक्रिया करते हैं। जैविक व अजैविक परितंत्र के दो अंग हैं जोकि सौर ऊर्जा पर निर्भर रहते हैं। उत्पादक अर्थात् पौधे तथा उपभोक्ता प्राणी एवं जैविक तत्वों में सम्मिलित हैं। अजैविक तत्वों में जल, तापमान तथा जलवायु प्रकाश सम्मिलित हैं। सभी प्राणी जीवित रहने के लिए एक-दूसरे पर निर्भर रहते है। जैसे–पौधे सूर्य के प्रकाश में प्रकाश-संश्लेषण की क्रिया द्वारा अपना भोजन स्वयं बनाते हैं। इसलिए उन्हें उत्पादक कहते हैं। जो प्राणी अपना भोजन स्वयं नहीं बल्कि दूसरे पर निर्भर रहते हैं उन्हें उपभोक्ता कहते हैं। ये तीन प्रकार के होते हैं– **1. शाकाहारी** : ये प्राणी भोजन के लिए पेड़-पौधों पर निर्भर करते हैं। **2. मांसाहारी** : ये शाकाहारी प्राणियों का शिकार करके भोजन प्राप्त करते हैं। **3. सर्वाहारी** : जो दोनों प्रकार के भोजन का सेवन करते हैं वह सर्वाहारी कहलाते हैं। जीवों के बीच इस आहार संबंध को आहार श्रृंखला कहते हैं। परितंत्र के प्रकृति में अन्य प्रकार पाए जाते है। सरोवीय, सागरीय, घास, वन, मरुस्थलीय तथा पर्वतीय परितंत्र आदि। प्राकृतिक वनस्पति, प्राणियों तथा जलवायु में घनिष्ठ संबंध है। परस्पर क्रिया करने वाले प्राणीय एवं पौधों के समूह को बयोम कहते हैं। यह विशेष प्राणी एवं पादप समुदाय होता है। विश्व में दस बायोमों को विभाजित किया है–उष्णकटिबंधीय सवाना, उष्ण कटिबंधीय चौड़ी पत्ते वाले वन, झाड़ियाँ, वर्षा वन शीतोष्ण कटिबंधीय घास क्षेत्र, मध्य अक्षांशीय चौड़ी पत्ती एवं मिश्रित वन, भूमध्यसागरीय, मरुस्थलीय, टुंड्रा तथा टैगा बायोम। बायोम सागर में भी पाए जाते हैं। जैसे–मँगे की चट्टानें आदि।

3. वृक्षों की अधिकता वाले क्षेत्र वन कहलाते हैं। वनों में घास, कँटीली झाड़िया, लताएँ भी उगती हैं। जो भिन्न-भिन्न वृक्ष, मृदा, भौतिक एवं जलवायु के कारण उगती है। कुछ वृक्षों की कठोर लकड़ी तथा कुछ मुलायम लकड़ी होती है। वनों में कुछ वृक्ष सदाबहार, पतझड़, संकरी पत्ती व चौड़ी पत्ती वाले वृक्ष पाए जाते हैं। उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर वन निम्नलिखित हैं– **1. उष्ण कटिबंधीय सदापर्णी वन वर्षा वन** : इन वनों के वृक्ष किसी भी मौसम में अपने पूरे पत्ते नहीं गिराते हैं। इनके पत्ते चौड़े तथा इनकी लकड़ी कठोर होती है। जैसे–शीशम, आबनूस आदि। **2. उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन** : इन वनों के वृक्ष शुष्क मौसम में अपनी पूरी पत्तियाँ गिरा देते हैं। जैसे–शीशम, साल, सागौन आदि। **3. भू-मध्यसागरीय चौड़ी पत्ती के वन** : इस प्रकार के वन भू-मध्यसागरीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं। ये सदाहरित होते हैं। **4. शीतोष्ण कटिबंधीय चौड़ी पत्ती वाले वन** : इन वनों के वृक्ष अपनी सारी पत्तियाँ गिरा देते हैं और इनकी पत्तियाँ चौड़ी तथा लकड़ी कठोर होती है। **5. शीतोष्ण कटिबंधीय शंकुधारी वन** : इन वनों के वृक्षों की पत्तियाँ शंक्वाकार होती हैं। इनकी मुलायाम लकड़ी की प्रजाति व्यावसायिक महत्व रखती है। रूस के टैगा वन इस प्रकार के अत्यधिक खर्चीले वन हैं।

4. मानव द्वारा पर्यावरण से छेड़छाड़–मनुष्यों ने प्राकृतिक पर्यावरा में हस्तक्षेप करके पर्यावरण को बदल दिया। वनोद्योग, पशुचरण, आखेट, मत्स्य खनन एवं नगरीय नवीनीकरण जैसे क्रिया-कलापों का जैव विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। कृषि भूमि का विस्तार, लकड़ी प्राप्ति के लिए वनों को साफ ही रि दिया। जिसका सबसे अधिक प्रभाव वन्य जीवों पर पड़ेगा, जिसके कारण उनके रहने का आवास समाप्त हो जाएगा। **दुष्प्रभाव या दुष्टपरिणाम**–वनों के विनाश के कारण अनेक प्रकार के दुष्प्रभाव या दुष्टपरिणाम आगे आए हैं जैसे बाढ़ का आना, मृदा अपरदन, मरुस्थल प्रसार तथा जलवायु में परिवर्तन आदि के रूप विनाशकारक रूप हैं। इसी कारण अन्य प्रकार के लाभदायक जीव-जंतु की संख्या लुप्त हो रही है। नगरीयकरण की वृद्धि से भी प्राकृतिक पर्यावरण का विघटन हुआ और पर्यावरण का संतुलन गड़बड़ा गया है। अतः मानव द्वारा प्रकृति से छेड़छाड़ करने से विश्व के तापमान में निरंतर वृद्धि हो रही है, जसने वैश्विक ताप की समस्या को उत्पन्न किया है। इस समस्या से विश्व के सभी देश प्रभावित हैं। इससे देश में सभी लोग चिंतित है।

अध्याय 14 : मानवीय पर्यावरण

(क) **1.** (अ) **2.** (अ) **3.** (ब) **4.** (अ) **5.** (स)

(ख) **1.** आर्द्र-बिन्दु **2.** निरंतर प्रयास **3.** वायुमार्ग **4.** प्राकृतिक

(ग) **1.** (ब) **2.** (द) **3.** (अ) **4.** (स)

(घ) **1.** (✓) **2.** (✓) **3.** (✓) **4.** (✗)

(ङ) **1.** सड़क मार्ग, जलमार्ग, वायुमार्ग यह परिवहन के प्रमुख साधन हैं।

2. संदेश भेजने व ग्रहण करने को ही संचार कहते हैं। संदेश दो प्रकार के होते हैं– 1. लिखित 2. मौखिक

3. परिवहन–वे साधन जिनके द्वारा व्यक्तियों तथा समान को एक स्थान से दूसरे सीान पर ले जाया जाता है।

4. मानव बस्तियाँ सर्वप्रथम नदियों के किनारे पाई गई हैं। इन बस्तियों को कभी-कभी वेट-प्वाइंट सेटिलमेंट्स भी कहते हैं।

(च) **1.** ग्रामीण बस्तियाँ प्रारंभ में नदियों के किनारे बनी होती थीं। लेकिन समय व्यतीत होने पर यह मिट्टी, बाँस, लकड़ी के रूप में गाँव बनाकर रहने लगे तथा शहरों और नगरों में लोगों ने, विभिन्न धातुओं की खोज के बाद, ईंटों, सीमेंट, लोहे, पत्थरों तथा लकडी से अपनी नई-नई बस्तियाँ बनाई। जिन्हें शहर या नगर कहते हैं।

2. परिवहन का सबसे ससता साधन जलमार्ग या जल यातायात है। क्योंकि इसके लिए पानी में पटरियाँ नहीं बिछानी पड़ती और न ही सड़के बनानी पड़ती हैं। नदी, नहर, झील, सागर का प्रयोग जल यातायात के लिए किया जाता है। यह जल साधन सबसे प्राचीन साधन है। जो काफी तेज गति से चलता है।

3. थलाकृति–भूमि का स्वरूप भी बस्तियों के किवास में महत्वपूर्ण योगदान देता है मैदानों क्षेत्रों में कस्बों तथा नगरों का विकास अधिक होता है। भारत के उत्तरी-मैदान में स्थलकृति के कारण अनेक कस्बे या नगर विकसित हुए है। मैदानी क्षेत्रों में सड़क व रेलमार्ग बनाना आसान होता है। लेकिन स्थलकृति बहुत ऊबड़-खाबड़ या ऊँची-नीची हो तो बस्तियाँ कम होगी।

4. मानव बस्तियाँ सर्वप्रथम नदियों के किनारे पाई गई हैं। इन बस्तियों को कभी-कभी वेट-प्वाइंट सेटिलमेंट्स भी कहते हैं। प्राचीन मानव ने नदी घाटियों में ही अपनी बस्तियाँ बनाईं, क्योंकि फसलों की सिंचाई के लिए जल की आवश्यकता होती थी और नदी घाटी के समीप की मिट्टी भी उपजाऊ होती थी। ये लोग यातायात के लिए भी नदी का प्रयोग करते थे। प्राचीन बस्तियाँ छोटे-छोटे गाँवों के रूप में थी।

(छ) **1.** वे साधन जिनके द्वारा व्यक्तियों तथा सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता है। उसे परिवहन कहते हैं। परिवहन के मुख्य साधन इस प्रकार हैं– **1. सड़क परिवहन या स्थल परिवहन :** सड़क मार्ग या स्थल मार्ग के द्वारा हम शहर या अन्य नगरों में यातायात के साधनों द्वारा यात्रा कर सकते है। जैसे–रेलगाड़ी, साइकिल, स्कूटर, बैलगाड़ी आदि। रेल एवं सड़कमार्ग स्थलीय परिवहन के साधन हैं। भूमि पर लंबी दूरी की यात्रा करने व सामान लाने-लेजाने के लिए रेल यातायात सस्ता एवं सुविधाजनक है। आजकल यह यातायात का एक महत्वपूर्ण साधन है। रेलवे उद्योगों के लिए कच्चा माल व तैयार माल देशभर में ढोता है। लोग लम्बी यात्रा के लिए रेल का प्रयोग करते हैं। प्रारंभ में रेलगाड़ियों को चलाने के लिए भाँप के इंजन का प्रयोग किया जाता था, लेकिन आधुनिक युग में अधिक सक्षम इंजन जैसे–डीजल व बिजली के इंजन उपलब्ध हैं। यह बहुत तीव्र गति से दौड़ते हैं। अब कई देशों में मैट्रो भी हैं। भारत में कोलकाता तथा दिल्ली में मैट्रो रेल सेवाएँ उपलब्ध हैं। **2. जल परिवहन :** जल यातायात का सबसे ससता साधन है, क्योंकि इसके लिए पानी में पटरियाँ नहीं बिछानी पड़ती और नही सड़के बनानी पड़ती हैं। नदी, नहर, झील, सागर का प्रयोग जल यातायात के लिए होता है। जल सबसे प्राचीन यातायात का साधन है। नाव, स्टीमर तथा जहाज बहुत-से यात्रियों को तथा यसामान को ल जाते हैं। यह अधिकतर इंजन से चलते हैं। अतः उनकी गति काफी तेज होती है। बहुत-से जहाज व्यापारिक सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाते हैं। **3. वायु मार्ग या परिवहन :** यातायात के साधनों के क्षेत्र में यह सबसे तेज व महँगा आधुनिक साधन है। हवाई जहाज के आविष्कार ने सारे संसार को समीप कर दिया है। हवाई जहाज से कुछ घंटों में ही कई हजार किलामीटर की दूरी तय की जा सकती है। क्योंकि इसके लिए अत्यधिक मात्रा में तेल का प्रयोग किया जाता है और यह तेल बहुत महँगा होता है इसलिए हवाई यात्रा भी महँगी पड़ती है। हवाई जहाज में सामान भी ढोया जाता है, जिन्हें मालवाहक जहाज कहते हैं।

2. मानवीय पर्यावरण का अर्थ–पृथ्वी पर मानव ही एकमात्र ऐसा प्राणी है, जिसने प्राकृतिक पर्यावरण को अपने अनुकूल बनाने का निरंतर प्रयास किया है। मानव द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण में किए गए बदलाव को ही मानवीय पर्यावरण कहते हैं। मानवीय पर्यावरण हमारे संपूर्ण पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण अंग है।

प्रारंभ में आदिमानव गुफाओं व पेड़ पर रहता था। भोजन के लिए वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते थे। जब धीरे-धीरे मानव ने पशुओं को पालना आरंभ किया तो वह एक स्थान पर अपनी झोपड़ी बनाकर रहने लगा। फिर छोटी-छोटी बस्तियाँ बनने लगी। जनसंख्या बढ़ने से नगर सभ्यता का विकास हुआ। अधिकतर नगर और कस्बे नदी के किनारे बसे। क्योंकि वहाँ जीवन के लिए आवश्यक वस्तुएँ आसानी से उपलब्ध हो जाती थी। पहिए के आविष्कार से मानव ने गाड़ियों का निर्माण किया, बर्तन, धागा व वस्त्र बनाने की कला निर्माण किया। नए-नए उद्योगों का विकास हुआ जैसे– बढ़ईगिरी, लुहार व कुम्हार आदि। कृषि व पशुपालन से सामज श्रम-विभाजन हुआ और व्यापार का वस्तु-विनिमय हुआ। उद्योगों के विस्तार से प्रदूषण व विघटन होने लगा। औद्योगिक क्रांति का जन्म यूरोप में हुआ फिर वहाँ से यह क्रांति सम्पूर्ण विश्व में फली।

3. बस्तियों के विकसित होने के अनेक कारण हैं– **1. कृषि के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ :** जब मानव ने भूमि से भोजन उत्पन्न करने की विधि नही खोजी थी, तब तक उसने स्थाई घरों या बस्तियों की संकल्पना भी नहीं की थी। मानव-समुदाय भोजन के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान जाते थे। अतः कृषि के आविष्कार से ही बस्तियों का आरंभ हुआ। भूमि से भोजन पैदा करने को सीखकर

स्थाई बस्तियाँ बनाईं। भूमि से भोजन प्राप्त करने के लिए जल की उपलब्धता महत्वपूर्ण थी। इसी उपलब्धता से ही प्राचीन सभ्यताओं का विकास नदी घाटियों में हुआ था। जल के चारों ओर बसने वाली बस्तियों को आर्द्र-बिंदु बस्तियाँ कहते हैं। **2. स्थलाकृति :** भूमि स्वरूप भी बस्तियों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। मैदानी क्षेत्रों में ही कस्बों तथा नगरों का विकास होता है। मैदानी क्षेत्रों में ही कस्बो तथा नगरों का विकास होता है। मैदानी क्षेत्रों में सड़के तथा रेलमार्ग आसानी से बन जाते हैं। लेकिन यदि स्थलाकृति ऊँची-नीची होगी तो बस्तियाँ कम होगी। क्योंकि यहाँ भूमि की प्रकृति लोगो के आवागमन में बाँधा उत्पन्न करती है। **3. प्राकृतिक या नैसर्गिक सौंदर्या :** किसी स्थान का प्राकृतिक या नैसर्गिक सौंदर्य भी पर्यटन पर आधारित नगरों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। जो लोगों को आकर्षित करता है। ये नगर छुट्टी बिताने के केंद्रों के रूप में विकसित हो जाते हैं। यह पर्यटन बड़ी संख्या में लोगों को व्यवसाय दे रहा है। हिमालय और भारत समुद्र-तट के क्षेत्रों में प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने के लिए संसार के अलग-अलग भागों से लोग घूमने आते हैं। जैसे– कश्मीर तथा गोवा आदि। **4. औद्योगिक केन्द्र :** जब किसी स्थान पर कोई बड़ा कारखाना स्थापित होता है, तो वहाँ कारखाने में काम करने वाले लोग उसके आस-पास के क्षेत्रों में रहने लगते हैं। वह स्थान एक बड़े नगर में विकसित हो जाता है। भारत के नगरों में जनसंख्या में तीव्र वृद्धि का कारण औद्योगिकरण है। **5. धार्मिक कारण :** कुछ नगर धार्मिक कारणों से भी होते हैं। जहाँ किसी धर्म को मानने वाले लोग तीर्थयात्रा एवं पूजा-अर्चना करने जाते हैं। उदाहरण के लिए– हरिद्वार, प्रयागराज एवं वारणसी हिन्दू धर्मावलंबियों के लिए विशेष धर्म-स्थल हैं। मक्का व मदीना नगरों का विकास इस्लाम धर्म के केंद्रों के रूप में हुआ है।

अध्याय 15 : विश्व के कुछ विशिष्ट प्रदेशों में जनजीवन

(क) **1.** (ब) **2.** (अ) **3.** (स) **4.** (ब) **5.** (स)

(ख) **1.** बालू के टिब्बे **2.** कॉफी, कोको, मक्का **3.** विनिपेग **4.** पशुपालन, कृषि **5.** गेहूँ

(ग) **1.** (×) **2.** (×) **3.** (✓) **4.** (✓) **5.** (×) **6.** (✓)

(घ) **1.** प्रेयरी में विश्व में सबसे अधिक गेहूँ पैदा होता है। जिसे विश्व की रोटी की डलिया कहते हैं।

2. उच्च वेल्ड के मध्य एक पर्वत श्रेणी है, जो क्षेत्रों की बीच जल विभाजक का काम करती है।

3. मरुस्थल का जहाज ऊँट को कहते हैं।

4. संसार के सबसे बड़े गर्म मरुस्थल का नाम सहारा मरुस्थल है।

(ङ) **1.** जांबेजी, लिम्पोपो तथा साबी नदियाँ।

2. हीरा, सोना और कोयला।

3. एल्म, सिडार और विल्लो वृक्ष।

4. लोहा, अभ्रक, कोयला, जस्ता तथा चूना पत्थर आदि।

(च) **1.** मरुस्थल का वह क्षेत्र जहाँ पर भूमिगत जल उपलब्ध होता है और जहाँ पर फसलें व ताड़ के वृक्ष उगाए जाते हैं।

2. भूमि का एक बड़ा भाग, जो रेत से ढका होता है, मरुस्थल कहलाता है। इन क्षेत्रों में जल की अत्यधिक कमी होती है। यहाँ अल्प वर्षा, बहुत कम फसल एवं वनस्पतियाँ और ऊष्ण तापमान होता है। जलवायु में होने वाले क्रमिक अंतरों में यहाँ भूमि की प्रकृति को ही बदल दिया। तापमान के आधार पर दो प्रकार के मरुस्थल होते हैं– 1. गर्म मरुस्थल 2. ठंडा मरुस्थल

3. लद्दाख ठंडे मरुस्थल का उदाहरण है। लद्दाख की राजधानी 'लेह' भारत का सबसे बड़ा शहर है। वर्ष के अधिकतर महीनों में यह बर्फ से ढका रहता है। अतः इसे खपा-चान कहते हैं, जिसका अर्थ है–बर्फ की धरती। यह पर्वतीय क्षेत्र है। अत्यधिक ठंड होने के कारण यहाँ वनस्पति भी बहुत कम होती है।

(छ) **1. गंगा-ब्रह्मपुत्र मैदान**–यह वस्तृत मैदानी क्षेत्र हिमालय के दक्षिण में नदियों द्वारा लाई गई उपजाऊ जलोढ़ मृदा (मिट्टी) से बना है। इसे भारत का उत्तरी मैदान भी कहते हैं। मैदानी भाग की तीन मुख्य नदियाँ हैं–सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र। यहाँ की जलवायु हर प्रकार की फसल उगाने के लिए उपयुक्त है। यह कृषि प्रधान क्षेत्र है। चावल, गेहूँ, कपास, गन्ना, जूट, चना, दालें तथा सब्जियाँ इत्यादि इस क्षेत्र में उगाई जाती है। यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है।

पंजाब से असम तक अत्यधिक जनसंख्या वाला क्षेत्र है। यहाँ कई बड़े शहर, सड़क और रेल की पटरियों का जाल बिछा है। कृषि पर आधारित छोटे और बड़े उद्योग जैसे–वस्त्र, चीनी, जूट उद्योग आदि भी इस क्षेत्र में पाए जाते हैं। यहाँ के प्रमुख तीर्थ स्थान हैं– हरिद्वार, प्रयागराज और वाराणसी। नगरों के विकास ने यहाँ के भू-दृश्य को परिवर्तित किया है। नदियों का जल कृषि क्षेत्र तथा उद्योग द्वारा प्रदूषित हो रहा है। नगरों की मल-जल व्यवसाी भी नदियों को प्रदूषित कर रही है। गंगा इतीन अधिक दूषित हो गई कि गंगा बचाने के लिए गंगा कार्य योजना आरंभ की गई है।

2. अमेजन घाटी या बेसिन में जीवन–दक्षिण अमेरिका के ब्राजील में अमेजन घाटी स्थित है। नील नदी के बाद यह विश्व की सबसे बड़ी नदी है। यह आकार व जल में सबसे अधिक है। अतः इसे अमेजन घाटी (बेसिन) कहते हैं। यह एंडीज़ पर्वत से निकलकर अटलांटिक महासागर में मिल जाती है। इस नदी में विश्व का 20% ताजा जल पाया जाता है। नदी क्षेत्र होने के कारण भूमि अत्यधिक उपजाऊ है।

यह अमेजन नदी में सदारहित वर्षा का विशाल भंडार है। यहाँ लगभग 50,000 प्रजातियों के पेड़-पौधे, 15,00,000 प्रकार के कीट-पतंगे, हजारों तरह की मछलियाँ तथा स्तनधारी जानवर पाए जाते हैं। पशुओं में गैंडे, गोरिल्ला, चिंपेंजी, मगरमच्छ आदि प्राकर के जीव-जंतु पाए जाते हैं। अमेजन खनिज, प्राकृतिक वनस्पति व कृषि आदि के अनुकूल परिस्थितियों का स्वामी है। विकास तथा लोगों के आकार बस जाने के कारण वनों की अमूल्य संपदा को काटा जा

रहा है। वनों के सामप्त हो जाने से यहाँ के पर्यावरण पर अधिक से अधिक नुकसान पहुँचेगा। जिससे विश्व भी प्रभावित होगा।

3. शीतोष्ण घास के मैदानों में जन जीवन–उत्तरी अमेरिका के मैदान समशीतोष्ण घास के मैदान कहलाते हैं। महाद्वीप के मध्यभाग में स्थित होने के कारण यहाँ वर्षा कम तथा नमी के अभाव में वृक्षों की अपेक्षा यहाँ घास उगती है। प्रेयरी प्रदेश का विस्तार कनाडा से संयुक्त राज्य अमेरिका तक है। यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती है। यहाँ के लोगों ने घास साफ करके आधुनिक यंत्र विस्तृत खेती शुरू की है।

प्रेयरी प्रदेश में सन् 1885 में कनाडियन पैसीफिक रेलवे बना, जिसके बनने के बाद यहाँ के लोगों ने तेजी से बड़े-बड़े नगरों की स्थापना की। प्रेयरी प्रदेश के शुष्क भागों में लोगों का मुख्य व्यवसाय पशु पालन है। प्रयेरी प्रदेश में बड़े फार्म दूर-दूर बने तथा मशीनों से गेहूँ की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। यहाँ गेहूँ बोने, काटने तथा मढ़ाई करने के लिए कम्बाइन्स का प्रयोग किया जाता है। जौ, मक्का, राई यहाँ की अन्य फसलें हैं। प्रेयरी में विश्व का सर्वाधिक गेहूँ पैदा होता है, प्रेयरी को विश्व की रोटी की डालिया कहा जाता है। यहाँ मिश्रित खेती होती है। डेरी फार्मों में गायों से दूध व माँस भी प्राप्त किया जाता है। यहाँ कृषक लोग बहुत परिश्रमी होते हैं। ठंडे के विशेष समय को छोड़कर वे फार्मों में कठिन परिश्रम करते हैं। कनाडा में विनिपेग नगर को विश्व की गेहूँ की प्रसिद्ध मंडी कहा जाता है तथा कनाड़ा को प्रेयरी का द्वार कहते हैं।

अध्याय 16 : अकबर से पहले का भारत

(क) **1.** (स) **2.** (अ) **3.** (ब) **4.** (ब)

(ख) **1.** विजयनगर **2.** भारत **3.** सैन्य राजनीतिक राजनीति **4.** अफगानिस्तान **5.** हिमायूँ

(ग) **1.** (✓) **2.** (✓) **3.** (✓) **4.** (×) **5.** (×)

(घ) **1.** शेरशाह सूरी बंगाल का मुगल शासक था। पहले उसका नाम फरीद खाँ था।

2. 15वीं शताब्दी में एक नया आन्दोलन प्रारंभ हुआ जिसमें यूरोप में ज्ञान और संस्कृति का नया जन्म हुआ। जिसे पुर्नजागरण कहा जाता है।

3. भारत में पहुँचने वाला प्रथम यूरोपीय डच था।

(ङ) **1.** ये वे लोग थे जो रोमन कैथोलिक चर्च का विरोध करते थे। यह आंदोलन धार्मिक सुधार आंदोलन कहलाया। हॉलैंड, इंग्लैंड, नार्वे और स्वीडन जैसे उत्तरी यूरोप के देशों ने प्रोटैस्टेंट धर्म को अपनाया। दक्षिण यूरोप के कैथोलिक देशों ने अपने धर्म सुधार के लिए दूसरा आंदोलन शुरू किया। स्पेन के कैथेलिक ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया। जीजस दल का इसी उद्देश्य से निर्माण हुआ। लेकिन कैथोलिक चर्च ने इस सुधार को नहीं स्वीकार किया और वह अधिक परम्परावादी हो गए। इसका विरोध करने पर कठोर दंड दिये जाते थे।

2. बहमनी साम्राज्य का संस्थापक अलाउद्दीन हससन था। वह हसनस गांगू के नाम से भी विख्यात था। उसका नाम उसके गुरू गांगू के नाम पर पड़ा था। आगे चलकर यह राज्य तीन राज्यों में विभाजि किया गया था। उनके नाम इस प्रकार हैं– 1. अमदनगर 2. गोलकुंडा 3. बीजापुर

3. 21 अप्रैल सन् 1526 ई. में बाबर और इब्राहीन लोदी के बीच पानीपत का प्रथम युद्ध हुआ। जिसके परिणामस्वरूप बाबर ने इब्राहीन लोदी को युद्ध में पराजित कर दिया और दिल्ली के साथ-साथ उसने आगरा को अपनी राजधानी बनाया। उसके बाद में बाबर ने भारत में अपना मुगल साम्राज्य स्थापित कर लिया। वह मुगल साम्राज्य का संस्थापक भी था। बाबर ने बाद में अन्य राज्यों पर अपना अधिकर कर लिया उसने बंगाल, बिहार, पंजाब, अफगानिस्तान तक अपना साम्राज्य फैला दिया। परिणामस्वरूप अंत में लोदी वंश का अंत हो गया और मुगल साम्राज्य स्थापित हो गया।

4. हुमायूँ की असफलता क निम्नलिखित प्रमुख कारण हैं– 1. हुमायूँ के भाई उसके विरुद्ध थे। उन्होंने मुसीबत के सम उसक साथ नहीं दिया। 2. हुमायूँ के खजाने युद्धों के कारण खाली हो गए थे, तथा जनता असंतुष्ट हो गई थी। 3. हुमायँ सैन्य रणनीति का कुशल जानकार नहीं था। 4. वह बहादुरशाह और शेरशाह सूरी की शक्ति का सही अंदाजा नहीं लगा सका।

(च) **1.** अब तक यूरोपवासियों को अमेरिका के विषय में जानकारी नहीं थी। वे केवल यही जानते थे, कि यूरोप, एशिया और अफ्रीका ही विश्व के भाग हैं। स्पेनवासी भारत के लिए समुद्री मार्ग खोज रहे थे। प्रसिद्ध यात्री क्रिस्टोफर कोलंबस के नेतृत्व में एक समुद्री अभियान के व्यय को स्पेन के बादशाह ने वहन किया। कोलंबस ने सोचा, स्पेन से पश्चिम दिशा में समुद्र को पार करके वह भारत पहुँच जाएगा। लोगों को यह विश्वास हो गया था कि पृथ्वी गोल है। और वे यह भी जानते थे कि बीच में अमेरिका के महाद्वीप हैं। पश्चिम की ओर यात्रा करके वह काफी कठिनाइयों से वेस्टइंडीज तक पहुँचा। इसलिए उसने वहाँ के महाद्वीपों को वेस्टइंडीज कहा तथा निवासिों को रैड्इडियंस का नाम दिया। यह घटना सन् 1492 में हुई। 1497 में अमेरिगो वेस्पूकी ने अमेरिका की यात्रा की। फिर इस महाद्वीप का नाम अमेरिगो के नाम पर अमेरिका हुआ। बाद में जब मैगेलन ने विश्व की समुद्र यात्रा की तो अमेरिकी महाद्वीपों का अस्तित्व सिद्ध हो गया।

2. पुर्नजागरण–यूरोप में एक लंबे अंधकार युग के बाद 15वीं शताब्दी में एक नया आंदोलन आरंभ हुआ। इसे पुर्नजागरण कहते हैं। **विशेषताएँ**–पुर्नजागरण में जहाँ एक तरफ कुछ विशेषताएँ थीं, तो दूसरी तरफ सभ्यता औ संस्कृति को लेकर भिन्न-भिन्न प्रकार के अपने-अपने मत भी थे। जो इस प्रकार हैं–1. पुर्नजागरण आंदोलन में लोगों के मन में यूरोप की प्राचीन सभ्यात और संस्कृति के प्रति रूचि उत्पन्न हुई। ईसाई धर्म के शुरू होने से पूर्व की यूनान और रोमन सभ्यताओं और संस्कृतियों की ओर गया। इन सभ्यताओं के इतिहास में दर्शन, साहित्य और कलात्मक आदि का ध्यानपूर्वक

अध्ययन किया। इटली के छोटे शासक व धनी व्यापारी भी इस ज्ञान में रुचि लेने लगे। 2. 15वीं शताब्दी में दार्शनिक कोपर्निकस ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया, कि सूर्य ब्रह्मांड का केंद्र है और पृथ्वी तथा अन्य ग्रह चारों ओर चक्कर लगाते हैं। लेकिन यह अधात्मिक था। क्योंकि चर्च का कहना था कि पृथ्वी ही ब्रह्मांड का केंद्र है क्योंकि इसे ईश्वर ने बनाया है। 3. 17वीं शताब्दी के आरंभ में वैज्ञानिक गैलीलियों ने भी इस तथ्य को सिद्ध किया। उसनसे दूरबीन से सूर्य व अन्य ग्रहों को देखा और निष्कर्ष पर पहुँचकर चर्च के ज्ञान को असत्य कहा और उन्हें चुनौती भी दी। इससे चर्च और उसके बीच संघर्ष भी हुआ। 4. ये आंदोलन इटली के नगरों से शुरू हुआ फिर यूरोप के अन्य देशों में जैसे–फ्रांस, हॉलैंड, इंग्लैंड, बेल्जियम नगरों में फैला। यह विचारधारा व्यापारियों में बहुत लोकप्रिय हुई, वह नहीं चाहते थे कि चर्च शक्तिशाली बने। इस विचारधारा से सामंतशाही पर कठोर घात किया।

3. बाबर का परिचय–जहीर-उद-दीन मुहम्मद बाबर ने जब 1494 ई. में फरघाना राज्य का उत्तराधिकार प्राप्त किया तब उसकी आयु केवल 12 वर्ष की थी। मुगलों की दूसरी शाखा, अजबेगों के आक्रमाण के कारण उसे अपनी पैतृक गद्दी छोड़नी पड़ी। अनेक वर्षों तक भटकने के बाद उसने काबुल, दिल्ली व आगरा पर अपना अधिकार कर लिया। भारत में मुगल साम्राज्यों की स्थापना कर उसनसे आगरा को अपनी राजधानी बनाया। इब्राहीम लोदी को हराकर उसने जब भारत का सिंहासन संभाला तो उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अफगान सरदार तथा राणा सांगा का विचार था कि बाबर धन लूटकर अपने देश लौट जाएगा, और वह यह भी सोचते थे कि बाबर की साहयाता से वह दिल्ली व आगरा प्राप्त कर सकते हैं।

बाबर ने दिल्ली पर राज्य के लिए मेवाड़ के राणा सांगा, चेंदरी के मेदिनीय, बंगाल और बिहार में अफगान प्रमुखों को हराया। बाबर का साम्राज्य पश्चिम में अफगानिस्तान से लेकर पूर्व विहार तक फैल गया। फिर 1530 ई में लाहौर में उसकी मृत्यु हो गई। बाबर मुगल साम्राज्य का संस्थापक ही नहीं अपितु अच्छा लेखक भी था। उसने एक डायरी में अपने अनुभवों व अनुभवों आत्मकथा भी लिखी। वह तुर्की और फारसी भाषा का पारंगत था। उन आत्मकथा में तुजुक-ए-बाबरी जिसे बाबरनामा भी कहते थे। बाबर संगीत और पोलो खेलने में भी रूचि रखता था।

4. कृष्ण देव–कृष्णदेव राय विजयनगर का शासक था। उसने अनेक प्रकार करवाई। जिसके आधार पर कृष्णदेवराय के कार्यों का मूल्यांकन कुछ इस प्रकार से हैं– कृष्णदेव राय ने रायचूर दोआब पर ही विजय नहीं पाई, ब्लकि वह अपनी सेनाएँ लेकर बहमती राज्य के अंदर प्रवेश कर गया। उसने उड़ीसा पर आक्रमण करके वहाँ के राजा को भी पराजित किया। पश्चिमी तट पर स्थित सभी स्थानीय राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध रखे, क्योंकि ये व्यापार के मुख्य केंद्र थे। वह चाहता था कि व्यापारी विजयनगर से भी व्यापार करे। जिससे विजयनगर की आय में वृद्धि हो। उसनें मंदिरों के निर्माण व मरम्मत पर भी ध्यान दिया। कृष्णदेव राय संस्कृत और तेलुगू का अच्छा ज्ञाता था। उसने तेलुगू में एक लंबे काव्य "अमुक्त माल्यदा" की रचना की जिसमें उससने बताया कि राजा को किस प्रकार शासन करना चाहिए।

5. शेरशाह सूरी बंगाल के मुगल साम्राज्य का शासक था। जिसके बचपन का नाम फरीद खाँ था। शेरशाह सूरी ने सूरी वंश की स्थापना की थी। हुमायूँ को शेरशाह सूरी से सबसे बड़ा मुकाबला करना पड़ा। उसने हुमायूँ को चौसा के और कन्नौज के युद्धों में परास्त किया था। शेरशाह के कारण ही हुमायूँ को भारत छोड़कर 15 वर्षों तक भारत से बाहर रहना पड़ा। शेरशाह सूरी ने उत्तरी भारत पर बहुत थोड़े समय तक शासन किया। उसकी गणना भारत के मध्यकाल इतिहास में श्रेष्ठतम शासक के रूप में की जाती है। सूरी का शासन-प्रबंध उच्च कोटि का था। बाद में में अकबर ने भी उसी का अनुपालन किया। उसने न्याय व्यवसीा और मुद्रा के क्षेत्र में समानता लागू की। इस काल के चाँदी के सिक्के रूदि कहलाते थे। उसने लोगों के लिए सराएँ, कुएँ, छायादार वृक्षों आदि का निर्माण कराया। इसके द्वारा महत्वपूर्ण ट्रंक रोड का पुनः निर्माण था, जो मौर्यकाल में बनवाई थी। बिहार में उसनसे सासाराम मकबरा, दिल्ली में शेरगढ़ और पंजाब में रोहतक नाम के नगर बसाए। शेरशाह सूरी एक योग्य शासक था।

अध्याय 17 : अकबर का युग और उत्तरवर्ती मुगल

(क) **1.** (ब) **2.** (अ) **3.** (अ) **4.** (ब) **5.** (ब)

(ख) **1.** अबुल फजल **2.** बैरम खाँ **3.** चाँद बीबी सुल्ताना

(ग) **1.** (×) **2.** (✓) **3.** (×) **4.** (✓)

(घ) **1.** शाहजहाँ ने आगरा में ताजमहल, किला और मोती मस्जिद का निर्माण तथा दिल्ली में लाल किला, जामा मस्जिद, मयूर सिंहासन आदि का निर्माण कराया था।

2. औरंगज़ेब ने गुरूद्वारों को नष्ट करने तथा सिक्खों को नगरों से निकालने के आदेश दे दिये थे। जिसके कारण औरंगजेब और सिक्खों में संघर्ष छिड़ गया।

3. उत्तराधिकार के युद्ध में शुजा को दारा ने परास्त किया था। लेकिन औरंगजेब बहुत ही चालाक था। उसने शाहजहाँ और मुराद को बंदी बनाकर सिंहाहन पर अधिकार कर लिया।

4. सन् 1669 ई. में औरंगजेब गद्दी पर बैठा, लेकिन वह बहुत ही चालाक, दूरदर्शी और कट्टरपंथी शासक था।

(ङ) **1.** शाहजहाँ का बचपन का नाम खुर्रम था। वह जहाँगीर और जगत गोसाईं का पुत्र था। उसका विवाह आसफ खाँ की पुत्री अरजुमंद बानों बेगम से हुआ। जिसे शाहजहाँ ने मल्लिका-ए-जमानी की उपाधि दी। उसे वह प्यार से मुमताज कहता था। जहाँगीर की मृत्यु के बाद सन् 1628 ई. में वह भारत का बादशाह बना और आगरा के सिंहासन पर बैठा। अबुल मुजफ्फर शाहबुद्दीन मुहम्मद सहित किरन-ए-सानी की उपाधि धारण की। शाहजहाँ का काल सर्वाधिक शांति, विकास और वैभव का काल था। अतः इसे मध्यकाल का स्वर्णयुग कहा जाता है।

2. अकबर ने अपने साम्राज्य में एक केंद्रीकृत शासन व्यवसाी की नींव रखी। जिसका प्रशासक वह स्वयं था। उसनसे साम्राज्य को कई स्तरों पर बाँटा। प्रत्येक स्तर पर जिम्मेदार अधिकारियों की नियुक्ति भी की। अकबर क प्रशासिक स्वरूप इस प्रकार था–

तालिका के लिए पुस्तक का पेज नं. 100 देखें।

3. अकबर की धार्मिक नीतियाँ–अकबर एक उदार ह्रदय का राजा था। वह सभी धर्मों को समान आदर करता था। हिन्दुओं का विश्वास प्रापत करने के लिए उसने सहनशीलता एवं आपसी समन्वयता की नीति अपनायी। उसने लोगों को अपनी इच्छानुसार स्वतंत्र रूप से आराधना करने दी। तीर्थ स्थानों पर जाने के लिए जो जज़िया कर लगाया गया था उसे भी समाप्त कर दिया। अकबर ने मंदिर बनाने की अनुमति और हिन्दू धर्म के त्योहार जैसे–होली, दीवाली आदि में भी भाग लिया। वह विभिन्न धर्मों के बारे में जानने के लिए बहुत जिज्ञासु रहता था। अकबर ने सभी धर्मों का निष्कर्ष प्यार व शांति से निकाला। इसीलिए उसने दीन-ए-इलाही (एक ईश्वरीय धर्म) अपनाने का संदेश दिया। जिसमें न कोई धर्म, रीति-रिवाज, धार्मिक पुस्तक का सीान आदि थे।

3. औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का शासन बहुत तेजी से पतन हुआ। मुगल दरबार व सरदारों के बीच झगड़े व षडयंत्र होने लगक। महत्वाकांक्षी शासक स्वतंत्रता से कार्य करने लगे 1739 ई. में नादिरशाह ने मुगल सम्राट को बंदी बनाकर दिल्ली को खुलेआम लूटा। मुगल सरदारों की विलासिता बढ़ने पर असंतोष व भेदभाव फैला। जागीरदारों का प्रयास था कि वह अधिक आमदनी वाली जागीर हथिया लें। सरदार स्वतंत्रता की कामना करने लगे। योग्य सम्राटों के अभाव में वजीरों, सरदारों और मनसूबेदारों ने उनक स्थान लेने की चेष्टा की जोकि मुगल साम्राज्य के पतन का कारण बना।

औरंगजेब ने अपनी गलत नीतियों के कारण मराठों और राजपूतों को अपना शत्रु बना लिया था। उसकी मृत्यु तक मुगल साम्राज्य दक्षिण तक फैला था। जहाँ औरंगजेब ने अपने 25 वर्ष अंतिम समय में बिताए थे। मुगल साम्राज्य के पतन का कारण भारत में यूरोपियों का हस्तक्षेप करना था। जो धीरे-धीरे भारतीय राज्यों पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर भारत के शासक बन गए।

2. अकबर तैमूरी वंशावली के मुगलवंश का तीसरा शासक था। उसका जन्म अक्टूबर 1542 ई. में उम्रकोट में हुआ था। जोकि अब पाकिस्तान के सिंध में है। उसके पिता का नाम नसिरूद्दीन हुमायूँ और माता का नाम हमीदा बानो था।

अकबर की शासन व्यवस्था–अकबर द्वारा बनाया गया प्रशासित स्वूरपम इस प्रकार से है–

तालिका के लिए पुस्तक का पेज नं. 100 देखें।

अकबर की मनसबदारी व्यवस्था–अकबर ने अपने प्रशासन में मनसबदारी व्यवस्था को लागू किया जो इक्ता प्रथा का बदला हुआ रूप थी। प्रत्येक अधिकारी और सामंत को मनसब दिया जाता था और वह मनसबदार कहलाता था। जो राजा को सेना भेजता था। सबसे छोटा मनसबदार दस घोड़े का मालिक और सबसे ऊँचा मनसबदार 10,000 सिपाहियों का सरदार होता था।

मनसबदार का एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में तबादला किया जा सकता था। उन्हें निशचित वेतन मिलता था। कुछ मनसबदारें को जागीर के रूप में भुगतान तथा पद के अनुसार सेना की देखभाल करनी होती थी। अकबर की सेना में तोप चलाने वाले सैनिक, घुड़सवार, पैदल सिपाही और नौसेना थी। और अन्य भागों में स्रामाज्य क विस्तार भी इनके कार्यों में शामिल थे, ये कार्य बादशाह के आदेशों से ही करते थे।

इस समय मुगल मनसबदारों को जितना वेतन मिलता था, उतना वेतन दुनिया में किसी भी अन्य राज्य के अधिकारियों को नहीं मिलता था। अतः वे बड़ी शान-शौकत से रहते थे।

3. शाहजहाँ का परिचय–शाहजहाँ के बचपन का नाम खुर्रम था। वह जहाँगीर और जगत गोसाईं का पुत्र था। उसका विवाह अरजुमंद बानो बेगम से हुआ जिसे शाहजहाँ ने मल्लिका-ए-जमानी की उपधि दी और उसे प्यार से मुमताज कहता था। जहाँगीर की मृत्यु के बाद सन् 1628 ई. में वह भारत का बादशाह बना और आगरा के सिंहासन पर बैठा। ''अबुल मुजफ्फर शहबुद्दीन मुहम्मद सहित किरन-ए-सानी की उपधि धारण की।

अपने विश्वास पात्र आसफ को वजीर तथा महावत खाँ को खानखाना की उपाधि देकर 7000 का मनसब प्रदान किया। शाहजाहँ के काल में सर्वाधिक शांति, विकास और वैभव था। अतः इसे मध्यकाल का स्वर्ण युग कहा जाता था। शाहजहाँ मध्य एशिया, बल्ख को जीतना चाहता था लेकिन असफल रहा। उसने कंधार किले पर घूस देकर अपना अधिकार कर लिया, लेकिन फारस शासक ने उस पर पुनः कब्जा लेकिन फारस के शासक ने उस पर पुनः कब्जा कर लिया। शाहजहाँ के चार पुत्र शुजा, दारा, मुराद, औरंगजेब थे।

शाहजहाँ को इंजीनियर सम्राट कहा जाता है, क्योंकि उसे भवन निर्माण करवाने का बड़ा शौक था। उसने आगरा में ताजमहल, किला और मोती मस्जिद का निर्माण करवाया, दिल्ली में लालकिला, जामामस्जिद और मयूर सिंहासन आदि का निर्माण करवाया।

औरंगजेब का परिचय–शाहजहाँ के चार पुत्र थे। औरंगजेब उन्हीं पुत्रों में से एक है। औरंगजेब अपने पिता और भाई के विद्रोहों का दमन करने के बाद सन् 1669 ई. में गद्दी पर बैठा। उसका शासन काल सन् 1669 से 1707 ई. तक था। अपने शासन काल में उसने विभिन्न संघर्ष किए व विद्रोहों का दमन किया। उसने मोइउद्दी मुहम्मद आमगिरि की उपाधि ग्रहण की थी।

औरंगजेब ने अपने साम्राज्य का विस्तार किया। मुगल साम्राज्य उत्तर भारत में काबुल व कश्मीर, बंगाल, बिहार, पश्चिम गुजरात तथा दक्षिण बीजापुर तक विस्तारित था। उसने अनेक समस्याओं का सामना भी किया। अधिकारियों की संख्या आधिक होने के कारण उसने अकबर द्वारा लगाए जजिया कर को पुनः घोषित कर

दिया। उसकी नीतियों के कारण मथुरा क्षेत्र में सुसंगठित जाट विद्रोह हुआ। जिसको दबाने के लिए स्वयं औरंगजेब ने सेना नेतृत्व किया। औरंगजेब ने गुरूद्वारे तथा सिक्खों को नगर से निकालने का आदेश दिया था। जिसके कारण सिक्खों तथा औरंगजेब में संघर्ष छिड़ गया।

औरंगजेब एक अदूरदर्शी, चालाक, व कट्टरपंथी शासक था। उसकी नीतियों ने अकबर द्वारा संजोए गए विशाल व शक्तिशाली मुगल साम्राज्य को पतन का मार्ग दिखा दिया।

4. गुरूतेग बहादुर सिक्खों के दस गुरुओं में से एक गुरू थे। जो कहते थे कि ईश्वर निराकार होता है अर्थात् ईश्वर का कोई स्वरूप नहीं होता है। वह सबके लिए समान है लेकिन उसकों अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है; जैसे– राम, रहीम, रब, हरि, मुरारी, गोविंद और अल्लाह आदि।

गुरूतेग बहादुर की मृत्यु का कारण इस प्रकार है–सिक्खों के गुरू तेग बहादुर के साथ भी औरंगजेब का संघर्ष छिड़ गया था। औरंगजेब ने गुरूद्वारों को नष्ट करने तथा सिक्खों को नगरों से निकालने का आदेश दे दिया। गुरू तेग बहादुर औरंगजेब के विरुद्ध खड़े हो गए। गुरू तेग बहादुर को पकड़कर औरंगजेब के पास दिल्ली लाया गया। उसने उन्हें इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए कहा। जब उन्होंने ऐसा करने से इंकार कर दिया, तो सन् 1675 ई. में औरंगजेब ने गुरुतेग बहादुर का सिर कटवा दिया। जिस कारण गुरूतेग बहादुर की मृत्यु हो गई। अतः दिल्ली में चाँदनी चौक का गुरूद्वारा शीशगंज आज भी उनके बलिदान का साक्षी माना जाता है।

अध्याय 18 : धार्मिक विचार

(क) **1.** (अ) **2.** (अ) **3.** (स)

(ख) **1.** मीराबाई **2.** गुरू **3.** कुरान **4.** बनारस

(ग) **1.** (य) **2.** (ब) **3.** (द) **4.** (स) **5.** (अ)

(घ) **1.** सिक्खों का पवित्र स्थल गुरूद्वारा होता है।

2. मुस्लिम संतो को सूफी संत कहते हैं।

3. अपने ईश्वर को स्मरण करना ही भक्ति कहलाती है।

4. पैगंबर मुहम्मद साहब इस्लाम धर्म के संस्थापक हैं।

(ङ) **1.** पैगंबर मुहम्मद साहब का जन्म 570 ई. में मक्का में हुआ था। ये अरब के निवासी थे। इन्हें इस्लाम धर्म का संस्थापक कहा जाता है। जो मुसलमानों का धर्म है। ईसाई एवं यहूदी धर्म के समान इस्लाम धर्म भी एक ही ईश्वर (अल्लाह) को मानता है। मुस्लिम मतावलंबियों के अनुसार पैगंबर मुहम्मद साहब अंतिम और महानतम पैगंबर हैं।

2. बाबा गुरू नानक का जन्म पाकिस्तान में स्थित तलवंडी में सन् 1469 ई. में हुआ था। उन्होंने करतारपुर रावी नदी के किनारे डेरा बाबा में एक केंद्र स्थापित किया था, जिसमें उन्ही के शब्दों (भजनों) को गाया जाता था। सन् 1539 ई. में अपनी मृत्यु से पहले बाबा गुरू नानक ने एक अनुयायी को अपना उत्तराधिकारी चुना। जिसका नाम गुरु अंगद देव था।

3. कुरान के अनुसार पाँच धार्मिक सिद्धांत निम्नलिखित हैं– **1. कलमा** : अल्लाह के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं है। मुहम्मद साहब अल्लाह के पैगंबर हैं। **2. नमाज** : प्रत्येक मुसलमान को दिन में पाँच बार नमाज पढ़नी चाहिए। **3. जकात** : इस्लाम धर्म के अनुयायियों को निर्धन लोगों को दान देना चाहिए। **4. रोजा** : रमजान के पवित्र माह में उन्हें दिन निकलने से दिन छिपने तक रोजा (व्रत) रखना चाहिए। **5. हज** : जीवन में एक बार हज करने के लिए मक्का अवश्य जाना चाहिए।

4. मेवाड़ की राजकुमारी एवं राणा सांगा के पुत्र भोज राज की पत्नी थी। मीराबाई भी एक विशेष स्थान रखती थी। वह बचपन से ही कृष्ण की भक्त थी और कृष्ण की भक्ति में ही लीन रहती थीं। कृष्ण की भक्ति में उन्होंने अनेक प्रकार के भजन भी गाए। मीराबाई भी भक्ति आंदोलन के प्रमुख संतों में से एक मानी जाती हैं।

(च) **1. इस्लाम धर्म**–इस्लाम धर्म का उदय 7वीं शताब्दी के मध्यकाल में हुआ था। इस धर्म के संस्थापक पैगंबर मुहम्मद साहब थे। जो अरब के निवासी थे। मुहम्मद साहब का जन्म 570 ई. में मक्का के पवित्र नगर में हुआ था। यह मुसलमानों का धर्म है। ईसाई व यहूदी धर्म के समान इस्लाम धर्म भी एक ही ईश्वर (अल्लाह) को मानता है। मुस्लिम मतावलंबियों के अनुसार पैगंबर साहब अंतिम और महानतम पैगंबर हैं। मुहम्मद साहब के कुरान के संदेश का सब स्थानों पर प्रचार किया गया। **इस्लाम धर्म की शिक्षाएँ**–मुहम्मद साहब शिक्षाओं का संग्रह हदीस में किया गया है। इस्लाम धर्म की प्रमुख शिक्षाएँ निम्नलिखित हैं– 1. अल्लाह एक, निराकार और सर्वशक्तिमान है। सभी को अल्लाह में विश्वास रखना चाहिए। 2. इस्लाम धर्म के लोगों को छोटे-बड़े का भेद-भाव न करके सबके साथ समानता का व्यवहार करना चाहिए। 3. मूर्ति-पूजा वर्जित है। मूर्ति-पूजा नही करनी चाहिए। 4. इस्लाम धर्म में धार्मिक कर्मकांडों के लिए कोई स्थान नहीं है।

2. भक्ति आंदोलन–मध्यकालीन भारत का एक महान सामाजिक, धार्मिक व भक्ति आंदोलन था। भक्ति का आशय है, बिना किसी विशेष अनुष्ठान किए ईश्वर की पूजा करना। ईश्वर के निराकार स्वरूप के कारण भक्ति में अनेक देवी-देवताओं की पूजा की जाती है। सुगण भक्ति में देवी-देवताओं की पूजा की जाती थी, लेकिन निर्गुण भक्ति वाले मूर्ति-पूजा नहीं करते थे। ईश्वर प्रत्येक मानव के हृदय में निवास करत है और वह प्रत्येक स्थान पर है। उपनिषदों के अद्वैत दर्शन में दोनों मत में विश्वास किया करते थे। वहाँ भक्त संतों का कहना था कि गुरू से ही सच्चे ज्ञान की प्राप्ति तथा मोक्ष मिलता है।

10 अलवार एवं 53 नयनार संतों द्वारा 15वीं शताब्दी में तमिलनाडु में यह आंदोलन आरंभ हुआ। बाद में यह भक्ति उत्तरी भारत में लोकप्रियता को प्राप्त हुई। भक्ति आंदोलन मुख्य रूप से आराध्य और उपसक के मध्य प्रेम संबंधों पर आधारित है। इन संतो ने बलि प्रथा कर्मकांडो का विरोध किया। जाति, लिंग तथा धर्म के आधार

पर प्रचलित भेदभाव को उन्होंने नकार दिया तथा उस समय जनप्रिय भाषा में अपने उपदेश दिए। इन्हीं सब कारणों से भक्ति आंदोलन ने जन आंदोलन का रूप ले लिया।

3. सिक्ख धर्म–सिक्ख धर्म में गुरू की प्रधानता होती है। अतः सिक्ख धर्म मुख्यतः गुरूओं का धर्म है। यह अन्य धर्मों की भाँति अधिक पुराना धर्म नहीं है। भक्ति तथा संतों के आंदोलनों से प्रभावित होकर गुरू नानक देव ने इस धर्म को प्रारंभ किया। गुरू नानक देव ही इस धर्म के संस्थापक हैं। सिक्ख धर्म पहले स्वतंत्र नही था, बल्कि नानकदेव के अनुयायियों ने इसे स्वतंत्र धर्म के रूप में स्थापित किया। सिक्ख धर्म का शाब्दिक अर्थ है–शिष्य और चेला। अतः सिक्ख धर्म के संदेश दस गुरूओं की वाणी व किए गए कार्यों पर आधारित हैं।

गुरू नानक देव का जनम सन् 1469 ई. में खत्री परिवार में पाकिस्तान स्थित तलवंडी में हुआ था। यह स्थान अब ननकाना साहिब के नाम से जाना जाता है। पूर्णमासी की एक रात को सन् 1496 ई. में उन्हें अपने अंदर एक आध्यात्मिक ज्ञान का अनुभव हुआ। उस समय इन्होने ईश्वर की निराकार के रूप में अनुभूति की ओर कहा कि ईश्वर के केवल नाम अलग-अलग हैं; जैसे– राम, रहीम, रब, हरि, मुरारी और गोविंद आदि। नानकदेव कहते थे कि ईश्वर ने सभी को समान माना है। वह कभी भी गरीब अमीर, छोटे-बड़े में भेद-भाव प्रकट नहीं करता है। बाद में सिक्ख धर्म ने वर्ण विहीन समाज पर जोर दिया। सिक्खों का पवित्र स्थल, उपसना के लिए गुरूद्वारा है। गुरूद्वारों में सभी को समान समझने के लिए सामूहिक रसोईघर की व्यवस्था की। जिसमें अमीर-गरीब व्यक्ति नीचे बैठकर एकसाथ भोजन ग्रहण किया करते हैं। यह भोजन व्यवस्था गुरू का लंगर कहलाती है।

अध्याय 19 : केंद्र सरकार

(क) **1.** (ब) **2.** (अ)

(ख) **1.** राष्ट्रपति **2.** 250 **3.** महाभियोग **4.** राष्ट्रपति

(ग) **1.** (×) **2.** (×) **3.** (×)

(घ) **1.** स्थाई सदन राज्यसभा है।

2. संसद भवन दिल्ली में स्थित है।

3. राष्ट्रपति की शक्तियाँ पाँच प्रकार की होती हैं– 1. वित्तीय शक्ति 2. विधायी शक्तियाँ 3. न्यायिक शक्तियाँ 4. कार्यपालक शक्ति 5. आपातकालीन शक्तियाँ।

4. किसी सजा प्राप्त व्यक्ति की सजा माफ करना या कम करने का अधिकार भी राष्ट्रपति के पास होता है।

(ङ) **1.** आपातकालीन में राष्ट्रपति अपनी विशेष शक्तियों का प्रयोग करता है। निम्नलिखित दशाओं में राष्ट्रपति आपातकाल की घोषणा कर सकता है– 1. देश में जब वित्तीय संकट की स्थिति हो। 2. किसी राज्य में अस्थिरता होने पर 3. जब देश पर बहस आक्रमण अथवा गृह-युद्ध की वजह से देश की शांति व सुरक्षा को खतरा हो।

2. लोकसभा के पदाधिकारी–लोकसभा के सदस्य अपने में से ही एक अध्यक्ष और उपाध्यक्ष चुनते हैं तथा उसकी अनुपस्थिति में यही कार्य उपाध्यक्ष करता है। बैठक के दौरान लोकसभा ही अध्यक्ष सदन अध्यक्षता करता है। लोकसभा व राज्यसभा की बैठक एक साथ करता है। लोक सभा अपने सदस्य बहुमत से अध्यक्ष को हटा सकते हैं। यदि उन्हें लगे कि अध्यक्ष अपने दायित्व निर्वाहन ठीक प्रकार नहीं कर रहा। लोक सभा अध्यक्ष ही लोकसभा की बैठक बुलाता है और ध्यान रखता है कि दो बैठक के दौरान 6 माह से अधिक का अंतर नहीं होना चाहिए। इस प्रकार वर्ष में कम से कम दो अधिवेशन अवश्य होने चाहिए।

3. लोकसभा के सदस्यों की योग्यता– 1. वह भारत का नागरिक हो। 2. उसकी आयु 25 वर्ष से कम न हो। 3. वह मानसिक रोगी न हो। 4. वह दिवालिया, सनकी या किसी सक्षम न्यायालय द्वारा लड़ने के अयोग्य घोषित किया गया हो।

(च) **1. लोकसभा**–लोकसभा को निम्न सदन यानि सदन का निचला सदन कहते हैं। यह जनता द्वारा चुने गए सदस्यों की संख्या 550 होती है। इसमें से अधिकतम 20 सदस्य ही संघशासित प्रदेश चुने जाते हैं। लोक सभा के अध्यक्ष को लोक सभा अध्यक्ष कहते हैं। जिसका चुनाव लोकसभा के सदस्यों द्वारा होता है।

इसका कार्यकाल 5 वर्ष से कम होता है। आपातकालीन स्थिति में इसे बढ़ाया भी जा सकता है। साथ ही प्रधानमंत्री के विरुद्ध लोक सभा में अविश्वास प्रस्ताव करने पर इसे पाँच वर्ष से पहले भी भंग किया जा सकता है। लोक सभा की कुछ योग्यताएँ भी होती है; जैसे– 1. वह भारत का नागरिक हो। 2. उसकी आयु कम से कम 25 वर्ष है। 3. वह मानसिक रोगी न हो। 4. वह दिवालिया, सनकी या किसी सक्षम न्यायालय द्वारा चुनाव लड़ने के अयोग्य घोषित न किया गया हो। **लोकसभा के पदाधिकारी**–लोकसभा के सदस्य अपने में से ही एक अध्यक्ष व एक उपाध्यक्ष चुनते हैं। जो लोकसभा की कार्यवाही को संचालित करते हैं। उनकी अनुपस्थिति में यह कार्य लोकसभा का उपाध्यक्ष करता है। लोकसभा के सदस्य अपने बहुमत से अध्यक्ष को हटा भी सकते हैं और दो बैठक के दौरान 6 माह से अधिक का अंतर नहीं रहना चाहिए। इस प्रकार वर्ष में कम-से-कम दो अधिदर्शन होने चाहिए। **लोकसभा के कार्य–** 1. मंत्रिपरिषद् के कार्यों पर नियंत्रण रखती है। 2. कानून बनाने का कार्य करती है। 3. कानूनों में संशोधन कार्य भी लोकसभा में ही होता है।

2. केंद्र सरकार–भारत एक लोकतांत्रिक देश है। प्रशासन के लिए इसे राज्यों तथा कई केंद्र शासित प्रदेशों में विभक्त किया गया है। केन्द्र की सरकार केंद्र सरकार कहलाती है। इसी प्रकार प्रत्येक राज्य की अपनी सरकार है। जिसे राज्य सरकार कहते हैं। केंद्र सरकार संपूर्ण देश के कारण पर विचार करती है तथा केंद्र सूची में दिए गए विषयों पर कानून बनाती है। राज्य सरकार अपने राज्य के कल्याण के लिए विचार कर कानून बनाती है।

केंद्र सरकार में सांसद, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा मंत्रि परिषद होते हैं। भारत सरकार के भी तीन अंग हैं– विधायिका कार्यपालिका

तथा न्यायपालिका। कानून निर्माण करने वाली सर्वोच्च संस्था को विधायिका तथा केंद्रीय स्तर कानून बनाने वाली संस्था को संसद कहते हैं। भारत में राष्ट्रपति, लोकसभा व राज्यसभा मिलकर संसद का निर्माण करते हैं। एक विधेयक तभी कानून बनता है जब वह दोनों सदनों से स्वकृति प्रापत कर राष्ट्रपति से भी स्वीकृत कर दिया जाता है। सरकार का वह अंग जो कानून को परिभाष्ति कर तथा कानून के अनुसार झगड़े सुलझाता है। न्यायपालिका कहलाता है। सर्वोच्च, उच्च तथा सभी निचले न्यायालयों से मिलकर न्यायपालिका बनती है।

अध्याय 20 : राज्य सरकार

(क) **1.** (स) **2.** (स) **3.** (ब)

(ख) **1.** मुख्य आयुक्त; उपराज्य पाल **2.** विधान परिषद् **3.** 25 वर्ष **4.** 500 **5.** विधान सभा

(ग) **1.** (×) **2.** (✓) **3.** (✓) **4.** (×) **5.** (✓)

(घ) **1.** राज्यों की विधायिका दो प्रकार की होती हैं– 1. विधान सभा 2. विधान परिषद्

2. केंद्रशासित प्रदेशों को राज्य विशेष दर्जा प्राप्त होता है; जैसे–दिल्ली एक केंद्रशासित राज्य है।

3. प्रधानमंत्री की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा होती है।

4. मुख्यमंत्री की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा होती है।

(ङ) **1. विधानसभा का गठन**–विधानसभा के सदस्यों का निर्वाचन राज्य की जनता के प्रत्यक्ष मताधिकार द्वारा किया जाता है। लोकसभा की तरह इसमें भी मतदान की आयु 18 वर्ष है। विधानसभा का सदस्य बनने के लिए व्यक्ति को भारत का नागरिक होना चाहिए तथा उसकी आयु न्यूनतम 25 वर्ष हो।

2. राज्यपाल की तीन शक्तियों का वर्णन इस प्रकार है– 1. राज्यपाल की कार्यकारी शक्तियाँ राज्यपाल के अधीन होंगी, और उसके द्वारा संचालित होगी या वो प्रत्यक्ष रूप से भारतीय संवधिानुसार निहित उसे अधीन अधिकारियेां द्वारा संचालित होगा। 2. राज्यपाल को माफी देने, प्राणदंड देने इत्यादि के अधिकर प्राप्त होंगे। 3. राज्यपाल मुख्यमंत्री एवं अन्य मंत्रियों की नियुक्ति करता है।

3. राज्यपाल की योग्यताएँ– 1. वह भारत का नागरिक हो। 2. उसकी आयु 35 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। 3. वह किसी सरकारी पद पर न हो। 4. विधानमंडल अथवा संसद का सदस्य होने पर राज्यपाल बनने से पहले वहाँ से सेवामुक्त होना पड़ेगा।

4. सरकार के तीनों अंगों के नाम निम्नलिखित हैं– 1. राज्यविधायिका 2. राज्य कार्यपालिका 3. राज्य न्यायपालिका

(च) **1. केंद्रशासित प्रदेश**–ये प्रदेश प्रायः आकार और जनसंख्या की दृष्टि से छोटे होते हैं। इसी कारण उन्हें राज्य का दर्जा नहीं दिया जाता। इन प्रदेशों में सीधे केंद्र सरकार का प्रशाससन होता है। राष्ट्रपति केंद्रशासित प्रदेशों के लिए प्रशासनिक अधिकारियों की नियुक्ति करता है। इन प्रशासनिक अधिकारियों को मुख्य आयुक्त अथवा उप-राज्यपाल कहते हैं। केंद्रशासित प्रदेश दिल्ली को विशेष दर्जा प्राप्त है। इसे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र कहते हैं। उप-राज्यपाल इसका सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी है। यहाँ एक निर्वाचित विधानसभा तथा मंत्रिपरिषद् भी है।

2. भारत सरकार के तीन स्तर इस प्रकार हैं– **1. राज्यविधायिका :** द्विसदीनय विधायिका के दो सदन होते हैं– विधान सभा और विधानपरिषद्। परंतु एकसदनीय विधायिका में केवल विधान सभा होती है। किसी भी राज्य की विधान सभा के सदस्यों की संख्या प्रायः उस राज्य की जनसंख्या पर निर्भर होती है, परंतु यह संख्या 500 से अधिक नहीं हो सकती। उत्तर प्रदेश की विधानसभा में सबसे अधिक सदस्य हैं। विधानसभा का कार्य काल भ 5 वर्ष का होता है। राज्यों में विधानसभा, विधान परिषद् से अधिक शक्तिशाली होती है। **विधान सभा का गठन :** इस सभा का निर्वाचन जनता के माधिकार द्वारा किया जाता है और मताधिकार की आयु 18 वर्ष तथा विधानसभा का सदस्य बनने के लिए भारत का नागरिक होनाव उसकी न्यूनतम आयु 25 वर्ष होनी चाहिए।

राज्य विधान सभा का उच्च सदन विधान परिषद कहलाता है। यह एक स्थायी निकाय है। इसके एक-तिहाई सदस्य दो वर्ष में सेवानिवृत्त होते हैं। इसमें राज्य विधानसभा से एक-तिहाई सदस्य होते हैं। इनी संख्या 40 से कम नहीं हो सकती। **विधान परिषद् :** इस परिषद् के प्रत्याशी की आयु न्यूनतम 30 वर्ष, वह भारत का नागरिक व सभी योग्यताएँ रखता हो। जो विधानसभा के सदस्य के लिए होती हैं। परिषद् व विधानसभा दोनों में एक अध्यक्ष और एक उपाध्यक्ष होते हैं। जो अपने-अपने सदनों की अध्यक्षता करते हैं। राज्य मंडल का महत्वपूर्ण कार्य विधेयक पारित कर कानून बनाना है। जो विधेयक परित राज्यपाल के हस्ताक्षर के बाद कानून बनता है। **2. राज्य कार्यपलिका–** राज्य में भी कानून बनाने की प्रक्रिया लगभग केंद्र सरकार की भाँति होती है, कोई भी साधारण विधेयक के रूप मे किसी भी सदन में प्रस्तुत किय जा सकता है। लेकिन वित्त विधेयक केवल विधानसभा में ही प्रस्तुत किया जा सकता है। बहस के बाद जब विधेयक पारित हो जाता है तो वह विधेयक राज्यपाल के हस्ताक्षर के बाद बन जाता है। **राज्यपाल :** राज्यपाल विधायिका का नाम मात्र का प्रधान होता है। राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति करना है। जिसका कार्यकाल पाँच वर्ष तक रहता है। **योग्यताएँ :** 1. भारत का नागरिक हो 2. असकी आयु 35 वर्ष से अधिक होनी चाहिए 3. वह किसी सरकारी पद पर न हो 4. संसद का सदस्य होने पर राज्यपाल बनने से पहले वहाँ से सेवामुक्त होना पड़ेगा। **कार्य एवं शक्तियाँ :** 1. प्रत्येक राज्य का एक राज्य का एक राज्यपाल होना चाहिए। 2. राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति के हस्ताक्षर, मोहरित आज्ञापत्र द्वारा होती है। 3. प्रत्येक राज्यपाल व अपने कार्यों से निवृत्त होने वला राज्यपाल एक शपथ-पत्र हस्ताक्षर करेगा। 4. राज्यपाल माफी देने, प्राणदंड देने इत्यादि के अधिकार रखता है। 5. राज्य पाल मुख्यमंत्री एवं अन्य मंत्रियों की नियुक्ति करता है। 6. राज्यपाल राज्य के जनरल एडवोकेट की नियुक्ति करता है। 7. किसी राज्य की समस्त कार्यपालिका की कार्यवाही

राज्यपाल के नाम से होगी। 8. राज्यपाल के पद पर नियुक्ति भारत का नागरिक हो और उसकी आयु 35 वर्ष से अधिक हो। 9. राज्यपाल समय-समय पर सदन के सत्र को बलाएगा तथा विधानसभा को भंग करेगा। 10. किसी राज्य की समस्त कार्यपालिका की कार्यवाही राज्यपाल के नाम से होगी।

अतः राज्यपाल के कार्य एवं शक्तियाँ और भी अनेक हैं। जिनमें से कुछ का वर्णन किया है।

मुख्यमंत्री और मंत्रीपरिषद् : जिस प्रकार लोकसभा में बहुतमत प्राप्त दल राष्ट्रपति प्रधानमंत्री नियुक्त करता है। उसी प्रकार विधानसभा नेता को राज्यपाल मुख्यमंत्री नियुक्त करता है। मुख्यमंत्री बनने पर वह राज्यपाल को अन्य मंत्रियों की नियुक्ति करने की सलाह देता है। मुख्यमंत्री मंत्रियों से मिलकर मंत्रिपरिषद बनती है। मुख्यमंत्री अपने मंत्रीमंडल में किसी को भी सम्मिलित कर हटा सकता है। अविश्वास प्रस्ताव पारित होने के बाद मुख्यमंत्री स्वतः अपदस्य हो जाते हैं। मुख्यमंत्री का त्याग-पत्र पूरे मंत्रिपरिषद् का त्याग-पत्र माना जाता है। **केंद्रशासित प्रदेश :** छोटे-आकार की जनसंख्या वाले प्रदेश को राज्य नहीं माना जाता है। इन प्रदेशों में सीधे केंद्र सरकार का प्रशाससन होता है। प्रशासनिक अधिकारियों को मुख्य आयुक्त अथवा राज्यपाल कहते हैं। केंद्रशासित प्रदेश में दिल्ली को विशेष दर्जा दिया जाता है। वह राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र कहलाती है। **3. न्यायपालिका :** राज्य का सर्वोच्च न्यायालय उच्च न्यायालय होते हैं। इसके अधीनस्थ जनपदों के न्यायाल होते हैं। उच्च न्यायालय को अपने अधीनस्थ न्यायालय के न्यायिक तथा प्रशासनिक मामलों पर अधीक्षण की शक्ति प्राप्त होती है।

3. राज्य की विधान सभा प लेख–भारत में केंद्र तथा राज्य में संसदीय प्रणाली है। इसे वेस्टमिंटर मॉडल भी कहते हैं। संविधान के 6 भाग के अंतर्गत अनुच्छेद 168 से 212 के बीच विधानमंडल के गठन, अवधि संरचना प्रक्रिया आदि का वर्णन किया। राज्य विधानसभा तीन अंगों से मिलकर बनती है, जिसके अंतर्गत राज्यपाल, विधानसभा तथा विधान परिषद् आते हैं। विधानमंडल के अंदर राज्य को शामिल करने का कारण हम सभी जानते है कि विधानमंडल के दोनों सदनों का काम कोई भी विधेयक तब तक कानून नहीं बना सकता जब तक राज्यपाल की स्वीकृति न हो। यदि विधानमंडल सत्र में न चल रहा हो तो अध्यादेश पारित करने जैसी शक्तियाँ राज्यपाल के अंदर है। इसलिए राज्यपाल विधानमंडल के एक अंग रूप है। हमारे यहाँ संसदीय प्रणाली ब्रिटिश मॉडल पर आधारित है। भारत में राज्य विधान सभा असमान है। 1. एक सदनीय 2. द्विसदनीय विधान क्षेत्र। कुछ राज्य ऐसे है जिनमें विधान मंडल हैं; जैसे–उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र आदि। **संसद विधान परिषद् का गठन**, तथा विघटन भी कर सकता है। राज्य की विधानसभा इस संबंध में संकल्प बहुमत से पारित करता है। परिषद् का गठन संविधान का संशोधन नहीं माना जाएगा। **विधानमंडल की संरचना :** विधान परिषद् की अधिकतम संख्या 40 निश्चित की गई है, किसी राज्य के परिषद् का आधार उस राज्य के विधान सभा के आधार पर निर्भर करती है। विधान सभा में मताधिकार की आयु 18 वर्ष तथा विधानसभा का सदस्य बनने के लिए न्यूनतम आयु 25 वर्ष होनी चाहिए। विधान परिषद् में विधान परिषद् के प्रत्याशी की आयु न्यूनतम 30 वर्ष होनी चाहिए तथा वह इसके योग्य हो और वह भारत क नागरिक भी हो।

सामाजिक कक्षा— 8

अध्याय 1 : प्राकृतिक संसाधन

(क) **1.** (22 मार्च 1993) **2.** (ब) **3.** (ब) **4.** (अ)

(ख) **1.** 71% **2.** 2.5% **3.** 90% **4.** मिट्टी **5.** जल

(ग) **1.** (✓) **2.** (✓) **3.** (✓) **4.** (✓) **5.** (✗)

(घ) **1.** जल के वे स्त्रोत जो मनुष्य के लिए अन्य कार्यों में उपयोगी होते हैं; जैसे–वर्षा का जल आदि।

2. वह संसाधन जिससे हमें भोजन, निवास के लिए स्थान, खेलने तथा काम आदि के लिए क्षेत्र प्राप्त होता है, भूमि संसाधन कहलाते हैं।

3. मृदा मुख्य रूप से 6 प्रकार की होती है– 1. जलोढ़ मिट्टी 2. लाल मिट्टी 3. लेटराइट मिट्टी 4. काली मिट्टी 5. पर्वतीय मिट्टी 6. मरुस्थलीय मिट्टी।

4. जल संकट रोकने के लिए अनेक उपाय किए जा सकते हैं; जैसे–हमें अपने घरों या सार्वजनिक स्थलों पर जल की टोटियों को खुला नहीं छोड़ना चाहिए।

5. जिनसे हमें भोजन एवं वस्त्र सामग्री, खेती के लिए भूमि प्राप्त होती है। उन्हें मृदा संसाधन कहते हैं।

(ङ) **1.** मृदा संरक्षण के निम्नलिखित उपाय हैं– 1. मृदा तत्वों को उर्वरक और खाद देकर पूरा करना चाहिए। 2. वनों की अंधाधुंध कटाई पर रोक लगानी चाहिए। 3. सीढ़ीनुमा खेती करना चाहिए। 4. मिश्रित खेती करनी चाहिए। आदि।

2. जल संरक्षण के उपाय– 1. नदियों पर बाँध बनाना। 2. जल के प्रदूषणों पर रोक लगाना। 3. वर्षा के जल को संग्रहण करना। 4. अधिक-से-अधिक नहरें बनाकर शुष्क क्षेत्रों में जल की आपूर्ति करना। 5. जल के निरर्थक बहाव को रोकना।

3. पृथ्वी की ऊपरी सतह को मृदा कहते हैं। भारत में मुख्य रूप से 6 प्रकार की मृदा पाई जाती है– 1. जलोढ़ मिट्टी 2. लाल मिट्टी 3. लेटराइट मिट्टी 4. काली मिट्टी 5. पर्वतीय मिट्टी 6. मरुस्थलीय मिट्टी।

4. जल प्रदूषण के कारण– 1. घरेलू कूड़ा-करकट तथा सार्वजनिक नालों से निकला मल-मूत्र, नदी, तालाबों तथा अन्य जल स्त्रोतों में मिल जाता है। 2. कृषि क्षेत्र में उर्वरक व कीटनाशक दवाइयों के कारण। 3. परमाणु रिएक्टर से निकलने वाले रेडियों एक्टिव कचरों से भी जल प्रदूषित होना।

(च) **1. जल संसाधन–**जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल तीन अवस्थाओं, तरल, जलवाष्प और हिम में पाया जाता है। जल का

लगभग 97 प्रतिशत जल महासागरों में पाया जाता है। इनका जल खारा होता है। जो नदियों, नालों में बहता है। जो महासागरों से जलवाष्प के रूप में पृथ्वी पर वर्षा बनकर बरसता है। वह वर्षा का शुद्ध जल होता है। वर्षा का जल ही भूमि में चट्टानों के रिसने से भूमि में छिद्र करता है। जिससे भूमिगत जल प्राप्त होता है। जैसे– कुओं आदि।

2. भूमि संसाधन–मानव जीवन में भूमि का विशेष महत्व है। वह भूमि पर रहता है। भूमि पर कृषि, पशुचारण, भोजन, पशु पदार्थों से वस्त्र तथा आवास के लिए बस्तियाँ भी भूमि पर ही प्राप्त होते हैं। परिवहन के लिए भी भूमि प्रयोग करता है। वैसे तो सभी जगह भूमि उपलब्ध है, लेकिन सभी जगह उपयोगी नहीं है। भू-पृष्ठ पर लगभग 30 प्रतिशत भाग भूमि है।

3. भारत में भूमि उपयोग की स्थिति–भारत की कुल भूमि का लगभग 43 प्रतिशत भाग मैदानी, 28 प्रतिशत भाग पठारी क्षेत्र तथा शेष 29 प्रतिशत पर्वतीय क्षेत्र है। भारत की कुल भूमि का आधे से अधिक भाग कृषि योग्य है। इसके अंतर्गत परती भूमि एवं कृषि योग्य बेकार भूमि भी सम्मिलित है। 20 प्रतिशत भाग वन, कुल भूमि के लगभग 4 प्रतिशत चारागाह तथा शेष भूमि-भाग अनुपयोगी है।

अध्याय 2 : खनिज एवं ऊर्जा के स्त्रोत

(क) **1.** (ब) **2.** (ब) **3.** (अ) **4.** (स)

(ख) **1.** यूरेनियम, थोरियम **2.** खनिज पदार्थ **3.** ताँबा **4.** खनिज

(ग) **1.** भारत, रूस, फ्रांस **2.** झारखंड, मध्यप्रदेश, राजस्थान

3. आसाम, गुजरात, महाराष्ट्र **4.** झारखंड, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र

(घ) **1.** पृथ्वी पर पाई जाने वाली चट्टानों में कई पदार्थ मिले होते हैं। जो खनिज कहलाते हैं।

2. जिनका निर्मित समान दूसरे उद्योगों के आधार पर होता है। वे आधारभूत उद्योग कहलाते हैं।

3. किसी भी वस्तु के कार्य करने की क्षमता को उस वस्तु की ऊर्जा कहते हैं।

4. चूना पत्थर, कोयला, खनिज तेल अधात्विक खनिज हैं।

(ङ) **1.** ऊर्जा के गैर-परंपरागत स्त्रोत– सौर ऊर्जा, भू-तापीय, ज्वारीय ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायोगैस व शहरी कूड़ा-कचरा से बनी ऊर्जा। ये नवकरणीय स्त्रोत हैं। क्योंकि इनकी आपूर्ति सदैव बनी रहेगी। इन प्रदूषण की समस्या भी नहीं है। भारत में ऊर्जा के भंडार है। इससे भविष्य उज्जवल है और सरकार इस गैर-परंपरागत स्त्रोतों को बढ़ावा दे रही है।

2. आणविक ऊर्जा–आणविक ऊर्जा यूरेनियम एवं थोरियम से प्रापत की जाती है। यूरेनियम का उत्पादन अधक झारखंड में सिंहभूम जिले में होता है। थोरियम केरल के समुद्र तट पर पाए जाने वाले मोनाजाइट रेत से प्राप्त होत है। इसका प्रयोग अणुबम तथा कृषि एवं चिकित्सा क्षेत्रों में भी कर रहे हैं। भारत चाहता है कि इसका प्रयोग शांतिपूर्ण कार्यों के लिए भी हो। इससे भारत का भविष्य उज्जवल है।

3. मैंगनीज–मैंगनीज एक महत्वपूर्ण धातु है, जिसका उपयोग इस्पात निर्माण में किया जाता है। मैंगनीज मुख्य रूप से भारत, चीन, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, ब्राजील, यूक्रेन, मैक्सिको, पाकिस्तान और घाना में पाया जाता है। भारत में मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा, झारंखड, महाराष्ट्र, आदि राज्यों में मैंगनीज प्राप्त किया जाता है।

4. खनिज दो प्रकार के होते हैं–**1. धात्विक खजिन :** जिनमें किसी न किसी धातु का अंश पाया जाता है; जैसे–लोहा, ताँबा, सोना, चाँदी, दिन आदि। **2. अधात्विक खनिज :** जिनमें किसी भी धातु का अंश नहीं पाया जाता है; जैसे–कोयला, खनिज तेल, अभ्रक, गंधक आदि।

(च) **1. कोयला–**कोयला उन वनस्पतियों का परिवर्तित रूप है, जो लाखों वर्षों पूर्व भूमि की परतों में दब गईं है। यह अवसादी शैलों के रूप भी प्राप्त होते हैं। यह चार प्रकार के होते हैं–पीट, लिग्नाइट, बिटुमिनस तथा ऐंथ्रासाइट। **खनिज तेल–**खनिज तेल का निर्माण भी पेड़-पौधों एवं जीव-जंतुओं के अपशिष्टों से हुआ है। इसका उत्पादन, गुजरात, आसाम तथा महाराष्ट्र में है। **विद्युत जल–** विद्युत जल ऊर्जा का स्वच्छ स्त्रोत है। यह पन बिजली गिरते हुए जल से टरबाइन चलाकर बनाई जाती है। इस उत्पादन में, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, तमिलनाडु और केरल राज्य प्रमुख है।

2. धात्विक व अधात्विक खनिज में अंतर–धात्विक खनिज वे खनिज होते हैं जिनमें किसी न किसी धातु का अंश पाया जाता है; जैसे–लोहा, ताँबा, सोना, चाँदी आदि। जबकि अधात्विक खनिज में किसी भी धातु का अंश नहीं पाया जाता है; जैसे–कोयला, खनिज तेल, अभ्रक, गंधक, पोटाश, हीरा, संगमरमर, ग्रेनाइट आदि। अतः यह दोनों प्रकार के खनिज मानव के लिए उपयोगी एवं महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं।

3. खनिज–पृथ्वी पर पाई जाने वाली चट्टानों में कई पदार्थ मिले होते हैं, जो खनिज कहलाते हैं। विभिन्न प्रकार की चट्टानों में विभिन्न प्रकार के खनिज होते हैं। **खनिज की उपयोगिता–**खनिज हमारे लिए बहुत ही उपयोगी है। हमारे देश में विभिन्न प्रकार के खनिज पाए जाते हैं; जैसे– कोयला, लोहा, ताँबा, बॉक्साइट, मैंगनीज, खनिज तेल आदि। जिनके अपने अलग-अलग उद्योग हैं तथा अलग-अलग प्रयोग भी है। जैसे कुछ धातु बनाने में, कुछ मशीनीकरण , परिवहन बनाने में तथा ऊर्जा प्राप्त करने में। यह खनिज प्राचीन काल में भी थे जिनका कम पता चला और कम ही प्रयोग में लाए गए।

अध्याय 3 : कृषि

(क) **1.** (स) **2.** (स) **3.** (स) **4.** (ब) **5.** (अ) **6.** (स)

(ख) **1.** चाय **2.** रेशे **3.** आसाम **4.** उष्ण कटिबंधीय

(ग) **1.** (द) **2.** (स) **3.** (ब) **4.** (य) **5.** (अ)

(घ) **1.** कृषि शब्द बहुत व्यापक है। इसके अंतर्गत अनेक विद्वान पशुपालन, मत्योत्पादन, रेशम की खेती आदि को सम्मिलित करते हैं।

2. यह मुख्यतः व्यापारिक कृषि है। जो ऊष्ण कटिबंध के विशिष्ट प्रदेशों में की जाती है।

3. वह कृषि जिसमें वनों को साफ करके बिना उर्वरकों तथा सिंचाई के दो-तीन वर्ष तक फसले उगाई जाती हैं।

4. इस प्रकार के पशुचारण में लोग अपने पशुओं को एक से दूसरे स्थान पर स्थानांतरण करते रहते है।

(ङ) **1.** कॉफी या कहवा की भी चाय की तरह बागानी की जाती है। इसे छायादार वृक्षों के निकट उगाया जाता है। जिससे सूर्य की किरणें इस पर सीधी न पड़े। ग्वाहेमाला, होंडुरास, कोस्टाकिरा, मैक्सिको, भारत, एल्सल्वाडोर, युगांडा, केन्या आदि प्रमुख कहवा या कॉफी उत्पादक देश हैं।

2. पटसन–पटसन जिसे जूट भी कहते हैं। इसका रेशा पटसन पौधे के तने की छाल से प्राप्त किया जाता है। इसे 200 सेमी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है। पटसन पौधे का उद्गम भारतीय उपमहाद्वीप में ही हुआ। यह अच्छी जल निकासी बलुई दोमट मृदा में अच्छी पैदावार देता है। इसे गर्म एवं आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है। इसकी पश्चिम बंगाल, आसाम आदि में मुख्य रूप से पैदावार होती है।

3. चावल (धान) एशिया की प्रमुख खाद्यान्न फसल है। इस महाद्वीप में विश्व लगभग 90 प्रतिशत धान उगाया जाता है। चीन, भारत, जापान, बांग्लादेश एवं इंडोनेशिया इसके प्रमुख उत्पादक देश हैं।

4. मोटे अनाज–ज्वार, बाजरा, रांगी तथा सोरघम को मोटे अनाज कहते हैं। इनकी खेती 25°–30° उच्च तापमान तथा 50 से 75 वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्र में होती है। चीन, भारत, नाइजीरिया व नाइजर मुख्य उत्पादक देश हैं। भारत में हरियाणा, उत्तर प्रदेश, पंजाब आदि राज्यों में ज्वार मुख्यतः चारे के लिए ही उगाई जाती है।

(च) **1.** स्थानांतरित कृषि व गहन कृषि में अंतर– **स्थानांतरित कृषि :** 1. यह कृषि वृक्षों को काटकर तथा झाड़ियों को काटकर की जाती है। 2. यह कृषि बिना उर्वरकों एवं सिंचाई के हो सकती है। 3. इसमें मक्का, कसावा आदि की फसलें साधारण औजारों की सहायता से उगाई जाती हैं। **गहन कृषि :** 1. यह कृषि भूमि के छोटे से टुकड़े पर भी की जा सकती है। 2. इस कृषि में पर्याप उर्वरक व नियमित जलपूर्ति की आवश्यकता होती है। 3. इसके अंतर्गत मक्का, दालें और तिलहन भी इस पद्धति से उगाए जाते हैं।

2. संयुक्त नज्य अमेरिका में की जाने वाली कृषि अनेक प्रकार की है। जैसे–भारत में मक्का संयुक्त राज्य अमेरिका ये कॉर्न और यूरोप में इंडियन कॉर्न कहते हैं। इसमें सामान्य वर्षा, जल निकासी की सुविधा वाली समतल भूमि, जलोढ़ एवं लाल दोमट मिट्टी की आवश्यकता होती है। संयुक्त राज्य अमेरिका मक्का का सबसे बड़ा उत्पादक है।

3. कृषि– लोंगमैन के अनुसार : कृषि फसलों को उगाने के लिए बड़े पैमाने पर भूमि पर खेती करने की प्रक्रिया या विज्ञान है। **कृषि को प्रभावित करने वाले कारक :** विश्व की केवल 11 प्रतिशत भूमि कृषि योग्य है। प्रत्येक फसल के लिए मूलभूत आवश्यक तत्वों, तापमान एवं वर्षा की आवश्यकता होती है। कुछ फसले उष्ण जलवायु में कुछ शीतोष्ण जलवायु में भी अच्छी तरह से उग सकती है। पहले फसले वर्षा पर निर्भर रहती थी। लेकिन अब नदियों द्वारा उन स्थानों पर जल पहुँचाया जाता है जहाँ जल अभाव होता है। अच्छे बीजों एवं रसायनिक उर्वरको का प्रयोग प्रति हेक्टेयर में कॉफी होता है।

4. खाद्य फसलें–खाद्य फसलों में सभी अनाज, दालें तिहलन, पेय पदार्थ एवं कंद शामिल हैं; जैसे–चावल, गेहूँ, मक्का, ज्वार, बाजरा आदि मुख्य खाद्यान हैं। **व्यापारिक फसलें**–यह कृषि दो प्रकार की होती है– 1. व्यापारिक अनाज की कृषि 2. रोपण कृषि। व्यापारिक कृषि मध्य अंक्षाशीय देशों में बड़े पैमानों पर की जाती है। कनाड़ा, रूस आदि विकसित देश है। भारत में ऐसी खेती व्यापारिक उद्देश्य से की जाती है। भारत में गेहूँ, यू एस ए में गेहूँ, मक्का व कपास के क्षेत्र विख्यात हैं। **पेय फसलें**–कॉफी व चाय दोनों फसलें पेय तथा बागानी लोकप्रिय है। चाय आसाम, पश्चिम बंगाल, दार्जिलिंग आदि में अधिक उगाई जाती है। जबकि कॉफी की खेती भारत, इंडोनेशिया, अरब आदि में की जाती है।

अध्याय 4 : भारत के उद्योग

(क) **1.** (ब) **2.** (ब) **3.** (स)

(ख) **1.** लौह **2.** खनिज **3.** विश्व में **4.** शॉल **5.** प्रथम

(ग) **1.** (य) **2.** (अ) **3.** (द) **4.** (ब) **5.** (स)

(घ) **1.** (×) **2.** (×) **3.** (×) **4.** (✓) **5.** (✓)

(ङ) **1.** किसी विशेष क्षेत्र में भारी मात्रा में सामान का निर्माण या उत्पादन करना उद्योग कहलाता है।

2. जूट या पटसन से बनाए गए वस्त्रों का व्यापार जूट वस्त्र उद्योग कहलाता है।

3. पंजाब, गुजरात, उत्तर प्रदेश आदि भारत के सूती वस्त्र उद्योग क्षेत्र हैं।

4. उद्योगों को द्वितीय अर्थिक क्रिया कहा जाता है।

(च) **1.** भारत के वायुयान निर्माण उद्योग का प्रथम कारखाना सन् 1940 में बंगलुरू एयरक्राफ्ट कंपनी के नाम से स्थापित हुआ। अब इसे हिंदुस्तान एअरोनॉटिक्स लिमिटेड के नाम से जाना जाता है। कोरापुर, कोरावाँ नासिक, बैरकपुर, लखनऊ, हैदराबाद आदि वायुयान निर्माण का कार्य करते हैं।

2. सूती वस्त्र भारत का सबसे बड़ा उद्योग है। इसका पहला कारखाना मुंबई, दूसरा अहमदाबाद है। इसे उत्तर क मानचेस्ट कहते

हैं। यहाँ सूती वस्त्र की मिलें हैं। गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, पंजाब, कर्नाटक आदि उत्पादक केंद्र हैं।

3. उद्योगों का वर्णन निम्नलिखित आधारों पर किया जा सकता है। इसमें कच्चे माल के स्त्रोत, उद्योग के आकार, स्वामित्व, कच्चे माल और तैयार उत्पादों के भार के आधार पर उद्योग किया जाता है।

4. चीनी उद्योग भारत का बड़ा उद्योग है और कृषि पर निर्भर उद्योग में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। जिसकी स्थापना कच्चे माल के स्त्रोत में की जाती है। गन्ना उत्पादन क्षेत्र में चीनी के कुछ उद्योग मुख्यतः भारत में उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में स्थित हैं।

(छ) **1.** किसी विशेष क्षेत्र में सामान का निर्माण या उत्पादन या वृहद रूप से सेवा प्रदान करने के मानवीय कर्म को उद्योग कहते हैं।

उद्योगों के वर्गीकरण की तालिका के लिए पुस्तक का पेज नं. 25 और 26 देखें।

2. मनुष्य की आवश्यक आवश्यकताओं में भोजन के बाद वस्त्र का और अन्य वस्तुओं का महत्वपूर्ण स्थान है– **1. सूती उद्योग :** यह भारत का सबसे बड़ा उद्योग है। भारत की 16% औद्योगिक पूँजी और 20% औद्योगिक श्रम शक्ति सूती वस्त्र उद्योग में लगी है। **2. जूट वस्त्र उद्योग :** पटसन या जूट उद्योग में भारत विश्व में प्रमुख है। तभी जूट को सुनहरा रेशा कहा जाता है। **3. रेशमी वस्त्र उद्योग :** रेशमी उद्योग में भी चीन सबसे ऊपर है। यहाँ विश्व का 60% से भी अधिक कच्चा रेशम तथा 85% रेशमी वस्त्र तैयार किए जाते हैं। **4. ऊनी वस्त्र उद्योग :** सर्दियों में कश्मीर तथा अन्य देशों के ठंडे क्षेत्रों में ऊनी वस्त्रों की माँग होती है। कुटीर उद्योग के रूप में मुख्यतः पहाड़ी भागों में स्थापित है। **5. चीनी उद्योग :** चीनी उद्योग भारत का बड़ा उद्योग है और कृषि के कच्चे माल गन्ने पर निर्भर है। भारत में यह उद्योग उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में स्थित है।

3. किसी देश के औद्योगिक विकास की आधार शिला लोहा एवं इस्पात उद्योग हैं। इसलिए यह आधारभूत उद्योग हैं। लोहा, इस्पात उद्योग आधुनिक सभ्यता का आधार स्तंभ है। सभी प्रकार की मशीनें, यंत्र एवं उपकरण आदि लोहे इस्पात से ही बनाएँ जाते हैं। पुलों, इमारतों, कारखानों, परिवहन संचार आदि के निर्माण में इस्पात का ही प्रयोग किया जाता है। आज से लगभग 2,000 वर्ष पूर्व भी मनुष्य को लोहे का ज्ञान था। लोहे के आधार पर ही लौह सभ्यताएँ विकसित हुई थीं। 18वीं सदी में लोहे का आधुनिक विकास बड़े पैमाने पर शुरू हुआ।

अध्याय 5 : आधुनिक काल में विश्व

(क) **1.** (अ) **2.** (अ) **3.** (ब)

(ख) **1.** 1917 **2.** ख **3.** सामंतवाद **4.** भाषा एवं साहित्य **5.** प्र

(ग) **1.** (✓) **2.** (✓) **3.** (×) **4.** (✓)

(घ) **1.** पुनर्जागरण जिसे ''रिनेसा या पुर्नजन्म'' कहा जाता है।

2. वह सिद्धांत या विचार धारा जिसमें मानव हित को सर्वोपरि माना जाता है। मानवतावाद कहलाता है।

3. रूसों के अनुसार–व्यक्ति स्वतंत्र पैदा होते हैं। परंतु वे सर्वत्र बंधनों में जकड़े हुए हैं।

4. समाजवाद का जनक कार्ल मार्क्स को कहते हैं।

(ङ) **1.** यूरोप के देशों पर पुनर्जागरण के निम्नलिखित प्रभाव पड़े– 1. यूरोपीय देश व्यापारिक मार्गों की खोज तथा नए उपनिवेश स्थापित करने में जुट गए इनके फलस्वरूप शोषण और आर्थिक पूँजीवाद का जन्म हो गया। 2. नई कंपनियाँ स्थिापित हुई और उद्योग धंधों में भारी वृद्धि हुई।

2. औद्योगिक क्रांति के उत्तरदायी चार कारण हैं– 1. लौह और कोयले की खोज 2. नवीन आविष्कार 3. पर्याप्त पूँजी 4. कच्चे माल की उपलब्धता

3. औद्योगिक क्रांति के चार प्रभाव निम्नलिखित हैं– 1. नगरों की संख्या में वृद्धि 2. पूँजीवाद का प्रारंभ 3. नवीन राजनीतिक विचारों का उदय 4. साम्राज्यवाद का प्रसार

4. साम्राज्यवाद–यह वह दृष्टिकोण है जिसके अनुसार कोई महत्वकांक्षी राष्ट्र अपनी शक्ति और गौरव बढ़ाने के लिए अन्य देशों की आर्थिक, संस्कृति, राजनीतिक आदि पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लेता है। वह साम्राज्यवाद कहलाता है।

(च) **1. औद्योगिक क्रांति के कारण–** 1. लोहे और कोयले की खोज करके नई-नई मशीनों का निर्माण शुरू हो गया। 2. नवीन आविष्कार में विज्ञान और शिक्षा का बहुत महत्व है। जिससे औद्योगिक क्रांति को सफल बनने में सहायता मिली। 3. पर्याप्त पूँजी होने के कारण इंग्लैंड के उद्योगपतियों ने अधिक धन कमाने में कारखाने की व्यवसाि को प्रोत्साहित किया। 4. कच्चे माल की उपलब्धता ने धड़ाधड़ कारखाने खोलने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित कर दिया। अतः औद्योगिक क्रांति और अनेक कारण भी हैं।

2. पुनर्जागरण जिसे रिनेसां या पुर्नजन्म कहा जाता है। पुनर्जागरण के कारण : 1. धर्म युद्ध 2. इस्लाम धर्म का प्रचार 3. भौगोलिक खोज 4. नवीन आविष्कार 5. भाषा एवं साहित्य 6. नगरों की स्थापना 7. सामंतवाद का विनाश 8. मानवतावाद।

3. फ्रांस की क्रांति के कारण तथा परिणाम– **1. राजनीतिक कारण :** राजा की निरंकुशता अयोग्यता एवं अव्यवस्थित शासन से फ्रांस की जनता त्रस्त थी। **2. अर्थिककारण :** इंग्लैंड के साथ लगातार युद्ध राजाओं की विलासिता के लिए धन कोष पर बहुत बुरा असर हुआ। **3. सामाजिक कारण :** फ्रांस का समाज तीन वर्गों में विभक्त था– 1. पादरी वर्ग 2. कुलीन वर्ग 3. जनसाधारण **4. लेखकों एवं दार्शनिक विचार का प्रभाव :** दार्शनिकों ने अपने लेखकों द्वारा फ्रांस की जनता को भ्रष्ट राजतंत्रीय प्रणाली से अवगत कराकर उन्हें क्रांति के लिए प्रेरित किया।

अध्याय 6 : भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना

(क) **1.** (ब) **2.** (ब) **3.** (स) **3.** (ब)

(ख) **1.** 1858 **2.** आयरकूट; जनरल लाली **3.** सप्तवर्षीय **4.** शाह आलम **5.** लार्ड वेलेजली

(ग) **1.** (अ) **2.** (द) **3.** (ब) **4.** (स) **5.** (य)

(घ) **1.** (✓) **2.** (✗) **3.** (✗) **4.** (✗)

(ङ) **1.** अंगेजों ने भारत में अपने राज्य का विस्तार सन् 1805 से सन् 1856 तक किया।

2. सन् 1805 ई. तक अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी भारत की सर्वोच्च शक्ति बन गई।

3. 18वीं सदी का वह राजा राज मैसूर था, जो अपने मंत्रियों के हाथ की कुठपुतली था।

4. इलाहाबाद की संधि द्वारा अंग्रेजों को जमीन पर कर लगाकर वसूलने के अधिकर मिल गए थे।

5. वह शहर बाग जहाँ सैनिक रहते हो या अस्थायी रूप से कहीं परदेश में जाकर रहना छावनी कहलाता है।

6. प्लासी के युद्ध में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को छल से लार्ड क्लावइड ने पराजित किया था।

7. सन् 1774 ई. में भारत का गर्वनर जनरल वॉरेन हेस्टिग्स था।

(च) **1.** इलाहाबाद की संधि बक्सर विजय के बाद 1765 ई. में क्लाइव, मुगल बादशाह एवं शाह आलम के बीच हुई थी।

2. वैसे तो अनेक देशों ने भात में व्यापार के लिए कंपनी भेजी थी। लेकिन उनमें से कुछ इस प्रकार हैं– फ्रांस, यूरोपियन, बेल्जियम आदि।

3. अंगेजों तथा मराठों के बीच तीन युद्ध हुए। **तीसरे आंग्ल-मराठा युद्ध के परिणाम–** ये युद्ध ब्रिटिश सेनाओं और मराठा महासंघ के बीच हुए थे। इन युद्धों का यह परिणाम हुआ कि मराठा महासंघ का पूरी तरह विनाश हो गया और अंगेजों ने अपना अधिकर कर लिया।

4. लार्ड वेलेडजी ब्रिटिश साम्राज्य को भारत का अंग बनाना चाहता था। उसी उद्देश्य से उसने सहायक संधि नीति अपनाई थी। यह संधि सरल नियमों पर थी। जिसमें अनेक भारतीय शासकों को बुलाया जाता था। वह चाहते थे कि ब्रिटिश अनुमति के बिना न तो किसी से संबंध स्थापित करे और न ही युद्ध करे।

5. इस युद्ध का राजनैतिक महत्व सर्वाधिक था। इस युद्ध के परिणामस्वरूप भारत की राजश्री अंग्रेजों के हाथें में चली गई। भारत में अंग्रेजी नींव पड़ गई। इस युद्ध ने अंग्रजों को व्यापारियों के स्तर से उठाकर शासक बना दिया। इसीलिए प्लासी का युद्ध भारत के इतिहास में युगांतरकारी घटना है।

(छ) **1.** भारत के इतिहास में तीन आंग्ल-मराठा युद्ध हुए। यह युद्ध सन् 1775 से 1819 ई. तक चले। ये युद्ध ब्रिटिश सेनाओं और मराठा महासंघ के बची चला। इन युद्धों का परिणाम यह हुआ कि मराठा महासंघ का पूरा विनाश हो गया। मराठों में पहले से ही आपस में काफी भेद-भाव थे। जिस कारण वह अंग्रेजों के विरुद्ध एकजुट नहीं हो सके। इनकी पराजय का कारण भी यही था।

2. अंग्रेजों तथा मैसूर के मध्य हुए युद्धों का वर्णन– 1. मैसूर का प्रथम युद्ध सन् 1767 ई. में प्रारंभ हुआ। अंग्रेजों ने हैदरअली को पराजित कर उसके अति उपजाऊ प्रांतों में से एक पर अधिकार कर लिया। 2. द्वितीय युद्ध में मराठों ने सन् 1771 ई. में हैदर अली पर आक्रमण किया। लेकिन हैदर अली से किय वादे को अंग्रजों ने भुला दिया और न ही उसकी सहायाता की। 3. अंग्रजों और मैसूर के मध्य तीसरा टकराव कोचीन रियासत को लेकर हुआ। टीपू को चीन रियासत को अपने अधीन मानता था। 4. मैसूर के चौथे युद्ध में गर्वनर वेलेजली ब्रिटिश साम्राज्य को भारत का अंग बनाना चाहता था। इसलिए उसने सहायक संधि नीति अपनाई।

3. अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी सन् 1767 ई. में सन् 1805 ई. तक की अवधि में एक व्यापारिक संस्थामात्र न रहकर भारत की सबसे बड़ी शक्ति बन गई थी। बंगाल में क्लाइव ने दोहरी शासन व्यवसाी लागू की। लोगों का कल्यागण कार्य नवाबों के हाथ में था। लेकिन वह भी अंग्रेजों के अधीन था। कुछ धन वह कंपनी पर व्यय करके कुछ धन ब्रिटिश भेज देते थे। अंग्रजों ने अपने विस्तार के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी के शासकों से युद्ध में पराजित कर कूटनीतियों द्वारा अपना अधिकार कर लिया।

4. युद्धों के कारण– 1. अंगेजों और फ्रांसीसियों के बीच सबसे पहले कर्नाटक में संघर्ष शुरू हुआ। सन् 1746-48 के दौरान यूरोप में ऑस्ट्रियाई उत्तराधिकार को लेकर इनके बीच युद्ध हुआ। 2. फिर निजाम की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी के सवाल को लेकर विवद हुआ। 3. तीसरे युद्ध में सफल होने से अंगेजा यूरोपीय शक्ति के रूप मे उभर कर आए। **फ्रांसीसियों की पराजय के कारण–** 1. व्यापार की दयनीय स्थिति होने के कारण 2. सामुद्रिक शक्ति के कारण 3. कंपनी पर सरकारी नियंत्रण न होने के कारण 4. फ्रांसीसियों में एकता क अभाव होना। आदि अनेक कारण फ्रांसीसियों की पराय के हैं।

अध्याय 7 : ग्रामीण जीवन एवं समाज

(क) **1.** (अ) **2.** (ब) **3.** (अ) **4.** (अ)

(ख) **1.** कार्लवालिस **2.** प्लासी **3.** एक कृषि **4.** प्लासी युद्ध **5.** व्यापारिकरण

(ग) **1.** (✓) **2.** (✓) **3.** (✓) **4.** (✗) **5.** (✓) **6.** (✓)

(घ) **1.** (स) **2.** (य) **3.** (अ) **4.** (ब) **5.** (द)

(ङ) **1.** 18वीं शताब्दी में भारत में औद्योगिक विकास ब्रिटेन में फ्रांस, बल्जियम व अन्य यूरोपीय देशों के मुकाबले नाम मात्र का भी नही था।

2. वह प्राकृतिक आपदायों के कारण निश्चित तिथि पर भूमि का कर अदा नहीं कर पाते थे।

3. बुनकरों को कच्चा कपास खरीदने के लिए आवश्यक से ज्यादा मूल्य चुकाना पड़ता था।

4. अमेरिका तथा यूरोप के बाजारों में जूट की बनी वस्तुओं की भारी मांग थी।

5. अधिकांश किसान गरीब, अनपढ़ और कानून प्रक्रिया से अनभिज्ञ होते थे।

6. अंग्रेज उन पर अत्याचार तथा अत्यधिक शोषण करते थे। इसी कारण ग्रामीण व्यवस्था का धीरे-धीरे विनाश हो रहा था।

(च) **1.** बिहार के मुंडा विद्रोह का नेता बिरसा मुंडा था।

2. स्थाई बंदोबस्त की प्रणाली लार्ड कार्नवालिस ने लागू की थी।

3. टीकेंद्रजीत के नेतृत्व में अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध विद्रोह सन् 1890 ई. में बिरसा की मृत्यु के बाद किया।

4. कंपनी की भू-कर नीति स्थाई बंदोबस्त थी।

5. अंग्रेजों की भू-कर नीति के फलस्वरूप नया जमींदार वर्ग उभरा था।

(छ) **1.** भारत के कपास उत्पादन के क्षेत्रों में वृद्धि हुई तथा समय के साथ-साथ कपास का उत्पादन बहुत बड़ी मात्रा में बढ़ा। भारत में चाय तथा कॉफी के उत्पादन को भी विशेष रूप से प्रोत्साहित किया गया, क्योंकि विदेशी व्यापारिक बाजार में इनकी बहुत माँग थी।

2. अंग्रेजों द्वारा भूमि-संबंधी ऐसी नीतियाँ अपनाई गई, जिनके कारा किसान तो किसान बल्कि जमींदार भी शोचनीय हालत का शिकार हो गए। जमींदार वर्ग ने भी किसानों का विनाश करने में योगदान दिया। वह उनपर अत्याचार तथा ऋण के रूप में उनका शोषण करते थे। भूमि-कर ने किसानों की भाँति जमींदारों को भी बर्बाद कर दिया।

3. अंगेजों की भूमि-कर नीतियों ने किसानों तथा जमींदारों को बर्बाद कर दिया। जिसके कारण भारत एक निर्धन देश हो गया। अंग्रेजो ने इसके बाद भारत की जनजातीय क्षेत्रों में अपना अधिकार कर लिया और उनका वृहद पैमाने पर शोषण किया जिसने उन्हें विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया।

4. सन् 1890 ई. में बिरसा मुंडा के नेतृत्व में हुए विद्रोह को कुचल दिया। मुड़ा को बंदी बनाकर जेल में बंद कर दिया, जहाँ कुछ सामय बाद उनकी मृत्यु हो गई, ऐसा माना जाता है कि उनकी मृत्यु विष देने से हुई थी।

5. ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपनी राजनीतिक शक्ति का प्रयोग अपने व्यापारिक उद्देश्यों का प्राप्त करने के लिए किया। वह बनुकरों को सस्ते दामों पर उत्पाद करने के लिए विवश करती थीं। लेकिन बुनकरों को कच्चा कपास प्राप्त करने के लिए आवश्यकता से अधिक मूल्य चुकाना पड़ता था। जिससे बंगाल के बुनकरों को हानि होती थी और वह दरिद्रता के शिकार हो गए।

(ज) **1.** अंग्रेजों ने भारत की धन संपदा और संसाधनों को बड़े पैमाने पर ब्रिटेन भेजा। लेकिन धन के दोहन की प्रक्रिया सन् 1757 में प्लासी के युद्ध के बाद शुरू हुई। जब कंपनी के कर्मचारियों ने जबरदस्ती, साहूकारों, सेठों, जमींदारों और व्यापारियों से धन ऐठना आरंभ किया और ब्रिटेन भेजना आंरभ किया। कर्मचारियों को वेतन तथा इंग्लैंड से लौटने के बाद पेंशन भी भारत आय प्राप्त से दी जाती थी।

2. जब समस्त विश्व में कृषि का आधुनिकरण हुआ तथा क्रांति आई, तब कृषि क्षेत्र निष्क्रिय ही रहा, नील खेती कराने वाले अपनी ज्यादतियों के कारण बदनाम थे, वे किसानों को बलपूर्वक नील खेती करने के लिए विवश करते थे। इनके इन अत्यचारों का विवरण दीनबंधु मित्र ने नील दर्पण नाटक में प्रस्तुत किया है।

3. इस काल में अनेक जनजातिय विद्रोह हुए। इनमें से कुछ प्रमुख विद्रोह थे– 1. भीलो (मध्य प्रदेश व महाराष्ट्र), 2. कोल विद्रोह (बंगाल, बिहार तथा ओडिशा), 3. गोड़ो व खोड़ो (ओडिशा), 4. कोली विद्रोह (महाराष्ट्र) आदि। और अनेक विद्रोह उत्तर-पूर्वी भारत में हुए; जैसे– 1. खासी लोगों का विद्रोह 2. मुंडा विद्रोह (बिहार के छोटा नागपुर) आदि।

4. सन् 1765 और सन् 1865 के मध्य देश के विभिन्न क्षेत्रों में जनजातीय लोगों ने अंग्रेजो की कटुतापूर्ण नीति के विरुद्ध विद्रोह किए। इन विद्रोहों में किसानों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसक कड़ी में प्रथम शक्तिशाली विद्रोह बंगाल में अंग्रेजों की विजय के बाद, जबाकि विद्रोह करने वाले अधिकांश किसान थे। जिन्होंने अपने आप को सेनाओं के रूप में संगठित कर लिया था।

5. ब्रिटिश शासन में किसानों की अत्यंत शोचनीय स्थिति के अनेक कारण थे; जैसे– 1. किसानों की भूमि पर भमि-कर लगाना। 2. अधिकांश किसानों का गरीब, अनपढ़ तथा कानूनी प्रक्रिया से अनभिज्ञ होना। 3. कार्नवालिस द्वारा स्थाई बंदोबस्त नामक प्रणाली की स्थापना की गई। 4. ब्रिटिश शासन या जमींदारों के लिए कर्ज को समय पर न चुकाने के कारण भूमिहीन हो जाना आदि।

अध्याय 8 : उपनिवेशवाद तथा समाज में परिवर्तन

(क) **1.** (अ) **2.** (अ) **3.** (अ) **4.** (स)

(ख) **1.** संगीतकार **2.** प्रेस **3.** सूफी **4.** लाल **5.** नगर निगम

(ग) **1.** (✓) **2.** (×) **3.** (×) **4.** (×) **5.** (✓) **6.** (✓)

(घ) **1.** देश में जूट की लगभग मिलें थी, तथा इनमें से अधिकांश बंगाल क्षेत्र में थी।

2. आधुनिक मराठा साहित्य का जनक हरमान आपटे को कहा जाता है।

3. पहला जूट कारखाना अंग्रेज व्यक्ति जॉर्ज एलांड द्वारा 1855 ई. में बंगाल में किया गया।

4. बंगाली कवियों के नाम– 1. चंद्रशेखर, 2. विनायाक सावरकर 3. तिलक आदि।

5. प्रथम लौह-इस्पात का कारखाना 1907 ई. में जमशेदपुर में जमशेद जी टाटा द्वारा स्थापित किया गया था।

(ङ) **1.** आर्थिक प्रभाव– 1. भारत में अनेक शहरों का पतन हुआ तथा

भारत एक निर्यातक देश से आयतक देश बन गया। 2. जमींदारों के द्वारा शोषण होना। 3. कृषि में स्थिरता एवं उसकी बर्बादी। 4. भारतीय कृषि का वाणिज्यकरण होना। 5. प्राकृतिक विपदाओं ने भी किसानों को गरीब बनाया।

2. भारत में यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका की तरह नगरीकरण की क्रिया नहीं हुई। भारत में नगरीकरण के निम्नलिखित कारण रहे– 1. रेलों के विकास ने भारत के व्यापार क्षेत्र में क्रान्ति ला दी। उससे प्रशासिक आवश्यकता की पूर्ति तथा व्यापारिक केंद्र की वस्तुओं का लाने के लिए। 2. आकाल भी नगरीय जनसंख्या वृद्धि का उत्तरदायी है। आदि।

3. इंद्रप्रस्थ भारतीय महाकाव्य महाभारत के पाडवों की प्राचीन राजधानी मानी जाती है। इंद्रप्रस्थ को दिल्ली में परिवर्तित करने के अनेक लोगों क अनेक मत हैं। जैसे–मौर्यकाल में यह अशोक का एक शिलालेख लौह स्तंभ के रूप में जाना। ईसा 300 ई. पूर्व के रूप में जाना जाता है। कोई यह कहता है कि तोमर राजा ने इस राज्य का निर्माण कराया था।

4. भारत में स्थापित होने वाले वैसे तो अनेक उद्योगों के प्रकार है। जैसे– कुटीर उद्योग, सरकारी क्षेत्र उद्योग, एकल स्वामित्व वाले उद्योग, पर्यटन, फिल्म, लघु उद्योग, खनन, धातु, हार्डवेयर, सोफ्टवेयर, वाहन उद्योग रसायन उद्योग खाद्य उद्योग, वस्त्र उद्योग कम्प्यूटर उद्योग आदि हैं।

5. राष्ट्रीय आंदोलन जब उभरा तब यह भारतीयों में राष्ट्रीयता का प्रचार-प्रसार करने वाली सिद्ध हुई। किन्तु रेलवे में अंग्रेजों द्वारा अर्थिक एवं संसाधन के साम्राज्यवादी शोषण को और आसान बना दिया। वह भारतीय कर दाताओं से बड़ी राशि वसूल करके जितना निर्माण करते थे। उतना ही पूँजीवादियों व उद्योगपतियों को लाभ देते थे। रेलवे ने उद्योगों व हस्तशिल्प का सर्वनाश करने में अंग्रेजों को बहुत मदद दी।

(च) **1.** टैगोर, महाराजा जितेन्द्र मोहन तथा जितेन्द्र नाथ ने भारतीय संगीत को उपेक्षा का शिकार होने से बचाया। विभिन्न स्थानों जैसे–मुबंई, कोलकाता तथा पुणे में संगीत अकादमियाँ स्थापति की गईं। सर जॉन बिलियम ऐसे प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने भारतीय संगीत को पुनजीर्वित करने की ओर विशेष ध्यान दिया। पटना के मुहम्मद राजा ने नगमा-ए-आसंकी, जयपुर के राजा प्रताप सिंह संगीतसार तथा कृष्णानंद व्यास ने राग कल्पद्रुम की रचना व प्रकाशन किया।

2. 19वीं शताब्दी वह समय था, जब बंगाली भाषा का वास्तविक साहित्यिक पुनर्जागरण हुआ। माइकल मधुसुदन दत्त और बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय को बंगाली साहित्य के आधुनिक युग के संस्थापकों के रूप में जाना जाता था। उस समय लिखा गया ग्रंथ मं मेघनावद्ध काव्य इसी प्रकार का ग्रंथ था। बंकिमचंद्र द्वारा लिखित 'दुर्गेश नंदनी' को पहला वास्तविक बंगाली उपन्यास माना जाता है। बंकिमचंद्र ने ही राजनीतिक उपन्यास आनंदमथ द्वारा भारत के राष्ट्रीय गीत वंदेमातरम् दिया।

3. दिल्ली को भारतीय महाकाव्य महाभारत में प्राचीन इन्द्रप्रस्थ की राजधानी के रूप में जाना जाता था। राजधानी बनने से पहले दिल्ली को अनेक शासकों जैसे–अशोक, अनंगपाल, शाहजहाँ, पृथ्वीराज, तोमर राजा, खिलजी शासकों ने अपनी राजधानी के रूप में स्वीकार किया था। लेकिन इन सभी शासकों के बाद दिल्ली को सही मान्यता यूँ तो दिसंबर 1911 को हुए दिल्ली दरबार में की थी। लेकिन दिल्ली का राजधानी के रूप में सफर फरवरी 1931 में शुरू हुआ और तभी से दिल्ली की नई कहानी आरंभ हुई।

4. ब्रिटिश शासन का भारत पर बहुत ही अत्यधिक आर्थिक प्रभाव पड़ा– 1. अंग्रेजो तथा जमीदारों द्वारा वह ऋणी हो गए। 2. किसानों को बर्बाद करने में जमींदारों का भी बहुत अधिक सहयोग रहा। 3. अकाल तथा गरीबी के कारण जब किसान लिया हुआ कर्ज नहीं दे पाते तो उन्हें अपनी भूमि से भी हाथ धोना पड़ा था। जिससे किसान भूमिहीन हो जाते थे। 4. एक निर्यातक देश के बजाय केवल आयतक देश बनकर रह गया। 5. अंग्रजों की भूमि-कर प्रणाली के कारण किसानों को दो वक्त की रोटी में भी असमर्थता प्राप्त होती थी। 6. बुनकरों को कम दान में उत्पादन करने के लिए विवश करा जाता था। 7. बनकरों को कच्चा माल प्राप्त करने के लिए आवश्यकता से अधिक मूल्य चुकाना पड़ता था। जिससे उनकी अर्थिक स्थिति को हानि होती थी।

अध्याय 9 : भारतीय संविधान, धर्मनिरपेक्षता और मूलभूत अधिकार व कर्तव्य

(क) **1.** (ब) **2.** (अ) **3.** (स) **4.** (अ)

(ख) **1.** सामान **2.** न्यायालय **3.** धर्मनिरपेक्ष **4.** संपत्ति **5.** हिंसा

(ग) **1.** (✓) **2.** (✓) **3.** (✗) **4.** (✓) **5.** (✗)

(घ) **1.** डॉ. भीमराव अंबेडकर को भारत के संविधान के पिता के रूप में जाना जाता है।

2. हमें भारत की प्रभुसत्ता, एकता और अनेकता को बनाए रखना चाहिए तथा इनकी रक्षा करनी चाहिए।

3. भारत के नागरिकों को स्वतंत्रतापूर्वक अपने विचार, धर्म का अनुसरण तथा व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता प्रदान की गई है।

4. संविधान में 6 मौलिक अधिकारों का उल्लेख किया गया है।

5. सरकार के तीन अंगों के नाम– 1. विधायिका 2. कार्यपालिका 3. न्यायपालिका।

(ङ) **1.** भारत में सार्वभौमिक वयस्क मताधिकर प्रचलित है। अतएव, प्रत्येक वयस्क नागरिक मतदान कर सकता है, चाहे उसकी प्रजाति, धर्म, भाषा, लिंग, जाति, संपत्ति अथवा शिक्षा का स्तर कुछ भी हो तथा भारत का प्रत्येक नागरिक चुनाव लड़ सकता है।

2. भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है। इसके चार बिंदु मुख्य हैं– 1. भारत, पाकिस्तान, ईरान, सऊदी अरब आदि देशों जैसा धर्म-शासित राज्य नहीं है। 2. यह धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं करता है। 3. राज्य को कोई भी सरकारी धर्म नहीं है। 4. सभी

भारतीयों को अपनी पसंद का धर्म अपनाने तथा प्रचार करने की स्वतंत्रता है, किंतु यह भी अवश्य है, कि किसी व्यक्ति के समूह देशों में सांप्रदायिकता का प्रचार करने या विविध संप्रदायों के बीच घृणा वैमनस्य या दुभार्वना फैलाने की अनुमति नहीं है।

3. कानून के समक्ष सभी व्यक्ति समान हैं। इसका अर्थ है कि देश के कानूनों द्वारा सभी व्यक्तियों की समान रूप से सुरक्षा की जाएगी तथा नागरिकों के साथ उनके धर्म, जाति या लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जा सकता है।

4. संघवाद एक प्रणाली है, यह देश में सरकार के एक स्तर से अधिक स्तरों के अस्तित्व का उल्लेख करता है। भारत में , राज्य स्तर एवं केंद्र स्तर की सरकार है। पंचायती राज सरकार का तीसरा स्तर है।

(च) **1. संविधान–**किसी देश के नागरिकों की सुरक्षा के लिए स्थापित किए गए नियमों, कानूनों, आधिकारों, कर्त्तव्य का गठन होता है। 42वें संशोधन में संविधान की प्रस्तावना में कुछ परिवर्तन किए गए–भारत के लोग भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्वसंपन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक न्याय, विचार, धर्म, विश्वास और उपासना की स्वतंत्रता के अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए, गरिमा, एकता और अखंडता, सुनिश्चित तथ बंधुता आदि के विचारों का उल्लेख है।

2. नागरिकों के मौलिक कर्त्तव्य निम्नलिखित हैं– 1. हमें संविधान का अनुसरण करना चाहिए तथा इसके आदर्शों तथा संस्थानों, राष्ट्रीय गान का आदर करना चाहिए। 2. हमें भारत की प्रभुसत्ता, एकता और अनेकता को बनाए रखना चाहिए तथा इनकी रक्षा करनी चाहिए। 3. हमें देश की रक्षा करनी चाहिए तथा आवश्यकता पड़ने पर राष्ट्र सेवा के लिए प्रस्तुत होना चाहिए। 4. अपनी संयोजित संस्कृति की धनी धरोहर का सम्मान करना चाहिए तथा उसका संरक्षण करना चाहिए। अतः मौलिक कर्त्तव्य अभी और भी हैं, लेकिन इसका संक्षेप परिचय दिया गया है।

3. मौलिक आधिार– 1. समानता का अधिकार : कानून के समक्ष सभी व्यक्ति समान हैं। इसका अर्थ है कि देश के कानून द्वारा सभी व्यक्तियों की समान रूप से सुरक्षा की जाएगी। 2. स्वतंत्रता का अधिकर : भारत के नागरिकों को स्वतंत्रता पूर्वक अपना विचार, धर्म तथा व्यवसाय आदि की स्वतंत्रता प्रदान की जाती है। 3. शोषण के विरुद्ध अधिकर : संविधान मानव तस्करी, बाल श्रम तथा 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों से कार्य कराने पर प्रतिबंध लगाता है। 4. धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार : सभी अल्पसंख्यकों, धार्मिक अथवा भाषाई, अपनी स्वयं की संस्कृति को संरक्षित तथा विकसित करने के क्रम में अपने शैक्षिक संस्थान स्थापित कर सकते हैं। 5. सांस्कृतिक एवं शिक्षा का अधिकार : यहाँ विभिन्न प्रकार की भाषाएँ, संस्कृति तथा पंरपराओं को नागरिक संरक्षित करना चाहता है और शिक्षण संस्थाओं को स्थापित तथा चलाने का अधिकार होता है। 6. संवैधानिक उपचारों के लिए अधिकार : यदि राज्यों के द्वारा किसी मौलिक अधिकर का हनन हुआ है। तो वे अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए अदालत में जा सकता है।

4. भारत का संविधान देश को एक चयनित प्रधान प्रदान करता है, जिसे राष्ट्रपति कहते हैं। राष्ट्रपति एक निश्चित अवधि तक कार्य करता है तथा उसका कार्यालय वंशनुगत नहीं होता है। इस प्रकार भारत एक गणतंत्र देश है।

अध्याय 10 : भारत की विदेश नीति एवं पड़ोसी देशों से संबंध

(क) **1.** (अ) **2.** (ब) **3.** (स)

(ख) **1.** 1961; बेल्ग्रेड **2.** मैकमोहन रेखा **3.** चांगलांग **4.** सिंहली; तमिल

(ग) **1.** (×) **2.** (✓) **3.** (✓) **4.** (✓) **5.** (×)

(घ) **1.** भारत और बांग्लादेश के बीच अपासी सहयोग, मित्रता और शांति बनाए रखने वाले संबंध हैं।

2. भारत और चीन के बीच युद्ध सन् 1962 में हुआ था।

3. मुंबई पर 2008 में आतंकवादी हमला हुआ था।

(ङ) **1.** भारत, नेपाल और भूटान की आर्थिक विकास में बहुत सहायता कर रहा है।

2. कश्मीर के विवाद को लेकर भारत और पकिस्तान के बीच पहले सन् 1965 में तथा फिर 1971 में युद्ध हुआ। सन् 1965 के युद्धों में दोनों देशों के जान-माल की हानि हुई, संयुक्त राष्ट्र के प्रयास से युद्ध बंद हुआ। भारत और पाकिस्तान के बीच 11 जनवरी 1966 को ताशकंद समझौता हुआ। जिस पर भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री तथा पाकिस्तान के प्रधानमंत्री अयूब खाँ के हस्ताक्षर हुए। दोनों देशों ने शांतिपूर्ण तरीके से विवादों को खत्म करने की सहमति दी।

3. गुट निरपेक्षता आंदोलन के अग्रणी नेता– भारत के प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू, मिस्र के पूर्व राष्ट्रपति गमाल अब्दुल नासर एवं मुगोस्लाविया राष्ट्रपति जोसिप ब्रौज टीटा शामिल थे।

(च) **1.** स्वतंत्रता के बाद पं. जवाहरलाल नेहरू 17 वर्षों तक भारत के प्रधानमंत्री एवं विदेश मंत्री रहे। इसलिए उन्हें भारत की विदेशी नीति का निर्माता कहा जाता है। विदेश नीति के 5 सिद्धांत है– 1. शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की भावना। 2. एक दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना। 3. एक-दूसरे के भू-भाग पर आक्रमण न करना। 4. समानता एवं पारस्परिक लाभ। 5. क्षेत्रीय अखंडता एवं प्रभुत्ता का सम्मान।

2. गुट निरपेक्षता–गुट निरपेक्षता शुद्ध को अलग-अलग वैज्ञानिकों ने अलग-अलग परिभाषित किया है–लेकिन सरल अर्थ है कि– विभिन्न शक्ति गुटों से दूर रहते हुए अपनी स्वतंत्र निर्णय नीति और राष्ट्रीय हित के अनुसार न्याय का साथ देना। यह आंदोलन पं. जवाहरलाल नेहरू, गमाल अब्दुल नासर एवं जोसिप ब्रौज टीटो द्वारा चलाया गया था।

3. भारत और पाकिस्तान में संबंध हमेशा से ही ऐतिहासिक और

राजनैतिक मुद्दों कि वजह से तनाव में रहे हैं। इन देशों में का मूल वजह भारत के विभाजन को देखा जाता है। कश्मीर विवदा इन दोनों देशों को आज तक उलझाए हुए और इनके बीच कई बार सैनिक कार्यवाई कर चुके हैं। इन देशों में तनाव मौजूद है और दोनों देश एक-दूसरे के इतिहास, सभ्यता, भूगोल और अर्थव्यवस्था से जुड़े हुए हैं।

अध्याय 11 : संयुक्त राष्ट्र संघ

(क) **1.** (ब) **2.** (स) **3.** (ब) **4.** (अ) **5.** (ब)

(ख) **1.** मित्रराष्ट्र एवं धुरीराष्ट्र **2.** 15 **3.** 192 **4.** 54 **5.** 10

(ग) **1.** (×) **2.** (×) **3.** (✓) **4.** (×) **5.** (×)

(घ) **1.** संयुक्त राष्ट्र संघ के 6 प्रमुख अंग हैं।

2. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना 24 अक्टूबर सन् 1945 ई. में हुई थी।

3. दो उद्देश्य– 1. अंतरर्राष्ट्रीय शांति या सुरक्षा बनाए रखना। 2. सभी सदस्य देशों की प्रभुता समानता पर आधारित हैं।

(ङ) **1.** संयुक्त राष्ट्र संघ के 6 प्रमुख अंग हैं– महासभा, सुरक्षा परिषद्, आर्थिक एवं सामाजिक परिषद्, अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय, सचिवालय एवं न्याय परिषद् और संयुक्त राष्ट्र संघ की संस्थाएँ।

2. महासभा में संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य राष्ट्र भाग लेते हैं। प्रत्येक सदस्य राष्ट्र महासभा में अपने पाँच प्रतिनिधि भेज सकता है। सभी प्रतिनिधि संयुक्त राष्ट्र संघ की कार्यवाही में भाग ले सकते हैं। किन्तु जब मतदान की बात होती है, तो प्रत्येक राष्ट्र केवल एक मत का प्रयोग कर सकता है। यह महासभा सितंबर से दिसंबर के मध्य तक चलता है।

3. सुरक्षा परिषद् के स्थाई सदस्यों को वीटो पावर मिली हुई है। इसका तात्पर्य है, कि यदि एक स्थाई सदस्य किसी प्रस्ताव पर सहमत नहीं है तो यह प्रस्ताव पास नहीं हो सकता। अस्थाई सदस्य प्रति दो वर्ष बाद बदल जाते हैं।

4. सचिवालय और अंतरर्राष्ट्रीय न्यायालय में अंतर–सचिवालय संयुक्त राष्ट्र प्रशससिक अंग है। यही पर संयुक्त राष्ट्र का दैनिक कार्य संपन्न होता है। इसका प्रमुख अधिकारी महासचिव होता है, जिसे सुरक्षा परिषद् की सिफारिश पर महासभा 5 वर्ष के लिए चुनती है। जबकि अंतरर्राष्ट्रीय न्यायालय राष्ट्र संघ के सदस्य देशों के आपसी मतभेदों को सुलझाने हेतु, इसकी व्यवस्था की गई है। न्यायालय में 15 न्यायाधीश और जिनका कार्यकाल 9 वर्ष होता है।

(च) **1.** संयुक्त राष्ट्र संघ की इस संस्था की संरचना में आम सभा, सुरक्षा परिषद्, आर्थिक व सामाजिक परिषद्, सचिवालय और अंतरर्राष्ट्रीय न्यायालय सम्मिलित हैं।

विशेष संस्थाओं के नाम : 1. संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन 2. अंतरर्राष्ट्रीय बाल आपातकालीन कोष 3. विश्व स्वास्थ्य संगठन 4. खाद्य एवं कृषि संगठन 5. अंतरर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष 6. अंतरर्राष्ट्रीय श्रम संगठन 7. पुनर्निर्माण एवं निर्माण का अंतरर्राष्ट्रीय बैंक

2. भारत, संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन, यूनेस्को, विश्व स्वास्थ्य संगठन, यू एन डी पी, यूनीसेफ, विश्व बैंक जैसे बहुत से निकायों से अधिक मूल्यवान व उपयोगी सहायता प्राप्त की। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने चेचक, हैजा, मलेरिया, क्षयरोग जैसी बीमारियों का उन्मूलन, खाद्य व कृषि संगठन, कृषि विस्तार, राजस्थान में भेड़ व मत्स्य संस्थान तथा यूनेस्को शिक्षा, विज्ञान जनसंख्या-नियंत्रण, विकास कार्य हेतु आदि की सहायता प्रदान कर रहा है।

3. अनुच्छेद में निम्न उद्देश्य दिए गए हैं– जिनमें कुछ इस प्रकार से हैं– 1. अंतर्राष्ट्रीय शांति तथा सुरक्षा बनाए रखना। 2. राष्ट्रों के मध्य उनके सम्मान, अधिकार और आत्मनिर्णय के आधार पर मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखना। 3. सभी सदस्य देशों की प्रभुता समानता पर आधारित। 4. सभी सदस्य राष्ट्र घोषण-पत्र में वर्णित अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करेंगे। 5. संयुक्त राष्ट्र किसी सदस्य राष्ट्र के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा आदि।

अध्याय 12 : मानव जन संसाधन

(क) **1.** (स) **2.** (अ) **3.** (अ)

(ख) **1.** मानव **2.** जनगणना **3.** वृद्धि **4.** सभी

(ग) **1.** (×) **2.** (×) **3.** (✓) **4.** (✓) **5.** (✓)

(घ) **1.** मानव संसाधन एक ऐसा स्त्रोता है जिसका उपयोग मनुष्य अपने लाभ के लिए करता है।

2. प्रति एक हजार पुरुषों में स्त्रियों की जनसंख्या के अनुपात को लिंग अनुपात कहते हैं।

3. भारत का सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य उत्तर प्रदेश है।

4. भारत का सबसे कम जनसंख्या घनत्व वाला राज्य अरुणाचल प्रदेश है।

(ङ) **1.** जनसंख्या घनत्व प्रति इकाई क्षेत्रफल पर निवास करने वाले लोगों की संख्या का माप होता है। यह जीवों पर प्राय प्रयोग होता है। खासकर मानवों के लिए, भूगोल के क्षेत्र में।

2. यूरोप देशों तथा उत्तरी अमेरिका नगरों में रहने वाली जनसंख्या का अनुपात 70% से अधिक है, एशिया में 37% और अफ्रीका में 30% नगरीय जनसंख्या है। यूरोप व उत्तरी अमेरिका के औद्योगिककरण अधिक होने के कारण नगरीय जनसंख्या अधिक है। सिंगापुर व कुवैत में 100%, इजराइल में 91%, अरब अमीरात में 84%, जार्डन में 81%, जापान में 78% ऊँचा नगरीकरण है। जबकि चीन 36%, भारत 28%, भूटान 15%, नेपाल 11% निम्न तथा अफ्रीका रवांडा में 5% और और बुरूडी में 8% अल्पम नगरीकरण है।

3. मानव संसाधन प्रत्येक देश व व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण होते हैं; क्योंकि वे अन्य लोगों की अपनी क्षमता में वृद्धि करने तथा उनका अधिकाधिक उपयोग करने में सहायता करते हैं। इस प्रकार किसी

देश के स्वरूप, शिक्षित जनसंख्या आदि के लिए। उपयोगी संसाधन है। जिसका सभी के जीवन में विशेष महत्व है।

4. जनसंख्या वृद्धि के मुख्य तीन कारक जो अत्यधिक प्रभाव डालते हैं– 1. निर्धननता 2. निरक्षता 3. बेरोजगारी।

(च) **1.** भारत में जनसंख्या का वितरण बहुत असामन है। भारत के कुछ क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व बहुत अधिक तथा कुछ क्षेत्रों में बहुत कम होत है। जनसंख्या के घनत्व का अनेक कारक प्रभावित करते हैं; जैसे–धरातल की बनावट, अनुकूल जलवायु, उपजाऊ मिट्टी, खनिज व उद्योगों का विकास आदि। औसत घनत्व की दृष्टि से अधिक– केरल, उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब, महाराष्ट्र आदि है। तथा कम घनत्व वाले– अरुणांचल प्रदेश, जम्म व कश्मीर, सिक्किम, उत्तर-पूर्व है। इन्हें सामान्य घनत्व वाले राज्य भी कहा जा सकता है।

2. मानव संसाधन–मानव संसाधन एक ऐसा स्त्रोत है, जिसका उपयोग मनुष्य अपने लाभ के लिए करता है। **मानव संसाधनों का महत्व :** मानव संसाधन प्रत्येक देश व व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि वे अन्य लोगों की अपनी क्षमता में वृद्धि करने तथा उनका अधिकाधिक उपयोग करने में सहायता करते हैं; जैसे– स्वस्थ्य, शिक्षित जनसंख्या आदि।

3. किसी देश की जनसंख्या में कमी और वृद्धि मुख्यतः तीन जनसांख्यिक कारकों की वजह से होती है– 1. जन्मदर 2. मृत्युदर 3. प्रवास। जनसंख्या वृद्धि को निम्नलिखित प्रकार से रोका जा सकता है– 1. शिक्षा के प्रसार द्वारा 2. परिवार नियोजन 3. विवाह की आयु में वृद्धि करना 4. संतानोत्पत्ति की सीमा निर्धारण 5. जीवन स्तर ऊँचा उठाने का प्रयास आदि।

अध्याय 13 : प्राकृतिक आपदाएँ

(क) **1.** (ब) **2.** (अ) **3.** (ब) **4.** (इंडोनेशिया)

(ख) **1.** भी एक **2.** टोरनेडो **3.** तीन **4.** सुनामी **5.** F-1

(ग) **1.** वायुमंडलीय दाब के चारों ओर गर्म हवाओं की तेज आंधी को चक्रवात कहते हैं।

2. ज्वालामुखी तीन प्रकार के होते हैं– 1. सक्रिय ज्वामुखी 2. सुषुप्त ज्वालामुखी 3. शांत ज्वालामुखी

3. जब संकट बड़ी मात्रा में जीवन और संपत्ति के विनाश का कारण बनते हैं। उन्हें आपदा कहते हैं।

4. मॉसटर तूफान की हवा की अधिकतम गति 318 किमी/घंटा है।

(घ) **1.** यदि किसी क्षेत्र में एक वर्ष या उससे भी अधिक समय तक वर्षा नहीं होती तो उसे सूखा कहते हैं।

2. भूकंपीय सागरीय लहरें जापानियों द्वारा सुनामी कही जाती हैं। ये भूकंप से उत्पन्न होने वाली एक अन्य प्राकृतिक आपदा है। सुनामी बहुत ऊँची लहरें होती हैं। जो भूकंप के दौरान सागरीय फर्श में कंपन होने के कारण उत्पन्न होती हैं।

3. पिघली हुई चट्टानों या लावे के तेज गति से बाहर निकलने को ज्वालामुखी विस्फोट कहते हैं। यह लावा बहुत गर्म होता है और यह बाहर निकलकर आस-पास के क्षेत्रों में फैलने लगता है। इसके रास्ते में आने वाले पेड़-पौधों, पशुओं, मनुष्य आदि को नष्ट करे देता है।

4. प्राकृतिक आपदाएँ–प्राकृतिक आपदाएँ उन घटनाओं को कहा जाता है जो मानव के लिए विनाशकारी होती हैं तथा इनसे समस्त सामाजिक, आर्थिक जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। जैसे–अकाल, बाढ़, भूकंप आदि।

(ङ) **1. तूफानी लहरें :** मौसम प्रणाली के दबाव से उत्पन्न समुद्री लहरें तूफानी लहरें कहलाती हैं। **सुनामी :** यह भूकंप के दौरान सागरीय फर्श में कंपन होने के कारण उत्पन्न लहरें होती हैं। **सौर प्रचंडता :** सौर प्रचंडता सूर्य के परिवेश में भयंकर विस्फोट है। सौर प्रचंडता सौर के पुटली या कोनों के वृत्तों में घटित होती है। यह एक प्रकर की ऊर्जा होती है।

2. भूकंप : यह धरातल पर अचानक होने वाला कंपन या प्रकंपन है। जहाँ भू-पर्पटी के नीचे भूकंप की उत्पत्ति हुई है। **भूकंप के दौरान सावधानियाँ :** 1. हमें सदैव खुले मैदानों या पार्क की तरफ भागना चाहिए। 2. लिफ्ट का प्रयोग नहीं करना चाहिए। 3. मकान के अंदर हमें अंदरूनी दीवार के साथ लगकर खड़ा होना चाहिए। 4. हमें घर, स्कूल आदि के भवन बनाने में उचित प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना चाहिए।

3. आपदा–संकट भी एक आकस्मिक घटना है। जब संकट बड़ी मात्रा में जीवन और संपत्ति के विनाश का कारण बनते हैं, तो उन्हें आपदा कहते हैं। आपदा दो प्रकार की होती हैं– **1. प्राकृतिक आपदा :** वे आपदाएँ जो प्रकृति में स्वतः या कुदरती रूप में होती है; जैसे–बाड़, सूखा, तूफान आदि। **2. मानव आपदा या कृत्रिम आपदा :** वे आपदाएँ जो मानव की लापरवाहियों के द्वारा होती हैं; जैसे– सड़क दुर्घटना, बम विस्फोट आदि।

अध्याय 14 : प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्य-जीवन

(क) **1.** (स) **2.** (अ) **3.** (अ)

(ख) **1.** म **2.** वन **3.** कच्चा माल; व्यापार का

(ग) **1.** (✓) **2.** (✓) **3.** (✓) **4.** (✓)

(घ) **1.** जो वनस्पति मनुष्य की सहायता के बिना स्वतः ही पैदा होती है। उसे प्राकृतिक वनस्पति कहते हैं।

2. वनों से हमें अनेक लाभ हैं; जैसे–वनों से हमें कच्चा माल, ऑक्सीजन, फर्नीचर के लिए लकड़ी आदि प्राप्त होते हैं।

3. सुंदर वन भारत तथा बांग्लादेश में स्थित विश्व का सबसे बड़ा नदी डेल्टा है।

4. हमारे देश में भूमि का कुल 19 प्रतिशत भाग वनों के अंतर्गत है।

(ङ) **1. पर्वतीय वनस्पति–**हिमालय के निचले भागों में उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन पाए जाते हैं। जो 1500 मी. से 13000 मी. तक की ऊँचाई वाले क्षेत्रों में कोणधारी वृक्ष पाए जाते हैं; जैसे–देवदार, स्प्रूस

व फर आदि।

2. मानसूनी वन अधिक सघन नहीं होते हैं। ये म्यांमार, थाइलैंड, वियतनाम, उत्तर-पूर्वी, ऑस्ट्रेलिया तथा भारत के मध्य तथा उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में पाए जाते हैं।

3. वनों से हमें अनेक लाभ होते हैं; जैसे– 1. वनों में लगे वृक्षों से हमें जीवनदायिनी ऑक्सीजन प्राप्त होती है तथा हानिकारक कार्बन-डाई ऑक्साइड वृक्ष स्वंय ग्रहण करते हैं। 2. वनों से हमें फर्नीचर के लिए लकड़ी मिलती है। 3. वनों से हमें कच्चा माल भी प्राप्त होता है। जैसे–गोंद, लाख, कत्था आदि।

4. मानसून वन–मानसूनी वन अधिक सघन नहीं होते हैं। ये म्यांमार, थाइलैंड, वियतनाम, उत्तर-पूर्वी, आस्ट्रेलिया तथा भारत के मध्य तथा उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में पाए जाते है। इस प्रकार के वनों से कीमती लकड़ियाँ जैसे–रोजवुड, चंदन, शीशम, साल आदि प्राप्त होती हैं।

(च) **1. वन्य जीव**–वन तथा वन्य जीव दोनों परिस्थिति संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सभी प्रजातियाँ एक-दूसरे पर निर्भर तथा भोजन का निर्माण करती है। वनों में अनेक प्रकार के जीव-जंतु, पशु-पक्षी आदि पाए जाते हैं; जैसे–सर्प, बिच्छु, छिपकलियाँ, अन्य प्रकार के कीड़े-मकोड़े, मोर, घड़ियाल और मगरमच्छ विभिन्न प्रकार की मछलियाँ जो हमारे जल स्त्रोतों में लगभग 2500 प्रकार की हैं। यह सभी हमारे लिए आवश्यक है। इसलिए इनका संरक्षण करना चाहिए।

2. उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों जैसे–पश्चिमी घाट की पहाड़ियों, अंडमान निकोबार द्वीप समूह, ओडिशा, पश्चिम बंगाल आदि कुछ भागों में पाए जाते हैं। ये वन घने होते हैं। इनमें छोटे वृक्ष, झाड़ियाँ, बेले आदि भी होते हैं। इन वृक्षों की लकड़ी कठोर होती है। जैसे–महोगनी, रोजवुड, सिनकोना, जंगली रबड़, बाँस आदि।

3. वन्य-जीवों के संरक्षण के लिए सरकार ने कुछ कदम उठाए हैं– 1. वन्य जीवों के शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। 2. समय-समय पर कुछ विशिष्ट पशुओं की गणना की जाती है। 3. जीवों के संरक्षण के लिए अनेक वन्य-जीव आरक्षण क्षेत्र, राष्ट्रीय उद्यान, अभ्यारण्य आदि बनाए गए हैं।

4. वन्य-जीवन–वन तथा वन्य-जीव जंतु दोनों पारिस्थितिकी संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सभी प्रजातियाँ एक-दूसरे पर निर्भर तथा भोजन चक्र का निर्माण करती है। अनेक प्रकार के सर्प, बिच्छू, छिपकलियाँ तथा कीड़े-मकोड़े, मोर, घड़ियाल, मगरमच्छ आदि पशु-पक्षी भी पाए जाते हैं। ऐसा अनुमान भी लगाया जाता है कि हमारे जल स्त्रोतों में लगभग 2500 प्रकार की मछलियाँ पाई जाती हैं। यह वन्य-जीव हमारे पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में हमारी मदद करते हैं। अतः हमें इनका संरक्षण कना चाहिए।

अध्याय 15 : पर्यावरण का ह्रास

(क) **1.** (अ) **2.** (अ) **3.** (ब)

(ख) **1.** उपाय **2.** हानिकारक तत्वों **3.** वायु प्रदूषण

(ग) **1.** (✓) **2.** (✗) **3.** (✓) **4.** (✓)

(घ) **1.** हमारे चारों ओर का वातावरण पर्यावरण कहलाता है।

2. महासागर, प्राकृतिक व मानव निर्मित प्रदूषकों का अंतिम स्थान है। जो नदियों, समुद्र तटीय नगर, शहर व गाँव के गंदे पानी व कूड़ा-करकट समुद्र में डाला जाता है।

3. मृदा अपक्षय के कारण भूमि की अधिक चराई, अधिक जुताई, खनन आदि है।

4. जब पर्यावरण में हानिकारक तत्वों की मात्रा बढ़ जाती है, तो तत्वों से प्रदूषण होता है।

(ङ) **1.** मृदा प्रदूषण के कारण : 1. अंधाधुंध मानवीय कार्यकलाप, जैसे-निर्वनीकरण 2. भूमि की अधिक चराई 3. अधिक जुताई 4. खनन कार्य 5. भवनों एवं परिवहन मार्गों का निर्माण आदि।

2. भूमि प्रदूषण भूमि में होने वाले प्रदूषण को कहते हैं। यह मुख्यतः कृषि में अत्यधिक कीटनाशक का उपयोग या ऐसे पदार्थ जिनको भूमि नही होना चाहिए। उनके मिलने पर मृदा की उपज क्षमता में भी बहुत प्रभाव पड़ता है।

3. यदि वायु में प्रदूषण-कणों की मात्रा अधिक हो जाए तो उसको वायु प्रदूषण कहते हैं। वायु प्रदूषण भौतिक व मानवीय कारणों से होता है। जिससे सभी प्रकार के जीव-जंतु आदि पर दुष्प्रभाव पड़ता है।

4. जल प्रदूषण घरों और उद्योग गृहों से अप्रवाहित जल से होता है। ये नदियों को प्रदूषित करने वाले पदार्थ होते हैं; जैसे–डिटर्जेंट, कारखानों के अपशिष्ट, कीटनाशी औषधि, खरपतवारनाशी आदि।

(च) **1.** हमारे चारों ओर एक वातावरण होता है, जिसे पर्यावरण कहते हैं। पर्यावरण को दो भागों में विभाजित किया गया है– 1. प्राकृतिक पर्यावरण 2. मानव निर्मित पर्यावरण

प्राकृतिक पर्यावरण : प्राकृतिक पर्यावरण को भौतिक पर्यावरण भी कहते हैं। यह जैविक व अजैविक तत्वों का दृश्य और अदृश्य समूह है। उदाहरण–धरातल, जलवायु, तापमान, वायु, जल खनिज आदि। **मानव निर्मित पर्यावरण :** पर्यावरण में मनुष्य स्वविकसित तकनीकी सहायता से संशोधन तथा परिवर्तन अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप करता है। उदाहरण–सड़के, नहरे, रेलमार्ग भूमि व जंगलों की सफाई आदि।

2. पर्यावरण ह्रास पर नियंत्रण करने के उपाय : 1. कृषि एवं औद्योगिक कूड़े-कचरे का पुनः प्रयोग करना। इस कूड़े-कचरे से ऊर्जा उत्पन्न की जा सकती है। 2. अनवकरणीय संसाधनों के स्थान पर जितना अधिक संभव हो, नवीकरणी संसाधन का प्रयोग करना। 3. वाहनों में प्रयोग होने वाले पेट्रोल से हानिकारक गैस निकालकर उसका प्रयोग करना। 4. ऊर्जा के परंपरागत जैसे–कोयला, खनिज आदि के स्थान पर गैर-परंपरागत स्त्रोत;

जैसे–सौर ऊर्जा, पवन व जल ऊर्जा आदि का प्रयोग करना।

3. प्रकृतिक के कुछ संसाधन ऐसे हैं जिनका नवीनकरण नहीं हो सकता है और वह सीमित मात्रा में ही है। लेकिन कुछ नवीकरण संसाधन है। जैसे–जल, मृदा, प्राकृतिक वनस्पति जिनका हमें सावधानी से प्रयोग करना चाहिए। उदाहरण के लिए– जलाने के लिए वनो से लकउी काटना, गलत तरीके से खेती अपनाना, जल का अंधाधुंध प्रयोग करना आदि। जल की माँग दिन-प्रतिदनि बढ़ती जा रही है, परंतु इसकी मात्रा सीमित है।

अध्याय 16 : सन् 1857 ई. का विद्रोह

(क) **1.** (अ) **2.** (स) **3.** (अ) **4.** (अ) **5.** (स)

(ख) **1.** कारतूसों **2.** 1857 **3.** नेपाल **4.** इलाहाबाद **3.** माउंट बेटन

(ग) **1.** (✓) **2.** (×) **3.** (✓) **4.** (×) **5.** (✓)

(घ) **1.** (स) **2.** (द) **3.** (य) **4.** (अ) **5.** (ब)

(ङ) **1.** सन् 1857 की क्रांति के लिए 31 मई की तिथि निश्चित की गई थी।

2. सन् 1857 की महान क्रांति के प्रमुख केंद्र मेरठ, कानपुर, दिल्ली, लखनऊ व झाँसी थे।

3. क्रांति की वास्तविक शुरूआत 10 मई 1857 ई. में मेरठ में हुई।

4. इस क्रांति में सिक्खों ने

5. आज से 142 साल पहले 1 जनवरी 1877 को इनकी घोषण हो गई थी।

(च) **1.** 29 मार्च 1857 को बैरकपुर में सैनिकों ने चर्बी वाले कारतूस का इस्तेमाल करनेसे मना कर दिया। क्योंकि उसमें गाय या सूअर की चर्बी का इस्तेमाल था। जिसके कारण हिन्दू-मुसलमान के धर्मों को अघात पहुँचा।

2. सन् 1857 ई. के विद्रोह ने ब्रिटिश साम्राज्य की नीवं हिलाकर रख दी तथा इसे पुनसंगभ्न की कगार पर लाकर खड़ा कर दिया। सन् 1859 ई. के अंत तक भारत पर ब्रिटिश शासन को पूरी तरह से पुनस्थापित किया गया। अतः यह विद्रोह व्यर्थ नहीं गया।

3. सन् 1857 ई. क्रांति की असफलता के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं–1. विद्रोहियों के पास सत्ता छीनने के बाद कोई सुनिश्चित कार्यक्रम नहीं था। उनके पास कोई सामान्य कार्य-योजना नहीं थी। 2. विद्रोह के नेता बहादुर तथा देशभक्त तो थे लेकिन योग्य सेनापति नहीं थे। 3. विद्रोहियों के पास आधुनिक युद्ध कला के अस्त्र-शस्त्र नहीं थे। 4. विद्रोहियों के पास धन तथा अन्य संसाधनों की भी कमी थी।

4. सन् 1857 ई. क्रांति के परिणाम– 1. इस विद्रोह में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिल गई थी और उन्हें पनुसंगठन के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया गया। 2. सन् 1859 के अंत तक भारत पर ब्रिटिश शासन को पूरी तरह से पुनस्थापित किया गया। 3. यह विद्रोह भारतीय इतिहास में एक अविस्मरणीय स्तंभ बन गया। 4. भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के इतिहास में एक पुराने युग की सामप्ति तथा नए युग का प्रारंभ का महान कदम था।

(छ) **1.** सन् 1857 ई. की क्रांति से पूर्व कुछ विद्रोह 51 साल पहले हुए थे। जिन्हें अंग्रेजों के खिलाफ बगावत की पहली लड़ाई थी। इसके बाद 1886 ई. में ड्रेसकोड का विद्रोह हुआ। जिसमें अंग्रेजों ने हिन्दुओं को तिलक-टीका और मुसलमानों को दाढ़ी रखने पर पाबंदी लगाई थी। फिर इसके बाद 1817 ई. में पाइका विद्रोह चला। जोकि स्वतंत्रता संग्राम का पहला विद्रोह माना जाना चाहिए। इस विद्रोह ने अंग्रेजों की जड़ो को हिलाकर रख दिया था।

2. सन् 1857 ई. की क्रांति के आर्थिक एवं राजनीतिक कारण निम्नलिखित हैं– 1. ब्रिटिश शासकों ने अधिकार करने की नीतियों ने भारतीय शासकों व भारतीय लोगों की भावनाओं को भी प्रभावित किया। 2. ब्रिटिश शासकों ने भारतीय लोगों का रोजगार मंत्रियों, दरबारियों व अधिकारियों को छीन लिया। 3. ब्रिटिश शासकों ने एक-एक करके विभिन्न राज्यों को अपने साम्राज्य में मिला लिया। 4. कच्चा माल सस्ती दर पर ब्रिटेन जाता था वहाँ की मिलों में निर्मित सस्ते माल को भारतीय को मँहगे दाम पर खरीदने के लिए विवश किया जाता था। 5. भारतीय शिल्प एवं कुटीर उद्योग, अंग्रेजों की नीतियों के कारण तहस-नहस हो गए, जिससे भारतीय कारीगर बेरोजगारी के शिकार हुए।

3. सन् 1857 ई. की क्रांति का तात्कालिक कारण निम्नलिखित हैं– 1. राजनीतिक कारण : अंग्रेजों ने अपनी नीतियों से भारतीय शासक वर्ग को ही नहीं अपितु अपने साम्राज्य में मिले राज्य के मंत्रियों, दरबारियों, अधिकारियों तथा सैनिक का रोजगार छीन लिया। 2. आर्थिक कारण : कच्चे माल को भारतीय लोगों को आवश्यता से अधिक मँहगा खरीदने पर विवश किया जाता था। जिससे भारतीय कारीगर आदि बेरोजगार हो गए। 3. सैन्य कारण : भारतय सेना में यह अफवाह फैल गई थी कि रामफलों के कारतूसों में गाय व सुअर की चर्बी का प्रयोग हो रहा है। जिससे हिन्दू-मुसलमानों के धर्म को आघात हुआ। 4. सामाजिक और धार्मिक कारण : अंग्रेजों ने भारतीयों के सामाजिक रिति-रिवाजों में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया था और वह अपने इसाई धर्म का प्रसार करना चाहते थे। **प्रारंभिक घटनाएँ**–वैसे तो क्रांति की प्रारंभिक घटनाएँ अनेक हैं। उनमें सबसे प्रीावशाली घटना यह है कि ब्रिटिश साम्राज्य में भारतीय सेनाओं में यह अफवाह फैल गई थी कि रामफलों के कारतूसों में गाय व सुअर की चर्बी का प्रयोग हो रहा है। जिससे हिन्दू-मुसलमानों के धर्म को आघात पहुँचा। और वह लोग मानसिक रूप से विद्रोह के लिए तैयार हो गए।

4. सन् 1857 के विद्रोह ने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिलाकर रख दी तथा इसे पुनः संगठन की कगार पर लाकर खड़ा कर दिया/ सन् 1859 के अंत तक भारत पर ब्रिटिश शासन को पूरी तरह से पुनस्थापित किया गया। अतः विद्रोह व्यर्थ नहीं गया। भारत में ब्रिटिश शासन के इतिहास में पुराने युग की समाप्ति तथा नया युग का प्रारंभ हो गया।

अध्याय 17 : राष्ट्रीय आंदोलन एवं स्वतंत्रता

(क) **1.** (स) **2.** (ब) **3.** (अ) **4.** (ब)

(ख) **1.** 3 फरवरी 1928 **2.** खान अब्दुल खान **3.** क **4.** 15 अगस्त 1947

(ग) **1.** (✓) **2.** (✓) **3.** (✗) **4.** (✓)

(घ) **1.** ब्रिटिश संसद ने भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 18 जुलाई 1947 को पारित किया/

2. वह शासन प्रणाली जिसमें किसी देश के निवासी अपना सब शासन और प्रबंध स्वयं तथा बिना किसी विदेशी शक्ति के दबाव के करते हैं।

3. सन् 1929 ई. में लाहौर में होने वाले कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष पं. जवाहरलाल नेहरू थे।

4. लार्ड माउंटबेटन भारत में 22 मार्च 1947 में आया था।

(ङ) **1.** भारत की स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध आंदोलन दो प्रकार का था। एक अहिंसक और दूसरा सशस्त्र आंदोलन। भारत की आज़ादी के लिए सन् 1857 ई. से 1947 के बीच अनेक प्रकार के प्रयत्न हुए। जिसमें स्वतंत्रता का सपना संजोय क्रांतिक्रारियों और शहीदों की उपस्थिति सबसे अधिक प्रेरणादायी सिद्ध हुई। यह क्रांतिकारी आंदोलन भारत के इतिहास में स्वर्ण युग था।

2. गाँधीजी ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध एक नया आंदोलन शुरू करने का निर्ण लिया। उन्होंने बताया कि अंग्रेजों को भारत छोड़ देना चाहिए। लोगों से उन्होंने कहा करो या मरो। तुम्हे अंग्रेजों से अपने अधिकर के लिए लड़ाई लड़नी है। सन् 1943 के अंत तक 90,000 से अधिक लोग गिरफ्तार हुए और लगभग 1000 मारे गए। अंग्रेजो ने घुटने टेक दिए। बंगाल में अकाल पड़ने से लगभग 30 लाख लोग मारे गए। ऐसे में किसानों ने सहायता कार्यों की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

3. गाँधीजी ने सन् 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन छेड़ दिया। गाँधीजी ने अपने ग्यारह-सूत्री प्रशासनिक सुधारों का कार्याक्रम बनाया तथा इरविन को स्वीकार करने के लिए कहा। लेकिन सरकार की प्रतिक्रिया ठीक नहीं थी/ 78 सहयोगियों के साथ डांडी यात्रा में नमक कानून के साथ सविनय अवज्ञा आंदोलन भी शुरू हुआ। अनेक स्थानों पर नमक कानून, विदेशी वस्त्र लाए गए, शराब की दुकाने लूटी गईं। किसानों को राजस्व अदा करने के लिए मना किया गया। गाँधीजी सहित हजारों लोग बंदी बने तथा कांग्रेस को अवैध घोषित कर दिया।

4. 9 अगस्त 1925 को क्रांतिकारियों ने काकोरी में एक ट्रेन में डकैती डाली थी। जो काकोरी कांड के नाम से जाना जाता है। इसके प्रमुख नेता पं. राम प्रसाद बिस्मिल थे।

(च) **1.** सन् 1922 में कांग्रेस का अधिवेशन गया में हुआ। इसके अध्यक्ष चितरंजनदास थे। इस अधिवेशन ने परिषदों में न जाने के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। इस प्रस्ताव के समर्थकों ने सन् 1923 में कांग्रेस खिलाफत स्वराज पार्टी की स्थापना की। यह स्वराज पार्टी के नाम से प्रसिद्ध हुई। विशेषताएँ– 1. स्वराज पार्टी की स्थापना करना उनका मुख्य उद्देश्य था। 2. सरकार की गलत नीतियों की आलोचना करना तथाउसके दोषों को उजागर करना था। आदि स्वराज पार्टी की विशेषता हैं।

2. लार्ड माउंटबेटन 22 मार्च 1947 को भारत आए, तब भारत में सांप्रदायिक हिंसा जारी थी। उन्हें लगा कि भारत का विभाजन आवश्यक है। उन्होंने विभाजन की योजना बनाकर ब्रिटिश संसद में पेश किया। यह योजना 3 जून 1947 को प्रस्तुत की गई। उन्होंने यह घोषणा की कि सत्ता का हस्तानांतरण जून 1948 की बजाय अगस्त 1947 को होगा। ब्रिटिश संसद ने 18 जुलाई 1947 को भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम पारित किया। फिर 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। पं. जवाहरलाल नहेरू ने कहा कि इस मध्य रात्रि के समय भारत को एक नया जीवन प्राप्त हुआ है।

3. सर जॉन साइमन कमीशन की नियुक्ति ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने सर जॉन साइमन के नेतृत्व में की थी। इस कमीशन में 7 सदस्य थे जो ब्रिटिश की संसद से मनोनीत थे। कमीशन को इस बात की जाँच करनी थी कि क्या भारत इस लायक हो गया है कि उन्हें संवैधानिक अधिकार दिए जाएँ। भारतीय को कमीशन में शामिल नहीं किया गा। जिस कारण इसका विरोध किया गया।

4. 8 अप्रैल 1929 को भगत सिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ने केंद्रीय विधान सभा के केंद्रीय कक्ष में दो बम फेंक दिए। इन बमों को किसी की हत्या करने के लिए नहीं फेका गया था। ये बम लोक सुरक्षा विधेयक तथा 31 मजदूर नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध प्रदर्शन के रूप में फेके गए थे।

अध्याय 18 : स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् का भारत

(क) **1.** (ब) **2.** (डॉ. भीमराव अंबेडकर) **3.** (ब) **4.** (अ)

(ख) **1.** शरणार्थियों **2.** 1950 **3.** शोक **4.** 562 **5.** नागर

(ग) **1.** (✓) **2.** (✓) **3.** (✗) **4.** (✓) **5.** (✗)

(घ) **1.** संविधान बनाने में 2 वर्ष 11 माह 18 दिन का समय लगा।

2. वर्तमान में 22 भाषाएँ अधिकृत हैं– 1. असमिया 2. बंगला 3. बोडो 4. डोगरा 5. मणिपुरी 6. नेपाली 7. गुजराती 8. हिन्दी 9. कन्नड़ 10. कश्मीरी 11. संस्कृत 12. संथाली 13. कोंकणी 14. मराठी 15. मैथिला 16. मलयालम 17. तेलुगू 18. उर्दू 19. उड़िया 20. पंजाबी 21. सिंधी 22. तमिल

3. जूनागढ़ का नवाब पाकिस्तान भाग गया था।

4. इस समय भारत में 28 राज्य 9 केंद्रशासित प्रदेश हैं।

5. स्वतंत्रता के समय हैदराबाद पर निजाम का शासन था।

6. स्वतंत्रता के बाद देश को शरणार्थियों जैसी महान त्रासदी का सामना करना पड़ा।

(ङ) **1.** स्वतंत्रता प्राप्ति तक, जोधपुर, भोपाल, हैदराबाद ये तीन रियासतें भारत में नहीं थी।

2. संविधान में देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी को सामान्य भाषा

माना गया है, परंतु सन् 1965 तक अंग्रेजी को भी हिंदी के साथ-साथ सामान्य भाषा के रूप में प्रयोग करने का प्रावधान किया गया तथा इसके बाद अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी का ही पूर्णतया सामन्य रूप से प्रयोग किए जाने का प्रावधान किया गया था।

3. स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत के फ्रांसीसी उपनिवेशों के नाम– 1. पांडिचेरी 2. कराइकल 3. यमन 4. माहे 5. चंद्रनगर हैं।

4. भारतीय सेना ने 12 दिसंबर का गोवा मुक्ति अभियान शुरू किया। वायुसेना ने 8 और 9 दिसंबर को पुर्तगालियों के ठिकाने पर अचूक बमबारी की। भारतीय थल, वायु सेना के हमलों से तिलमिला कर 1 दिसंबर 1961 को पुर्तगाली गर्वनर मैन्यू वासलो डे सिल्वा ने भारत के सामने समर्पण समझौते पर दस्तखत कर दिए।

(च) **1.** सन् 1920 के दशक में स्वतंत्रता संघर्ष की मुख्य पार्टी–भारतीय राष्ट्रीय कांगेस ने आश्वासन दिया था, कि देश आज़ाद होन पर भाषायी समूह का अपना अलग प्रांत होगा। लेकिन कांग्रेस ऐसा कुछ नहीं कर पाई क्योंकि देश धर्म के आधार पर बँट चुका था। प्रधानमंत्री जवाहरलाल नहेरू और उप प्रधानमंत्री वल्लभ भाई पटेल भाषा के आधार पर राज्यों गठन नीति के विरोध में थे। सभी गाँधीवाद नेताओं ने भूख हड़ताल कर दी। लेकिन केंद्र सरकार को आखिर यह माँग माननी पड़ी। इस तरह अक्टूबर 1953 को आंध्रप्रदेश के रूप में एक नए राज्य का गठन हुआ।

2. भारत को सर्वप्रथम शरणार्थियों के पुनर्वास की समस्या का सामना करना पड़ा। विभाजन के समय भय तथा आतंक का वातावरण था। विभाजन रेखा में दोनों ओर आगजनी, हत्या तथा मारकाट मची थी। बड़े पैमाने पर अभूतपूर्व हिंसा, रक्तपात तथा हत्याएँ जारी थीं। 5 लाख हिंदू-मुसलमान मारे गए तथा बेघर हो गए। लगभग 8.5 मिलियन लोग भारत में अप्रवासित हुए। शरणार्थियों का असीमित प्रवाह लंबे समय तक बना रहा।

2. संविधान का निर्माण–भारत का संविधान आसानी से नहीं बना। हमारे नेताओं को देश में स्वशासन की माँग पूरी करने के लिए कठिन एवं निरंतर संघर्ष करना पड़ा। यह अध्ययन करना रोचक होगा कि हमारा संविधान कैसे बना तथा इसे किसने बनाया? कैबिनेट मिशन ने सन् 1946 में यह संसतुति की, कि भारत के लिए नया संविधान बनाने हेतु एक संवधिान सभा का गठन किया जाना चाहिए। सदस्य प्रांतीय विधानसभाओं द्वारा चुने गए। संविधान में विभिन्न समुदाय, प्रदेशों, राजनीतिक दलों तथा देशों के कानूनविदों का प्रतिनिधित्व था। डॉ. भीम राव अंबेडकर जी की अध्यक्षता में 8 सदस्यों की कमेटी नियुक्त की। जिसमें विचार-विमर्श किए और यह संविधान 2 वर्ष 11 माह तथा 18 दिन के समय में तैयार किया गया।

अध्याय 19 : आतंकवाद

(क) **1.** (अ) **2.** (ब) **3.** (ब)

(ख) **1.** ब्लैक टोरंटो **2.** 13 दिसंबर 2001 **3.** राष्ट्रीय जाँच **4.** 1975

(ग) **1. विद्रोह**–कोई विद्रोह किसी उत्पीड़न की स्थिति और अस्वीकृति की भावना से उत्पन्न होता है। जबकि **आतंकवाद** अपने राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किसी व्यक्ति या सरकार को आतंकित के लिए हिंसात्मक कार्यवाही करना है।

2. जातीय विद्रोह–जो राज्यों की सीमा को लेकर या भारत से अलग अपना असतित्व कायम करने को विद्रोह करते हैं जबकि **सांप्रदायिक आतंकवाद** ऐसी पारिस्थितियों का उत्पन्न होना है, जिससे व्यक्ति किसी अन्य धर्म के विरोध में अपना व्यक्तत्व प्रस्तुत करता है।

3. क्रांतिकारी–साम्राज्यवाद के विरुद्ध विद्रोह करने वाले क्रांतिकारी होते हैं जबकि **आतंकवादी** जन समुदाय में आतंक पैदा करके बेकसूर जनता को मारने वाले लोग होते हैं।

(घ) **1.** भारत में तीन प्रकार की गतिविधियों को देखा जा सकता है– 1. जातीय विद्रोह 2. नक्सलवादी आतंकवाद 3. सांप्रदायिक आतंवाद

2. अपने राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किसी व्यक्ति या सरकार को आतंकित करने के लिए हिंसात्मक कार्यवाही करना।

3. क्रांतिकारी गतिविधियों से सामान्य जन-धन की हानि कम होती थी। ब्लकि आतंकवादी हिंसा फैलाकर जन-धन का नुकसान सर्वाधिक करते है।

(ङ) **1.** आतंकवाद अपने राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किसी व्यक्ति या सरकार को आंतकित करने के लिए हिंसात्मक कार्यवाही करना होता है; जैसे–आतंकवाद कभी-कभी धार्मिक वैमनस्यता के कारण भी होता है।

2. भारत कई राज्यों में यह एक गंभीर समस्या है। इसक उद्भव पश्चिम बंगाल से हुआ है। वस्तुतः नक्सलवाद एक आंदोलन, एक मिशन है। जिसका उद्देश्य आरंभिक दौर में अपराधों के विरुद्ध आवाज उठाना था।

3. नक्सलवादी द्वारा आंध्र प्रदेश के कई क्षेत्रों में की गई आतंकवादी कार्यवाही, छत्तीसगढ़ में 78 जवानों की निर्मम हत्या, जहानाबाद जेल ब्रेक, झारखंड में रेलगाड़ी अपहरण कांड, छत्तीसगढ़ में वाड़ा जेल ब्रक आदि की घटनाएँ दिल दहला देने वाली हैं।

(च) **1.** भारत में तीन प्रकार की आंतकवादी गतिविधियाँ चल रहीं हैं– **1. जातीय विद्रोह** : जनजातियों में विद्रोह का कारण अपनी पहचान बनाए रखने की प्रवृत्ति है। ये जनजातियाँ या तो राज्यों की सीमा को लेकर या भारत से अलग अपना अस्तित्व कायम के लिए विद्रोह करते हैं। **2. नक्सलवादी** : नक्सलवाद का उदय पश्चिम बंगाल में हुआ था। जिसका उद्देश्य अपराधों के विरुद्ध आवाज उठाना था। **3. सांप्रदायिक आतंवाद** : ऐसी परिस्थितियों का उत्पन्न होना जिससे व्यक्ति किसी अन्य धर्म के विरोध में अपना व्यक्तत्व प्रस्तुत करे, सांप्रदायिक आतंकवाद कहलाता है।

2. आधुनिक आतंकवाद–आतंकवाद शब्द की उत्पत्ति–आतंक–वाद ऐसे कार्यों को कहते हैं, जिसे किसी प्रकार का आतंक फैलाने के लिए किया जाता है। ऐसे कार्यों को करने वाले आतंकवादी कहलाते

हैं। **लक्षण :** 1. आबादी का तेजी से बढ़ना 2. राजनैतिक, सामाजिक, अर्थव्यवस्था 3. शिक्षा की कमी 4. गलत संगति 5. बहकावे में आना आदि।

अध्याय 20 : संसाधन और उनके प्रकार

(क) **1.** (ब) **2.** (स) **3.** (अ) **4.** (स)

(ख) **1.** कंधार **2.** धात्विक **3.** बाँध **4.** प्राकृतिक

(ग) **1.** (✓) **2.** (✓) **3.** (×) **4.** (✓) **5.** (×)

(घ) **1.** वह प्रत्येक वस्तु जिसका उपयोग आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया जा सकता है वह **संसाधन** है।

2. शिक्षित एवं स्वस्थ व्यक्ति किसी देश को मानव संसाधनों से धनी बनाते हैं।

3. मानव-निर्मित संसाधनों के तीन उदाहरण– 1. परिवहनों का निर्माण 2. भवन निर्माण 3. कंप्यूटर।

4. 1. मिट्टी 2. खनिज 3. जल 4. वनस्पति 5. पवन

5. वह प्रकृतिक उपहार जो मनुष्य की इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम है। प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं।

(ङ) **1.** प्राकृतिक संसाधन प्रकृति के वे उपहार हैं, जो उसने मनुष्य को निःशुल्क प्रदान किए हैं। इस प्रकार चट्टानें, मिट्टी, खनिज, जल, पवन, वनस्पति एवं जीव-जंतु इत्यादि प्राकृतिक प्रदत्त अनमोल उपहार हैं।

2. संसाधनों को विभिन्न आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है– 1. उत्पत्ति के आधार पर–जैव और अजैव। 2. समाप्यता के आधार पर–नवीकरण और अनीवकरण। 3. स्वामित्व के आधार पर– व्यक्तिगत, सामुदायिक, राष्ट्रीय आदि। 4. विकास के स्तर के आधार पर–संभवी, विकसित भंडार और संचित कोष।

3. नवकरणीय संसाधन वे होते हैं, जिनका पुनरूपत्पादन किया जा सकता है; जैसे–पवन, जल, पेड़-पौधे आदि। और जबकि अनवकरणीय संसाधनों में पुनरूत्पादन नहीं किया जा सकता है। जैसे–लोहा, ताँबा, कोयला, खनिज तेल आदि।

4. सतत् पोषपीय विकास से तात्पर्य है कि संसाधनों का उपयोगी सावधानी से किया जाए। ताकि वर्तमान पीड़ी व भावी पीढ़ियों की आवश्यकताएँ पूरी होती रहे। **सिद्धांत–** 1. जीवन के सभी रूपों का आदर और देखभाल 2. गुणवत्ता को बढ़ावा 3. शक्ति एवं विविधता का संरक्षण 4. पर्यावरण की सुरक्षा आदि।

(च) **1. प्राकृतिक संसाधन–** 1. यह निःशुल्क प्राकृतिक उपहार हैं। 2. यह मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समक्ष हैं। 3. उदाहरण– चट्टानें, मिट्टी, खनिज, जल, जीव-जंतु, पेड़-पौधे आदि। **मानव निर्मित संसाधन–** 1. यह मानव परिश्रम एवं बुद्धि कौशल का उपहार है। 2. यह मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए निरंतर प्रयास करता है। 3. उदाहरण– भूमि का प्रयोग खेती करने, भवन बनाने, सड़क वे रेलमार्ग बनाने आदि में।

2. संसाधनों का संरक्षण–मनुष्य की आवश्यकताएँ असीमित हैं जबकि प्रकृति प्रदत्त संसाधन सीमित हैं। मनुष्य के ज्ञान एवं विज्ञान की लगातार उन्नति के कारण संसाधनों के दोहन में वृद्धि होती गई। साथ ही संसार की जनसंख्या वृद्धि का भी इस पर बुरा परिणाम हुआ है। संसाधनों के निरंतर प्रयोग से भंडार घटने लगे। ऐसी आशंका व्यक्त की जा रही है कि भविष्य में ये संसाधन पूर्ण रूप से समाप्त हो जाएँगे। इस कारण हमें संसाधन का प्रयोग सीमित रूप में करना चाहिए। जिससे इनका संरक्षण हो सके।

3. संसाधन–वह प्रत्येक वस्तु जिनका उपयोग आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया जा सकता है। वह संसाधन कहलाते हैं। कुछ संसाधन समय के साथ आर्थिक रूप से मूल्यवान हो सकते हैं; जैसे–जब मानव ने लोहे या अन्य धातुओं से औजार व अन्य वस्तुएँ बनाना सीख लिया, तो इन धातुओं का आर्थिक रूप ही मूल्यवान हो सकता है।

4. संसाधनों का विकास–मानव प्रारंभ से ही प्राकृतिक संसाधनों का विकास करता रहा है; जैसे-जैसे मानव के बुद्धि-कौशल का विकास हुआ। वैसे-वैसे उसने प्राकृतिक संसाधनों को अधिक से अधिक उपयोगी बनाना आरंभ किया। जैसे–आदिम युग में मानव ने पत्थर, पहिये, झोंपड़ियाँ, गुफाओं आदि का विकास किया। आज के युग में मानव आवागमन एवं संचार के साधन विकसित करा हुआ है। आज हम पाषाण युग से कंप्यूटर युग में पहुँच गए हैं। मानव ने अंतरिक्ष की खोज करना शुरू कर दिया। जिन देशों ने प्राकृतिक संसाधनों का अधिक विकास किया है।

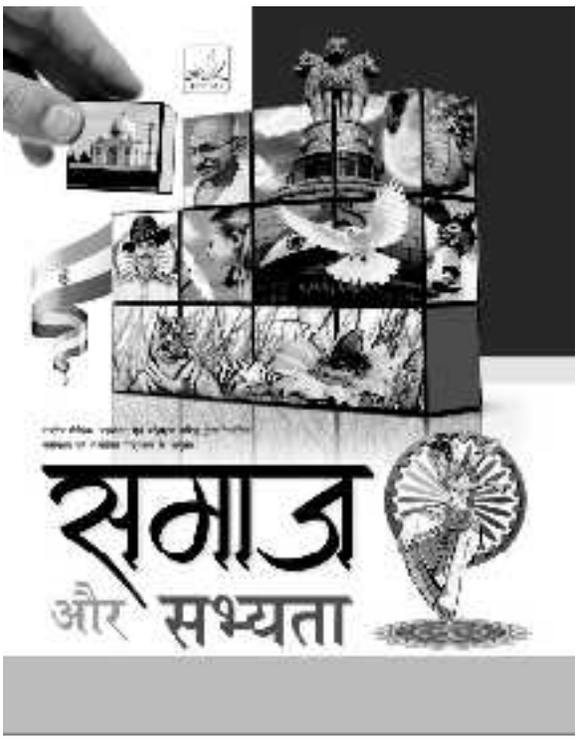

शिक्षक दिग्दर्शिका

1–8

MPMI
Munish PRINT Media
INTERNATIONAL
Plot No. 3, Prem Kunj, Tech Zone 7, Greater Noida (NCR) India
An ISO 9001 : 2008 Certified Company